آزادی کے بعد

# اُردو نظم

(ایک انتخاب)

ترتیب:

شمیم حنفی
مظہر مہدی

قومی کونسل برائے فروغ اُردو زبان، نئی دہلی

# آزادی کے بعد اردو نظم

# आज़ादी के बाद उर्दू नज़्म

# آزادی کے بعد اردو نظم

(ایک انتخاب)

# आज़ादी के बाद उर्दू नज़्म

(एक इन्तिख़ाब)


ترتیب

तरतीब

شمیم حنفی

शमीम हन्फ़ी

مظہر مہدی

मज़हर मेहदी



قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان

وزارت ترقی انسانی وسائل (حکومت ہند)

ویسٹ بلاک I، آر۔ کے۔ پورم، نئی دہلی 110066

**Azadi Ke Bad Urdu Nazam (An Anthology),**

*Selected & edited by*

Shamim Hanfi & Mazhar Mahdi


قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، نئی دہلی

سنہ اشاعت : اگست 2005

پہلا ایڈیشن : 1100

قیمت : -/384 روپے

سلسلہ مطبوعات : 1230

ٹرانسلیٹر یٹر : کلیم اللہ، خورشید عالم

لیزر ٹائپ سیٹنگ : ملٹی لنگول سولیوشنز، ہاشمی نگر، دہلی 92

ISBN : 81-7587-099-0

---

ناشر: ڈائرکٹر، قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، ویسٹ بلاک 1، آر کے پورم، نئی دہلی 110066

فون نمبر: 26103938، 26103381، 26179657، فیکس: 26108159

ای۔میل: urducoun@ndf.vsnl.net.in، ویب سائٹ: www.urducouncil.nic.in

طابع: لاہوتی پرنٹ ایڈز، جامع مسجد دہلی۔ 110006

# آزادی کے بعد اردو نظم

# आज़ादी के बाद उर्दू नज़्म

# پیش لفظ

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان کا بنیادی مقصد اچھی کتابیں کم سے کم قیمت پر مہیا کرنا ہے تاکہ اردو کا دائرہ زیادہ سے زیادہ وسیع ہو، اور سارے ملک میں سمجھی، بولی اور پڑھی جانے والی اس زبان کی ضرورتیں جہاں تک ممکن ہو سکے پوری کی جائیں اور نصابی و غیر نصابی کتابیں آسانی سے مناسب قیمت پر سب تک پہنچیں۔ زبان صرف ادب نہیں، سماجی اور طبعی علوم کی اپنی اہمیت ہے۔ ادب زندگی کا آئینہ ہے اور زبان کی ہمہ جہت ترقی کے لیے اُسے سماجی علوم، سائنس اور ٹکنالوجی سے جوڑنا بھی ضروری ہے اور علوم انسانیہ سے بھی۔

اب تک قومی اردو کونسل نے مختلف علوم و فنون اور ادبیات کی سینکڑوں کتابیں شائع کیں ہیں۔ ایک منصوبہ بند پروگرام کے تحت بنیادی، درسی اور ادبی اہمیت کی کتابیں چھاپنے کا سلسلہ شروع کیا گیا ہے۔ زیرِ نظر کتاب 'بھارت بھارتی سیریز' کی دوسری کتاب ہے۔ اس سیریز کے تحت آزادی کے بعد کے اردو ادب کے انتخاب کو اردو اور دیوناگری دونوں رسم الخط میں چھاپا جائے گا تاکہ اس ملک کا ایک بڑا طبقہ جو اردو رسم الخط نہیں جانتا وہ بھی اردو ادب سے لطف اندوز ہو سکے۔ آزادی کے بعد اردو نظموں کی اینتھالوجی کا یہ کام پروفیسر شمیم حنفی کی نگرانی میں ڈاکٹر مظہر مہدی نے مکمل کیا ہے۔ دائیں ہاتھ پر اردو متن دیا گیا ہے اور اس کے سامنے ہندی۔ مشکل لفظوں کے مختصر معنی نیچے درج کر دیے گئے ہیں تاکہ پڑھنے والوں کو آسانی ہو۔ 'بھارت بھارتی سیریز' کے تحت پانچ کتابیں شائع کی جائیں گی۔ جن میں آزادی کے بعد اردو ادب کی مختلف اصناف کا جامع انتخاب پیش کیا جائے گا۔ امید ہے ان کتابوں کا خیر مقدم کیا جائے گا اور یہ اپنے مقصد میں کامیاب ہوں گی۔

**ڈاکٹر محمد حمید اللہ بھٹ**

(ڈائرکٹر)

# पेशे लफ़्ज़

क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान का बुनियादी मक़सद अच्छी किताबें कम से कम क़ीमत पर मुहैया करना है ताकि उर्दू का दाइर-ए-कार ज़्यादा से ज़्यादा वसी हो, और सारे मुल्क में समझी, बोली और पढ़ी जाने वाली इस ज़बान की ज़रूरतें जहां तक मुमकिन हो सके पूरी की जायें, और निसाबी व ग़ैर-निसाबी किताबें आसानी से मुनासिब क़ीमत पर सब तक पहुंचें। ज़बान सिर्फ़ अदब नहीं, समाजी और तबई उलूम की अपनी अहमियत है। अदब ज़िन्दगी का आईना है और ज़बान की हमा-जेहत तरक़्क़ी के लिए उसे समाजी उलूम, साइंस और टेक्नालोजी से जोड़ना भी ज़रूरी है और उलूमे इन्सानिया से भी।

अब तक क़ौमी काउन्सिल ने मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून और अदबियात की सैंकड़ों किताबें शाए की हैं। एक मन्सूबाबन्द प्रोग्राम के तेहत बुनियादी, दर्सी और अदबी अहमियत की किताबें छापने का सिलसिला शुरू किया गया है। ज़ेरे-नज़र किताब 'भारत भारती सीरीज़' की दूसरी किताब है। इस सीरीज़ के तेहत आज़ादी के बाद के उर्दू अदब के इंतिख़ाब को उर्दू और देवनागरी दोनों रस्मुल ख़त में छापा जाएगा ताकि इस मुल्क का एक बड़ा तबक़ा जो उर्दू रस्मुल ख़त नहीं जानता वह भी उर्दू अदब से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सके। आज़ादी के बाद उर्दू नज़्मों की ऐन्थालॉजी का ये काम प्रोफ़ेसर शमीम हन्फ़ी की निगरानी में डॉ. मज़हर मेहदी ने मुकम्मल किया है। दायें हाथ पर उर्दू मत्न दिया गया है और इसके सामने हिन्दी। मुश्किल लफ़्ज़ों के मुख़्तसर मानी नीचे दर्ज कर दिये गये हैं ताकि पढ़ने वालों को आसानी हो। 'भारत भारती सीरीज़' के तेहत पांच किताबें शाए की जाएंगी जिनमें आज़ादी के बाद उर्दू अदब की मुख़्तलिफ़ अस्नाफ़ का जामे इंतिख़ाब पेश किया जाएगा। उम्मीद है कि इन किताबों का ख़ैर मक़दम किया जाएगा और ये अपने मक़सद में कामयाब होंगी।

डा. मोहम्मद हमीदुल्लाह भट्ट

(डायरेक्टर)

# فہرست


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | जोश मलीहाबादी | (1898 – 1982) | 1۔ جوش ملیح آبادی |
| | किसान | | کسان |
| | शिकस्ते ज़िन्दां का ख़्वाब | | شکستِ زنداں کا خواب |
| | अलबेली सुबह | | البیلی صبح |
| | बदली का चांद | | بدلی کا چاند |
| | क्या गुलबदनी है | | کیا گلبدنی ہے |
| 21 | मख़दूम महीउद्दीन | (1908 – 69) | 2۔ مخدوم محی الدین |
| | इंक़लाब | | انقلاب |
| | अंधेरा | | اندھیرا |
| | चॉद तारों का बन | | چاند تاروں کا بن |
| | लख़्ते जिगर | | لختِ جگر |
| | विसाल | | وصال |
| 35 | इजतबा रिज़्वी | (1908 – 91) | 3۔ اجتبیٰ رضوی |
| | तक़दीरे आदम | | تقدیرِ آدم |
| | पहनाई | | پہنائی |
| 43 | इसरारुल हक़ मजाज़ | (1909 – 55) | 4۔ اسرارالحق مجاز |
| | अंधेर रात का मुसाफिर | | اندھیری رات کا مسافر |
| | आवारा | | آوارہ |
| | ख़्वाबे सहर | | خوابِ سحر |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | पहला जश्ने आज़ादी | | پہلا جشن آزادی | |
| | वतन आशोब | | وطن آشوب | |
| 63 | गोपाल मित्तल | (1909 – 93) | گوپال متل | 5۔ |
| | तुलूए शब | | طلوع شب | |
| | शबे ताब | | شب تاب | |
| | सुबह काज़िब | | صبح کاذب | |
| 69 | परवेज़ शाहिदी | (1910 - 68) | پرویز شاہدی | 6۔ |
| | तसलीसे हयात | | تثلیث حیات | |
| | साज़े मुस्तक़बिल | | ساز مستقبل | |
| 83 | नून मीम राशिद | (1910 – 75) | ن۔م۔راشد | 7۔ |
| | दरीचे के क़रीब | | دریچے کے قریب | |
| | नमरूद की खुदाई | | نمرود کی خدائی | |
| | सबा वीरां | | سبا ویراں | |
| | दिल, मिरे सहरा नौरदे पीर दिल | | دل، مرے صحرا نورد پیر دل | |
| | इसराफील की मौत | | اسرافیل کی موت | |
| | हुस्ने कूज़ागर | | حسن کوزہ گر | |
| 125 | फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ | (1911 - 84) | فیض احمد فیض | 8۔ |
| | रक़ीब से | | رقیب سے | |
| | तन्हाई | | تنہائی | |
| | सुब्हे आज़ादी | | صبح آزادی | |
| | मौज़ूए सुख़न | | موضوع سخن | |
| | ज़िन्दां की एक शाम | | زنداں کی ایک شام | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | याद | | یاد |
| | मुलाक़ात | | ملاقات |
| 147 | मीराजी | (1912 – 49) | 9۔ میراجی |
| | समन्दर का बुलावा | | سمندر کا بُلاوا |
| | ऊँचा मकान | | اونچا مکان |
| | लबे जूए बार | | لب جوئے بار |
| | जातरी | | جاتری |
| | कलर्क का नग़्मए मुहब्बत | | کلرک کا نغمۂ محبت |
| 171 | मुईन अहसन जज़्बी | (1912 – 2005) | 10۔ معین احسن جذبی |
| | फ़ितरत एक मुफ़लिस की नज़र में | | فطرت ایک مفلس کی نظر میں |
| | मौत | | موت |
| | तवाएफ़ | | طوائف |
| 177 | अली सरदार जाफ़री | (1913 – 2000) | 11۔ علی سردار جعفری |
| | फ़रेब | | فریب |
| | एक ख़्वाब और | | ایک خواب اور |
| | मेरा सफ़र | | میرا سفر |
| | तुम नहीं आए थे जब | | تم نہیں آئے تھے جب |
| | क़त्ले आफ़ताब | | قتلِ آفتاب |
| | पैराहने शरर | | پیراہنِ شرر |
| 201 | जां निसार अख़्तर | (1914 – 76) | 12۔ جاں نثار اختر |
| | ज़िन्दगी | | زندگی |
| | ख़ामोश आवाज़ | | خاموش آواز |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | आख़िरी मुलाक़ात | | آخری ملاقات |
| | आख़िरी लम्हा | | آخری لمحہ |
| 241 | अख़्तरुल ईमान | (1915 -- 95) | 13۔ اخترالایمان |
| | एक लडका | | ایک لڑکا |
| | अहदे वफ़ा | | عہدِ وفا |
| | तब्दीली | | تبدیلی |
| | शीशे का आदमी | | شیشے کا آدمی |
| | अपाहिज गाडी का आदमी | | اپاہج گاڑی کا آدمی |
| 259 | अली जवाद ज़ैदी | (1916 - 2004) | 14۔ علی جواد زیدی |
| | हौली | | ہولی |
| | भूलती हुई याद | | بھولتی ہوئی یاد |
| 273 | कैफ़ी आज़मी | (1918 -- 2002) | 15۔ کیفی اعظمی |
| | इब्ने मर्यम | | ابنِ مریم |
| | मकान | | مکان |
| | आवारा सजदे | | آوارہ سجدے |
| | दाइरा | | دائرہ |
| | इन्तशार | | انتشار |
| | ज़िन्दगी | | زندگی |
| 299 | ख़ुर्शीदुल इस्लाम | (1919 - ) | 16۔ خورشیدالاسلام |
| | प्यास | | پیاس |
| | नई मर्यम | | نئی مریم |
| | इन्क़लाब | | انقلاب |
| | इन्तज़ार की रात | | انتظار کی رات |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 303 | सलाम मछली शहरी | (1921 – 73) | 17۔ سلام مچھلی شہری |
| | ड्राइंग रूम | | ڈرائنگ روم |
| | जंगली नाच | | جنگلی ناچ |
| | पीतल का सांप | | پیتل کا سانپ |
| | अंदेशा | | اندیشہ |
| 313 | साहिर लुधियानवी | (1921 – 80) | 18۔ ساحرلدھیانوی |
| | शाहकार | | شہکار |
| | शिकस्त | | شکست |
| | रद्‌देअमल | | ردِ عمل |
| | गुरेज़ | | گریز |
| | ताजमहल | | تاج محل |
| | खुबसूरत मोड | | خوبصورت موڑ |
| 327 | सुलेमान अरीब | (1922 – 70) | 19۔ سلیمان اریب |
| | तस्कीने अना | | تسکینِ انا |
| | तुम किससे मिलने आए हो | | تم کس سے ملنے آئے ہو |
| 333 | बिमल कृष्ण अश्क | (1924 – 82) | 20۔ بمل کرشن اشک |
| | वो : एक | | وہ: ایک |
| | प्यार है वो | | پیار ہے وہ |
| | नाम उसका | | نام اُس کا |
| 339 | मुनीबुर्रहनाम | (1924 – ) | 21۔ منیب الرحمٰن |
| | बाज़दीद | | بازدید |
| | मकाफ़ात | | مکافات |
| | बरगद का पेड | | برگد کا پیڑ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | सन्थाली का नाच | | سنتھالی کا ناچ |
| | तुम अपने ख़्वाब घर छोड आओ | | تم اپنے خواب گھر چھوڑ آؤ |
| 349 | अजीज़ तमन्नाई | (1926- ) | 22۔ عزیز تمنائی |
| | किस्सए दर्द | | قصۂ درد |
| | हयौला | | ہیولی |
| 355 | रफ़त सरोश | (1926 – ) | 23۔ رفعت سروش |
| | नजमे सहर | | نجمِ سحر |
| | तजस्सुस | | تجسس |
| | नौहा | | نوحہ |
| 361 | ख़लीलुर्रहमान | (1927 – 78) | 24۔ خلیل الرحمٰن |
| | नया अहदनामा | | نیا عہد نامہ |
| | ख़्वाबों से डर लगता है | | خوابوں سے ڈر لگتا ہے |
| | लम्हे की मौत | | لمحے کی موت |
| | कुत्बा | | کتبہ |
| | मैं गौतम नहीं हूं | | میں گوتم نہیں ہوں |
| 375 | राही मासूम रज़ा | (1927 – 92) | 25۔ راہی معصوم رضا |
| | चाँद की बुढ़िया | | چاند کی بڑھیا |
| | गिरेबां का फ़ासला | | گریباں کا فاصلہ |
| | ख़्वाब | | خواب |
| | एक नज़्म सुब्ह के इंतिज़ार में | | ایک نظم صبح کے انتظار میں |
| | दर्द तन्हाई का | | درد تنہائی کا |
| 381 | बाकि़र महदी | (1927 –) | 26۔ باقر مہدی |
| | दीमक | | دیمک |
| | नरवान | | نروان |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ख़ामूशी | | خامشی |
| | गोडो | | گوڈو |
| 389 | मोहम्मद अलवी | (1927 – ) | 27۔ محمد علوی |
| | मुझे इन जज़ीरों में ले जाओ | | مجھے ان جزیروں میں لے جاؤ |
| | ख़ाली मकान | | خالی مکان |
| | नौहा | | نوحہ |
| | आख़िरी दिन की तलाश | | آخری دن کی تلاش |
| | ख़ुदा कहां है | | خدا کہاں ہے |
| 399 | क़ाज़ी सलीम | (1927 – ) | 28۔ قاضی سلیم |
| | वाईरस | | وائرس |
| | टूरिस्ट | | ٹورسٹ |
| | रुस्तगारी | | رستگاری |
| 409 | अमीक़ हन्फ़ी | (1928 – 88) | 29۔ عمیق حنفی |
| | तशन्नुज | | تشنج |
| | मामूल | | معمول |
| | उबाल | | اُبال |
| | अंधेरे में सोचने की मश्क़ | | اندھیرے میں سوچنے کی مشق |
| | जंगल : एक हश्त पहलू तसवीर | | جنگل: ایک ہشت پہلو تصویر |
| 421 | बलराज कोमल | (1928 – ) | 30۔ بلراج کومل |
| | ये ज़र्द बच्चे | | یہ زرد بچے |
| | ड्रग स्टोर | | ڈرگ اسٹور |
| | एम्बुलेंस | | ایمبولینس |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 427 | महमूद अयाज | (1929 – 97) | 31- محمود ایاز |
| | नौहा | | نوحہ |
| | मुन्जमद आखें | | منجمد آنکھیں |
| | शबे चिराग़ | | شب چراغ |
| 435 | साजिदा जैदी | (1929 –) | 32- ساجدہ زیدی |
| | कलियां, नीला आसमान, ज़ंजीरें | | کلیاں، نیلا آسمان، زنجیریں |
| | कब से महवे सफर हो | | کب سے محو سفر ہو |
| | वो पल - ये घड़ी | | وہ پل — یہ گھڑی |
| | दूर उफ़तादगी | | دور افتادگی |
| | मई योमुल हिसाब | | مئی یوم الحساب |
| 455 | अज़ीज़ कैसी | (1930 – 92) | 33- عزیز قیسی |
| | रसूले काजिब | | رسول کاذب |
| | एक मन्ज़र, एक आलम | | ایک منظر، ایک عالم |
| | कावाक | | کاواک |
| 465 | शहाब जाफ़री | (1930–2000) | 34- شہاب جعفری |
| | सूरज का शहर | | سورج کا شہر |
| | तस्ख़ीर फ़ितरत के बाद | | تسخیر فطرت کے بعد |
| | शहरे अना में | | شہر انا میں |
| | मैं | | میں |
| 477 | मजहर इमाम | (1930 – ) | 35- مظہر امام |
| | आंगन मे एक शाम | | آنگن میں ایک شام |
| | रिश्ता गूंगे सफ़र का | | رشتہ گونگے سفر کا |
| | उखड़ते ख़ैमों का दर्द | | اکھڑتے خیموں کا درد |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | इश्तराक | | اشتراک |
| | बेअदम सितारों ने | | بےادب ستاروں نے |
| 489 | वहाब दानिश | (1930 – ) | 36۔ وہاب دانش |
| | अब्हामे दीदह | | ابہام دیدہ |
| | पसपाई | | پسپائی |
| 495 | ज़ाहिदा ज़ैदी | (1930 – ) | 37۔ زاہدہ زیدی |
| | वो हर्फ़ो सौतो सदा | | وہ حرف وصوت وصدا |
| | संगे जां | | سنگِ جاں |
| | वो जिसका इंतज़ार था | | وہ جس کا انتظار تھا |
| | जज़्बए बेकराना | | جذبۂ بیکرانہ |
| 505 | मुग़नी तबस्सुम | (1931 – ) | 38۔ مغنی تبسم |
| | रिश्ते | | رشتے |
| | नारसीसस | | نارسی سس |
| | पहली किरण का बोझ | | پہلی کرن کا بوجھ |
| 511 | राशिद आज़र | (1931 – ) | 39۔ راشد آزر |
| | रात के साये | | رات کے سائے |
| | ख़्वाबों के रिश्ते | | خوابوں کے رشتے |
| 513 | सत्यपाल आनन्द | (1931 – ) | 40۔ ستیہ پال آنند |
| | विषकन्या | | وِش کنیا |
| | लहू बोलता है | | لہو بولتا ہے |
| 523 | शाज़ तमकनत | (1933 – 85) | 41۔ شاذ تمکنت |
| | तमाशा | | تماشہ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पथराव की चौमुख बरखा में | | پتھراؤ کی چومُکھ برکھا میں |
| | लज़्ज़ते संग | | لذتِ سنگ |
| | रतजगा | | رتجگا |
| 543 | फ़ज़ल ताबिश | (1933 – 95) | 42۔ فضل تابش |
| | एक नज़्म | | ایک نظم |
| | सफ़र | | سفر |
| | आ जा के हो जा बेलिबास | | آجا کے ہوجا بے لباس |
| 549 | मख़मूर सईदी | (1934 – ) | 43۔ مخمور سعیدی |
| | लफ़ज़ों का अलमिया | | لفظوں کا المیہ |
| | एक पुराना शहर | | ایک پرانا شہر |
| | बुलावा | | بُلاوا |
| 555 | कुमार पाशी | (1935 – 92) | 44۔ کمار پاشی |
| | ख़्वाब तमाशा | | خواب تماشہ |
| | पतझड़ की एक सुब्ह | | پت جھڑ کی ایک صبح |
| | ये गिरता हुआ शहर मेरा नहीं | | یہ گرتا ہوا شہر میرا نہیں |
| 565 | हमीद अलमास | (1935 – 2000) | 45۔ حمید الماس |
| | न सताइश की तमन्ना | | نہ ستائش کی تمنا |
| | शहरे आरज़ू | | شہرِ آرزو |
| | बर्फ़ की वादी | | برف کی وادی |
| 569 | बशर नवाज | (1935 – ) | 46۔ بشر نواز |
| | पता नहीं वो कौन था | | پتا نہیں وہ کون تھا |
| | नारसा | | نارسا |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | वक़्त के कटहरे में | | وقت کے کٹہرے میں |
| | मुझे जीना नहीं आता | | مجھے جینا نہیں آتا |
| 579 | शम्सुर्रहमान फारूकी | (1935 - ) | 47۔ شمس الرحمٰن فاروقی |
| | बैते अंकबूत | | بیت عنکبوت |
| | दरपाए अजल | | درپائے اجل |
| | आख़िरी तमाशा | | آخری تماشائی |
| 583 | जुबैर रिज़्वी | (1935 - ) | 48۔ زبیر رضوی |
| | शरीफज़ादा | | شریف زادہ |
| | तब्दीली | | تبدیلی |
| | अली बिन मुत्तकी रोया | | علی بن متقی رویا |
| | बशारत पानी की | | بشارت پانی کی |
| | अमीरे शहर की नेकी | | امیر شہر کی نیکی |
| 595 | वहीद अख़्तर | (1936 – 1996) | 49۔ وحید اختر |
| | पत्थरों का मुग़नी | | پتھروں کا مغنی |
| | प्रोमेथीसिस | | پرومیتھیس |
| | सहराए सकूत | | صحرائے سکوت |
| | शबोरोज़ तमाशा | | شب و روز تماشہ |
| | एक और दिन गुजर गया | | ایک اور دن گزر گیا |
| 619 | आदिल मन्सूरी | (1936 - ) | 50۔ عادل منصوری |
| | हश्र की सुब्ह दरख़शा हो मक़ामे महमूद | | حشر کی صبح درخشاں ہو مقام محمود |
| | नज़्म | | نظم |
| | वालिद के इंतक़ाल पर | | والد کے انتقال پر |
| | वक़्त की पीठ पर | | وقت کی پیٹھ پر |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 633 | शहरयार | (1936–) | شہریار | 51- |
| | नया खेल | | نیا کھیل | |
| | नया अमृत | | نیا امرت | |
| | अहदे हाज़िर की दिल रुबा मख़लूक़ | | عہدِ حاضر کی دل رُبا مخلوق | |
| | नए अहद का नया सवाल | | نئے عہد کا نیا سوال | |
| | फ़रार | | فرار | |
| | तन्बीह | | تنبیہ | |
| | दरयाए ख़ूं | | دریائے خوں | |
| 641 | शफ़ीक फ़ातमा शोरा | (1937– ) | شفیق فاطمہ شعریٰ | 52- |
| | नवपैराए कारगह शीशगरी | | نواپیرائے کارگہہ شیشہ گری | |
| | राग युग की नज़्में | | راگ یگ کی نظمیں | |
| | मुसाफ़िर परिन्दे | | مسافر پرندے | |
| | सदा बसहर | | صدا بصحرا | |
| 667 | निदा फ़ाज़ली | (1938–) | ندا فاضلی | 53- |
| | आदमी की तलाश | | آدمی کی تلاش | |
| | मुहब्बत | | محبت | |
| | बेख़्वाब नींद | | بے خواب نیند | |
| | लफ़ज़ों का पुल | | لفظوں کا پُل | |
| 675 | चन्द्रमान ख़याल | (1940–) | چندر بھان خیال | 54- |
| | जंग | | جنگ | |
| | गुमशुदा आदमी का इंतज़ार | | گمشدہ آدمی کا انتظار | |
| 681 | मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी | (1940– ) | مصحف اقبال توصیفی | 55- |
| | मुराजत | | مراجعت | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | वक़्त को किसने रोका है | | وقت کو کس نے روکا ہے |
| | कहानियां तमाम शब | | کہانیاں تمام شب |
| 685 | सादिक़ | (1943 – ) | 56۔ صادق |
| | ज़हरबाद | | زہرباد |
| | फ़रजाम | | فرجام |
| | और कुछ चारा नहीं | | اور کچھ چارہ نہیں |
| 691 | शाहिद माहुली | (1943 – ) | 57۔ شاہد ماہلی |
| | अजीब लोग | | عجیب لوگ |
| | कहीं कुछ नहीं होता | | کہیں کچھ نہیں ہوتا |
| 697 | ऐन–रशीद | (1944 – 2000) | 58۔ ع۔رشید |
| | शहर | | شہر |
| | मेरे बाद आ | | میرے بعد آ |
| | नज़्म | | نظم |
| 705 | शीन काफ़ निज़ाम | (1947 – ) | 59۔ ش۔ک۔نظام |
| | ब्याज़ें खो गई | | بیاضیں کھو گئیں |
| | सायों के साए में | | سایوں کے سائے میں |
| 711 | अम्बर बहराईची | (1949 – ) | 60۔ عنبر بہرائچی |
| | गुलाबी चोंच | | گلابی چونچ |
| | युधिष्ठिर | | یدھشٹر |
| | सूखी टहनी पर हरियल | | سوکھی ٹہنی پر ہریل |
| 715 | जावेद नासिर | (1949 – ) | 61۔ جاوید ناصر |
| | ये ख़ल्फ़ का वादा है | | یہ خلف کا وعدہ ہے |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 723 | मो. सलाहुद्दीन परवेज़ | (1952 – ) | محمد صلاح الدین پرویز | 62۔ |
| | चैत | | چیت | |
| | कार्तिक | | کارتک | |
| | फागुन | | پھاگن | |
| 729 | जयंत परमार | (1954 – ) | جینت پرمار | 63۔ |
| | एक सितारा टूट गया | | ایک ستارہ ٹوٹ گرا تھا | |
| | क़रीबतर होता है सिर्फ़ अंधेरा ही | | قریب تر ہوتا ہے صرف اندھیرا ہی | |
| | चाँद दरया पार करके आ रहा है | | چاند دریا پار کرکے آرہا ہے | |
| 733 | सफ़िया अरीब | ( – 2001) | صفیہ اریب | 64۔ |
| | (1) | | (۱) | |
| | (2) | | (۲) | |
| | (3) | | (۳) | |
| | (4) | | (۴) | |
| 741 | फ़ारूक़ नाज़ुकी | | فاروق نازکی | 65۔ |
| | सुन्हरी दरवाज़े के बाहर | | سنہری دروازے کے باہر | |
| | तेज़ाब आकार ख़ुश्बू का | | تیزاب آکار خوشبو کا | |
| 749 | मुज़फ़्फ़र एरज | | مظفر ایرج | 66۔ |
| | इस्बात | | اثبات | |
| 755 | शहनाज़ नबी | | شہناز نبی | 67۔ |
| | अगली रुत की नमाज़ | | اگلی رت کی نماز | |
| | नए युग का ख़्वाब | | نئے یگ کا خواب | |
| | मीनूपॉज़ | | مینو پاز | |

# مقدمہ

اس انتخاب میں بیسویں صدی کے نصف آخر کے نمائندہ نظم گو شعرا کا منتخب کلام شامل ہے۔ اس کی ابتدا اُن شعرا سے کی گئی ہے جو 1950 کے قریب موجود تھے اور نظم کے میدان میں اپنا مقام بنا چکے تھے۔ اس میں ان شعرا کا کلام بھی شامل ہے جو 1950 کے آس پاس اردو نظم کی دنیا میں اعتبار حاصل کر چکے تھے اور 1947 کے سانحۂ عظیم کے بعد اس سرزمین کو خیرباد کہہ کر پاکستان چلے گئے۔ اس انتخاب میں وہ شعرا شامل نہیں ہیں جو 1947 کے بعد پاکستان میں اردو نظم کے میدان میں اُبھرے اور نام پیدا کیا۔ 1947 کے بعد برصغیر ہند و پاک میں کہی گئی اردو نظم کو اس خطے کی جغرافیائی اور سیاسی تقسیم ہی کی طرح ہندوستانی اور پاکستانی نظم کے خانوں میں تقسیم کرنا کس حد تک مناسب ہے، یہ ادبی اور سیاسی بحث کا موضوع ہو سکتا ہے، لیکن ترکِ وطن اور جائے سکونت کے اعتبار سے پاکستانی قرار دیے جانے والے نظم گو شعرا کے کلام کو جغرافیائی اور عملی اسباب کی بنا پر اس انتخاب میں شامل نہ کیا جا سکا۔ وزارتِ ترقیِ انسانی وسائل کے تحت کام کرنے والے خودمختار ادارے قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، نئی دہلی، نے اردو شعر و ادب کی اہم اصناف، مثلاً غزل، نظم، افسانہ، طنز و مزاح کے ایسے انتخابات شائع کرنے کا منصوبہ بنایا ہے جو ہندوستان کی آزادی کے پچاس برسوں کو محیط ہوں۔ اس کے علاوہ ان انتخابات کو اردو اور ناگری دونوں رسومِ خط میں شائع کیا جا رہا ہے تاکہ اس دوران تخلیق کیے جانے والے اردو ادب سے غیر اردو داں قارئین بھی باخبر ہو سکیں۔ یہ انتخاب اسی منصوبے کے تحت ترتیب دیا گیا ہے۔

یہ 1950 کے آس پاس کے تمام اہم نظم گویوں یا 1950 کے بعد اردو نظم کے منظرنامے پر اُبھرنے والی نسل کے تمام شعرا کے کلام کا انتخاب نہیں ہے۔ اس نوع کے کسی بھی انتخاب سے یہ توقع نہیں کی جا سکتی کہ اس میں جس عہد کا احاطہ کیا گیا ہے اس کے تمام شعرا کے کلام کا نمونہ پیش کیا جائے گا۔

اس انتخاب میں شامل نظم گو شعرا کے ناموں پر متعدد بار غور کیا گیا ہے۔ اس کو آخری شکل

# मुक़द्दमा

इस इंतिख़ाब में बीसवीं सदी के निस्फ़ आख़िर के नुमाइन्दा नज़्म-गो शोरा का मुंतख़ब कलाम शामिल है। इसकी इब्तिदा उन शोरा से की गई है जो 1950 के क़रीब मौजूद थे और नज़्म के मैदान में अपना मक़ाम बना चुके थे। इस में उन शोरा का कलाम भी शामिल है जो 1950 के आस-पास उर्दू नज़्म की दुनिया में ऐतबार हासिल कर चुके थे और 1947 के सान्हए अज़ीम के बाद इस सरज़मीन को ख़ैरबाद कह कर पाकिस्तान चले गए। इस इन्तिख़ाब में वो शोरा शामिल नहीं हैं जो 1947 के बाद पाकिस्तान में उर्दू नज़्म के मैदान में उभरे और नाम पैदा किया। 1947 के बाद इस बर्रे सग़ीर में कही गई उर्दू नज़्म को इस ख़ित्ते की जुग़राफ़ियाई और सियासी तक़सीम ही की तरह हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी नज़्म के ख़ानों में तक़सीम करना किस हद तक मुनासिब है, ये अदबी और सियासी बहस का मौज़ू हो सकता है, लेकिन तर्के-वतन और जाए-सुकूनत के ऐतबार से पाकिस्तानी क़रार दिए जाने वाले नज़्म-गो शोरा के कलाम को जुग़राफ़ियाई और अमली असबाब की बिना पर इस इंतिख़ाब में शामिल नहीं किया जा सका। वज़ारते तरक़्क़ीए इंसानी वसाएल के तहत काम करने वाले खुद मुख़्तार इदारे क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़े-उर्दू ज़बान, नई देहली, ने उर्दू शोरा व अदब की अहम असनाफ़, मसलन ग़ज़ल, नज़्म, अफ़साना, तन्ज़ो-मज़ाह के ऐसे इंतिख़ाबात शाए करने का मन्सूबा बनाया है जो हिन्दुस्तान की आज़ादी के पचास बर्सों को मुहीत हों। इसके अलावा इन इंतिख़ाबात को उर्दू और नागरी दोनों रसुमे-ख़त में शाए किया जा रहा है ताकि इस दौरान तख़लीक़ किए जाने वाले उर्दू अदब से ग़ैर-उर्दू-दां क़ारईन भी बाख़बर हो सकें। यह इंतिख़ाब इसी मन्सूबे के तहत तरतीब दिया गया है।

यह 1950 के आस-पास के तमाम अहम नज़्म-गोयों या 1950 के बाद उर्दू नज़्म के मंज़रनामे पर उभरने वाली नस्ल के तमाम शोरा के कलाम का इंतिख़ाब नहीं है। इस नौअ के किसी भी इंतिख़ाब से ये तवक़्क़ो नहीं की जा सकती कि इस में जिस अहद का एहाता किया गया है उसके तमाम शोरा के कलाम का नमूना पेश किया जाएगा।

इस इंतिख़ाब में शामिल नज़्म-गो शोरा के नामों पर मुतअदद्दिद बार ग़ौर किया गया है। इसको आख़िरी शक्ल देने में प्रोफ़ेसर शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी और प्रोफ़ेसर गोपी चन्द नारंग ने

دینے میں پروفیسر شمس الرحمٰن فاروقی اور پروفیسر گوپی چند نارنگ نے فیصلہ کن رول ادا کیا ہے۔
شعرا کے ناموں کی فہرست کو آخری شکل دینے میں بنیادی طور پر شعرا کے معیار کو ترجیح دی گئی ہے۔ اس میں چند ایسے شعرا کا کلام بھی شامل ہے جن کے بارے میں ممکن ہے کہ سخت گیر ناقدین اور قارئین کی رائے مختلف ہو لیکن ان کی شمولیت کا جواز دیگر امور کے علاوہ ان کی مقبولیت بھی فراہم کرتی ہے۔ تاہم، معیار میں قدرے لچک کے باوجود کافی محتاط رویہ اختیار کیا گیا ہے۔ اسی وجہ سے چند معروف نظم گو شعرا اس میں شامل نہیں کیے جا سکے۔ اس میں ان جواں سال نظم گویوں کو بھی شامل نہیں کیا جا سکا جن کی اٹھان تو اچھی ہے لیکن جن کا لہجہ ابھی متعین ہونا باقی ہے۔ ممکن ہے کافی غور و فکر کے باوجود چند شعرا اس میں شامل ہونے سے رہ گئے ہوں۔ اس انتخاب کے سلسلے میں ہم نے اپنے آپ پر جو مختلف قسم کی پابندیاں عائد کر لی تھیں ان میں صفحات کی کمی نے مزید اضافہ کر دیا۔ چونکہ یہ انتخاب اردو اور ناگری دونوں رسوم خط میں شائع ہو رہا ہے اس لیے اس کی طباعت کے لیے جتنے صفحات مختص کیے گئے تھے ان کی تعداد دراصل آدھی رہ گئی۔ صفحات کی کمی کے باعث ان تمام شعرا کو بھی جو ہمارے متعین کردہ معیار پر کھرے اُترتے تھے اس انتخاب میں جگہ نہیں دی جا سکی اور جن کو شامل کیا گیا ہے ان میں سے چند شعرا کی نظموں کی تعداد کم کر دی گئی۔ اس انتخاب میں معدودے چند اہم یا اول درجے کے شعرا کے علاوہ ان غزل گویوں کا کلام شامل نہیں ہے جن کا نام نظم کے میدان میں بھی نمایاں ہے لیکن وہ غزل گو شعرا کی حیثیت سے زیادہ مشہور ہیں۔

فہرست مندرجات میں شعرا کے ناموں کو حروف تہجی کی ترتیب سے رکھنے کے بجائے ان کی تاریخ پیدائش کو اہمیت دی گئی ہے۔ علاوہ ازیں ہم نے اکثر صورتوں میں شعرا کی تاریخ پیدائش، اور جو اس دنیا سے کوچ کر چکے ہیں ان کی تاریخ وفات دے دی ہے۔

اس انتخاب میں شامل شعرا کے کلام میں سے اکثر کے مآخذ ان کے مجموعہ ہائے کلام ہیں۔ ان کا بالاستیعاب مطالعہ کرنے کے بعد ہی ان کو منتخب کیا گیا ہے۔ انتخاب کے اس عمل میں ہم نے نظموں کی ادبی اور شعری اہمیت کو پیش نظر رکھا ہے۔ ہم نے کسی مخصوص شاعر کی مخصوص نظم کی شہرت

फ़ैसलाकुन रोल अदा किया है। शोरा के नामों की फ़ेहरिस्त को आख़िरी शक्ल देने में बुनियादी तौर पर शोरा के मेयार को तरजीह दी गई है। इसमें चन्द ऐसे शोरा का कलाम भी शामिल है जिनके बारे में मुमकिन है कि सख़्तगीर नाक़िदीन और क़ारईन की राय मुख़्तलिफ़ हो लेकिन इनकी शमूलियत का जवाज़ दीगर उमूर के इलावा उनकी मक़बूलियत भी फ़राहम करती है। ताहम मेयार में क़दरे लचक के बावजूद काफ़ी मोहतात रवैया इख़्तियार किया गया है। इसी वजह से चन्द मारूफ़ नज़्मगो शोरा इसमें शामिल नहीं किये जा सके। इसमें उन जवां साल नज़्म-गोयों को भी शामिल नहीं किया जा सका जिनकी उठान तो अच्छी है लेकिन जिनका लहजा अभी मुतऐयिन होना बाक़ी है। मुमकिन है काफ़ी ग़ौरो-फ़िक्र के बावजूद चन्द शोरा इसमें शामिल होने से रह गए हों। इस इंतिख़ाब के सिलसिले में हमने अपने आप पर जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पाबन्दियां आयद करली थीं उनमें सफ़हात की कमी ने मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया। चूँकि यह इंतिख़ाब उर्दू और नागरी दोनों रसुमेख़त में शाए हो रहा है इस लिए इसकी तबाअत के लिए जितने सफ़हात मुख़ातस किए गए थे उनकी तादाद दरअसल आधी रह गई। सफ़हात की कमी के बाइस इन तमाम शोरा को भी जो हमारे मुतऐयिन-कर्दा मेयार पर खरे उतरते थे इस इंतिख़ाब में जगह नहीं दी जा सकी और जिनको शामिल किया गया है उनमें से चन्द शोरा की नज़्मों की तादाद कम कर दी गई है। इस इंतिख़ाब में मादूदे चन्द अहम या अव्वल दर्जे के शोरा के इलावा उन ग़ज़्ल-गोयों का कलाम शामिल नहीं है जिनका नाम नज़्म के मैदान में भी नुमायां है लेकिन वो ग़ज़ल-गो शोरा की हैसियत से ज़्यादा मश्हूर हैं।

फ़िहरिस्ते मुन्दरजात में शोरा के नामों को हुरूफ़े-तहज्जी की तरतीब से रखने के बजाए उनकी तारीख़े-पैदाइश को अहमियत दी गई है। इलावा अज़ीं हमने अकसर सूरतों में शोरा की तारीख़े-पैदाइश और जो इस दुनिया से कूच कर चूके हैं उनकी तारीख़े-वफ़ात दे दी है।

इस इंतिख़ाब में शामिल शोरा के कलाम में से अकसर के मआख़ज़ उनके मजमूआ हाए कलाम हैं। उनका बिलइसतेयाब मुताला करने के बाद ही उनको मुंतख़ब किया गया है। इंतिख़ाब के इस अमल में हमने नज़्मों की अदबी और शेरी अहमियत को पेशे नज़र रखा है। हमने किसी मख़सूस शाइर की मख़सूस नज़्म की शोहरत को उसके इंतिख़ाब की बुनियाद नहीं बनाया है, बल्कि ऐसी नज़्मों की तरफ़ हमारी तवज्जुह ज़रा कम ही रही है। इसके बावजूद अगर ऐसी नज़्मों ने हमें मुतवज्जिह कर लिया

کو اس کے انتخاب کی بنیاد نہیں بنایا ہے۔ بلکہ ایسی نظموں کی طرف ہماری توجہ ذرا کم ہی رہی ہے۔ اس کے باوجود اگر ایسی نظموں نے ہمیں متوجہ کرلیا تو اس کا باعث محض ان کی ادبی اور شعری قدریں ہیں۔ ہماری یہ کوشش رہی ہے کہ کلام کے انتخاب میں شعرا کی نمائندہ نظمیں پیش کی جائیں اور اگر کسی مخصوص شاعر کے ہاں ایک سے زیادہ رنگ و آہنگ ملتا ہے تو اس کی نمائندگی بھی ہو جائے۔

ہمارے ذاتی کتب خانوں میں اس انتخاب میں شامل تمام شعرا کے مجموعہ ہائے کلام موجود نہیں تھے۔ ہم نے ایسے مجموعوں کو جواہر لعل نہرو یونیورسٹی، علی گڑھ مسلم یونیورسٹی، جامعہ ملیہ اسلامیہ اور دہلی یونیورسٹی کی لائبریریوں کے علاوہ نیشنل لائبریری (کلکتہ) اور اپنے چند احباب سے حاصل کیا۔ ہم ان کتب خانوں کے کارکنان اور اپنے ان احباب کے شکر گذار ہیں۔

ہم قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان کے ڈائرکٹر ڈاکٹر محمد حمید اللہ بھٹ کے ممنون ہیں کہ انھوں نے ہمیں اس انتخاب کی ذمہ داری دی۔ ہم قومی کونسل کے ریسرچ اسسٹنٹ ڈاکٹر کلیم اللہ کے بھی شکر گذار ہیں کہ ان کی مستعدی اور بروقت تعاون سے یہ کام مکمل ہوا۔

شمیم حنفی

مظہر مہدی

तो इसका बाइस महज़ उनकी अदबी और शेरी क़दरें हैं। हमारी यह कोशिश रही है कि कलाम के इंतिख़ाब में शोरा की नुमाइन्दा नज़्में पेश की जाएं और अगर किसी मख़सूस शाइर के हां एक से ज़्यादा रंगो-आहंग मिलता है तो उसकी नुमाइन्दगी भी हो जाए।

हमारे ज़ाती कुतुबख़ानों में इस इंतिख़ाब में शामिल तमाम शोरा के मजमूआ-हाए-कलाम मौजूद नहीं थे। हमने ऐसे मजमूओं को जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया और देहली यूनिवर्सिटी की लायब्रेरियों के इलावा नेशनल लायब्रेरी (कलकत्ता) और अपने चन्द अहबाब से हासिल किया। हम उन कुतुबख़ानों के कारकुनान और अपने उन अहबाब के शुक्रगुज़ार हैं।

हम क़ौमी काउन्सिल बराए फ़रोगे-उर्दू ज़बान के डायरेक्टर डा. मोहम्मद हमीदुल्लाह भट्ट के ममनून हैं कि उन्होंने हमें इस इंतिख़ाब की ज़िम्मेदारी दी। हम क़ौमी काउन्सिल के रिसर्च असिस्टेंट डा. कलीमुल्लाह के भी शुक्रगुज़ार हैं कि उनकी मुस्तैदी और बरवक़्त तआवुन से यह काम मुकम्मल हुआ।

शमीम हन्फ़ी
मज़हर मेहदी

جوش ملیح آبادی

# کسان

جھٹپٹے کا نرم رَو دریا، شفق کا اضطراب
کھیتیاں، میدان، خاموشی، غروبِ آفتاب
دشت کے کام و دہن کو، دن کی تلخی سے فراغ
دور دریا کے کنارے، دھندلے دھندلے سے چراغ
زیرِلب، ارض و سما میں، باہمی گفت و شنود
مشعلِ گردُوں کے بجھ جانے سے اِک ہلکا سا دُود
وسعتیں میدان کی، سورج کے چھپ جانے سے تنگ
سبزۂ افسردہ پر، خواب آفریں ہلکا سا رنگ
خامُشی اور خامُشی میں سنسناہٹ کی صدا
شام کی خنکی سے گویا دن کی گرمی کا گلا
اپنے دامن کو برابر قطع سا کرتا ہوا
تیرگی میں کھیتیوں کے درمیاں کا فاصلا
خار و خس پر ایک دردانگیز افسانے کی شان
بامِ گردوں پر کسی کے روٹھ کر جانے کی شان
دوب کی خوشبو میں شبنم کی نمی سے اِک سرُور
چرخ پر بادل، زمیں پر تتلیاں، سر پر طیور

**जोश मलीहाबादी**

# किसान

झुटपुटे का नर्म रौ दरिया, शफ़क़[1] का इज़्तिराब[2]
खेतियां, मैदान, ख़ामोशी, ग़ुरूबे आफ़ताब[3]
दश्त[4] के कामो दहन को, दिन की तल्ख़ी से फ़राग़[5]
दूर दरिया के कनारे धुंदले-धुंदले से चराग़
ज़ेरे लब, अर्ज़ो समा[6] में, बाहमी गुफ़्तो शुनूद[7]
मश्अले गर्दूं[8] के बुझ जाने से इक हल्का सा दूद[9]
वुस्अतें[10] मैदान की, सूरज के छुप जाने से तंग
सब्ज़ए अफ़सुर्दा पर, ख़्वाब आफ़रीं हल्का सा रंग
ख़ामुशी और ख़ामुशी में सनसनाहट की सदा
शाम की ख़ुनकी से गोया दिन की गर्मी का गिला
अपने दामन को बराबर क़तअ्[11] सा करता हुआ
तीरगी[12] में खेतियों के दरमियां का फ़ासला
ख़ारो ख़स[13] पर एक दर्दअंगेज़ अफ़साने की शान
बामे गर्दूं पर किसी के रूठ कर जाने की शान
दूब की ख़ुश्बू में शबनम की नमी से इक सुरूर
चर्ख़ पर बादल, ज़मीं पर तितलियां, सर पर तुयूर[14]

1. उषा
2. घबराहट, उतावलापन
3. सूरज का डूबना
4. जंगल
5. फ़ुर्सत, छुट्टी
6. ज़मीन और आसमान
7. कहना-सुनना
8. आकाश की मशाल
9. धुंआ
10. विस्तार, फैलाव
11. विच्छेद
12. अंधेरा
13. कांटा और घास
14. ताइर (पक्षी) का बहुवचन

پارہ پارہ ابر، سرخی، سرخیوں میں کچھ دھواں
بھولی بھٹکی سی زمیں، کھویا ہوا سا آسماں
پتّیاں مخمور، کلیاں آنکھ جھپکاتی ہوئی
نرم جاں پودوں کو گویا نیند سی آتی ہوئی

یہ سماں اور اک قوی انسان، یعنی کاشتکار
ارتقا کا پیشوا، تہذیب کا پروردگار
طفلِ باراں، تاجدارِ خاک، امیرِ بوستاں
ماہرِ آئینِ قدرت، ناظمِ بزمِ جہاں
ناظرِ گُل، پاسبانِ رنگ و بو، گلشن پناہ
ناز پرور لہلہاتی کھیتیوں کا بادشاہ
وارثِ اسرارِ فطرت، فاتحِ امید و بیم
محرمِ آثارِ باراں، واقفِ طبعِ نسیم
صبح کا فرزند، خورشیدِ زر افشاں کا علَم
محنتِ پیہم کا ''پیماں'' سخت کوشی کی قسم
جلوۂ قدرت کا شاہد، حسنِ فطرت کا گواہ
ماہ کا دل، مہرِ عالم تاب کا نورِ نگاہ
قلب پر جس کے نمایاں نور و ظلمت کا نظام
منکشف جس کی فراست پر مزاجِ صبح و شام
خون ہے جس کی جوانی کا بہارِ روزگار
جس کے اشکوں پر، فراغت کے تبسم کا مدار
جس کی محنت کا عرق تیار کرتا ہے شراب
اُڑ کے جس کا رنگ بن جاتا ہے جاں پرور گلاب

पारा-पारा अब्र[1], सुर्ख़ी, सुर्ख़ियों में कुछ धुआं
भूली-भटकी-सी ज़मीं, खोया हुआ-सा आस्मां
पत्तियां मख़्मूर, कलियां आंख झपकाती हुई
नर्म जां पौदों को गोया नींद-सी आती हुई

ये समां और इक क़वी[2] इंसान, यानी काश्तकार
इर्तिक़ा[3] का पेश्वा, तहज़ीब का परवरदिगार
तिफ़्ले बारां, ताजदारे ख़ाक, अमीरे बोस्तां
माहिरे आईने क़ुदरत नाज़िमे बज़्मे जहां
नाज़िरे गुल, पास्बाने रंगो बू, गुलशन-पनाह
नाज़ परवर लहलहाती खेतियों का बादशाह
वारिसे असरारे फ़ित्रत, फ़ातेहे उम्मीदो बीम
महरमे आसारे बारां, वाक़िफ़े तबए नसीम
सुब्ह का फ़र्ज़न्द[4], ख़ुर्शीदे ज़र अफ़शां का अलम
मेहनते पैहम का 'पैमां' सख़्त कोशी की क़सम
जलवए क़ुदरत का शाहिद[5], हुस्ने फ़ित्रत का गवाह
माह का दिल, मेह्रे आलम ताब का नूरे निगाह
क़ल्ब[6] पर जिसके नुमायां नूरो ज़ुल्मत का निज़ाम
मुन्कशिफ़ जिसकी फ़िरासत[7] पर मिज़ाजे सुब्हो शाम
ख़ून है जिसकी जवानी का बहारे रोज़गार
जिसके अश्कों पर फ़रागत के तबस्सुम का मदार
जिसकी मेहनत का अरक़ तैयार करता है शराब
उड़ के जिसका रंग बन जाता है जां-परवर गुलाब

1. बादल, घटा
2. मज़बूत
3. प्रगति, उन्नति
4. बेटा
5. गवाह
6. दिल
7. अक़्लमन्दी

قلبِ آہن جس کے نقشِ پا سے ہوتا ہے رقیق
شعلہ خو جھونکوں کا ہمدم، تیز کرنوں کا رفیق

خون جس کا بجلیوں کی انجمن میں باریاب
جس کے سر پر جگمگاتی ہے کُلاہِ آفتاب

لہر کھاتا ہے رگِ خاشاک میں جس کا لہُو
جس کے دل کی آنچ بن جاتی ہے سیلِ رنگ و بو

دوڑتی ہے رات کو جس کی نظر افلاک پر
دن کو جس کی انگلیاں رہتی ہیں نبضِ خاک پر

جس کی جانکاہی سے ٹپکاتی ہے امرت نبضِ تاک
جس کے دم سے لالہ و گُل بن کے اتراتی ہے خاک

سازِ دولت کو عطا کرتی ہے نغمے جس کی آہ!
مانگتا ہے بھیک تابانی کی جس سے روئے شاہ

خون جس کا دوڑتا ہے نبضِ استقلال میں
لوچ بھر دیتا ہے جو شہزادیوں کی چال میں

جس کے ماتھے کے پسینے سے پئے عزّ و وقار
کرتی ہے دریوزۂ تابش کُلاہِ تاجدار

سرنگوں رہتی ہیں جس سے قوتیں تخریب کی
جس کے بوتے پر لچکتی ہے کمر تہذیب کی

جس کی محنت سے پھبکتا ہے تن آسانی کا باغ
جس کی عظمت کی ہتھیلی پر تمدن کا چراغ

جس کے بازو کی صلابت پر نزاکت کا مدار
جس کے کَس بل پر اکڑتا ہے غرورِ شہریار

دھوپ کے جھلسے ہوئے رُخ پر مشقت کے نشاں
کھیت سے پھیرے ہوئے منھ، گھر کی جانب ہے رواں

## 6

कल्बे आहन जिसके नक़्शे-पा से होता है रक़ीक़
शोला ख़ू झोंकों का हमदम, तेज़ किरनों का रफ़ीक़
ख़ून जिसका बिजलियों की अन्जुमन में बारयाब
जिसके सर पर जगमगाती है कुलाहे आफ़ताब
लहर खाता है रगे ख़ाशाक में जिसका लहू
जिसके दिल की आंच बन जाती है सैले रंगो बू
दौड़ती है रात को जिसकी नज़र अफ़लाक[1] पर
दिन को जिसकी उंगलियां रहती हैं नब्ज़े ख़ाक पर
जिसकी जांकाही से टपकाती है अमृत नब्ज़े ताक
जिसके दम से लालओ गुल बन के इतराती है ख़ाक
साज़े दौलत को अता करती है नग़्मे जिसकी आह!
मांगता है भीक ताबानी[2] की जिससे रुए[3] शाह
ख़ून जिसका दौड़ता है नब्ज़े इस्तिक़लाल में
लोच भर देता है जो शहज़ादियों की चाल में
जिसके माथे के पसीने से पए इज़्ज़ो वक़ार[4]
करती है दर्यूज़ए ताबिश कुलाहे ताजदार
सरनिगूं रहती है जिससे कुव्वतें तख़रीब[5] की
जिसके बूते पर लचकती है कमर तहज़ीब की
जिसकी मेहनत से फबकता है तन-आसानी का बाग़
जिसकी ज़ुल्मत की हतेली पर तमद्दुन का चराग़
जिसके बाज़ू की सलाबत[6] पर नज़ाकत का मदार
जिसके कस बल पर अकड़ता है ग़ुरूरे शहरयार

धूप के झुलसे हुये रुख़ पर मशक़्क़त के निशां
खेत से फेरे हुये मुंह, घर की जानिब है रवां

1. फ़लक (आस्मान) का बहुवचन 2. चमक
3. बादशाह का चेहरा 4. प्रतिष्ठा
5. तोड़ फोड़ की ताक़त 6. सख़्ती

ٹوکرا سر پر، بغل میں پھاوڑا، تیوری پہ بَل
سامنے بیلوں کی جوڑی، دوش پر مضبوط ہَل

کون ہل؟ ظلمت شکن، قندیلِ بزمِ آب وگِل
قصرِ گلشن کا دریچہ، سینۂ گیتی کا دل

خوش نما شہروں کا بانی، رازِ فطرت کا سراغ
خاندانِ تیغِ جوہردار کا چشم و چراغ

دھار پر جس کی چمن پرور شگوفوں کا نظام
شامِ زیرارض کو صبحِ درخشاں کا پیام

ڈوبتا ہے خاک میں جو روح دوڑاتا ہوا
مضمحل ذرّوں کی موسیقی کو چونکاتا ہوا

جس کے چھو جاتے ہی مثلِ نازنینِ مہ جبیں
کروٹوں پر کروٹیں لیتی ہے لیلائے زمیں

پردہ ہائے خواب ہو جاتے ہیں جس سے چاک چاک
مسکرا کر اپنی چادر کو ہٹا دیتی ہے خاک

جس کی تابش میں درخشانی ہلالِ عید کی
خاک کے مایوس مطلع پر کرن اُمید کی

جس کا مَس خاشاک میں بُنتا ہے اِک چادر مہین
جس کا لوہا مان کر، سونا اُگلتی ہے زمین

ہَل پہ دہقاں کے چمکتی ہیں شفق کی سرخیاں
اور دہقاں سر جھکائے گھر کی جانب ہے رواں

اُس سیاسی رتھ کے پہیّوں پر جمائے ہے نظر
جس میں آ جاتی ہے تیزی کھیتیوں کو روند کر

اپنی دولت کو جگر پر تیرِ غم کھاتے ہوئے
دیکھتا ہے ملکِ دشمن کی طرف جاتے ہوئے

टोकरा सर पर, बग़ल में फावड़ा, त्योरी पे बल
सामने बैलों की जोड़ी, दोश[1] पर मज़बूत हल
कौन हल? ज़ुल्मत शिकन, क़न्दीले बज़्मे आबो गिल
क़स्रे गुलशन का दरीचा, सीन-ए-गेती[2] का दिल
ख़ुशनुमा शहरों का बानी[3], राज़े फ़ित्रत का सुराग़
ख़ानदाने तेग़े जौहरदार का चश्मो चराग़
धार पर जिसकी चमन परवर शिगूफ़ों का निज़ाम
शामे ज़ेरे अर्ज़ को सुब्हे दरख़्शा का पयाम
डूबता है ख़ाक में जो रूह दौड़ाता हुआ
मुज़्महिल ज़र्रों की मूसीक़ी को चौंकाता हुआ
जिसके छू जाते ही मिस्ले नाज़नीने महजबीं
करवटों पर करवटें लेती है लैला-ए-ज़मीं
पर्दा हाए ख़्वाब हो जाते हैं जिससे चाक-चाक
मुस्कुराकर अपनी चादर को हटा देती है ख़ाक
जिसकी ताबिश में दरख़्शानी हिलाले ईद की
ख़ाक के मायूस मत्‌ले पर किरन उम्मीद की
जिसका मस ख़ाशाक में बुनता है इक चादर महीन
जिसका लोहा मानकर, सोना उगलती है ज़मीन
हल पे दहक़ां के चमकती हैं शफ़क़ की सुर्ख़ियां
और दहक़ां सर झुकाए घर की जानिब है रवां
उस सियासी रथ के पहियों पर जमाये है नज़र
जिसमें आ जाती है तेज़ी खेतियों को रौंद कर
अपनी दौलत को जिगर पर तीरे ग़म खाते हुये
देखता है मुल्के दुश्मन की तरफ़ जाते हुये

1. कंधा
2. दुनिया का सीना
3. निर्माता

قطع ہوتی ہی نہیں تاریکیِ حرماں سے راہ
فاقہ کش بچوں کے دھندلے آنسوؤں پر ہے نگاہ

پھر رہا ہے خونچکاں آنکھوں کے نیچے بار بار
گھر کی نااُمید دیوی کا شبابِ سوگوار

سوچتا جاتا ہے کن آنکھوں سے دیکھا جائے گا
بے رِدا بیوی کا سر، بچوں کا منہ اُترا ہوا

سیم و زر، نان و نمک، آب و غذا، کچھ بھی نہیں
گھر میں اِک خاموش ماتم کے سِوا کچھ بھی نہیں

ایک دل اور یہ ہجومِ سوگواری! ہائے ہائے
یہ ستم، اے سنگدل سرمایہ داری ہائے ہائے

تیری آنکھوں میں ہیں غلطاں وہ شقاوت کے شرار
جن کے آگے خنجرِ چنگیز کی مڑتی ہے دھار

بیکسوں کے خون میں ڈوبے ہوئے ہیں تیرے ہات
کیا چبا ڈالے گی او کمبخت! ساری کائنات؟

ظلم، اور اِتنا! کوئی حد بھی ہے اس طوفان کی
بوٹیاں ہیں تیرے جبڑوں میں غریب انسان کی

دیکھ کر تیرے ستم، اے حامیِ امن و اماں!
گرگ رہ جاتے ہیں دانتوں میں دبا کر انگلیاں

ادّعائے پیرویٔ دین و ایماں، اور تو!
دیکھ اپنی کُہنیاں، جن سے ٹپکتا ہے لہو

ہاں سنبھل جا اب کہ زہرے اہلِ دل کے آب ہیں
کتنے طوفاں تیری کشتی کے لیے بے تاب ہیں

●

क़त्अ होती ही नहीं तारीकिये हिरमां से राह
फ़ाक़ा-कश बच्चों के धुंदले आंसुओं पर है निगाह
फिर रहा है ख़ूं-चकां आंखों के नीचे बार-बार
घर की ना उम्मीद देवी का शबाबे सोगवार
सोचता जाता है किन आंखों से देखा जायेगा
बेरिदा बीवी का सर, बच्चों का मुंह उतरा हुआ
सीमो ज़र, नानो नमक, आबो गिज़ा, कुछ भी नहीं
घर में इक ख़ामोश मातम के सिवा कुछ भी नहीं
एक दिल और ये हुजूमे सोगवारी! हाय हाय
ये सितम, ऐ संग् दिल सरमायादारी हाय हाय
तेरी आंखों में हैं ग़लतां वो शक़ावत के शरार
जिनके आगे ख़न्जरे चंगेज़ की मुड़ती है धार
बेकसों के ख़ून में डूबे हुये हैं तेरे हात
क्या चबा डालेगी ओ कमबख़्त! सारी काइनात
ज़ुल्म और इतना! कोई हद भी है इस तूफ़ान की
बोटियां हैं तेरे जबड़ों में ग़रीब इन्सान की
देखकर तेरे सितम ऐ हामिए अम्नो अमां!
गुर्ग रह जाते हैं दांतों में दबाकर उंगलियां
इद्दआ - ए - पैरवी - ए - दीनों ईमां, और तू!
देख अपनी कुहनियां, जिनसे टपकता है लहू
हां संभल जा अब कि ज़हरे अह्ले दिल के आब हैं
कितने तूफ़ां तेरी कश्ती के लिये बेताब हैं

●

## شکستِ زنداں کا خواب

کیا ہند کا زنداں کانپ رہا ہے گونج رہی ہیں تکبیریں
اُکتائے ہیں شاید کچھ قیدی اور توڑ رہے ہیں زنجیریں
دیواروں کے نیچے آ آ کر یوں جمع ہوئے ہیں زندانی
سینوں میں تلاطم بجلی کا، آنکھوں میں جھلکتی شمشیریں
بھوکوں کی نظر میں بجلی ہے، توپوں کے دہانے ٹھنڈے ہیں
تقدیر کے لب کو جنبش ہے، دم توڑ رہی ہیں تدبیریں
آنکھوں میں گدا کی سرخی ہے، بے نور ہے چہرہ سلطاں کا
تخریب نے پرچم کھولا ہے، سجدے میں پڑی ہیں تعمیریں
کیا اُن کو خبر تھی، زیر و زبر رکھتے تھے جو روحِ ملّت کو
اُبلیں گے زمیں سے مارِ سیہ، برسیں گی فلک سے شمشیریں
کیا اُن کو خبر تھی، سینوں سے جو خون چرایا کرتے تھے
اِک روز اسی بے رنگی سے جھلکیں گی ہزاروں تصویریں
کیا اُن کو خبر تھی، ہونٹوں پر جو قفل لگایا کرتے تھے
اک روز اسی خاموشی سے ٹپکیں گی دہکتی تقریریں
سنبھلو، کہ وہ زنداں گونج اُٹھا، جھپٹو کہ وہ قیدی چھوٹ گئے
اُٹھو کہ وہ بیٹھیں دیواریں، دوڑو کہ وہ ٹوٹی زنجیریں

●

## البیلی صبح

نظر جھکائے عروسِ فطرت، جبیں سے زلفیں ہٹا رہی ہے
سحر کا تارا ہے زلزلے میں، اُفق کی لَو تھرتھرا رہی ہے

## शिकस्ते ज़िन्दां का ख़्वाब

क्या हिन्द का ज़िंदां[1] कांप रहा है गूंज रही हैं तकबीरें
उकताये हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़ंजीरें
दीवारों के नीचे आ आकर यूं जमा हुये हैं ज़िन्दानी[2]
सीनों में तलातुम[3] बिजली का, आंखों में झलकती शमशीरें[4]
भूकों की नज़र में बिजली है, तोपों के दहाने ठंडे हैं
तक़दीर के लब को जुम्बिश है, दम तोड़ रही हैं तदबीरें
आंखों में गदा की सुर्ख़ी है, बेनूर है चेहरा सुलतां का
तख़रीब ने परचम खोला है, सजदे में पड़ी हैं तामीरें
क्या उनको ख़बर थी, ज़ेरो ज़बर रखते थे जो रूहे मिल्लत को
उबलेंगे ज़मीं से मारे सियह, बरसेंगी फ़लक से शमशीरें
क्या उनको ख़बर थी, सीनों से जो ख़ून चुराया करते थे
इक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारों तस्वीरें
क्या उनको ख़बर थी, होंटों पर जो क़ुफ़्ल[5] लगाया करते थे
इक रोज़ इसी ख़ामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें
संभलो, कि वो ज़िन्दां गूंज उठा, झपटो कि वो क़ैदी छूट गये
उट्ठो कि वो बैठीं दीवारें, दौड़ो कि वो टूटी ज़ंजीरें

●

## अलबेली सुब्ह

नज़र झुकाये उरूसे फ़ित्रत, जबीं[6] से ज़ुल्फ़ें हटा रही है
सहर का तारा है ज़लज़ले में, उफ़ुक़ की लौ थरथरा रही है

1. क़ैदख़ाना
2. क़ैदी
3. हलचल
4. तलवारें
5. ताला
6. पेशानी

روش روش نغمۂ طرب ہے، چمن چمن جشنِ رنگ و بو ہے
طیور شاخوں پہ ہیں غزلخواں، کلی کلی گنگنا رہی ہے
ستارۂ صبح کی رسیلی جھپکتی آنکھوں میں ہیں فسانے
نگارِ مہتاب کی نشیلی نگاہ جادو جگا رہی ہے
طیور بزمِ سحر کے مطرب، لچکتی شاخوں پہ گا رہے ہیں
نسیم فردوس کی سہیلی، گلوں کو جھولا جھلا رہی ہے
کلی پہ بیلے کی کس ادا سے، پڑا ہے شبنم کا ایک موتی
نہیں، یہ ہیرے کی کیل پہنے، کوئی پری مسکرا رہی ہے
سحر کو مدِ نظر ہیں کتنی رعایتیں چشمِ خوں فشاں کی
ہوا بیاباں سے آنے والی، لہو میں سرخی بڑھا رہی ہے
شلوکا پہنے ہوئے گلابی، ہر اک سُبک پنکھڑی چمن میں
رنگی ہوئی سرخ اوڑھنی کا، ہوا میں پلّو سکھا رہی ہے
فلک پہ اس طرح چھپ رہے ہیں، ہلال کے گرد وپیش تارے
کہ جیسے کوئی نئی نویلی، جبیں سے افشاں چھڑا رہی ہے
کھٹک یہ کیوں دل میں ہو چلی پھر؟ چٹکتی کلیو! ذرا ٹھہرنا
ہوائے گلشن کی نرم رو میں، یہ کس کی آواز آ رہی ہے؟

●

## بدلی کا چاند

خورشید، وہ دیکھو ڈوب گیا، ظلمت کا نشاں لہرانے لگا
مہتاب، وہ ہلکے بادل سے، چاندی کے ورق برسانے لگا
وہ سانولے پن پر میداں کے، ہلکی سی صباحت دوڑ چلی
تھوڑا سا اُبھر کر بادل سے، وہ چاند جبیں جھلکانے لگا
لو ڈوب گیا پھر بادل میں، بادل میں وہ خط سے دوڑ گئے
لو، پھر وہ گھٹائیں چاک ہوئیں، ظلمت کا قدم تھرّانے لگا

रविश रविश नग़्मए तरब है, चमन चमन जश्ने रंगो बू है
तुयूर शाख़ों पे हैं ग़ज़लख़्वां, कली कली गुनगुना रही है
सितारए सुब्ह की रसीली झपकती आंखों में हैं फ़साने
निगारे महताब की नशीली निगाह जादू जगा रही है
तुयूर बज़्मे सहर के मुतरिब[1], लचकती शाख़ों पे गा रहे हैं
नसीम फ़िरदौस की सहेली, गुलों को झूला झुला रही है
कली पे बेले की किस अदा से, पड़ा है शबनम का एक मोती
नहीं, ये हीरे की कील पहने, कोई परी मुस्करा रही है
सहर को मद्देनज़र हैं कितनी रिआयतें चश्मे ख़ूं फ़िशां की
हवा बयाबां से आने वाली, लहू में सुर्ख़ी बढ़ा रही है
शलूका पहने हुये गुलाबी, हर इक सुबक पंखड़ी चमन में
रंगी हुयी सुर्ख़ ओढ़नी का, हवा में पल्लू सुखा रही है
फ़लक पे इस तरह छुप रहे हैं, हिलाल के गिर्दो पेश तारे
कि जैसे कोई नयी नवेली, जबीं से अफ़शां छुड़ा रही है
खटक ये क्यों दिल में हो चली फिर? चटकती कलियो! ज़रा ठहरना
हवायें गुलशन की नर्म रौ में, ये किसकी आवाज़ आ रही है?

●

## बदली का चाँद

ख़ुर्शीद वो देखो डूब गया, ज़ुल्मत का निशां लहराने लगा
महताब वो हलके बादल से, चांदी के वरक़ बरसाने लगा
वो सांवलेपन पर मैदां के, हल्की सी सबाहत दौड़ चली
थोड़ा सा उभर कर बादल से, वो चांद जबीं झलकाने लगा
लो, डूब गया फिर बादल में, बादल में वो ख़त से दौड़ गये
लो, फिर वो घटायें चाक हुयीं, ज़ुल्मत का क़दम थर्राने लगा

1. गाने वाला

بادل میں چھپا، تو کھول دئے، بادل میں دریچے ہیرے کے
گردوں پہ جو آیا، تو گردوں، دریا کی طرح لہرانے لگا
سمٹی جو گھٹا، تاریکی میں چاندی کے سفینے لے کے چلا
سنکی جو ہوا، تو بادل کے گرداب میں غوطے کھانے لگا
غرفوں سے جو جھانکا گردوں کے، امواج کی نبضیں تیز ہوئیں
حلقوں میں جو دوڑا بادل کے، کہسار کا سر چکرانے لگا
پردہ جو اُٹھایا بادل کا، دریا پہ تبسم دوڑ گیا
چلمن جو گرائی بدلی کی، میدان کا دل گھبرانے لگا
اُبھرا تو تجلّی دوڑ گئی، ڈوبا تو فلک بے نور ہوا
اُلجھا، تو سیاہی دوڑا دی، سلجھا تو ضیا برسانے لگا
کیا کاوشِ نور و ظلمت ہے، کیا قید ہے، کیا آزادی ہے
انساں کی تڑپتی فطرت کا، مفہوم سمجھ میں آنے لگا

•

## کیا گلبدنی ہے

کس درجہ فسوں کار وہ اللہ غنی ہے
کیا موجۂ تابندگی وسیم تنی ہے
انداز ہے یا جذبۂ گردوں زدنی ہے
آواز ہے یا بربطِ ایماں شکنی ہے
جنگل کی سیہ رات ہے یا زُلف گھنی ہے
کیا گلبدنی، گلبدنی، گلبدنی ہے
یہ لے ہے کہ کھلتی ہوئی غنچے کی کمانی
مہکا ہوا یہ تن ہے کہ یہ رات کی رانی

बादल में छुपा, तो खोल दिये, बादल में दरीचे हीरे के
गर्दूं पे जो आया, तो गर्दूं, दरिया की तरह लहराने लगा
सिमटी जो घटा, तारीकी में चांदी के सफ़ीने ले के चला
सनकी जो हवा, तो बादल के गिर्दाब में ग़ोते खाने लगा
गुफ़ों[1] से जो झांका गर्दूं के, अमवाज[2] की नब्ज़ें तेज़ हुयीं
हलक़ों में जो दौड़ा बादल के, कोहसार का सर चकराने लगा
पर्दा जो उठाया बादल का, दर्या पे तबस्सुम दौड़ गया
चिलमन जो गिरायी बदली की, मैदान का दिल घबराने लगा
उभरा तो तजल्ली[3] दौड़ गयी, डूबा तो फ़लक बेनूर हुआ
उलझा, तो सियाही दौड़ा दी, सुलझा तो ज़िया बरसाने लगा
क्या काविशे नूरो ज़ुल्मत है, क्या क़ैद है, क्या आज़ादी है
इंसां की तड़पती फ़ित्रत का, मफ़हूम समझ में आने लगा

●

## क्या गुलबदनी है

किस दर्जा फ़सूंकार[4] वो अल्लाहो-ग़नी है
क्या मौजए ताबंदगीओ-सीम तनी है
अन्दाज़ है या जज़्बए गर्दूं ज़दनी है
आवाज़ है या बर्बते ईमां शिकनी है
जंगल की सियह रात है या ज़ुल्फ़ घनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है
ये लय है कि खिलती हुयी ग़ुन्चे की कमानी
महका हुआ ये तन है कि ये रात की रानी

1. खिड़कियों
2. मौज का बहुवचन
3. रौशनी
4. जादू करने वाला

لہجے کی یہ رَو ہے کہ برستا ہوا پانی
لرزش میں یہ مژگاں ہے کہ پریوں کی کہانی

یہ سرخیِ لب ہے کہ عقیقِ یمنی ہے
کیا گل بدنی، گل بدنی، گل بدنی ہے

محراب ہے رخسار کے پرتو سے زرافشاں
زلفوں میں شبِ تار ہے آنکھوں میں چراغاں

مہندی کی سجاوٹ کہ ہتھیلی پہ گلستاں
یا حلقۂ عشاق میں ہے چہرۂ تاباں

یا خاتمِ تابندہ پہ ہیرے کی کنی ہے
کیا گلبدنی، گلبدنی، گلبدنی ہے

سینے پہ یہ پلّو ہے کہ اک موج حبابی
ماتھا ہے کہ اک صبح کا پرتو ہے شہابی

آنکھیں ہیں کہ بہکے ہوئے دو مست شرابی
پیکر ہے کہ انسان کے سانچے میں گلابی

گیسو ہیں کہ گل بازیِ مشک ختنی ہے
کیا گل بدنی، گل بدنی، گل بدنی ہے

کاکل میں درخشاں ہے یہ پیشانیِ رقصاں
یا سایۂ ظلمات میں ہے چشمۂ حیواں

ہاتھوں پہ ہے یہ چہرہ کہ ہے رحل پہ قرآں
اور چہرۂ گل رنگ میں غلطاں و خروشاں

رخشندگیِ خونِ رگِ یاسمنی ہے
کیا گلبدنی، گلبدنی، گلبدنی ہے

عشوے ہیں کہ اک فوج کھڑی لوٹ رہی ہے
چھل بل ہے کہ چھاتی کوز میں ٹوٹ رہی ہے

انگڑائی کا خم ہے کہ دھنک ٹوٹ رہی ہے
مکھڑا ہے کہ پربت پہ کرن پھوٹ رہی ہے

लहजे की ये रौ है कि बरसाता हुआ पानी
लरज़िश में ये मिज़गां[1] है कि परियों की कहानी
ये सुर्ख़िये लब है कि अक़ीक़े यमनी[2] है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

मेहराब है रुख़सार के परतौ से ज़र अफ़शां
ज़ुल्फ़ों में शबे तार है आंखों में चरागां
मेहंदी की सजावट कि हथेली पे गुलिस्तां
या हल्क़ए उश्शाक़ में है चेहरए ताबां
या ख़ातमे ताबन्दा पे हीरे की कनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

सीने पे ये पल्लू है कि इक मौजे हयाबी
माथा है कि इक सुब्ह का परतौ है शहाबी
आंखें हैं कि बहके हुये दो मस्त शराबी
पैकर है कि इन्सान के सांचे में गुलाबी
गेसू हैं कि गुल बाज़िये मुश्के ख़ुतनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

काकुल में दरख़शां है ये पेशानिये रक्सां
या सायए ज़ुल्मात में है चश्मए हैवां
हाथों पे है ये चेहरा कि है रेहल पे क़ुरआं
और चेहरए गुल रंग में ग़लतांओ ख़रोशां
रख़्शन्दगीए ख़ूने रगे यासिमनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

इश्वे हैं कि इक फ़ौज खड़ी लूट रही है
छल बल है कि छाती को ज़मीं कूट रही है
अंगड़ाई का ख़म है कि धनक टूट रही है
मुखड़ा है कि परबत पे किरन फूट रही है

1. पलकें
2. यमन का एक लाल रंग का पत्थर

قامت ہے کہ برنائیِ سروِ چمنی ہے
کیا گلبدنی، گلبدنی، گلبدنی ہے

تن میں ہے وہ خوشبو کہ ہیں گل سر بہ گریباں
چہرے پہ وہ سرخی ہے کہ حیران گلستاں

وہ چال میں ہے لوچ کہ شاخیں ہیں پشیماں
اور لعلِ گہر بار پہ وہ نغمہ ہے غلطاں

وہ نغمہ کہ اک ولولۂ شعلہ زنی ہے
کیا گل بدنی، گل بدنی، گل بدنی ہے

گردن میں چندن ہار ہے ہاتھوں میں ہے کنگن
اٹھتے ہوئے عشوے ہیں گرجتا ہوا جوبن

جولاں ہے جوانی کے دھندلکے میں لڑکپن
کورا ہے جو پنڈا تو جنوں خیز ہے اُبٹن

گل رنگ شلوکا ہے قبا نارونی ہے
کیا گل بدنی، گل بدنی، گل بدنی ہے

خلوت میں وہ تسلیم ہے جلوت میں تحکم
ساحل پہ سبک موج سفینے میں تلاطم

حجرے میں خموشی ہے شبستاں میں تکلّم
خیمے میں تنک آہ خیالوں میں ترنّم

آغوش میں تلوار ہے گھونگھٹ میں بنی ہے
کیا گلبدنی، گلبدنی، گلبدنی ہے

ہر نقشِ قدم پر ہے فدا تاجِ کیانی
ہر گام میں ہے چشمۂ کوثر کی روانی

ہر ایک بُنِ مُو سے اُبلتی ہے جوانی
اُٹھتی ہے مسامات سے یوں بھاپ سی دھانی

گویا کوئی مہکی ہوئی چادر سی تنی ہے
کیا گل بدنی، گل بدنی، گل بدنی ہے

●●●

क़ामत है कि बर्नाइये सर्वे चमनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

तन में है वो ख़ुश्बू कि हैं गुल सर-ब-गिरेबां
चेहरे पे वो सुर्ख़ी है कि हैरान गुलिस्तां

वो चाल में है लोच कि शाख़ें है पशेमां
और लाले गोहर-बार पे वो नग़्मा है ग़लतां

वो नग़्मा कि इक वलवलए शोला ज़नी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

गर्दन में चन्दन हार है हाथों में है कंगन
उमडते हुये इश्वे हैं गरजता हुआ जोबन

जौला है जवानी के धुंदलके में लड़कपन
कोरा है जो पिंडा तो जुनूंख़ेज़ है उबटन

गुलरंग शलूका है क़बा नारदनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

ख़ल्वत में वो तस्लीम है जलवत मे तहक्कुम
साहिल पे सुबुक मौज सफ़ीने में तलातुम

हुजरे में ख़मोशी है शबिस्तां में तकल्लुम
ख़ेमे में तुनुक आह ख़्यालों में तरन्नुम

आग़ोश में तलवार है घूंघट में बनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

हर नक़्शे क़दम पर है फ़िदा ताजे कयानी
हर गाम में है चश्मए कौसर की रवानी

हर एक बुने मू से उबलती है जवानी
उठती है मसामात से यूं भाप सी धानी

गोया कोई महकी हुयी चादर सी तनी है
क्या गुलबदनी, गुलबदनी, गुलबदनी है

●●●

مخدوم محی الدین

# انقلاب

اے جانِ نغمہ جہاں سوگوار کب سے ہے
ترے لیے یہ زمیں بے قرار کب سے ہے
ہجومِ شوق سرِ رہگذار کب سے ہے
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے
نہ تابناکیِ رُخ ہے نہ کاکلوں کا ہجوم
ہے ذرّہ ذرّہ پریشاں کلی کلی مغموم
ہے گُل جہاں متعفّن ہوائیں سب مسموم
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے
رخِ حیات پہ کاکُل کی برہمی ہی نہیں
نگارِ دہر میں اندازِ مریمی ہی نہیں
مسیح و خضر کی کہنے کو کچھ کمی ہی نہیں
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے
حیات بخش ترانے اَسیر ہیں کب سے
گلوئے زہرہ میں پیوست تیر ہیں کب سے
قفس میں بند ترے ہم صفیر ہیں کب سے
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے

मख़्दूम मुहीउद्दीन

# इंक़लाब

ए जाने नग़मा जहां[1] सोगवार[2] कब से है
तिरे लिए ये ज़मी बेक़रार कब से है
हुजूमे शौक़[3] सरे रहगुज़ार[4] कब से है
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है

न ताबनाकिए रुख़[5] है न काकुलों[6] का हुजूम
है ज़र्रा ज़र्रा परेशां कली कली मग़मूम[7]
है कुल जहां मुतअफ़्फ़िन[8] हवाएं सब मसमूम[9]
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है

रुख़े हयात[10] पे काकुल की बर्हमी ही नहीं
निगारे दहर[11] में अंदाज़े मर्यमी ही नहीं
मसीहो ख़िज़्र की कहने को कुछ कमी ही नहीं
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है

हयात बख़्श तराने असीर[12] हैं कब से
गुलूए ज़ुहरा[13] में पेवस्त[14] तीर हैं कब से
क़फ़स में बंद तिरे हमसफ़ीर[15] हैं कब से
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है

1. दुनिया
2. शोकग्रस्त
3. शौक़ की भीड़
4. आम रास्ता
5. चेहरे की चमक
6. लटों
7. ग़मगीन
8. बदबूदार
9. ज़हरीली
10. ज़िन्दगी के चेहरे
11. दुनिया की तस्वीर
12. क़ैदी
13. संगीत के सितारे का गला
14. छुपा हुआ
15. साथी

حرم کے دوش پہ عقبیٰ کا دام ہے اب تک
سروں میں دین کا سودائے خام ہے اب تک
توہمات کا آدم غلام ہے اب تک
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے

ابھی دماغ پہ قبائے سیم و زر ہے سوار
ابھی رکی ہی نہیں تیشہ زن کے خون کی دھار
شمیمِ عدل سے مہکیں یہ کوچۂ و بازار
گذر بھی جا کہ ترا انتظار کب سے ہے

•

## اندھیرا

رات کے ہاتھ میں اک کاسۂ دریُوزہ گری
یہ چمکتے ہوئے تارے یہ دمکتا ہوا چاند
بھیک کے نور میں مانگے کے اُجالے میں مگن
یہی ملبوسِ عروسی ہے یہی اِن کا کفن
اس اندھیرے میں وہ مرتے ہوئے جسموں کی کراہ
وہ عزازیل کے کتوں کی کمیں گاہ
"وہ تہذیب کے زخم"
خندقیں
باڑھ کے تار
باڑھ کے تاروں میں اُلجھے ہوئے انسانوں کے جسم
اور انسانوں کے جسموں پہ وہ بیٹھے ہوئے گِدھ

हरम के दोश पे उक़बा[1] का दाम[2] है अब तक
सरों में दीन का सौदाए ख़ाम है अब तक
तवह्हुमात[3] का आदम[4] ग़ुलाम है अब तक
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है
अभी दिमाग़ पे क़हबाए-सीमो-ज़र है सवार
अभी रुकी ही नहीं तीशाज़न के ख़ून की धार
शमीमे अद्ल[5] से महकें यह कूचओ बाज़ार
गुज़र भी जा कि तिरा इंतिज़ार कब से है

●

## अंधेरा

रात के हाथ में इक कासए दरयूज़हगरी[6]
यह चमकते हुए तारे यह दमकता हुआ चांद
भीक के नूर में मांगे के उजाले में मगन
यही मलबूसे अरूसी[7] है यही इनका कफ़न
इस अंधेरे में वो मरते हुए जिस्मों की कराह
वो अज़ाज़ील[8] के कुत्तों की कमींगाह[9]
"वो तहज़ीब के ज़ख़्म"
ख़ंदकें
बाढ़ के तार
बाढ़ के तारों में उलझे हुए इंसानों के जिस्म
और इंसानों के जिस्मों पे वो बैठे हुए गिद्ध

1. आख़िरत
2. जाल
3. भ्रमों
4. इंसान
5. इंसाफ़ की ख़ुश्बू
6. भीख मांगने का कटोरा
7. दुल्हन का लिबास
8. इबलीस
9. छिपने का स्थान

وہ تڑختے ہوئے سر

میتیں ہاتھ کٹی، پاؤں کٹی

لاش کے ڈھانچے کے اِس پار سے اُس پار تلک

سرد ہوا

نوحۂ و نالہ و فریاد کناں

شب کے سناٹے میں رونے کی صدا

کبھی بچوں کی کبھی ماؤں کی

چاند کے تاروں کے ماتم کی صدا

رات کے ماتھے پہ آزردہ ستاروں کا ہجوم

صرف خورشیدِ درخشاں کے نکلنے تک ہے

رات کے پاس اندھیرے کے سوا کچھ بھی نہیں

رات کے پاس اندھیرے کے سوا کچھ بھی نہیں

●

## چاند تاروں کا بن

(آزادی سے پہلے، بعد اور آگے)

موم کی طرح جلتے رہے ہم شہیدوں کے تن

رات بھر جھلملاتی رہی شمعِ صبحِ وطن

رات بھر جگمگاتا رہا چاند تاروں کا بن

تشنگی تھی مگر

تشنگی میں بھی سرشار تھے

پیاسی آنکھوں کے خالی کٹورے لیے

منتظر مرد و زن

वो तड़खते हुए सर

मैयतें हात कटी पांव कटी

लाश के ढांचे के इस पार से उस पार तलक

सर्द हवा

नौहओ[1] नालओ फ़रियाद कुनां[2]

शब के सन्नाटे में रोने की सदा

कभी बच्चों की, कभी माओं की

चांद के तारों के मातम की सदा

रात के माथे पे आज़ुर्दह[3] सितारों का हुजूम

सिर्फ़ ख़ुर्शीदे दरख़शां[4] के निकलने तक है

रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं

रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं

●

## चाँद तारों का बन

(आज़ादी से पहले, बाद और आगे)

मोम की तरह जलते रहे हम शहीदों के तन

रात भर झिलमिलाती रही शमए सुब्हे वतन

रात भर जगमगाता रहा चाँद तारों का बन

तिश्नगी[5] थी मगर

तिश्नगी में भी सरशार थे

प्यासी आंखों के ख़ाली कटोरे लिये

मुंतज़िर मर्दो ज़न[6]

1. मातम
2. फ़रियाद करते हुए
3. दुखी, सताए हुए
4. रौशन सूरज
5. प्यास
6. मर्द और औरत

مستیاں ختم، مدہوشیاں ختم تھیں، ختم تھا بانکپن
رات کے جگمگاتے دہکتے بدن

صبح دم ایک دیوارِ غم بن گئے
خارزارِ الم بن گئے
رات کی شہ رگوں کا اُچھلتا لہو
جوئے خوں بن گیا
کچھ اِمامانِ صد مکروفن
اُن کی سانسوں میں اَفعی کی پھنکار تھی
ان کے سینے میں نفرت کا کالا دھواں
اک کمیں گاہ سے
پھینک کر اپنی نوکِ زباں
خونِ نورِ سحر پی گئے

رات کی تلچھٹیں ہیں اندھیرا بھی ہے
صبح کا کچھ اُجالا، اُجالا بھی ہے
ہمدمو!
ہاتھ میں ہاتھ دو
سوئے منزل چلو
منزلیں پیار کی
منزلیں دار کی
کوئے دلدار کی منزلیں
دوش پر اپنی اپنی صلیبیں اٹھائے چلو
●

मस्तियां ख़त्म, मदहोशियां ख़त्म थीं, ख़त्म था बांकपन

रात के जगमगाते दहकते बदन

सुब्हदम[1] एक दीवारे ग़म बन गए

ख़ार-ज़ारे-अलम[2] बन गए

रात की शहरगों[3] का उछलता लहू

जूए ख़ूं[4] बन गया

कुछ इमामाने सद मकरो फ़न

उनकी सांसों में अफ़ई[5] की फुंकार थी

उनके सीने में नफ़रत का काला धुवां

इक कमींगाह से

फेंक कर अपनी नोके ज़बां

ख़ूने नूरे सहर[6] पी गए

रात की तलछटें हैं अंधेरा भी है

सुब्ह का कुछ उजाला, उजाला भी है

हमदमो!

हाथ में हाथ दो

सूए मंज़िल चलो

मंज़िलें प्यार की

मंज़िलें दार[7] की

कूए दिलदार की मंज़िलें

दोश[8] पर अपनी अपनी सलीबें[9] उठाए चलो

●

1. सुब्ह के वक़्त
2. दुख के कांटो का जंगल
3. शरीर की सबसे बड़ी रग जो दिल को जाती है
4. ख़ून की नदी या नहर
5. नाग
6. सुबह की रौशनी का ख़ून
7. घर, मक़ाम
8. कंधे
9. सूलियां

# لختِ جگر

محبت کو تم لاکھ پھینک آؤ گہرے کنویں میں
مگر ایک آواز پیچھا کرے گی
کبھی چاندنی رات کا گیت بن کر
کبھی گھُپ اندھیرے کی پگلی ہنسی بن کے
پیچھا کرے گی
مگر ایک آواز پیچھا کرے گی
وہ آواز
ناخواستہ طفلکِ بے پدر
ایک دن
سُولیوں کے سہارے
بنی نوعِ انساں کی ہادی بنی
پھر خدا بن گئی
کوئی ماں
کئی سال پہلے
زمانے کے ڈر سے
سرِ رہگذر
اپنا لختِ جگر چھوڑ آئی
وہ ناخواستہ طفلکِ بے پدر
ایک دن
سولیوں کے سہارے
بنی نوعِ انساں کا ہادی بنا
پھر خدا بن گیا

●

## लख़्ते जिगर[1]

मुहब्बत को तुम लाख फेंक आओ गहरे कुएं में
मगर एक आवाज़ पीछा करेगी
कभी चांदनी रात का गीत बन कर
कभी घुप अंधेरे की पगली हंसी बन के
पीछा करेगी
मगर एक आवाज़ पीछा करेगी
वो आवाज़
नाख़्वास्ता[2] तिफ़लके बे पिदर[3]
एक दिन
सूलियों के सहारे
बनी नौए इंसां[4] की हादी बनी
फिर ख़ुदा बन गई
कोई मां
कई साल पहले
ज़माने के डर से
सरे रहगुज़र
अपना लख़्ते जिगर छोड़ आई
वो नाख़्वास्ता तिफ़लके बे पिदर
एक दिन
सूलियों के सहारे
बनी नौए इंसां का हादी[5] बना
फिर ख़ुदा बन गया

●

1. जिगर का टुकड़ा
2. बिना चाहे
3. बिना बाप का बच्चा
4. इंसानों की औलाद
5. हिदायत करने वाला, रास्ता दिखाने वाला

# وصال

دھنک ٹوٹ کر سیج بنی
جھومر چمکا
سناٹے چونکے
آدھی رات کی آنکھ کھلی
برہ کی آنچ کی نیلی لو
نَے بنتی ہے
لَے بنتی ہے
شہنائی جلتی روتی تھی
اب سرنیوڑھائے
لال پپوٹے بند کئے بیٹھی ہے
نرم گرم ہاتھوں کی مہندی
ایک نیا سنگیت سناتی
دل کے کواڑ پہ رُک رک کوئی راتوں میں دستک دیتا تھا
دل کے کواڑ پہ رُک کر وہ دستک دیتا ہے
پَٹ کھلتے ہیں
آنکھ سے آنکھ دلوں سے
دل ملتے ہیں
گھونگھٹ میں، جھومر چھپتا ہے
گھونگھٹ میں، مکھڑے چھپتے ہیں
دولت خاں کی ڈیوڑھی کے کھنڈروں میں
بڈھا ناگ کھڑا روتا ہے
گونگے سناٹے بول اُٹھے

## विसाल

धनक टूट कर सेज बनी

झूमर चमका

सन्नाटे चौंके

आधी रात की आंख खुली

बिरह् की आंच की नीली लौ

नय बनती है

लय बनती है

शहनाई जलती रोती थी

अब सर न्योढ़ाये

लाल पपोटे बन्द किये बैठी है

नर्म गर्म हाथों की मेहंदी

एक नया संगीत सुनाती

दिल के किवाड़ पे रुक कर कोई रातों में दस्तक देता था

दिल के किवाड़ पे रुक कर वो दस्तक देता है

पट खुलते हैं

आंख से आंख दिलों से

दिल मिलते हैं

घूंघट में, झूमर छुपता है

घूंघट में, मुखड़े छुपते हैं

दौलत ख़ां की दयोढ़ी के खंडरों में

बुड्ढ़ा नाग खड़ा रोता है

गूंगे सन्नाटे बोल उठे

گھونگھٹ، مکھڑے، جھومر، پائل
چمک، دَمک، جھنکار اَمر ہے
پیار اَمر ہے
پیار اَمر ہے
پیار کی رات کی آنکھ اُمڈ آتی ہے
اور دو پھول
تنو، بدن
شبنم پی کر سو جاتے ہیں

●●●

घूंघट, मुखड़े, झूमर, पायल

चमक, दमक, झंकार अमर है

प्यार अमर है

प्यार अमर है

प्यार की रात की आंख उमड आती है

और दो फूल

तन्नूरे बदन

शबनम पी कर सो जाते हैं

●●●

اجتبیٰ رضوی

# تقدیرِ آدم

یہ اضطرابِ مسلسل یہ جست و خیز و نمود
یہ ایک جنبشِ باقی امینِ بود و نبود

یہ اک جنونِ حیات و دوانِ مرگ بہ دوش
یہ اک فسونِ عدم اور یہ اک طلسمِ وجود

یہ ایک سلسلۂ بے نہایتِ رفتار
یہ ایک مشغلۂ ہولناکِ گم مقصود

یہ موج خیزیٔ طوفانِ بحرِ بے رفتار
یہ رقص کوشیٔ ذرّاتِ عرصہ گاہِ جمود

یہ ڈھونڈ اور یہ طلب، یہ تلاش اور تڑپ
یہ آرزو یہ تمنا یہ شوق نامحدود

نکل رہی ہے عدم کی گھٹی ہوئی یہ ہوک
فشارِ سینۂ تقدیر کا دھواں ہے وجود

نمود کوششِ ناپختۂ مذاقِ حیات
حیات بیخود و وارفتۂ شرابِ نمود

یہ نارسیدہ طبائع کا اژدہامِ عظیم!
جمالِ شاہدِ تکمیل جس میں نامشہود

ہجوم و کشمکشِ رہرواں معاذاللہ
ستیزہ تیزدم و رسم آشتی مفقود

## इज्तिबा रिज़वी

### तक़दीरे आदम

ये इज़्तिराबे मुसल्सल[1] ये कुल्लो खेज़ो नुमूद[2]
ये एक जुम्बिशे बाक़ी अमीने बूदो नबूद
ये इक जुनूने हयाते दवाने मर्ग बदोश
ये इक फुसूने अदम[3] और ये इक तिलिस्मे वुजूद
ये एक सिलसिलए बेनिहायते रफ़्तार
ये एक मश्ग़लए हौलनाके गुम मक़सूद
ये मौज खेज़िये तूफ़ाने बहरे बेरफ़्तार
ये रक़्स कोशिए ज़र्राते अर्सागाहे जुमूद
ये ढूंढ और ये तलब ये तलाश और तड़प
ये आरज़ू ये तमन्ना, ये शौक़े नामहदूद
निकल रही है अदम की घुटी हुई ये हूक
फ़िशारे सीनए तक़दीर का धुवाँ है वुजूद
नुमूद कोशिशे नापुख़्तए मज़ाक़े हयात
हयात बेख़ुदो वारफ़्तए शराबे नुमूद
ये नारसीदा तबाए का इज़्दहामे अज़ीम![4]
जमाले शाहिदे तक्मील जिसमें नामशहूद[5]
हुजूमो कश्मकशे रहरवां मआज़ अल्लाह
सेतीज़ा तेज़ दमो रस्मे आश्ती मफ़क़ूद

1. निरन्तर घबराहट
2. उछल कूद व दिखावट
3. प्रलोक का जादू
4. बड़ी भीड़
5. जो हाज़िर न हो

ہر ایک گام پہ افسردہ خاکِ برقِ خرام
ہر ایک شاخ پہ خوں گشتہ نازِ سعیِ نمود
اور اس نظامِ روش میں یہ آدمِ بدبخت
فشردہ پا بہ گِل و سرزِ ادّعا پہ دود
جگر برشتہ و دل داغ و ریز ریز نہاد
حریفِ فطرتِ سفاک، خود نگر، محسود
طلسمِ دیدۂ و گوشِ غریبِ ہجر نصیب
فریبِ وعدۂ نااستوار دید و شنود
بجھی نہ اِس کی لگی گو دیا کئے جبریل
نچوڑ کر اسے افشردۂ غیاب و شہود
شہیدِ قدرتِ پیچیدہ راہ کیا کہنا!
مسافرِ سفرِ بے پناہ کیا کہنا

●

## پہنائی

چھ ہزار برسوں سے اہلِ دین و دانش نے
بار بار کوشش کی، بار بار کوشش کی
تا کہ سامنے والی اس خموش کھائی پر
کوئی پُل بنا سکتے
کوئی پُل بنا سکتے اس خموش کھائی پر
جس کی ایک جانب کو روزِ آفرینش سے
حیرت اور دہشت میں دم بخود ہیں استادہ
کچھ شعور کے ٹیلے

हर एक गाम पे अफ़्सुर्दा ख़ाके बर्क़े ख़िराम
हर एक शाख़ पे ख़ूं गश्ता नाज़े सइए नुमूद
और इस निज़ामे रविश में ये आदमे बदबख़्त
फ़शुर्दा[1] पा ब गिलो सरज़े इद्दिआ पर दूद[2]
जिगर बरिश्तओ दिल दाग़ओ - रेज़ रेज़ निहाद
हरीफ़े फ़ित्रते सफ़्फ़ाक, ख़ुद निगर, महसूद
तिलिस्मे दीदओ गोशे ग़रीबे हिज्र नसीब
फ़रेबे वादए ना उस्तवारे दीदओ शुनूद
बुझी न इसकी लगी गो दिया किये जिब्रील
निचोड़ कर उसे अफ़शुर्दए ग़याबो शुहूद
शहीदे कुदरते पेचीदा राह, क्या कहना!
मुसाफ़िरे सफ़रे बेपनाह, क्या कहना!

●

## पहनाई

छः हज़ार बरसों से अहले दीनों दानिश ने
बार बार कोशिश की, बार बार कोशिश की
ताकि सामने वाली उस ख़मोश खाई पर
कोई पुल बना सकते
कोई पुल बना सकते उस ख़मोश खाई पर
जिसकी एक जानिब को रोज़े आफ़रीनश[3] से
हैरत और दहशत में दमबख़ुद हैं इस्तादा[4]
कुछ शऊर के टीले

1. निचोड़ा हुआ
2. धुंआ
3. उत्पत्ति के दिन से
4. खड़ा हुआ

ہر اَنا کے ٹیلے سے 'لا انا' کی اک ڈھلوان
اک اتھاہ سی ڈھلوان بے پناہ سی ڈھلوان
ایک دم کھڑی ڈھلوان اس خلا میں جھکتی ہے
جس کی تہہ بھی ہے خالی
اک کھلا دہانہ سا جس کی تہہ بھی ہے خالی
بے مزاحمت وسعت بے وجود موجودی
اک ربودہ خودداری اک غنودہ بیداری
نرم و گنگ پہنائی
نرم نرم سناٹا گنگ گنگ پہنائی
نرم و گنگ پہنائی ماں ہے ان چٹانوں کی
سر بہ آسماں جن کی چوٹیاں چمکتی ہیں
چشمکِ شرر بن کر
چشمکِ شرر بن کر ہر فروغِ مستعجل
اس عَظیم وسعت کے خواب ناک سینے میں
نور کا جھماکا سا ہو کے راکھ بنتا ہے
راکھ بنتی ہے پتھر
وسعتوں سے جو ٹھٹکا بس وہی تو پتھر ہے
سختی و صلابت کیا خود میں بند ہو جانا
یہ گرہ نہ کھل جائے بس اسی لیے سختی
نرمیوں سے ڈرتی ہے
نرمیوں سے ڈرتی ہے سختیوں کی یہ دنیا
وسعتوں سے ڈرتی ہے تنگیوں کی یہ دنیا
ندیوں سے ڈرتی ہے پتھروں کی یہ دنیا
دل سے عقل ڈرتی ہے

हर 'अना' के टीले से 'लाअना' की इक ढलवान
इक अथाह सी ढलवान बेपनाह सी ढलवान
एक दम खड़ी ढलवान उस ख़ला में झुकती है
जिसकी तह भी है ख़ाली
इक खुला दहाना सा जिसकी तह भी है ख़ाली
बेमुज़ाहमत वुस्अत बेवुजूद मौजूदी
इक रबूदा ख़ुद्दारी इक ग़ुनूदा बेदारी
नर्मो गुंग पहनाई
नर्म नर्म सन्नाटा गुंग गुंग पहनाई
नर्मो गुंग पहनाई मां है इन चटानों की
सर ब आसमां जिनकी चोटियां चमकती हैं
चश्मके शरर बनकर
चश्मके शरर बनकर हर फ़रोग़े मुस्तअजिल[1]
इस अज़ीम वुस्अत के ख़्वाबनाक सीने में
नूर का झमाका सा हो के राख बनता है
राख बनती है पत्थर
वुस्अतों से जो ठिटका बस वही तो पत्थर है
सख़्तिओ सलाबत क्या ख़ुद में बन्द हो जाना
ये गिरह न खुल जाये बस इसी लिये सख़्ती
नर्मियों से डरती है
नर्मियों से डरती है सख़्तियों की ये दुनिया
वुस्अतों से डरती है तंगियों की ये दुनिया
नदियों से डरती है पत्थरों की ये दुनिया
दिल से अक़्ल डरती है

1. [illegible]

زمیوں کی زد سے ہے سختیوں میں مجبوری
کھائیوں کا خمیازہ چوٹیوں کی ہے دوری
سروروں میں دوری ہے خودسروں میں دوری ہے
پتھروں میں دوری ہے
اس اتھاہ کھائی سے پتھروں کو وحشت ہے
بے خودی کی وسعت سے ہر خودی پہ دہشت ہے
جب سے یہ چٹانیں ہیں شور ہے چٹانوں میں
کھائیوں پہ پُل باندھو
کھائیوں پہ پُل باندھو کھائیوں پہ پُل باندھو
سختیوں سے سختی تک نرمیوں پہ پُل باندھو
تنگیوں سے تنگی تک وسعتوں پہ پُل باندھو
بس یہ سعی جاری ہے

●●●

नर्मियों की ज़द से है सख़्तियों में महजूरी
खाईयों का ख़म्याज़ा चोटियों की है दूरी
सरवरों में दूरी है खुदसरों में दूरी है
पत्थरों में दूरी है
इस अथाह खाई से पत्थरों को वह्शत है
बेखुदी की वुस्अत से हर खुदी पे दह्शत है
जब से ये चटानें हैं शोर है चटानों में
खाईयों पे पुल बांधो
खाईयों पे पुल बांधो खाईयों पे पुल बांधो
सख़्तियों से सख़्ती तक नर्मियों पे पुल बांधो
तंगियों से तंगी तक वुस्अतों पे पुल बांधो
बस ये सई[1] जारी है

●●●

1 कोशिश

# اندھیری رات کا مسافر

جوانی کی اندھیری رات ہے ظلمت کا طوفاں ہے
مری راہوں سے نور ماہ و انجم تک گریزاں ہے
خدا سویا ہوا ہے، اہرمن محشر بد اماں ہے
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں
غم و حرماں کی یورش ہے مصائب کی گھٹائیں ہیں
جنوں کی فتنہ خیزی، حسن کی خونیں ادائیں ہیں
بڑی پُر زور آندھی ہے، بڑی کافر بلائیں ہیں
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں
فضا میں موت کے تاریک سائے تھرتھراتے ہیں
ہوا کے سرد جھونکے قلب پر خنجر چلاتے ہیں
گذشتہ عشرتوں کے خواب آئینہ دکھاتے ہیں
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں
زمیں چیں بر جبیں ہے آسماں تخریب پر مائل
رفیقانِ سفر میں کوئی بسمل ہے، کوئی گھائل
تعاقب میں لٹیرے ہیں چٹانیں راہ میں حائل
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

इसरारुल हक़ मजाज़

# अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अंधेरी रात है ज़ुल्मत[1] का तूफ़ां है
मिरी राहों से नूरे माहो अन्जुम[2] तक गुरेज़ां[3] है
ख़ुदा सोया हुआ है, अह्‌र मन[4] मह्‌शर[5] बदामा[6] है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

ग़मो हिरमां[7] की यूरिश[8] है मसाइब[9] की घटाएं हैं
जुनूं की फ़ितनाख़ेज़ी[10] हुस्न की ख़ूनीं अदायें हैं
बड़ी पुरज़ोर आंधी है, बड़ी काफ़िर बलाएं हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ज़ा में मौत के तारीक साये थरथराते हैं
हवा के सर्द झोंके क़ल्ब पर ख़ंजर चलाते हैं
गुज़िश्ता[11] इशरतों के ख़्वाब आईना दिखाते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

ज़मीं चीं बर्जबीं[12] है, आसमां तख़रीब[13] पर माइल
रफ़ीक़ाने[14] सफ़र में कोई बिस्मिल[15] है, कोई घायल
तआक़ुब[16] में लुटेरे हैं, चट्टानें राह में हाइल
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

1. अंधकार
2. चांद और तारे
3. भागने वाला, भागता हुआ
4. आग की पूजा करने वालों का बुराई का ख़ुदा
5. क़यामत
6. दामन में
7. दुख और बदनसीबी
8. हमला
9. मुसीबत का बहुवचन
10. फ़ितना पैदा किया हुआ
11. गुज़रे हुए
12. माथे पर बल डाले हुए
13. तोड़ फोड़
14. सफ़र के साथियों
15. ज़ख़्मी
16. पीछा करना

اُفق پر زندگی کے لشکرِ ظلمت کا ڈیرا ہے
حوادث کے قیامت خیز طوفانوں نے گھیرا ہے
جہاں تک دیکھ سکتا ہوں اندھیرا ہی اندھیرا ہے
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

چراغِ دیر، فانوسِ حرم، قندیلِ رہبانی
یہ سب ہیں مدتوں سے بے نیازِ نورِ عرفانی
نہ ناقوسِ برہمن ہے، نہ آہنگِ ہدی خوانی
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

تلاطم خیز دریا، آگ کے میدان حائل ہیں
گرجتی آندھیاں بپھرے ہوئے طوفان حائل ہیں
تباہی کے فرشتے جبر کے شیطان حائل ہیں
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

فضا میں شعلہ افشاں دیو استبداد کا خنجر
سیاست کی سنانیں اہلِ زر کے خونچکاں تیور
فریبِ بے خودی دیتے ہوئے بلور کے ساغر
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

بدی پر بارشِ لطف و کرم، نیکی پہ تعزیریں
جوانی کے حسیں خوابوں کی ہیبت ناک تعبیریں
نکیلی تیز سنگینیں ہیں، خون آشام شمشیریں
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

उफ़ुक़[1] पर ज़िंदगी के लश्करे ज़ुल्मात का डेरा है
हवादिस[2] के क़यामतख़ेज़[3] तूफ़ानों ने घेरा है
जहां तक देख सकता हूं अंधेरा ही अंधेरा है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

चराग़े दैर[4], फ़ानूसे हरम, क़न्दीले रहबानी
यह सब हैं मुद्दतों से बेनियाज़े[5] नूरे इर्फ़ानी[6]
न नाक़ूसे ब्रह्मण है, न आहंगे हदी ख़्वानी
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

तलातुमख़ेज़[7] दरिया, आग के मैदान हाइल हैं
गरजती आंधियां, बिफरे हुए तूफ़ान हाइल हैं
तबाही के फ़रिश्ते जब्र के शैतान हाइल हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ज़ा में शोला अफ़शा[8] देवे इस्तिबदाद[9] का ख़ंजर
सियासत की सिनानें[10] अह्लेज़र[11] के ख़ूंचका[12] तेवर
फ़रेबे बेख़ुदी देते हुए बिल्लौर[13] के साग़र
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

बदी[14] पर बारिशे लुत्फ़ो करम, नेकी पे ताज़ीरें[15]
जवानी के हसीं ख़्वाबों की हैबतनाक ताबीरें[16]
नुकीली तेज़ संगीनें हैं, ख़ून आशाम शमशीरें[17]
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

1. क्षितिज
2. हादसा का बहुवचन
3. क़यामत पैदा करने वालों
4. मंदिर के दिये
5. वंचित
6. ब्रह्मज्ञान
7. तूफ़ान पैदा करने वाला
8. शोलों की बारिश करने वाला
9. दमन का राक्षस
10. भाले
11. मालदार
12. रक्तरंजित
13. शीशे
14. बुराई
15. सज़ायें
16. स्वप्नफल
17. ख़ून पीने वाली तलवारें

حکومت کے مظاہر جنگ کے پُر ہول نقشے ہیں
کدالوں کے مقابل توپ، بندوقیں ہیں نیزے ہیں
سلاسل، تازیانے، بیڑیاں پھانسی کے تختے ہیں
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

اُفق پر جنگ کا خونیں ستارہ جگمگاتا ہے
ہر اک جھونکا ہوا کا موت کا پیغام لاتا ہے
گھٹا کی گھن گرج سے قلبِ گیتی کانپ جاتا ہے
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

فنا کے آہنی وحشت اثر قدموں کی آہٹ ہے
دھوئیں کی بدلیاں ہیں گولیوں کی سنسناہٹ ہے
اجل کے قہقہے ہیں زلزلوں کی گڑگڑاہٹ ہے
مگر میں اپنی منزل کی طرف بڑھتا ہی جاتا ہوں

●

## آوارہ

شہر کی رات اور میں ناشاد و ناکارا پھروں
جگمگاتی جاگتی سڑکوں پہ آوارا پھروں
غیر کی بستی ہے کب تک در بدر مارا پھروں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

جھلملاتے قمقموں کی راہ میں زنجیر سی
رات کے ہاتھوں میں دن کی موہنی تصویر سی
میرے سینہ پر مگر دہکی ہوئی شمشیر سی!
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

हुकूमत के मज़ाहिर[1] जंग के पुरहोल नक्शे हैं
कुदालों के मुकाबिल तोप, बन्दूकें हैं, नेज़े हैं
सलासिल,[2] ताज़ियाने,[3] बेड़ियां फांसी के तख़्ते हैं
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

उफ़ुक़ पर जंग का ख़ूनीं सितारा जगमगाता है
हर इक झोंका हवा का मौत का पैग़ाम लाता है
घटा की घन गरज से क़ल्बे गेती[4] कांप जाता है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

फ़ना के आहनी[5] वहशत असर क़दमों की आहट है
धुएं की बदलियां हैं गोलियों की सनसनाहट है
अजल[6] के क़हक़हे हैं ज़लज़लों की गड़ गड़ाहट है
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं

●

## आवारा

शहर की रात और मैं नाशादो नाकारा[7] फिरूं
जगमगाती जागती सड़कों पे आवारा फिरूं
ग़ैर की बस्ती है कब तक दर-बदर मारा फिरूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वहशते दिल क्या करूं

झिलमिलाते कुमकुमों की राह में ज़ंजीर सी
रात के हाथों में दिन की मोहनी तस्वीर सी
मेरे सीने पर मगर दहकी हुई शमशीर सी।
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वहशते दिल क्या करूं

1. मज़हर का बहुवचन, ज़ाहिर होने की जगह
2. ज़ंजीरें
3. कोड़े
4. दुनिया का दिल
5. लोहा जैसा
6. मौत
7. बेकार

یہ روپہلی چھاؤں، یہ آکاش پر تاروں کا جال
جیسے صوفی کا تصور، جیسے عاشق کا خیال
آہ لیکن کون جانے، کون سمجھے جی کا حال
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

پھر وہ ٹوٹا اک ستارہ پھر وہ چھوٹی پھلجھڑی
جانے کس کی گود میں آئی یہ موتی کی لڑی
ہُوک سی سینے میں اُٹھی چوٹ سی دل پر پڑی
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

رات ہنس ہنس کر یہ کہتی ہے کہ میخانے میں چل
پھر کسی شہنازِ لالہ رُخ کے کاشانے میں چل
یہ نہیں ممکن تو پھر اے دوست ویرانے میں چل
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

ہر طرف بکھری ہوئی رنگینیاں رعنائیاں
ہر قدم پر عشرتیں لیتی ہوئی انگڑائیاں
بڑھ رہی ہیں گود پھیلائے ہوئے رسوائیاں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

راستے میں رُک کے دم لے لوں، مری عادت نہیں
لوٹ کر واپس چلا جاؤں، مری فطرت نہیں
اور کوئی ہمنوا مِل جائے، یہ قسمت نہیں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

منتظر ہے ایک طوفانِ بلا میرے لیے
اب بھی جانے کتنے دروازے ہیں وا میرے لیے
ہر مصیبت ہے مرا عہدِ وفا میرے لیے
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

यह रूपहली छावँ, यह आकाश पर तारों का जाल
जैसे सूफ़ी का तसव्वुर, जैसे आशिक़ का ख़याल
आह लेकिन कौन जाने, कौन समझे जी का हाल
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

फिर वो टूटा इक सितारा फिर वो छूटी फुलझड़ी
जाने किस की गोद में आई यह मोती की लड़ी
हूक सी सीने में उठ्ठी चोट सी दिल पर पड़ी
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

रात हंस हंस कर यह कहती है कि मयख़ाने में चल
फिर किसी शह्नाज़े लालारुख़[1] के काशाने[2] में चल
यह नहीं मुमकिन तो फिर ऐ दोस्त वीराने में चल
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

हर तरफ़ बिखरी हुई रंगीनियां रानाईयां
हर क़दम पर इश्रतें[3] लेती हुई अंगड़ाईयां
बढ़ रही हैं गोद फैलाए हुए रुसवाईयां
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

रास्ते में रुक के दम ले लूं, मिरी आदत नहीं
लौटकर वापस चला जाऊं, मिरी फ़ितरत नहीं
और कोई हमनवा[4] मिल जाए, यह क़िस्मत नहीं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

मुंतज़िर[5] है एक तूफ़ाने बला मेरे लिए
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा[6] मेरे लिए
हर मुसीबत है मिरा अह्दे वफ़ा[7] मेरे लिए
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

1. लाल चेहरे वाली दुल्हन
2. मकान
3. ऐशो आराम
4. साथी
5. इंतिज़ार करने वाला
6. खुले हुए
7. मुहब्बत का वादा

جی میں آتا ہے کہ اب عہدِ وفا بھی توڑ دوں
اُن کو پا سکتا ہوں میں، یہ آسرا بھی توڑ دوں
ہاں مناسب ہے، یہ زنجیرِ ہوا بھی توڑ دوں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

اک محل کی آڑ سے نکلا وہ پیلا ماہتاب
جیسے مُلّا کا عمامہ، جیسے بنئے کی کتاب
جیسے مفلس کی جوانی، جیسے بیوہ کا شباب
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

دل میں اک شعلہ بھڑک اٹھا ہے آخر کیا کروں
میرا پیمانہ چھلک اُٹھا ہے آخر کیا کروں
زخم سینے کا مہک اُٹھا ہے آخر کیا کروں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

جی میں آتا ہے یہ مُردہ چاند تارے نوچ لوں
اِس کنارے نوچ لوں اور اُس کنارے نوچ لوں
ایک دو کا ذکر کیا، سارے کے سارے نوچ لوں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

مفلسی اور یہ مظاہر ہیں نظر کے سامنے
سینکڑوں سلطانِ جابر ہیں نظر کے سامنے
سینکڑوں چنگیز و نادر ہیں نظر کے سامنے
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

لے کے اک چنگیز کے ہاتھوں سے خنجر توڑ دوں
تاج پر اس کے دمکتا ہے جو پتھر توڑ دوں
کوئی توڑے یا نہ توڑے میں ہی بڑھ کر توڑ دوں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

بڑھ کے اس اندر سبھا کا ساز و ساماں پھونک دوں

जी में आता है कि अब अहदे वफ़ा भी तोड़ दूं
उनको पा सकता हूं मैं, यह आसरा भी तोड़ दूं
हाँ मुनासिब है, यह ज़ंजीरे हवा भी तोड़ दूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

इक महल की आड़ से निकला वो पीला माहताब[1]
जैसे मुल्ला का इमामा, जैसे बनिये की किताब
जैसे मुफ़लिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

दिल में इक शोला भड़क उट्ठा है आख़िर क्या करूं
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है आख़िर क्या करूं
ज़ख़्म सीने का महक उट्ठा है आख़िर क्या करूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

जी में आता है यह मुर्दा चाँद तारे नोच लूं
इस किनारे नोच लूं और उस किनारे नोच लूं
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

मुफ़लिसी[2] और ये मज़ाहिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों सुल्ताने जाबिर हैं नज़र के सामने
सैकड़ों चंगेज़ो नादिर हैं नज़र के सामने
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

ले के इक चंगेज़ के हाथों से ख़ंजर तोड़ दूं
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड़ दूं
कोई तोड़े या न तोड़े मैं ही बढ़कर तोड़ दूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वह्शते दिल क्या करूं

बढ़ के इस इन्दर[3] सभा का साज़ो सामां फूंक दूं

1. चाँद
2. ग़रीबी
3. इन्द्र का उर्दूकरण

اِس کا گلشن پھونک دوں، اُس کا شبستاں پھونک دوں
تختِ سلطاں کیا، میں سارا قصرِ سلطاں پھونک دوں
اے غمِ دل کیا کروں، اے وحشتِ دل کیا کروں

●

## خوابِ سحر

مہر صدیوں سے چمکتا ہی رہا افلاک پر
رات ہی طاری رہی انسان کے ادراک پر
عقل کے میدان میں ظلمت کا ڈیرا ہی رہا
دل میں تاریکی دماغوں میں اندھیرا ہی رہا
اک نہ اک مذہب کی سعی خام بھی ہوتی رہی
اہلِ دل پر بارشِ الہام بھی ہوتی رہی
آسمانوں سے فرشتے بھی اُترتے ہی رہے
نیک بندے بھی خدا کا کام کرتے ہی رہے
ابنِ مریم بھی اُٹھے، موسیٰ عمراں بھی اُٹھے
رام و گوتم بھی اُٹھے، فرعون و ہاماں بھی اُٹھے
اہلِ سیف اُٹھتے رہے اہلِ کتاب آتے رہے
ایں جناب اُٹھتے اور آنجناب آتے رہے
حکمراں دل پر رہے صدیوں تلک اصنام بھی
ابرِ رحمت بن کے چھایا دہر پر اسلام بھی
مسجدوں میں مولوی خطبے سناتے ہی رہے
مندروں میں برہمن اشلوک گاتے ہی رہے

इसका गुलशन फूंक दूं, उसका शबिस्तां[1] फूंक दूं
तख़्ते सुल्तां क्या, मैं सारा क़स्रे सुल्तां[2] फूंक दूं
ऐ ग़मे दिल क्या करूं, ऐ वहशते दिल क्या करूं

●

## ख़्वाबे सहर[3]

मिह्र[4] सदियों से चमकता ही रहा अफ़लाक[5] पर
रात ही तारी रही इंसान के इद्राक[6] पर
अक़्ल के मैदान में ज़ुल्मत का डेरा ही रहा
दिल में तारीकी दिमाग़ों में अंधेरा ही रहा
इक न इक मज़हब की सईए ख़ाम[7] भी होती रही
अह्ले दिल पर बारिशे इल्हाम[8] भी होती रही
आसमानों से फ़रिश्ते भी उतरते ही रहे
नेक बन्दे भी ख़ुदा का काम करते ही रहे
इब्ने मरयम भी उठे मूसए इमरां भी उठे
रामो गौतम भी उठे, फ़िरऔनो व हामां भी उठे
अह्ले सैफ़[9] उठते रहे अह्ले किताब आते रहे
ईं जनाब उठते रहे और आंजनाब आते रहे
हुक्मरां दिल पर रहे सदियों तलक अस्नाम[10] भी
अब्रे रहमत[11] बन के छाया दह्र[12] पर इस्लाम भी
मस्जिदों में मौलवी ख़ुत्बे सुनाते ही रहे
मन्दिरों में ब्रह्मन श्लोक गाते ही रहे

1. सोने का मकान
2. बादशाहों का महल या भवन
3. सुबह का ख़्वाब
4. सूरज
5. फ़लक का बहुवचन, आसमानों
6. बोध
7. कच्ची कोशिश
8. देव वाणी की बारिश
9. तलवार वाले
10. सनम (बुत) का बहुवचन
11. रहमत के बादल
12. दुनिया

آدمی منّت کشِ اربابِ عرفاں ہی رہا
دردِ انسانی مگر محرومِ درماں ہی رہا
اک نہ اک در پر جبینِ شوق گھستی ہی رہی
آدمیت ظلم کی چکی میں پستی ہی رہی
رہبری جاری رہی پیغمبری جاری رہی
دین کے پردے میں جنگِ زرگری جاری رہی
اہلِ باطن علم سے سینوں کو گرماتے رہے
جہل کے تاریک سائے ہاتھ پھیلاتے رہے
یہ مسلسل آفتیں، یہ یورشیں، یہ قتلِ عام
آدمی کب تک رہے اوہامِ باطل کا غلام
ذہنِ انسانی نے اب اوہام کے ظلمات میں
زندگی کی سخت طوفانی اندھیری رات میں
کچھ نہیں تو کم سے کم خوابِ سحر دیکھا تو ہے
جس طرف دیکھا نہ تھا اب تک، اُدھر دیکھا تو ہے

●

## پہلا جشنِ آزادی

بہ صد غرور بصد فخر و نازِ آزادی
مچل کے کھل گئی زلفِ درازِ آزادی
مہ و نجوم ہیں نغمہ طرازِ آزادی
وطن میں چھیڑا ہے اس طرح سازِ آزادی

आदमी मिन्नतकशे[1] अरबाबे इरफ़ां[2] ही रहा
दर्दे इंसानी मगर महरूमे दरमां[3] ही रहा

इक न इक दर[4] पर जबीने शौक़ घिसती ही रही
आदमियत जुल्म की चक्की में पिसती ही रही
रहबरी जारी रही पैग़म्बरी जारी रही
दीन के पर्दे में जंगे ज़रगरी[5] जारी रही
अह्ले बातिन[6] इल्म से सीनों को गर्माते रहे
जह्ल के तारीक साए हाथ फैलाते रहे
ये मुसलसल आफ़तें, ये यूरिशें[7], यह क़त्ले आम
आदमी कब तक रहे औहामे बातिल[8] का गुलाम
ज़ेहने इन्सानी ने अब औहाम के जुल्मात[9] में
ज़िन्दगी की सख़्त तूफ़ानी अंधेरी रात में

कुछ नहीं तो कम से कम ख़्वाबे सहर देखा तो है
जिस तरफ़ देखा न था अब तक, उधर देखा तो है

●

## पहला जश्ने आज़ादी

ब सद गुरूर[10] बसद फ़ख़्रो नाज़े आज़ादी
मचल के खुल गई जुल्फ़े दराज़े आज़ादी
महो नुजूम[11] हैं नग़्मा तराज़े आज़ादी[12]
वतन ने छेड़ा है इस तरह साज़े आज़ादी

1. कृतज्ञ
2. ब्रह्मज्ञान वाला
3. इलाज से वंचित
4. दरवाज़ा
5. झूठमूठ की लड़ाई
6. ज़मीर वाले लोग
7. हमले
8. भ्रान्ति का बहुवचन
9. अंधेरे
10. सैकड़ों गुरूर के साथ
11. चांद और तारे
12. आज़ादी का गीत गाते हुए

زمانہ رقص میں ہے زندگی غزلخواں ہے
ہر اک جبیں پہ ہے اک موجِ نورِ آزادی
ہر ایک آنکھ میں کیف و سرورِ آزادی
غلامی خاک بسر ہے حضورِ آزادی
ہر ایک قصر ہے اک بامِ طورِ آزادی
ہر ایک بام پہ اک پرچمِ زر افشاں ہے
ہر ایک سمت نگارانِ یاسمیں پیکر
نکل پڑے ہیں در و بام سے مہ و اختر
وہ سیلِ نور ہے، خیرہ ہے آدمی کی نظر
بصد غرور و ادا خندہ زن ہے گردوں پر
زمینِ ہند کہ جولا نگہِ غزالاں ہے
صدا دو انجمِ افلاک رقص فرمائیں
بُتانِ کافر و سفاک رقص فرمائیں
شریکِ حلقۂ ادراک رقص فرمائیں
طرب کا وقت ہے بے باک رقص فرمائیں
کہ یہ بہار پیامِ صد بہاراں ہے
یہ انقلاب کا مژدہ ہے انقلاب نہیں
یہ آفتاب کا پر تو ہے آفتاب نہیں

ज़माना रक़्स[1] में है ज़िंदगी ग़ज़ल ख़्वां[2] है

हर इक जबीं पे है इक मौजे नूरे आज़ादी
हर एक आंख में कैफ़ो सुरूरे आज़ादी
गुलामी ख़ाक बसर है हुज़ूरे आज़ादी
हर एक क़स्र है इक बामे तूरे आज़ादी

हर एक बाम पे इक परचमे ज़रअफ़शां है

हर एक सिम्त निगाराने यासमीं पैकर[3]
निकल पड़े हैं दरो बाम[4] से महो अख़्तर[7]
वो सैलेनूर[6] है, ख़ीरा[7] है आदमी की नज़र
बसद गुरूर अदा ख़ंदाज़न[8] है गर्दूं[9] पर

ज़मींने हिंद कि जौलांगहे ग़ज़ालां है

सदा दो अंजुमे अफ़लाक[10] रक़्स फ़रमायें
बुताने काफ़िरो सफ़्फ़ाक रक़्स फ़रमायें
शरीके हल्क़ए इदराक रक़्स फ़रमायें
तरब[11] का वक़्त है बेबाक रक़्स फ़रमायें

कि ये बहार पयामिए सद बहारां है

यह इंक़लाब का मुज़्दा है इंक़लाब नहीं
यह आफ़ताब[12] का परतौ[13] है आफ़ताब नहीं

1. नाच
2. ग़ज़ल गाती हुई
3. चमेली के फूल जैसे जिस्म वाले महबूब
4. दरवाज़े और छत से
5. चांद और तारे
6. प्रकाश का सैलाब
7. चकित
8. हंसती हुई
9. आसमान
10. आस्मानों के तारे
11. ख़ुशी
12. सूरज
13. अक्स

وہ جس کی تاب و توانائی کا جواب نہیں
ابھی وہ سعی جنوں خیز کامیاب نہیں
یہ انتہا نہیں، آغازِ کارِ مرداں ہے

●

## وطنِ آشوب

سبزہ و برگ و لالہ و سرو وسمن کو کیا ہوا
سارا چمن اُداس ہے ہائے چمن کو کیا ہوا
یک سکوت ہر طرف ہو شربا و ہولناک
خُلدِ وطن کے پاسباں خُلدِ وطن کو کیا ہوا
رقصِ طرب کدھر گیا، نغمہ طراز کیا ہوئے
غمزہ و ناز کیا ہوئے عشوہ و فن کو کیا ہوا
جس کی نوائے دلستاں زخمۂ سازِ شوق تھی
کوئی بتاؤ اُس بتِ غنچہ دہن کو کیا ہوا
چشمکِ دم بدم نہیں مشقِ خرام ورم نہیں
میرے غزال کیا ہوئے، میرے ختن کو کیا ہوا
چھائی ہے کیوں فسردگی عالمِ حسن و عشق پر
آج وہ نل کدھر گئے آج دمن کو کیا ہوا
آنکھوں میں خوف ویاس ہے چہرہ اُداس اُداس ہے
عصرِ رواں کی لیلیٰ برقعہ فگن کو کیا ہوا
آہ خرد کدھر گئی، آہ جنوں نے کیا کیا؟

वो जिसकी ताबो तवानाई का जवाब नहीं
अभी वो सईए जुनूंख़ेज़ कामियाब नहीं
यह इंतिहा नहीं, आग़ाज़े कारे मर्दां है

●

## वतने आशोब

सब्ज़ओ बर्गो लालओ सर्वोसमन को क्या हुआ
सारा चमन उदास है हाय चमन को क्या हुआ
यक सुकूत[1] हर तरफ़ होश रुबावो हौलनाक
खुल्दे वतन[2] के पासबां[3] खुल्दे वतन को क्या हुआ
रक़्से तरब किधर गया, नग़मा तराज़ क्या हुए
ग़म्ज़ओ नाज़ क्या हुए इश्वओ फ़न को क्या हुआ
जिसकी नवाए दिलसिता[4] ज़ख़्मए साज़े शौक़ थी
कोई बताओ उस बुते गुन्चा दहन[5] को क्या हुआ
चश्मके दम-बदम नहीं मश्के ख़िरामो रम नहीं
मेरे ग़ज़ाल[6] क्या हुए, मेरे खुतन को क्या हुआ
छाई है क्यों फ़सुर्दगी[7] आलमे हुस्नो इश्क़ पर
आज वो नल किधर गए आज दमन को क्या हुआ
आंखों में ख़ौफ़ो यास[8] है चेहरा उदास उदास है
अब्रे रवां[9] की लैलए बुर्क़ा फ़िगन को क्या हुआ
आह ख़िरद[10] किधर गई, आह जुनूं ने क्या किया?

1. ख़ामोशी
2. मुल्क की जन्नत
3. रखवाला
4. दिल को सताने वाली
5. कली जैसे मुंह वाला महबूब
6. हिरन् का बच्चा
7. मुर्दनी
8. डर और नाउम्मीदी
9. अक्ल

آہ شبابِ خو گرِ دار و رسن کو کیا ہوا
کوئی بتائے عظمتِ خاکِ وطن کہاں ہے اب
کوئی بتائے غیرتِ اہلِ وطن کو کیا ہوا
کوہ وہی، دمن وہی، دشت وہی، چمن وہی
پھر یہ مجازؔ جذبۂ حُبِّ وطن کو کیا ہوا

●●●

आह शबाबे ख़ूगरे दारो रसन[1] को क्या हुआ
कोई बताये अज़्मते ख़ाके वतन कहां है अब
कोई बताये ग़ैरते अह्ले वतन को क्या हुआ
कोह वही, दमन[2] वही, दश्त वही, चमन वही
फिर यह मज़ाज़ जज़्बए हुब्बे वतन[3] को क्या हुआ

●●●

1. फाँसी और रस्सी
2. छोटी पहाड़ी
3. देश प्रेम की भावना

گوپال متّل

## طلوعِ شب

نہ فلک پر کوئی تارا نہ زمیں پر جگنو
جو کرن نور کی ہے، مات ہوئی جاتی ہے
کار گر یورشِ ظلمات ہوئی ہے کتنی
کیا ہمیشہ کے لیے رات ہوئی جاتی ہے!

●

## شب تاب

یہ برستا ہوا موسم، یہ شبِ تیرہ و تار
کسی مدّھم سے ستارے کی ضیا بھی تو نہیں
اُف یہ ویرانیِ ماحول، یہ ویرانیِ دِل

آسمانوں سے کبھی نور بھی برسا ہوگا
برقِ الہام بھی لہرا گئی ہوگی شاید
لیکن اب دیدۂ حسرت سے سوئے عرش نہ دیکھ
اب وہاں ایک اندھیرے کے سِوا کچھ بھی نہیں

دیکھ اس فرش کو جو ظلمتِ شب کے باوصف
روشنی سے ابھی محروم نہیں ہیں شاید
اک نہ اک ذرّہ یہاں اب بھی دمکتا ہوگا
کوئی جگنو کسی گوشے میں چمکتا ہوگا

**गोपाल मित्तल**

## तुलूए शब[1]

न फ़लक पर कोई तारा न ज़मीं पर जुगनू
जो किरन नूर की है, मात हुई जाती है
कारगर यूरिशे ज़ुल्मात[2] हुई है कितनी
क्या हमेशा के लिए रात हुई जाती है।

●

## शबताब[3]

ये बरसता हुआ मौसम, यह शबे तीरओ तार[4]
किसी मद्यम से सितारे की ज़िया[5] भी तो नहीं
उफ़ ये वीरानिए माहौल, ये वीरानिए दिल

आसमानों से कभी नूर भी बरसा होगा
बर्क़ इल्हाम[6] भी लहरा गई होगी शायद
लेकिन अब दीदए हसरत से सूए अर्श[7] न देख
अब वहां एक अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं

देख इस फ़र्श को जो ज़ुल्मते शब के बावस्फ़
रौशनी से अभी महरूम नहीं है शायद
इक न इक ज़र्रा यहां अब भी दमकता होगा
कोई जुगनू किसी गोशे में चमकता होगा

1. रात का होना
2. अंधेरे का हमला
3. रात को चमकने वाला जुगनू
4. बहुत अंधेरी रात
5. रौशनी
6. देव वाणी की बिजली
7. आसमान की तरफ़

یہ زمیں نور سے محروم نہیں ہو سکتی

کسی جانباز کے ماتھے پہ شہادت کا جلال
کسی مجبور کے سینے میں بغاوت کی ترنگ
کسی دوشیزہ کے ہونٹوں پہ تبسّم کی لکیر
قلبِ عشاق میں محبوب سے ملنے کی اُمنگ
دلِ زہّاد میں ناکردہ گناہوں کی خلش
دل میں اک فاحشہ کے پہلی محبت کا خیال

کہیں احساس کا شعلہ ہی فروزاں ہوگا
کہیں افکار کی قندیل ہی روشن ہوگی
کوئی جگنو، کوئی ذرّہ تو دمکتا ہوگا
یہ زمیں نور سے محروم نہیں ہو سکتی
یہ زمیں نور سے محروم نہیں ہو سکتی

●

## صبحِ کاذب

یہ جو اک نور کی ہلکی سی کرن پھوٹی ہے
کون کہتا ہے اسے صبحِ درخشاں اے دوست
مجھ کو احساس ہے، باقی ہے شبِ تارا بھی
لیکن اے دوست مجھے رقص تو کر لینے دے
کم سے کم نور نے اُلٹا تو ہے اک بار نقاب
ایک لمحے کو تو ٹوٹا ہے طلسمِ شبِ تار
اس سے ثابت تو ہوا صبح بھی ہو سکتی ہے

यह ज़मीं नूर से महरूम नहीं हो सकती

किसी जांबाज़ के माथे पे शहादत का जलाल
किसी मजबूर के सीने में बग़ावत की तरंग
किसी दोशीज़ा[1] के होंटों पे तबस्सुम की लकीर
क़ल्बे उश्शाक़[2] में महबूब से मिलने की उमंग
दिले ज़ुह्हाद[3] में नाकरदह गुनाहों की ख़लिश
दिल में इक फ़ाहिशा[4] के पहली मुहब्बत का ख़्याल

कहीं एहसास का शोला ही फ़रोज़ां[5] होगा
कहीं अफ़्कार[6] की क़न्दील ही रौशन होगी
कोई जुगनू, कोई ज़र्रा तो दमकता होगा
ये ज़मी नूर से महरूम नहीं हो सकती
ये ज़मीं नूर से महरूम नहीं हो सकती

●

## सुब्हे काज़िब[7]

यह जो इक नूर की हल्की सी किरन फूटी है
कौन कहता है इसे सुब्हे दरख़्शां ऐ दोस्त
मुझ को एहसास है, बाक़ी है शबे तार[8] अभी
लेकिन ऐ दोस्त मुझे रक़्स तो कर लेने दे
कम से कम नूर ने उलटा तो है इक बार नक़ाब
एक लम्हे को तो टूटा है तिलिस्मे शबे तार[9]
इससे साबित तो हुआ सुब्ह भी हो सकती है

1. कुंवारी
2. आशिक़ के दिलों
3. ज़ाहिदों के दिलों में
4. बदचलन औरत
5. रौशन
6. फ़िक्र का बहुवचन
7. सुब्ह की रौशनी जिसके बाद फिर अंधेरा हो जाता है
8. अंधेरी रात
9. अंधेरी रात का जादू

پردۂ ظلمتِ شب چاک بھی ہو سکتا ہے
صبحِ کاذب بھی تو ہے اصل میں دیباچۂ صبح
صبحِ کاذب بھی تو ہے صبحِ درخشاں کی نوید
ایک اعلان، کہ ہنگامِ وداعِ شب ہے
قافلہ نورِ سحر کا ہے بہت ہی نزدیک
جلد ہونے کو ہے خورشیدِ درخشاں کی نمود

●●●

पर्दए ज़ुल्मते शब[1] चाक[2] भी हो सकता है
सुब्हे काज़िब भी तो है अस्ल में दीबाचए सुब्ह
सुब्हे काज़िब भी तो है सुब्हे दरख़्शां[3] की नवीद[4]
एक एलान, कि हंगामे विदाए शब[5] है
क़ाफ़िला नूरे सहर[6] का है बहुत ही नज़दीक
जल्द होने को है ख़ुर्शीदे दरख़्शां[7] की नमूद[8]

●●●

1. रात के अंधेरे का पर्दा
2. फटना
3. रौशन सुब्ह
4. ख़ुशख़बरी
5. रात के विदा होने का वक्त
6. सुब्ह की रौशनी
7. चमकते सूरज
8. प्रकट

پرویز شاہدی

## تثلیثِ حیات

اُنگلیاں میری ہیں، لب میرے ہیں، آنکھیں میری
میری پیشانی کا ٹکڑا تری پیشانی ہے
ننھی ننھی یہ بھنویں تیری ہیں یا میری ہیں
تیری رگ رگ میں مرے خون کی جولانی ہے

دست و پا میں جو یہ کیفیتِ سیمابی ہے
میری ہی رُوح کی نکھری ہوئی بیتابی ہے

اپنے شعروں میں جڑے روح کے ٹکڑے کتنے
اپنے افکار کو خوں دل کا پلا کر پالا
بھر دی ہر لفظ میں شخصیتِ رنگیں اپنی
اپنے ہی سانچے میں اندازِ بیاں کو ڈھالا

میرا فن بھی مری تصویر کی تکمیل نہیں
کوئی تجھ سا مرے اجمال کی تفصیل نہیں

تجھ کو اپنے ہی خد و خال تری ماں نے دیئے
اپنا شاداب چمکتا ہوا چہرہ بخشا
خلوتِ بطن میں ہر طرح سنوارا تجھ کو
پیکرِ حال کو خونِ رگِ فردا بخشا

تجھ کو بخشی ہے تری ماں نے لطافت اپنی
دیکھتی ہے ترے آئینے میں صورت اپنی

**परवेज़ शाहिदी**

## तस्लीसे हयात[1]

उंगुलियां मेरी हैं, लब मेरे हैं, आंखें मेरी
मेरी पेशानी का टुकड़ा तिरी पेशानी है
नन्ही नन्ही ये भवें तेरी हैं या मेरी हैं
तेरी रग-रग में मिरे खून की जौलानी[2] है
दस्तो पा[3] में जो ये कैफ़ियते सीमाबी[4] है
मेरी ही रूह की निखरी हुयी बेताबी है
अपने शेरों में जुड़े रूह के टुकड़े कितने
अपने अफ़्कार[5] को खूं दिल का पिलाकर पाला
भर दी हर लफ़्ज़ में शख़्सियते रंगीं अपनी
अपने ही सांचे मे अन्दाज़े बयां को ढ़ाला
मेरा फ़न भी मिरी तस्वीर की तक्मील[6] नहीं
कोई तुझ सा मिरे इजमाल[7] की तफ़्सील नहीं
तुझको अपने ही ख़दोख़ाल[8] तिरी माँ ने दिये
अपना शादाब चमकता हुआ चेहरा बख़्शा
ख़लवते बत्न[9] में हर तरह संवारा तुझको
पैकरे हाल को ख़ूने रगे फ़र्दा बख़्शा
तुझको बख़्शी है तिरी मां ने लताफ़त[10] अपनी
देखती है तिरे आईने में सूरत अपनी

1. ज़िन्दगी का त्रिकोण
2. तेज़ी
3. हाथ और पैर
4. पारे जैसी कैफ़ियत
5. फ़िक्र (चिन्तन) का बहुवचन
6. पूर्णता
7. संक्षेप
8. आकृति
9. पेट के अन्दर
10. कोमलता

گرہِ رشتۂ پیمانِ وفا تیرا وجود
تجھ سے مضبوط ہوا عہدِ محبت اپنا
ہاتھ میں ہے مرے دل کے، دلِ محبوب کا ہاتھ
کتنا بشاش ہے احساسِ رفاقت اپنا
خستگی شوق کی اب تازہ دمی تک پہنچی
راحتِ ہم سفری ہم قدمی تک پہنچی
ماں نے موسم کے بدلتے ہوئے تیور بھانپے
انگلیوں نے مری، کیں نبضِ ہوا سے باتیں
ایک لمحہ بھی نہ چپکے سے گذرنے پایا
دن تو دن آنکھوں ہی آنکھوں میں کٹی ہیں راتیں
آج کی طرح تمنا کبھی بیدار نہ تھی
اتنی دلچسپ تو کل وقت کی رفتار نہ تھی
گرچہ ہے سخت بہت معرکۂ نشو و نما
مامتا صرف سپر ہی نہیں تلوار بھی ہے
میری شفقت بھی تری جہدِ بقا میں ہے شریک
دل جری ہی نہیں، کچھ واقفِ پیکار بھی ہے
ذہن میں سلسلۂ شام و سحر رہتا ہے
تیرا اندازِ سفر پیشِ نظر رہتا ہے

❖

یہ تضاداتِ مسلسل، یہ ستیزِ پیہم
یہ تصادم، یہ ہم آویزئ اضدادِ حیات

गिरहे रिश्तए पैमाने वफ़ा तेरा वुजूद[1]
तुझसे मज़बूत हुआ अह्दे मुहब्बत अपना
हाथ में है मिरे दिल के, दिले महबूब का हाथ
कितना बश्शाश[2] है एहसासे रफ़ाक़त[3] अपना

ख़स्तगी[4] शौक़ की अब ताज़ा दमी तक पहुंची
राहतें हम सफ़री हम क़दमी तक पहुंची

मां ने मौसम के बदलते हुये तेवर भांपे
उंगलियों ने मिरी, कीं नब्ज़ें हवा से बातें
एक लम्हा भी न चुपके से गुज़रने पाया
दिन तो दिन आंखों ही आंखों में कटी हैं रातें

आज की तरह तमन्ना कभी बेदार न थी
इतनी दिलचस्प तो कल वक़्त की रफ़्तार न थी

गरचे है सख़्त बहुत मारकए नशवो नुमा[5]
मामता सिर्फ़ सिपर[6] ही नहीं, तलवार भी है
मेरी शफ़क़त[7] भी तिरी जह्दे बक़ा[8] में है शरीक
दिल जरी[9] ही नहीं, कुछ वाक़िफ़े पैकार[10] भी है

ज़ेह्न मे सिल्सिलए शामो सहर रहता है
तेरा अन्दाज़े सफ़र पेशे नज़र रहता है

❖

ये तज़ादाते मुसलसल[11], ये सतीज़े पैहम[12]
ये तसादुम[13], ये हम आवेज़िए अज़्दादे हयात

1. अस्तित्व
2. खुश
3. संगत का एहसास
4. थकन
5. विकास की जंग
6. ढाल
7. मेहरबानी
8. अस्तित्व के संघर्ष
9. बहादुर
10. लड़ाई से भिज्ञ
11. मुसलसल विरोधाभास
12. लगातार लड़ाई
13. टकराव

ساز سے یہ رمِ آواز، یہ ربطِ آواز
زندگی کا یہ تسلسل، یہ تغیر، یہ ثبات
روحِ تخلیق خفی کو بھی جلی کرتی ہے
ہے یہ ثابت کہ نفی اپنی نفی کرتی ہے
نفی و اثبات کے تاروں کا مسلسل ٹکراؤ
زندگی کی جدلی زمزمہ پردازی ہے
کائنات اتنی خوش آہنگ جو آتی ہے نظر
عمل و ردِ عمل ہی کی نوا سازی ہے
حسنِ معنی ہے یہی، جلوۂ صورت ہے یہی
نغمہ ہی نغمہ ہے، ہر شے کی حقیقت ہے یہی
حسن اور عشق کا یہ جذبۂ خود افزائی ہے
اک نئے پیکرِ معصوم میں ڈھل جاتا ہے
اسی پیکر سے اُبھرتا ہوا نقشِ تثلیث
اپنی وسعت میں جہاں ساز نظر آتا ہے
محفلِ حسن و محبت اسی تثلیث میں ہے
جلوہ گر شاہدِ فطرت اسی تثلیث میں ہے
کتنی دلکش ہے خوش امکانی تثلیثِ حیات
اس کی فطرت ہے خود افراز و خود آرا ہونا
وسعتِ جلوہ سے ہے حسن کی تکمیلِ شباب
قسمتِ ذرّہ ہے آئینۂ صحرا ہونا

साज़ में ये रमे आवाज़[1], ये रब्ते आवाज़[2]
ज़िन्दगी का ये तसलसुल[3], ये तग़य्युर[4], ये सबात[5]

रूहे तख़्लीक़[6] ख़फ़ी[7] को भी जली[8] करती है
है ये साबित कि नफ़ी अपनी नफ़ी करती है

नफ़ीयो इस्तबात के तारों का मुसल्सल टकराव
ज़िन्दगी की जदली ज़मज़मा पर्दाज़ी[9] है
काइनात[10] इतनी ख़ुश-आहंग जो आती है नज़र
अमलो-रद्दे अमल ही की नवासाज़ी[11] है

हुस्ने मानी है यही, जल्वए सूरत है यही
नग़्मा ही नग़्मा है, हर शै की हक़ीक़त है यही

हुस्न और इश्क़ का ये जज़्बए ख़ुद अफ़ज़ाई[12] है
इक नये पैकरे मासूम में ढल जाता है
इसी पैकर[13] से उभरता हुआ नक़्शे तस्लीस[14]
अपनी वुस्अत में जहां साज़ नज़र आता है

महफ़िले हुस्नो मुहब्बत इसी तस्लीस में है
जल्वागर शाहिदे फ़ितरत इसी तस्लीस में है

कितनी दिलकश है ख़ुश इमकानिए तस्लीसे हयात
इसकी फ़ितरत[15] है ख़ुद अफ़रोज़ा[16] ख़ुदआरा[17] होना
वुस्अते जल्वा[18] से है हुस्न की तक्मीले शबाब
क़िस्मते ज़र्रा है आईनए सहरा होना

1. आवाज़ की गति
2. आवाज़ का सम्बंध
3. निरन्तरता
4. बदलाव
5. दृढ़ता
6. संरचना की आत्मा
7. बारीक
8. मोटा लिखा हुआ
9. नग़्मा गाना
10. सृष्टि
11. गाना
12. अपने आप को बढ़ाने वाली भावना
13. शक्ल
14. त्रिकोण का चिन्ह
15. स्वभाव
16. ख़ुद से रौशन होने वाला
17. ख़ुद से सजने वाला
18. दृश्य के विस्तार

زندگی مست و غزل خواں ہے خود آرائی سے
ہر کلی جان گلستاں ہے خود آرائی سے

باپ، ماں، بچے کی فطری سہ رخی وحدت سے
کنبے انسانوں کے تثلیث کی صورت پھیلے
کثرت آرائیِ فطرت کا یہی مقصد ہے
حسن دنیا میں پھلے پھولے، محبت پھیلے

اور ابھی روشنی مہرِ مبیں پھیلے گی
گود میں لے کے ستاروں کو زمیں پھیلے گی

تیری معصوم صدا سے مترنم ہے شعور
علم و حکمت کو بھی موسیقیِ جذبات ملی
دھڑکنیں دل کی خوش آوازیِ افکار بنیں
ذہن کو بربطِ احساس کی سوغات ملی

سازِ ادراک میں نغموں کا تلاطم ہے آج
عقلِ بے لحن ترنم ہی ترنم ہے آج

سرو قد مجھ کو نظر آتے ہیں ننھے پودے
بڑھ رہا ہے مرا دل بھی ترے قامت کے ساتھ
سامنے آنکھوں کے رہتے ہیں کروڑوں غنچے
جیسے ہر پھول کھلے گا تری صورت کے ساتھ

تجھ سے اے جانِ پدر! میں نے نظر پائی ہے
ساری دنیا مرے پہلو میں سمٹ آئی ہے

تیری سانسوں سے پگھل کر مرے اعصاب کا موم
سختیِ آہن و فولاد کو شرماتا ہے

जि़न्दगी मस्तो ग़ज़ल ख़्वां है ख़ुद आराई से
हर कली जाने गुलिस्तां है ख़ुद आराई से
बाप, मां, बच्चे की फ़ित्री सहरुख़ी वहदत[1] से
कु़बे इन्सानों के तस्लीस की सूरत फैले
कसरत आराईए फ़ित्रत का यही मक़सद है
हुस्न दुनिया में फले फूले, मुहब्बत फैले
और अभी रौशनीए मेह्र मुबीं[2] फैलेगी
गोद में ले के सितारों को ज़मीं फैलेगी
तेरी मासूम सदा से मुतरन्निम[3] है शऊर
इल्मो हिकमत को भी मूसीक़िए जज़्बात[4] मिली
धड़कनें दिल की ख़ुश आवाज़िए अफ़कार बनीं
ज़ेह्न को बर्बते एहसास की सौग़ात मिली
साज़े इद्राक[5] में नग़्मों का तलातुम[6] है आज
अक़्ले बे लह्न[7] तरन्नुम ही तरन्नुम है आज
सर्व क़द मुझको नज़र आते हैं नन्हे पौदे
बढ़ रहा है मिरा दिल भी तिरे क़ामत के साथ
सामने आंखों के रहते हैं करोड़ों गुन्चे
जैसे हर फूल खिलेगा तिरी सूरत के साथ
तुझसे ऐ जाने पिदर! मैंने नज़र पाई है
सारी दुनिया मिरे पहलू में सिमट आयी है
तेरी सांसों से पिघलकर मेरे आसाब[8] का मोम
सख़्तीए आहनो फ़ौलाद को शरमाता है

1. त्रिपक्षी एकता
2. रौशन सूरज की रोशनी
3. गाने वाला
4. भावनाओं का संगीत
5. होश का साज़
6. थपेड़े
7. बेआवाज़
8. मांसपेशियां

جب ترے ننھے سے پیکر کو اُٹھا لیتا ہوں
بارِ آلام سُبک مجھ کو نظر آتا ہے

ہے کھلونا غمِ دنیا، مجھے معلوم نہ تھا
میرے بازو ہیں توانا، مجھے معلوم نہ تھا

رُخِ امروز پہ کیوں ہو غمِ فردا کا غبار
حال کو میرے مبارک ترا ماضی ہونا
نیستی میرے تصور میں نہیں آسکتی
تیری ہستی کو ہے بڑھ کر مری ہستی ہونا

تو مری روح، مرا جسم ہے میرا دل ہے
تیرے چہرے سے درخشاں مرا مستقبل ہے

میری آنکھوں کو اگر بند بھی کر دے گی تھکن
تازہ دم ہو کے تری آنکھوں سے جھانکوں گا میں
چاک ہو جائے گا جب جامۂ ہستی میرا
دھجیاں اپنی تری سانسوں سے ٹانکوں گا میں

ذہنِ احباب میں ہے جامہ دری فطرت کی
ہے مرے پیشِ نظر بخیہ گری فطرت کی

میرے جذبات و خیالات، مرے محسوسات
ان کے رخساروں پہ اب پہلی سی زردی نہ رہی
تو نے بخشی ہے وہ صحت مری شخصیت کو
دل کے لرزے نہ رہے ذہن کی سردی نہ رہی

اتنا شاداب کبھی چہرۂ کردار نہ تھا
کوئی دیکھے تو یہ سمجھے کہ میں بیمار نہ تھا

जब तिरे नन्हे से पैकर को उठा लेता हूं
बारे आलाम[1] सबुक[2] मुझको नज़र आता है

है खिलौना ग़मे दुनिया मुझे मालूम न था
मेरे बाज़ू हैं तवाना, मुझे मालूम न था

रुख़े इमरोज़[3] पे क्यों हो ग़मे फ़र्दा का गुबार
हाल को मेरे मुबारक तिरा माज़ी[4] होना
नेस्ती मेरे तसव्वुर में नहीं आ सकती
तेरी हस्ती को है बढ़कर मिरी हस्ती होना

तू मिरी रूह, मिरा जिस्म है, मेरा दिल है
तेरे चेहरे से दरख़्शां[5] मिरा मुस्तक़बिल[6] है

मेरी आंखों को अगर बन्द भी कर देगी थकन
ताज़ादम होके तिरी आंखों से झांकूंगा मैं
चाक हो जायेगा जब जामए हस्ती मेरा
धज्जियां अपनी तिरी सांसों से टांकूंगा मैं

ज़ेह्ने अहबाब में है जामा दरी फ़ित्रत की
है मिरे पेशेनज़र बख़ियागरी फ़ित्रत की

मेरे जज़्बातो ख़यालात, मिरे महसूसात
इनके रुख़सारों[7] पे अब पहली सी ज़र्दी[8] न रही
तूने बख़्शी है वो सेह्हत मिरी शख़्सियत को
दिल के लरज़े न रहे ज़ेह्न की सर्दी न रही

इतना शादाब कभी चेहरए किरदार न था
कोई देखे तो ये समझे कि मैं बीमार न था

1. दुखों का बोझ
2. हल्का
3. आज के रुख़
4. अतीत
5. चमकता हुआ
6. भविष्य
7. गालों
8. पीलापन

مہر ہی مہر نہیں فطرتِ آشفتہ مزاج
عشوۂ لطف بھی ہے، شوخیِ بے داد بھی ہے
زندگی سوز ہیں آفاتِ سماوی بھی بہت
کچھ ہوس ناک زمیں والوں کی ایجاد بھی ہے
باغ میں آگ کی جس وقت گھٹا چھاتی ہے
منہ سے پھولوں کے بھی بارود کی بُو آتی ہے

ہے اِدھر باغ میں صرصر، تو اُدھر بادِ نسیم
کتنا دکھ جھیل کے کلیاں گلِ تر بنتی ہیں
گلستاں سوز سیاست بھی ہے غمخوار سموم
ڈالیاں رقص گہہِ برق و شرر بنتی ہے
دور صحرا میں بھی جب گرم ہوا چلتی ہے
دل لرزتا ہے کہ گلشن کی چتا جلتی ہے

دُرِ خوش آب تو بن جاتی ہے پانی کی بوند
مرحلے سخت ہیں تکمیلِ سفر ہونے تک
''دامِ ہر موج میں ہے حلقۂ صد کام نہنگ''
دیکھیں کیا گذرے ہے قطرے پہ گہر ہونے تک
آبِ پانی کی صدف میں کبھی لہراتی ہے
ابرِ نیساں کی کبھی جیب کتر جاتی ہے

اے مرے پیکرِ نو! اے مری روحِ پیکار!!
پرچمِ عزم مرا اب تجھے لہرانا ہے

मिट्टी ही मिट्टी नहीं फ़ित्रते आशुफ़्ता मिज़ाज[1]
इश्वए लुत्फ़ भी है, शोख़िए बेदाद भी है
ज़िन्दगी सोज़ हैं आफ़ाते समावी[2] भी बहुत
कुछ हवसनाक ज़मीं वालों की ईजाद[3] भी है

बाग़ में आग की जिस वक़्त घटा छाती है
मुंह से फूलों के भी बारूद की बू आती है

है इधर बाग़ में सरसर[4], तो उधर बादे नसीम[5]
कितना दुख झेल के कलियां गुलेतर बनती हैं
गुलिस्तां सोज़ सियासत भी है ग़मख़्वारे सुमूम[6]
डालियां रक़्से गहे[7] बर्क़ो शरर[8] बनती हैं

दूर सह्रा[9] में भी जब गर्म हवा चलती है
दिल लरज़ता है कि गुलशन की चिता जलती है

दुर्रेखुशआब[10] तो बन जाती है पानी की बूंद
मरहले सख़्त हैं तक्मीले सफ़र[11] होने तक
'दामे हर मौज में है हल्क़ए सद काम निहंग'
देखें क्या गुज़रे है क़तरे पे गुहर[12] होने तक

आब पानी की सदफ़[13] में कभी लहराती है
अब्रे नेसां[14] की कभी जेब कतर जाती है

ऐ मिरे पैकरे नौ, ऐ मिरी रूहे पैकार!!
परचमे अज़्म[15] मिरा अब तुझे लहराना है

1. परेशानहाल
2. दैवी मुसीबतें
3. अविष्कार
4. झक्कड़
5. सुबह की हल्की ठंडी हवा
6. लूह
7. नृत्य स्थल
8. बिजली व चिंगारी
9. रेगिस्तान
10. चमकदार मोती
11. सफ़र की पूर्णता
12. मोती
13. सीप
14. बैसाख का बादल, इस महीने की बारिश शाइराना रिवायत के अनुसार सीप में गिरकर मोती बन जाती है।
15. दृढ़ता का झंडा

میری آواز نہیں میرے لبوں تک محدود
تیرے ہی ہونٹوں سے کل مجھ کو رجز گانا ہے
ہے تری جہدِ نمو جنگِ مسلسل میری
تیری تکمیل میں ہے فتحِ مکمل میری

●

## سازِ مستقبل

کتنے اصنامِ نا تراشیدہ
پتھروں ہی میں کسمساتے ہیں
کتنے ہی ناشگفتہ لالۂ و گل
ذہنِ بلبل کو گدگداتے ہیں
کتنے ہی جلوہ ہائے نادیدہ
ابھی پردے میں مسکراتے ہیں
ناسرائیدہ کتنے ہی نغمے
دل کے تاروں سے لپٹے جاتے ہیں
بے جلائے ہوئے دیئے کتنے
رات ہوتے ہی جھلملاتے ہیں
کس نے چھیڑا ہے سازِ مستقبل؟
آج لمحات گنگناتے ہیں

●●●

मेरी आवाज़ नहीं मेरे लबों तक महदूद
तेरे ही होंटों से कल मुझको रजज़[1] गाना है

है तिरी जह्दे नमू जंगे मुसल्सल मेरी
तेरी तक्मील में हैं फ़तहे मुकम्मल मेरी

●

## साज़े मुस्तक़बिल[2]

कितने अस्नामे नातराशीदा[3]
पत्थरों ही में कसमसाते हैं
कितने ही नाशगुफ़्ता लालओ गुल
ज़ेहने बुलबुल को गुदगुदाते हैं
कितने ही जलवा हाए नादीदा
अभी पर्दे में मुस्कराते हैं
नासराईदा[4] कितने ही नग़मे
दिल के तारों से लिपटे जाते हैं
बे-जलाए हुये दिये कितने
रात होते ही झिलमिलाते हैं
किसने छेड़ा है साज़े मुस्तक़बिल?
आज लम्हात गुनगुनाते हैं

●●●

1. यह अशआर जो मैदाने जंग में खुद पढ़े आयें
2. भविष्य का साज़ 3. अनगढ़ मूर्तियां
4. बिना गया हुआ

ن۔م۔راشد

## دریچے کے قریب

جاگ اے شمعِ شبستانِ وصال
محفلِ خواب کے اس فرشِ طربناک سے جاگ!
لذتِ شب سے ترا جسم ابھی چور سہی
آمری جان مرے پاس دریچے کے قریب
دیکھ کس پیار سے انوارِ سحر چومتے ہیں
مسجدِ شہر کے میناروں کو
جن کی رفعت سے مجھے
اپنی برسوں کی تمنا کا خیال آتا ہے

سیمگوں ہاتھوں سے اے جان ذرا
کھول مے رنگ جنوں خیز آنکھیں!
اسی مینار کو دیکھ
صبح کے نور سے شاداب سہی
اسی مینار کے سائے تلے کچھ یاد بھی ہے
اپنے بیکار خدا کی مانند
اونگھتا ہے کسی تاریک نہاں خانے میں
ایک افلاس کا مارا ہوا ملاّئے حزیں
ایک عفریت — اُداس

नून–मीम–राशिद

# दरीचे के क़रीब

जाग ऐ शम्ए शबिस्ताने विसाल[1]
महफ़िले ख़्वाब[2] के इस फ़र्शे तरबनाक[3] से जाग
लज़्ज़ते शब[4] से तिरा जिस्म अभी चूर सही
आ मिरी जान, मिरे पास दरीचे के क़रीब
देख किस प्यार से अनवारे सहर[5] चूमते हैं
मस्जिदे शहर के मीनारों को
जिन की रिफ़अत[6] से मुझे
अपनी बरसों की तमन्ना का ख़्याल आता है

सीमगूं[7] हाथों से ऐ जान ज़रा
खोल मयरंग जुनूंख़ेज़[8] आंखें!
इसी मीनार को देख
सुब्ह के नूर से शादाब[9] सही
इसी मीनार के साये तले कुछ याद भी है
अपने बेकार ख़ुदा की मानिन्द
ऊँघता है किसी तारीक निहांख़ाने[10] में
एक इफ़्लास[11] का मारा हुआ मुल्लाए हज़ीं[12]
एक इफ़रीत[13] — उदास

1. मिलने की रात को रौशन करने वाली शम्म
2. सपनों की महफ़िल
3. ख़ुशियां देने वाला फ़र्श
4. रात की लज़्ज़त
5. सुबह की रौशनियां
6. ऊँचाई
7. चांदी जैसा सफ़ेद
8. जुनून पैदा करने वाली
9. हरा भरा
10. गुप्तघर
11. ग़रीबी
12. दुखी मुल्ला
13. भूत

تین سو سال کی ذلت کا نشاں
ایسی ذلت کہ نہیں جس کا مداوا کوئی!

دیکھ بازار میں لوگوں کا ہجوم
بے پناہ سیل کے مانند رواں!
جیسے جنات بیابانوں میں
مشعلیں لے کے سرِ شام نکل آتے ہیں،
ان میں ہر شخص کے سینے کے کسی گوشے میں
ایک دُلہن سی بنی بیٹھی ہے
ٹمٹماتی ہوئی ننھی سی خودی کی قندیل
لیکن اتنی بھی توانائی نہیں
بڑھ کے ان میں سے کوئی شعلۂ جوالہ بنے!
ان میں مفلس بھی ہیں بیمار بھی ہیں
زیرِ افلاک مگر ظلم سہے جاتے ہیں!

ایک بوڑھا سا تھکا ماندہ سا رہوار ہوں میں!
بھوک کا شاہسوار
سخت گیر اور تنومند بھی ہے،
میں بھی اس شہر کے لوگوں کی طرح
ہر شبِ عیش گزر جانے پر
بہرِ جمع خس و خاشاک نکل جاتا ہوں
چرخ گرداں ہے جہاں
شام کو پھر اسی کاشانے میں لوٹ آتا ہوں

तीन सौ साल की ज़िल्लत का निशां
ऐसी ज़िल्लत कि नहीं जिसका मदावा[1] कोई!

देख बाज़ार में लोगों का हुजूम
बेपनाह सैल[2] के मानिंद रवां!
जैसे जिन्नात बयाबानों में
मशअलें लेके सरेशाम[3] निकल आते हैं
इनमें हर शख़्स के सीने के किसी गोशे में
एक दुल्हन सी बनी बैठी है
टिमटिमाती हुई नन्ही सी ख़ुदी की क़ंदील[4]
लेकिन इतनी भी तवानाई नहीं
बढ़ के इनमें से कोई शोलए जव्वाला बने!
इनमें मुफ़लिस भी हैं बीमार भी हैं
ज़ेरे अफ़लाक मगर ज़ुल्म सहे जाते हैं!

एक बूढ़ा सा थका-मांदा सा रह्वार[5] हूं मैं!
भूक का शाहसवार[6]
सख़्तगीर और तनूमंद भी है,
मैं भी इस शहर के लोगों की तरह
हर शबे ऐश गुज़र जाने पर
बह्रे जम्अ ख़सो ख़ाशाक[7] निकल जाता हूं
चर्ख़ गरदां[8] है जहां
शाम को फिर इसी काशाने में लौट आता हूं

1. इलाज
2. बहाव
3. शाम होते ही
4. दीपक
5. घोड़ा
6. सवारी का माहिर
7. घास फूस को जमा करने की ख़ातिर
8. घूमने वाला आसमान

بے بسی میری ذرا دیکھ کہ مَیں
مسجدِ شہر کے میناروں کو
اس دریچے میں سے پھر جھانکتا ہوں
جب انہیں عالمِ رخصت میں شفق چومتی ہے!

●

## نمرود کی خدائی

یہ قدسیوں کی زمیں
جہاں فلسفی نے دیکھا تھا، اپنے خوابِ سحر گہی میں
ہوائے تازہ و کشتِ شاداب و چشمۂ جانفروز کی آرزو کا پرتو!
یہیں مسافر پہنچ کے اب سوچنے لگا ہے:
وہ خواب کابوس تو نہیں تھا؟
وہ خواب کابوس تو نہیں تھا؟

اے فلسفہ گو،
کہاں وہ رویائے آسمانی؟
کہاں یہ نمرود کی خدائی!
تو جال بنتا رہا ہے، جن کے شکستہ تاروں سے اپنے موہوم فلسفے کے
ہم اُس یقین سے، ہم اُس عمل سے، ہم اُس محبت سے
آج مایوس ہو چکے ہیں!

کوئی یہ کس سے کہے کہ آخر

बेबसी मेरी ज़रा देख कि मैं
मस्जिदे शह्र के मीनारों को
इस दरीचे में से फिर झांकता हूं
जब उन्हें आलमे रुख़सत में शफ़क़[1] चूमती है

●

## नमरूद की ख़ुदाई

ये क़ुद्सियों[2] की ज़मीं
जहां फ़ल्सफ़ी ने देखा था, अपने ख़्वाबे सहरगही[3] में
हवाए ताज़ओ किश्ते शादाबो चश्मए जांफ़रोज़ की आरज़ू का परतो!
यहीं मुसाफ़िर पहुंच के अब सोचने लगा है:
वो ख़्वाब काबूस[4] तो नहीं था?
वो ख़्वाब काबूस तो नहीं था?

ऐ फ़ल्सफ़ागो[5],
कहां वो रूयाए आसमानी?
कहां ये नमरूद की ख़ुदाई!
तू जाल बुनता रहा है, जिनके शकिस्ता तारों से अपने मौहूम फ़ल्सफ़े के
हम उस यक़ीं से, हम उस अमल से, हम उस मुहब्बत से
आज मायूस हो चुके हैं!

कोई ये किससे कहे कि आख़िर

1. सूरज निकलने से पहले और डूबने के बाद आसमान पर छाई हुई लाली
2. फ़रिश्तों
3. सुब्ह के वक़्त के सपने
4. एक तरह की बीमारी जिसमें आदमी को नींद में यूं महसूस होता है जैसे किसी ने उसे दबा लिया है।
5. दर्शनशास्त्री

گواہ کس عدلِ بے بہا کے تھے عہدِ تا تار کے خرابے؟
عجم، وہ مرزِ طلسم و رنگ و خیال و نغمہ
عرب، وہ اقلیم شیر و شہد و شراب و خرما
فقط نوا سنج تھے در و بام کے زیاں کے،
جو اُن پہ گزری تھی
اُس سے بدتر دنوں کے ہم صید نا تواں ہیں!

کوئی یہ کس سے کہے:
در و بام،
آہن و چوب و سنگ و سیماں کے
حسنِ پیوند کا فسوں تھے
بکھر گیا وہ فسوں تو کیا غم؟
اور ایسے پیوند سے امیدِ وفا کسے تھی!

شکستِ مینا و جام برحق،
شکستِ رنگِ عذارِ محبوب بھی گوارا
مگر — یہاں تو کھنڈر دلوں کے
(— یہ نوعِ انساں کی
کہکشاں سے بلند و برتر طلب کے اُجڑے ہوئے مدائن —)
شکستِ آہنگ حرف و معنی کے نوحہ گر ہیں!
●

गवाह किस अद्ले बेबहा[1] के थे अहदे तातार के ख़राबे?
अजम, वो मरज़े तिलिस्मो रंगो ख़्यालो नग़मा
अरब, वो इक्लीमे शेरे शहदो शराबो खुर्मा
फ़क़त नवासंज[2] थे दरो बाम[3] के ज़ियां[4] के
जो उन पे गुज़री थी
उससे बद्तर दिनों के हम सैदेनातवां[5] हैं!

कोई ये किससे कहे:
दरो बाम,
आहनो चोबो संगो सीमां के
हुस्ने पेवन्द का फ़ुसूं[6] थे
बिखर गया वो फ़ुसूं तो क्या ग़म?
और ऐसे पेवन्द से उम्मीदे वफ़ा किसे थी!

शिकस्ते मीनाओ जाम बरहक़,
शिकस्ते रंगे इज़ारे[7] महबूब भी गवारा
मगर — यहां तो खंडर दिलों के
(— ये नौए इंसां की
कहकशां[8] से बलन्दो बरतर तलब के उजड़े हुए मदाइन[9])
शिकस्ते आहंगे हरफ़ो मानी के नौहागर[10] हैं!

●

1. बेशक़ीमत इंसाफ़
2. गवैये
3. दरवाज़े और छत
4. नुक़्सान
5. कमज़ोर शिकार
6. जादू
7. गालों के रंग
8. आकाश गंगा
9. शहरों
10. मातम करने वाले

# سبا ویراں

سلیماں سر بہ زانو اور سبا ویراں
سبا ویراں، سبا آسیب کا مسکن
سبا آلام کا انبارِ بے پایاں!
گیاہ و سبزہ و گل سے جہاں خالی
ہوائیں تشنۂ باراں
طیور اِس دشت کے منقار زیرِ پر
تو سرمہ در گلو انساں
سلیماں سر بہ زانو اور سبا ویراں!
سلیماں سر بہ زانو، تُرش رو، غمگیں، پریشاں مُو
جہانگیری، جہانبانی، فقط طرّارۂ آہو
محبت شعلۂ پرّاں، ہوس بوئے گلِ بے بو
ز رازِ دہر کمتر گو!
سبا ویراں کہ اب تک اس زمیں پر ہیں
کسی عیّار کے غارت گروں کے نقشِ پا باقی
سبا باقی، نہ مہروئے سبا باقی!

سلیماں سر بہ زانو،

## सबा वीरां

सुलेमां सर-ब-ज़ानू[1] और सबा वीरां
सबा वीरां, सबा[2] आसेब का मस्कन[3]
सबा आलाम[4] का अंबारे बे पायां!
ग्याहो सबज़ो गुल से जहां ख़ाली
हवाएं तिशनए बारां[5]
तुयूर[6] इस दश्त के मिनक़ार ज़ेरे पर[7]
तो सुरमा-दर-गुलू इंसां
सुलेमां सर-ब-ज़ानू और सबा वीरां!
सुलेमानं सर-ब-ज़ानू, तुर्शरू, ग़मगीं, परीशां मू[8]
जहांगीरी[9], जहांबानी[10], फ़क़त तर्राए आहू[11]
मुहब्बत शोलाए पर्रां[12], हवस बूए गुले बे बू
ज़ राज़े दह्र कमतर गो!
सबा वीरां कि अब तक इस ज़मीं पर हैं
किसी अय्यार के ग़ारतगरों के नक़्शे पा[13] बाक़ी
सबा बाक़ी, न महरुयेसबा बाक़ी!

सुलेमां सर-ब-ज़ानू,

1. घुटनों पर सर रखते हुए
2. यमन का एक शहर जहां की रानी बिल्कीस हज़रत सुलैमान के निकाह में आई थी
3. ठिकाना
4. अलम का बहुवचन अर्थात अत्यन्त दुख
5. बरसात की प्यासी हवाएं
6. ताइर (पक्षी) का बहुवचन
7. परों के नीचे चोंच किए हुए
8. बाल बिखराए हुए
9. दुनिया को जीतने वाली
10. बादशाहत
11. हिरन की छलांग
12. उड़ता हुआ शोला
13. पैरों के निशान

اب کہاں سے قاصدِ فرخندہ پے آئے؟
کہاں سے، کس سبو سے کاسۂ پیری میں مے آئے؟

●

## دل، مرے صحرا نوردِ پیر دل

نغمہ در جاں، رقص بر پا، خندہ بر لب
دل، تمناؤں کے بے پایاں الاؤ کے قریب!

دل، مرے صحرا نوردِ پیر دل
ریگ کے دلشاد شہری ریگ تُو
اور ریگ ہی تیری طلب
ریگ کی نکہت ترے پیکر میں، تیری جاں میں ہے!

ریگ صبحِ عید کے مانند زرتاب و جلیل،
ریگ صدیوں کا جمال
جشنِ آدم پر بچھڑ کر ملنے والوں کا وصال
شوق کے لمحات کے مانند آزاد و عظیم!

ریگ نغمہ زن
کہ ذرّے ریگ زاروں کی وہ پازیب قدیم
جس پہ پڑ سکتا نہیں دستِ لئیم،
ریگِ صحرا زرگری کی ریگ کی لہروں سے دُور
چشمۂ مکر و ریا شہروں سے دُور!

अब कहां से कासिदे फ़रखुन्दा पय आये?

कहां से, किस सबु[1] से कासए पीरी[2] में मय आये?

●

## दिल, मिरे सहरा नवर्दे[3] पीर दिल

नग़मा दरजां[4], रक़्स बरपा[5], ख़न्दा बर लब[6]

दिल, तमन्नाओं के बेपायां[7] अलाव के क़रीब!

दिल, मिरे सहरा नवर्दे पीर दिल

रेग के दिलशाद शहरी, रेग तू

और रेग ही तेरी तलब

रेग की निकहत[8] तिरे पैकर[9] में, तेरी जां में है!

रेग सुब्हे ईद के मानिंद ज़रताबो जलील,

रेग सदियों का जमाल

जश्ने आदम पर बिछड़ कर मिलने वालों का विसाल

शौक़ के लम्हात के मानिन्द आज़ादो अज़ीम!

रेग नग़माज़न[10]

कि ज़र्रे रेगज़ारों की वो पाज़ेबे क़दीम

जिस पे पड़ सकता नहीं दस्ते लईम[11],

रेगे सहरा ज़रगरी की रेग की लहरों से दूर

चश्मए मकरो रिया[12] शहरों से दूर!

1. मटका, घड़ा
2. बुढ़ापे
3. जंगलों में फिरने वाला
4. जान में गीत
5. पांव पर नाच
6. होंटों पर मुस्कान
7. अथाह
8. ख़ुश्बू
9. जिस्म
10. गाने वाला
11. कंजूस का हाथ
12. धोका और फ़रेब

ریگ شب بیدار ہے، سنتی ہے ہر جابر کی چاپ
ریگ شب بیدار ہے، نگراں ہے مانندِ نقیب
دیکھتی ہے سایۂ آمر کی چاپ
ریگ ہر عیار، غارت گر کی موت
ریگ استبداد کے طغیاں کے شور و شر کی موت
ریگ جب اُٹھتی ہے، اُڑ جاتی ہے ہر فاتح کی نیند
ریگ کے نیزوں سے زخمی، سب شہنشاہوں کے خواب!
(ریگ، اے صحرا کی ریگ
مجھ کو اپنے جاگتے ذرّوں کے خوابوں کی نئی تعبیر دے!)
ریگ کے ذرّو، اُبھرتی صبح تم
آؤ صحرا کی حدوں تک آ گیا روزِ طرب
دل، مرے صحرا نوردِ پیر دل،
آ چوم ریگ!
ہے خیالوں کے پری زادوں سے بھی معصوم ریگ!

ریگ رقصاں، ماہ و سالِ نور تک رقصاں رہے
اس کا ابریشم ملائم، نرم خو، خنداں رہے!

دل، مرے صحرا نوردِ پیر دل
یہ تمناؤں کا بے پایاں الاؤ
راہ گم کردوں کی مشعل، اس کے لب پر "آؤ! آؤ!"

रेग शब बेदार[1] है, सुनती है हर जाबिर[2] की चाप
रेग शब बेदार है, निगरां[3] है मानिन्दे नक़ीब
देखती है सायए आमिर[4] की चाप
रेग हर अय्यार, ग़ारतगर[5] की मौत
रेग इस्तिबदाद[6] के तुग़्यां के शोरो शर[7] की मौत
रेग जब उठती है, उड़ जाती है हर फ़ातेह[8] की नींद
रेग के नेज़ों[9] से ज़ख़्मी, सब शहंशाहों के ख़्वाब!
(रेग, ऐ सहरा की रेग
मुझ को अपने जागते ज़र्रों के ख़्वाबों की नई ताबीर[10] दे!)
रेग के ज़र्रों, उभरती सुब्ह तुम
आओ सहरा की हदों तक आ गया रोज़े तरब[11]
दिल, मिरे सहरा नवर्दे पीर दिल
आ चूम रेग!
है ख़्यालों के परीज़ादों[12] से भी मासूम रेग!

रेग रक़्सां[13], माहो साले नूर[14] तक रक़्सां रहे
उसका अबरेशम[15] मुलायम, नर्मख़ू[16], ख़न्दां[17] रहे!

दिल, मिरे सहरा नवर्दे पीर दिल
ये तमन्नाओं का बेपायां अलाव
राह गुम कर्दों[18] की मश्अल, उसके लब पर "आओ! आओ!"

1. जागी हुई
2. ज़्यादती करने वाला
3. निगाह रखने वाला
4. तानाशाह
5. विनाश करने वाला
6. ज़ुल्म
7. शोर और हंगामा
8. विजेता
9. भालों या बरछियों
10. स्वपन फल
11. ख़ुशी का दिन
12. परियों के शहज़ादों
13. नाचते हुए
14. रोशनी के महीने और साल
15. कच्चा रेशम
16. कोमल प्रकृति वाला
17. हंसता हुआ
18. राह गुम करने वालों

تیرے ماضی کے خزف ریزوں سے جاگی ہے یہ آگ
آگ کی قرمز زباں پر انبساطِ نو کے راگ

دل ہمرے صحرانوردِ پیر دل،
سر گرانی کی شبِ رفتہ سے جاگ!
کچھ شرر آغوشِ صرصر میں ہیں گم،
اور کچھ زینہ بہ زینہ شعلوں کے مینار پر چڑھتے ہوئے
اور کچھ تہہ میں الاؤ کی ابھی
مضطرب، لیکن مذبذب طفلِ کمسن کی طرح!
آگ زینہ، آگ رنگوں کا خزینہ
آگ اُن لذّات کا سرچشمہ ہے
جس سے لیتا ہے غذا عشاق کے دل کا تپاک!
چوبِ خشک انگور، اس کی مے ہے آگ
سرسراتی ہے رگوں میں عید کے دن کی طرح

آگ کاہن، یاد سے اُتری ہوئی صدیوں کی یہ افسانہ خواں
آنے والے قرنہا کی داستانیں لب پہ ہیں
دل ہمرا صحرانوردِ پیر دل سُن کر جواں!

آگ آزادی کا، دلشادی کا نام
آگ پیدائش کا، افزائش کا نام

तेरे माज़ी[1] के ख़ज़्फ़रेज़ों[2] से जागी है ये आग
आग की किरमिज़[3] ज़बां पर इंबिसाते नौ[4] के राग
दिल, मिरे सहरा नवर्द पीर दिल,
सरगिरानी[5] की शबे रफ़्ता[6] से आग!
कुछ शरर आग़ोश[7] सर सर में है गुम,
और कुछ ज़ीना-ब-ज़ीना शोलों के मीनार पर चढ़ते हुए
और कुछ तह में अलाव की अभी
मुज़्तरिब[8], लेकिन मुज़बज़ब[9] तिफ़्ले कमसिन[10] की तरह!
आग ज़ीना, आग रंगों का ख़ज़ीना[11]
आग उन लज़्ज़ात[12] का सरचश्मा है
जिससे लेता है गिज़ा उश्शाक़[13] के दिल का तपाक[14]!
चोबे खुश्क अंगूर[15], उसकी मय है आग
सरसराती है रगों में ईद के दिन की तरह!

आग काहिन[16], याद से उतरी हुई सदियों की ये अफ़सानाख़्वां[17]
आने वाले क़रनहा[18] की दास्तानें लब पे हैं
दिल, मिरा सहरा नवर्द पीर दिल सुनकर जवां!

आग आज़ादी का, दिलशादी[19] का नाम
आग पैदाइश का, अफ़ज़ाइश[20] का नाम

1. भूतकाल, गुज़रा हुआ कल
2. ठीकरियां
3. लाल रंग
4. नई खुशी
5. नाराज़गी
6. गुज़री हुई रात
7. गोद
8. व्याकुल
9. संकोची
10. कम उम्र बच्चे
11. ख़ज़ाना
12. लज़्ज़त (मज़ा) का बहुवचन
13. आशिक़ का बहुवचन
14. मुहब्बत, गरमजोशी
15. अंगूर की सूखी हुई लकड़ी
16. भविष्यवाणी करने वाली
17. अफ़साना पढ़ने वाला
18. क़र्न का बहुवचन, सौ बरस का ज़माना
19. दिल को खुश करने
20. वृद्धि

آگ کے پھولوں میں نسریں، یاسمن، سنبل، شقیق و نسترن
آگ آرائش کا، زیبائش کا نام
آگ وہ تقدیس، دُھل جاتے ہیں جس سے سب گناہ
آگ انسانوں کی پہلی سانس کے مانند اک ایسا کرم
عمر کا اک طول بھی جس کا نہیں کافی جواب!
یہ تمناؤں کا بے پایاں الاؤ گر نہ ہو
اس لق و دق میں نکل آئیں کہیں سے بھیڑیے
اس الاؤ کو سدا روشن رکھو!
(ریگ صحرا کو بشارت ہو کہ زندہ ہے الاؤ،
بھیڑیوں کی چاپ تک آتی نہیں!)

آگ سے صحرا کا رشتہ ہے قدیم
آگ سے صحرا کے ٹیڑھے، رینگنے والے
گرہ آلود، ژولیدہ درخت
جاگتے ہیں نغمہ در جاں، رقص برپا، خندہ برلب
اور منا لیتے ہیں تنہائی میں جشنِ ماہتاب
ان کی شاخیں غیر مرئی طبل کی آواز پر دیتی ہیں تال
بیخ و بُن سے آنے لگتی ہے خداوندی جلاجل کی صدا!

آگ سے صحرا کا رشتہ ہے قدیم
رہرووں، صحرا نوردوں کے لیے ہے رہنما

आग के फूलों में नसरीं[1], यासमन[2], सुंबुल[3], शफ़ीक़ो[4] नस्तरन[5]
आग आराइश का, ज़ेबाइश का नाम
आग वो तक़्दीस[6], धुल जाते हैं जिससे सब गुनाह
आग इंसानों की पहली सांस के मानिंद इक ऐसा करम[7]
उम्र का इक तूल[8] भी जिसका नहीं काफ़ी जवाब:
ये तमन्नाओं के बेपाया[9] अलाव गर न हो
इस लक़ोदक़[10] में निकल आयें कहीं से भेड़िये
इस अलाव को सदा रौशन रखो!
(रेग सहरा को बशारत[11] हो कि ज़िंदा है अलाव,
भेड़ियों की चाप[12] तक आती नहीं!)

आग से सहरा का रिश्ता है क़दीम
आग से सहरा के टेढ़े, रेंगने वाले
गिरह आलूद[13], ज़ूलीदा[14] दरख़्त
जागते हैं नग़मा दर जां, रक़्स बरपा, ख़न्दा बर लब
और मना लेते हैं तंहाई में जश्ने माहताब
उनकी शाख़ें ग़ैर मरई[15] तब्ल[16] की आवाज़ पर देती हैं ताल
बीख़ो बुन[17] से आने लगती है ख़ुदावन्दी जलाजिल[18] की सदा!

आग से सहरा का रिश्ता है क़दीम
रहरवों[19], सहरा नवर्दों के लिए है रहनुमा

1 से 5 तक विभिन्न प्रकार के फूलों के नाम

| | |
|---|---|
| 6. पवित्रता | 7. कृपा |
| 8. लम्बाई | 9. अन्तहीन |
| 10. चटियल मैदान | 11. खुशखबरी |
| 12. पैरों की आहट | 13. लुथड़ी हुई |
| 14. उलझा हुआ | 15. अदृश्य |
| 16. ढोल | 17. जड़ और बुनियाद |
| 18. जुलजुल का बहुवचन, झांझें | 19. राहगीरों |

کاروانوں کا سہارا بھی ہے آگ
اور صحراؤں کی تنہائی کو کم کرتی ہے آگ!

آگ کے چاروں طرف پشمینہ و دستار میں لپٹے ہوئے
افسانہ گو
جیسے گردِ چشم مژگاں کا ہجوم
ان کے حیرت ناک، دلکش تجربوں سے
جب دمک اُٹھتی ہے ریت
ذرّہ ذرّہ بجنے لگتا ہے مثالِ سازِ جاں
گوش برآواز رہتے ہیں درخت
اور رقص دیتے ہیں اپنی عارفانہ بے نیازی سے کبھی!

یہ تمناؤں کا بے پایاں الاؤ گر نہ ہو
ریگ اپنی خلوتِ بے نور و خود بیں میں رہے
اپنی یکتائی کی تحسیں میں رہے
اس الاؤ کو سدا روشن رکھو!

یہ تمناؤں کا بے پایاں الاؤ گر نہ ہو
ایشیا، افریقہ پہنائی کا نام
(بے کار پہنائی کا نام)
یورپ اور امریکہ دارائی کا نام
(تکرارِ دارائی کا نام!)

میرا دل، صحرا نوردِ پیر دل
جاگ اُٹھا ہے، مشرق و مغرب کی ایسی یک دلی

कारवानों का सहारा भी है आग

और सहराओं की तंहाई को कम करती है आग

आग के चारों तरफ़ पशमीनओ दस्तार[1] में लिपटे हुए

अफ़साना गो

जैसे गिर्दे चश्म मिज़गां[2] का हुजूम

उनके हैरतनाक, दिलकश तजरबों से

जब दमक उठती है रेत

ज़र्रा ज़र्रा बजने लगता है मिसाले साज़े जां

गोश-बर-आवाज़[3] रहते हैं दरख़्त

और हंस देते हैं अपनी आरिफ़ाना बेनियाज़ी[4] से कभी!

ये तमन्नाओं के बेपायां अलाव गर[5] न हो

रेग अपनी ख़ल्वते[6] बेनूरो[7] ख़ुद बीं[8] में रहे

अपनी यकताई[9] की तहसीं[10] में रहे

इस अलाव को सदा रौशन रखो!

ये तमन्नाओं का बेपायां अलाव गर न हो

ऐशिया, अफ़्रीक़ा पहनाई[11] का नाम

(बेकार पहनाई का नाम)

यूरोप और अमरीका दाराई[12] का नाम

(तकरारे दाराई का नाम!)

मेरा दिल, सहरा नवर्द पीर दिल

जाग उठा है, मशरिक़ो-मग़रिब[13] की ऐसी यक दिली

1. पगड़ी
2. आंख के आस पास पलकें
3. आवाज़ पर कान धरे हुए
4. ब्रह्मज्ञानी ज्ञान की स्वच्छंदता
5. अगर
6. तन्हाई
7. बिना प्रकाश
8. स्वयं को देखने
9. अद्वैत
10. प्रशंसा
11. फैलाव, चौड़ाई
12. हुकूमत
13. पूरब और पश्चिम

کے کاروانوں کا نیا رویا لیے،

یک دلی ایسی کہ ہو گی فہمِ انساں سے ورا
یک دلی ایسی کہ ہم سب کہہ اُٹھیں:
"اس قدر عجلت نہ کر
اژدہامِ گل نہ بن!"
کہہ اٹھیں ہم:
"تو غمِ گل تو نہ تھی
اب لذتِ گل بھی نہ بن
روزِ آسائش کی بے دردی نہ بن
یک دلی بن، ایسا سناٹا نہ بن،
جس میں تابستاں کی دوپہروں کی
بے حاصل کسالت کے سوا کچھ بھی نہ ہو!"

اس "جفا گر" یک دلی کے کارواں یوں آئیں گے
دستِ جادوگر سے جیسے پھوٹ نکلے ہوں طلسم،
عشقِ حاصل خیز سے، یا زورِ پیدائی سے جیسے ناگہاں
کھل گئے ہوں مشرق و مغرب کے جسم
— جسم، صدیوں کے عقیم!

کارواں فرخندہ پے، اور اُن کا بار
کیسہ کیسہ تختِ جم اور تاج کے

के कारवानों का नया रूया[1] लिये

यक दिली ऐसी कि होगी फ़ह्मे इंसां से वरा[2]

यक दिली ऐसी कि हम सब कह उठें:

"इस क़दर उजलत[3] न कर

इज़्दिहामे गुल[4] न बन!"

कह उठें हम :

"तू ग़मे कुल तो न थी

अब लज़्ज़ते कुल भी न बन

रोज़े आसाइश के बेदर्दी न बन

यक दिली बन, ऐसा सन्नाटा न बन

जिसमें ताबिस्तां[5] की दोपहरों की

बे हासिल कसालत[6] के सिवा कुछ भी न हो!"

इस "जफ़ागर[7]" यक दिली के कारवां यूं आयेंगे

दस्ते जादूगर[8] से जैसे फूट निकले हों तिलिस्म

इश्क़े हासिलख़ेज़ से, या ज़ोरे पैदाई से जैसे नागहां[9]

खुल गए हों मशरिक़ो मग़रिब के जिस्म

—जिस्म, सदियों के अक़ीम[10]

कारवां फ़रख़ुन्दा[11] पै, और उनका बार[12]

कीसा[13] कीसा तख़्ते जम[14] और ताजे कै[15]

1. सपना
2. इंसान की समझ से बाहर
3. जल्दी
4. फूल की भीड़
5. गर्मी का मौसम
6. सुस्ती
7. जुल्म करने वाला
8. जादूगर के हाथ
9. अचानक
10. बांझ मर्द
11. मुबारक
12. बोझ
13. थैली
14. जमशेद बादशाह का तख़्त
15. शहंशाह का ताज

اے عروسِ عزّ و جل، فرخندہ رُو، تابندہ خُو
تُو اک ایسے حجرۂ شب سے نکل کر آئی ہے
دستِ قاتل نے بہایا تھا جہاں ہر سیج پر
سینکڑوں تاروں کا رخشندہ لہو، پھولوں کے پاس!
صبحِ صحرا، سر مرے زانو پہ رکھ کر داستاں
اُن تمنا کے شہیدوں کی نہ کہہ
ان کی نیمہ رس امنگوں، آرزوؤں کی نہ کہہ
جن سے ملنے کا کوئی امکاں نہیں
شہد تیرا جن کو نوشِ جاں نہیں!
آج بھی کچھ دُور، اس صحرا کے پار
دیو کی دیوار کے نیچے نسیم
روز و شب چلتی ہے مبہم خوف سے سہمی ہوئی
جس طرح شہروں کی راہوں پر یتیم
نغمہ بر لب تا کہ اُن کے جاں کا سناٹا ہو دور!

آج بھی اس ریگ کے ذرّوں میں ہیں
ایسے ذرّے، آپ ہی اپنے غنیم
آج بھی اس آگ کے شعلوں میں ہیں
وہ شرر جو اس کی تہہ میں پر بریدہ رہ گئے
مثلِ حرفِ ناشنیدہ رہ گئے!
صبحِ صحرا، اے عروسِ عزّ و جل

ऐ ऊरूसे अज़्ज़ोजल[1], फ़रखुंदा रू[2], ताबंदा खू[3]
तू इक ऐसे हुज्रए शब[4] से निकल कर आई है
दस्ते क़ातिल ने बहाया था जहां हर सेज पर
सैकड़ों तारों का रख़शंदा[5] लहू, फूलों के पास!
सुब्हे सहरा, सर मिरे ज़ानो[6] पे[7] रखकर दास्तां
उन तमन्ना के शहीदों की न कह
उनकी नीमा[8] रस उमंगों, आरज़ुओं की न कह
जिनसे मिलने का कोई इमकां नहीं
शहद तेरा जिनको नोशे जां नहीं!
आज भी कुछ दूर, उस सहरा के पार
देव की दीवार के नीचे नसीम[9]
रोज़ो शब चलती है मुब्हम[10] ख़ौफ़ से सहमी हुई
जिस तरह शहरों की राहों पर यतीम
नग़मा बर लब ताकि उनकी जां का सन्नाटा हो दूर!

आज भी इस रेग के ज़र्रों में हैं
ऐसे ज़र्रे, आप ही अपने ग़नीम[11]
आज भी इस आग के शोलों में हैं
वो शरर जो इसकी तह में पर-बुरीदा[12] रह गए
मिस्ले हर्फ़े नाशुनीदा[13] रह गए!
सुब्हे सहरा, ऐ ऊरूसे इज़्ज़ो-जल

1. इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाली दुल्हन
2. मुबारक चेहरे वाली
3. रौशन आदत वाली
4. रात की कोठरी
5. रौशन
6. जांघों
7. पर
8. आधी
9. सुब्ह की ठंडी हवा
10. अस्पष्ट
11. लुटेरे, दुश्मन
12. पर कतरे हुए
13. ना सुने हुए

آ کہ اُن کی داستاں دہرائیں ہم
ان کی عزت، ان کی عظمت گائیں ہم

صبح، ریت اور آگ، ہم سب کا جلال!
یک دلی کے کارواں اُن کا جمال
آؤ!
اس تجلیل کے حلقے میں ہم مل جائیں
آؤ!
شاد باغ اپنی تمناؤں کا بے پایاں الاؤ!

## اسرافیل کی موت

مرگِ اسرافیل پر آنسو بہاؤ
وہ خداؤں کا مقرب، وہ خداوندِ کلام
صوتِ انسانی کی روحِ جاوداں
آسمانوں کی ندائے بے کراں
آج ساکت مثلِ حرفِ ناتمام
مرگِ اسرافیل پر آنسو بہاؤ!

آؤ، اسرافیل کے اس خوابِ بے ہنگام پر آنسو بہائیں
آرمیدہ ہے وہ یوں قرنا کے پاس

आ कि उनकी दास्तां दुहराएं हम
उनकी इज़्ज़त, उनकी अज़्मत गायें हम

सुब्ह, रेत और आग, हम सबका जलाल[1]
यक दिली के कारवां उनका जमाल
आओ!
इस तहलील[2] के हल्क़े में हम मिल जाएं
आओ!
शाद[3] बाग़ अपनी तमन्नाओं का बेपायां अलाव!

●

## इसराफ़ील[4] की मौत

मर्गे इसराफ़ील[5] पर आंसू बहाओ
वो ख़ुदाओं का मुक़र्रब[6], वो ख़ुदावंदे कलाम
सौते इंसानी[7] की रूहे जाविदां
आसमानों की निदाए बेकरां[8]
आज साकित मिस्ले हर्फ़े नातमाम[9]
मर्गे इसराफ़ील पर आंसू बहाओ!

आओ, इस्राफ़ील के इस ख़्वाबे बेहंगाम पर आंसू बहाएं
आरमीदा[10] है वो यूं क़रना[11] के पास

1. प्रताप, तेज
2. विलयन
3. खुशी
4. फ़रिश्ते का नाम जिसे क़यामत के दिन सूर फूंकने की ख़िदमत पर मामूर किया गया है
5. इसराफ़ील की मौत
6. निकटवर्ती
7. इंसानी आवाज़
8. ऐसी आवाज़ जिसकी कोई हद न हो
9. अपूर्ण बात
10. आराम कर रहा है
11. बिगुल

جیسے طوفاں نے کنارے پر اُگل ڈالا اسے
ریگِ ساحل پر، چمکتی دھوپ میں، چپ چاپ
اپنے صُور کے پہلو میں وہ خوابیدہ ہے!
اس کی دستار، اس کے گیسو، اُس کی ریش
کیسے خاک آلودہ ہیں!

تھے کبھی جن کی تہیں بود و نبود!
کیسے اس کا صُور، اُس کے لب سے دور،
اپنی چیخوں، اپنی فریادوں میں گُم
جھلملا اُٹھتے تھے جس سے دیر و زود!

مرگِ اسرافیل پر آنسو بہاؤ
وہ مجسم ہمہمہ تھا، وہ مجسّم زمزمہ
وہ ازل سے تا ابد پھیلی ہوئی غیبی صداؤں کا نشاں!

مرگِ اسرافیل سے
حلقہ در حلقہ فرشتے نوحہ گر،
ابنِ آدم زلف در خاک و نزار
حضرتِ یزداں کی آنکھیں غم سے تار
آسمانوں کی صفیر آتی نہیں
عالمِ لاہوت سے کوئی نفیر آتی نہیں!

مرگِ اسرافیل سے
اس جہاں پر بند آوازوں کا رزق

जैसे तूफ़ां ने किनारे पर उगल डाला उसे
रेगे साहिल पर, चमकती धूप में, चुपचाप
अपने सूर के पहलू में वह ख़्वाबीदा[1] है!
उसकी दस्तार, उसके गेसू[2], उसकी रीश
कैसे ख़ाक आलूदा हैं!
थे कभी जिनकी तहें बूदो नबूद[3]!
कैसे इसका सूर, उसके लब[4] से दूर
अपनी चीख़ों, अपनी फ़रियादों में गुम
झिलमिला उठते थे जिससे देरो ज़ूद!

मर्गे इसराफ़ील पर आंसू बहाओ
वो मुजस्सम हम्हमा[5] था, वो मुजस्सम ज़म्ज़मा[6]
वो अज़ल से ता अबद[7] फैली हुई ग़ैबी सदाओं का निशां!

मर्गे इसराफ़ील से
हल्क़ा दर हल्क़ा फ़रिश्ते नौहागर[8]
इब्ने आदम[9] ज़ुल्फ़ दर[10] ख़ाको निज़ार[11]
हज़रते यज़्दां[12] की आंखें ग़म से तार
आसमानों की सफ़ीर[13] आती नहीं
आलमे लाहूत[14] से कोई नफ़ीर[15] आती नहीं!

मर्गे इसराफ़ील से
इस जहां पर बंद आवाज़ों का रिज़्क़[16]

1. सोया हुआ
2. बाल
3. अस्तित्व और ग़ैर अस्तित्व
4. होंट
5. साकार शेर की दहाड़
6. साकार नर्म और हल्की आवाज़
7. प्रारंभ से अंत तक
8. विलाप करने वाले
9. आदम के बेटे अर्थात इंसान
10. में
11. मिट्टी व कमज़ोर
12. ख़ुदा
13. सीटी
14. ज़ाते इलाही की दुनिया
15. चीख़ो पुकार
16. रोज़ी रोटी

مطربوں کا رزق، اور سازوں کا رزق
اب مغنّی کس طرح گائے گا اور گائے گا کیا
سننے والوں کے دِلوں کے تار چُپ!
اب کوئی رقّاص کیا تھرکے گا لہرائے گا کیا؟
بزم کے فرش و در و دیوار چُپ!
اب خطیبِ شہر فرمائے گا کیا
مسجدوں کے آستان و گنبد و مینار چُپ!
فکر کا صیاد اپنا دام پھیلائے گا کیا
طائرانِ منزل و کُہسار چُپ!

مرگِ اسرافیل ہے
گوشِ شنوا کی، لبِ گویا کی موت
چشمِ بینا کی، دلِ دانا کی موت
تھی اسی کے دم سے درویشوں کی ساری ہاؤ ہو
اہلِ دل کی اہلِ دل سے گفتگو —
اہلِ دل — جو آج گوشہ گیر و سرمہ در گُلو!
اب تنا تا ہُو بھی غائب اور یا رب ہا بھی گُم
اب گلی کوچوں کی ہر آواز بھی گُم
یہ ہمارا آخری ملجا بھی گُم!

मुत्रिबों[1] का रिज़्क़, और साज़ों का रिज़्क़
अब मुग़न्नी[2] किस तरह गायेगा और गायेगा क्या
सुनने वालों के दिलों के तार चुप!
अब कोई रक़्क़ास क्या थिरकेगा, लहरायेगा क्या
बज़्म के फ़र्शो दरो दीवार[3] चुप!
अब ख़तीबे[4] शहर फ़रमायेगा क्या
मस्जिदों के आस्तानो[5] गुंबदो मीनार चुप!
फ़िक्र का सैयाद[6] अपना दाम[7] फैलायेगा क्या
तायराने[8] मंज़िलो कुहसार[9] चुप!

मर्गे इसराफ़ील है
गोशे शुनवा[10] की, लबे गोया[11] की मौत
चश्मे बीना[12] की, दिले दाना[13] की मौत
थी उसी के दम से दर्वेशों की सारी हाओ हू
अहले दिल[14] की अहले दिल से गुफ़्तगू —
अहले दिल — जो आज गोशागीरो सुर्मा दर गुलू[15]!
अब तनाना हू भी ग़ाएब और यारब हा भी गुम
अब गली कूचों की हर आवा भी गुम
यह हमारा आख़िरी मलजा[16] भी गुम!

1. गवैयों
2. गवैया
3. फ़र्श, दरवाज़े
4. संबोधित करने वाला
5. चौखटों
6. शिकारी
7. जाल
8. पक्षियों
9. पहाड़
10. सुनने वाले कानों
11. बोलने वाले होंटों
12. देखने वाली आंखों
13. अक़्लमन्द दिल
14. दिल वाले लोग
15. कोने में बैठे हुए और चुपचाप
16. पनाह की जगह

مرگِ اسرافیل سے،
اس جہاں کا وقت جیسے سو گیا، پتھرا گیا
جیسے کوئی ساری آوازوں کو یکسر کھا گیا،
ایسی تنہائی کہ حسنِ تام یاد آتا نہیں
ایسا سناٹا کہ اپنا نام یاد آتا نہیں

مرگِ اسرافیل سے
دیکھتے رہ جائیں گے دنیا کے آمر بھی
زباں بندی کے خواب!
جس میں مجبوروں کی سرگوشی تو ہو
اُس خداوندی کے خواب!

●

## حسن کوزہ گر

جہاں زاد، نیچے گلی میں ترے دَر کے آگے
یہ مَیں سوختہ سر حسن کوزہ گر ہوں!
تجھے صبح بازار میں بوڑھے عطّار یوسف
کی دُکان پر میں نے دیکھا
تو تیری نگاہوں میں وہ تابناکی
تھی میں جس کی حسرت میں نو سال دیوانہ پھرتا رہا ہوں
جہاں زاد، نو سال دیوانہ پھرتا رہا ہوں!
یہ وہ دَور تھا جس میں مَیں نے
کبھی اپنے رنجور کوزوں کی جانب

मर्गे इसराफ़ील से,

इस जहां का वक़्त जैसे सो गया, पत्थरा गया
जैसे कोई सारी आवाज़ों को यकसर खा गया
ऐसी तंहाई कि हुस्ने ताम[1] याद आता नहीं
ऐसा सन्नाटा कि अपना नाम याद आता नहीं!

मर्गे इसराफ़ील से
देखते रह जायेंगे दुनिया के आमिर[2] भी
जबां बन्दी के ख़्वाब!
जिसमें मजबूरों की सरगोशी[3] तो हो
उस ख़ुदावन्दी के ख़्वाब!

●

## हसन कूज़ागर[4]

जहां ज़ाद, नीचे गली में तिरे दर के आगे
ये मैं सोख़ता सर[5] हसन कूज़ागर हूं!
तुझे सुब्ह बाज़ार में बूढ़े अत्तार यूसुफ़
की दुक्कान पर मैं ने देखा
तो तेरी निगाहों में वो ताबनाकी[6]
थी मैं जिसकी हसरत में नौ साल दीवाना फिरता रहा हूं
जहां ज़ाद, नौ साल दीवाना फिरता रहा हूं !
यह वो दौर था जिसमें मैंने
कभी अपने रंजूर[7] कूज़ों की जानिब

1. मुकम्मल हुस्न
2. तानाशाह
3. कानाफूसी
4. कुम्हार
5. सिरजला
6. चमक
7. दुखी

پلٹ کر نہ دیکھا —
وہ کوزے مرے دستِ چابک کے پُتلے
گِل ورنگ وروغن کی مخلوقِ بے جاں
وہ سرگوشیوں میں یہ کہتے
"حسن کوزہ گراب کہاں ہے؟
وہ ہم سے خود اپنے عمل سے
خداوند بن کر خداؤں کے مانند ہے روئے گرداں!"
جہاں زاد نو سال کا دَور یوں مجھ پہ گزرا
کہ جیسے کسی شہرِ مدفون پر وقت گزرے؛
تغاروں میں مٹی
کبھی جس کی خوشبو سے وارفتہ ہوتا تھا مَیں
سنگ بستہ پڑی تھی
صراحی و مینا و جام و سبو اور فانوس و گلداں
مری، ہیچ مایہ معیشت کے اظہارِ فن کے سہارے
شکستہ پڑے تھے
مَیں خود، مَیں حسن کوزہ گر پابہ گِل خاک بر سر برہنہ
سرِ "چاک" ژولیدہ مُو، سر بزانو
کسی غمزدہ دیوتا کی طرح واہمہ کے
گِل ولا سے خوابوں کے سیّال کوزے بناتا رہا تھا
جہاں زاد، نو سال پہلے
تُو ناداں تھی لیکن تجھے یہ خبر تھی
کہ مَیں نے، حسن کوزہ گر نے

पलट कर न देखा —

वो कूज़े मिरे दस्ते चाबुक के पुतले

गिलो रंगो रोग़न की मख़लूक़े बेजां

वो सरगोशियों में यह कहते

"हसन कूज़ागर अब कहां है?

वो हमसे खुद अपने अमल से

खुदावंद बनकर खुदाओं के मानिंद है रूए गंदा[1]!"

जहां ज़ाद नौ साल का दौर यूं मुझ पे गुज़रा

कि जैसे किसी शहरे मदफ़ून[2] पर वक़्त गुज़रे

तग़ारों[3] में मिट्टी

कभी जिसकी खुश्बू से वारफ़्ता होता था मैं

संग बसता पड़ी थी

सुराहियो मीनाओ जामो सुबु और फ़ानूसो गुलदां

मिरी हेच माया मईशत के, इज़्हारे फ़न के सहारे

शिकस्ता पड़े थे

मैं खुद, मैं हसन कूज़ागर पा ब-गिल[4] ख़ाक बरसर[5] बरहना[6]

सरे "चाक" ज़ौलीदा मू[7], सर-ब-ज़ानो[8]

किसी ग़मज़दा देवता की तरह वाहिमा के

गिलेविला[9] से ख़्वाबों के सैयाल कूज़े बनाता रहा था

जहां ज़ाद, नौ साल पहले

तू नादां थी लेकिन तुझे यह ख़बर थी

कि मैंने, हसन कूज़ागर ने

1 भटकती आत्मा
2. दफ़न किये शहर
3. गारा बनाने का गढ़ा
4. पांव में मिट्टी
5. सर पर ख़ाक
6. नंगे
7. उलझे बाल
8. घुटनों पर सिर
9. मुहब्बत की मिट्टी

تری قاف کی سی اُفق تاب آنکھوں
میں دیکھی ہے وہ تابناکی
کہ جس سے مرے جسم و جاں، ابر و مہتاب کا
رہگور بن گئے تھے

جہاں زاد بغداد کی خواب گوں رات
وہ رودِ دجلہ کا ساحل
وہ کشتی وہ ملاح کی بند آنکھیں
کسی خستہ جاں رنج بر کوزہ گر کے لئے
ایک ہی رات وہ کہربا تھی
کہ جس سے ابھی تک ہے پیوست اس کا وجود ——
اس کی جاں اس کا پیکر
مگر ایک ہی رات کا ذوق دریا کی وہ لہر نکلا
حسن کوزہ گر جس میں ڈوبا تو اُبھرا نہیں ہے!

جہاں زاد اس دَور میں روز، ہر روز
وہ سوختہ بخت آکر
مجھے دیکھتی چاک پر پا بہ گِل سر بزانو
تو شانوں سے مجھ کو ہلاتی ——
(وہی چاک جو سالہا سال جینے کا تنہا سہارا رہا تھا!)
وہ شانوں سے مجھ کو ہلاتی
''حسن کوزہ گر ہوش میں آ
حسن اپنے ویران گھر پر نظر کر

तिरी क़ाफ़[1] की सी उफ़ुक़[2] ताब आंखों
में देखी है वो ताबनाकी[3]
कि जिससे मिरे जिस्मो जां[4], अबरो महताब[5] का
रहगुज़र[6] बन गए थे
जहां ज़ाद बग़दाद की ख़्वाब गूं रात
वो रूदे दजला[7] का साहिल
वो कश्ती वो मल्लाह की बन्द आंखें
किसी ख़स्ता जां[8] रंजबर कूज़ागर के लिए
एक ही रात वो कहरुबा थी
कि जिससे अभी तक है पैवस्त इसका वुजूद —
इसकी जां इसका पैकर[9]
मगर एक ही रात का ज़ौक़ दरिया की वो लहर निकला
हसन कूज़ागर जिसमें डूबा तो उभरा नहीं है

जहां ज़ाद उस दौर में रोज़, हर रोज़
वो सोख़्ता बख़्त[10] आकर
मुझे देखती चाक पर पा ब गिल सर-ब-ज़ानो
तो शानों से मुझको हिलाती —
(वही चाक जो सालहा साल जीने का तन्हा सहारा रहा था!)
वो शानों से मुझको हिलाती —
"हसन कूज़ागर होश में आ
हसन अपने वीरान घर पर नज़र कर

1. एक पहाड़ का नाम
2. क्षितिज
3. नमक
4. शरीर और आत्मा
5. बादल और चाँद
6. आम रास्ता
7. दजला नदी
8. थका हुआ, कमज़ोर
9. शरीर, आकार
10. दुर्भाग्य वाली

یہ بچوں کے ہنگور کیونکر بھریں گے
حسن، اے محبت کے مارے
محبت امیروں کی بازی،
حسن، اپنے دیوار ودر پر نظر کر"
مرے کان میں یہ نوائے حزیں یوں تھی جیسے
کسی ڈوبتے شخص کو زیرِ گرداب کوئی پکارے!
وہ اشکوں کے انبار پھولوں کے انبار تھے ہاں
مگر میں حسن کوزہ گر شہرِ اوہام کے اُن
خرابوں کا مجذوب تھا جن
میں کوئی صدا کوئی جنبش
کسی مرغِ پرّاں کا سایہ
کسی زندگی کا نشاں تک نہیں تھا!

جہاں زاد، میں آج تیری گلی میں
یہاں رات کی سرد گوں تیرگی میں
ترے دَر کے آگے کھڑا ہوں
سر و مو پریشاں
دریچے سے وہ قاف کی سی طلسمی نگاہیں
مجھے آج پھر جھانکتی ہیں
زمانہ، جہاں زاد وہ چاک ہے جس پہ مینا و جام و سبو
اور فانوس و گلداں
کے مانند بنتے بگڑتے ہیں انساں
میں انساں ہوں لیکن

ये बच्चों के तन्नूर[1] क्योंकर भरेंगे
हसन, ऐ मुहब्बत के मारे
मुहब्बत अमीरों की बाज़ी,
हसन, अपने दीवारो दर पर नज़र कर"
मिरे कान में यह नवाए हज़ीं[2] यूं थी जैसे
किसी डूबते शख़्स को ज़ेरे गिर्दाब[3] कोई पुकारे!
वो अश्कों के अम्बार फूलों के अम्बार थे हां
मगर मैं हसन कूज़ागर शहरे औहाम[4] के उन
ख़राबों[5] का मज्ज़ूब[6] था जिन
में कोई सदा कोई जुम्बिश
किसी मुर्ग़ पर्रा का साया
किसी ज़िंदगी का निशां तक नहीं था!

जहांज़ाद, मैं आज तेरी गली में
यहां रात की सर्द गूं तीरगी में
तिरे दर के आगे खड़ा हूं
सरो मू[7] परेशां
दरीचे से वो क़ाफ़ की सी तिलस्मी निगाहें
मुझे आज फिर झांकती हैं
ज़माना, जहांज़ाद वो चाक है जिस पे मीनाओ जामो सुबू
और फ़ानूसो गुलदां
के मानिंद बनते बिगड़ते हैं इंसां
मैं इंसा हूं लेकिन

1. तन्दूर
2. दुखी आवाज़
3. भंवर के नीचे
4. भ्रमों का नगर
5. वीरानों
6. मलंग
7. सिर और बाल

یہ نو سال جو غم کے قالب میں گزرے!
حسن کوزہ گر آج اِک تودۂ خاک ہے جس
میں نم کا اثر تک نہیں ہے
جہاں زاد بازار میں صبح عطار یوسف
کی دُکان پر تیری آنکھیں
پھر اک بار کچھ کہہ گئی ہیں
ان آنکھوں کی تابندہ شوخی
سے اُٹھی ہے پھر تودۂ خاک میں نم کی ہلکی سی لرزش
یہی شاید اس خاک کو گِل بنا دے!

تمنا کی وسعت کی کس کو خبر ہے جہاں زاد لیکن
تُو چاہے تو بن جاؤں مَیں پھر
وہی کوزہ گر جس کے کوزے
تھے ہر کاخ و کو اور ہر شہر و قریہ کی نازش
تھے جن سے امیر و گدا کے مساکن درخشاں
تمنا کی وسعت کی کس کو خبر ہے جہاں زاد لیکن
تو چاہے تو پھر مَیں پلٹ جاؤں اُن اپنے مہجور کوزوں کی جانب
گِل و لا کے سوکھے تغاروں کی جانب
معیشت کے اظہارِ فن کے سہاروں کی جانب
کہ مَیں اُس گِل و لا سے، اُس رنگ و روغن
سے پھر وہ شرارے نکالوں کہ جن سے
دِلوں کے خرابے ہوں روشن!

●●●

ये नौ साल जो ग़म के क़ालिब[1] में गुज़रे!
हसन कूज़ागर आज इक तोदए ख़ाक[2] है जिस
में नम का असर तक नहीं है
जहांज़ाद बाज़ार में सुब्ह अत्तार यूसुफ़
की दुक्कान पर तेरी आंखें
फिर इक बार कुछ कह गई हैं
इन आंखों की ताबिंदा शोख़ी
से उठ्ठी है फिर तोदए ख़ाक में नम की हल्की सी लरज़िश
यही शायद इस ख़ाक को गिल बना दे!

तमन्ना की वुसअत की किसको ख़बर है जहांज़ाद लेकिन
तू चाहे तो बन जाऊँ मैं फिर
वही कूज़ागर जिसके कूज़े
थे हर काख़ो कू[3] और हर शहरो क़रया[4] की नाज़िश[5]
थे जिनसे अमीरो गदा[6] के मसाकिन[7] दरख़्शां
तमन्ना की वुस्अत की किसको ख़बर है जहांज़ाद लेकिन
तू चाहे तो मैं फिर पलट जाऊँ उन अपने महजूर[8] कूज़ों की जानिब
गिलो ला की सूखे तग़ारों की जानिब
मईशत के इज़्हारे फ़न के सहारों की जानिब
कि मैं उस गिलो ला से, उस रंगो रौग़न
से फिर वो शरारे निकालूं कि जिन से
दिलों के ख़राबे हों रौशन!

●●●

1. जिस्म, सांचा
2. मिट्टी का तोदा
3. महल और घर
4. गांव
5. गर्व
6. फ़कीर
7. मसकन का बहुवचन, रहने की जगह
8. छूटे हुए

## رقیب سے!

آ کہ وابستہ ہیں اُس حسن کی یادیں تجھ سے
جس نے اس دل کو پری خانہ بنا رکھا تھا
جس کی اُلفت میں بھلا رکھی تھی دنیا ہم نے
دہر کو دہر کا افسانہ بنا رکھا تھا

آشنا ہیں ترے قدموں سے وہ راہیں جن پر
اس کی مدہوش جوانی نے عنایت کی ہے
کارواں گزرے ہیں جن سے اُسی رعنائی کے
جس کی ان آنکھوں نے بے سُود عبادت کی ہے

تجھ سے کھیلی ہیں وہ محبوب ہوائیں جن میں
اس کے ملبوس کی افسردہ مہک باقی ہے
تجھ پہ بھی برسا ہے اُس بام سے مہتاب کا نور
جس میں بیتی ہوئی راتوں کی کسک باقی ہے

تو نے دیکھی ہے وہ پیشانی، وہ رخسار، وہ ہونٹ
زندگی جن کے تصوّر میں لُٹا دی ہم نے
تجھ پہ اُٹھی ہیں وہ کھوئی ہوئی ساحر آنکھیں
تجھ کو معلوم ہے کیوں عمر گنوا دی ہم نے

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

## रक़ीब[1] से!

आ कि वाबस्ता हैं उस हुस्न की यादें तुझसे
जिसने इस दिल को परीख़ाना बना रक्खा था
जिसकी उल्फ़त में भुला रक्खी थी दुनिया हमने
दह्र[2] को दह्र का अफ़साना बना रक्खा था

आशना[3] हैं तिरे क़दमों से वो राहें जिनपर
उसकी मद्‌होश जवानी ने इनायत की है
कारवां गुज़रे हैं जिनसे उसी रानाई[4] के
जिसकी उन आंखों ने बेसूद इबादत की है

तुझसे खेली हैं वो महबूब हवाएं जिनमें
उसके मलबूस[5] की अफ़सुर्दा महक बाक़ी है
तुझ पे भी बरसा है उस बाम से महताब[6] का नूर
जिसमें बीती हुई रातों की कसक बाक़ी है

तूने देखी है वो पेशानी, वो रुख़सार, वो होंट
ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर[7] में लुटा दी हमने
तुझपे उठी हैं वो खोई हुई साहिर[8] आंखें
तुझको मालूम है क्यों उम्र गंवा दी हमने

1. प्रतिद्वंद्वी
2. दुनिया
3. परिचित
4. सुन्दरता
5. लिबास, परिधान
6. चांद
7. कल्पना
8. जादूगर

ہم پہ مشترکہ ہیں احسان غمِ الفت کے
اتنے احسان کہ گنواؤں تو گنوا نہ سکوں
ہم نے اس عشق میں کیا کھویا ہے کیا سیکھا ہے
جُز ترے اور کو سمجھاؤں تو سمجھا نہ سکوں

عاجزی سیکھی، غریبوں کی حمایت سیکھی
یاس و حرمان کے، دکھ درد کے معنی سیکھے
زیردستوں کے مصائب کو سمجھنا سیکھا
سرد آہوں کے، رُخِ زرد کے معنی سیکھے

جب کہیں بیٹھ کے روتے ہیں وہ بیکس جن کے
اشک آنکھوں میں بلکتے ہوئے سو جاتے ہیں
ناتوانوں کے نوالوں پہ جھپٹتے ہیں عقاب
بازو تولے ہوئے منڈلاتے ہوئے آتے ہیں

جب کبھی بکتا ہے بازار میں مزدور کا گوشت
شاہراہوں پہ غریبوں کا لہو بہتا ہے
آگ سی سینے میں رہ رہ کے اُبلتی ہے نہ پوچھ
اپنے دل پر مجھے قابو ہی نہیں رہتا ہے

●

हम पे मुश्तर्का[1] हैं एहसान ग़मे उल्फ़त के
इतने एहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकूं
हमने इस इश्क़ में क्या खोया है क्या सीखा है
जुज़[2] तिरे और को समझाऊँ तो समझा न सकूं

आजिज़ी[3] सीखी, ग़रीबों की हिमायत सीखी
यासो हिरमान[4] के, दुख दर्द के मानी सीखे
ज़ेर दस्तों[5] के मसाइब[6] को समझना सीखा
सर्द आहों के, रुख़ेज़र्द[7] के मानी सीखे

जब कहीं बैठ के रोते हैं वो बेकस जिनके
अश्क[8] आंखों में बिलकते हुए सो जाते हैं
नातवानों[9] के निवालों पे झपटते हैं उक़ाब[10]
बाज़ू तौले हुए मंडलाते हुए आते हैं

जब कभी बिकता है बाज़ार में मज़दूर का गोश्त
शाहराहों[11] पे ग़रीबों का लहू बहता है
आग सी सीने में रह रह के उबलती है न पूछ
अपने दिल पर मुझे क़ाबू ही नहीं रहता है

●

1. साझे तौर पर
2. सिवा
3. नम्रता
4. नाउम्मीदी और बदनसीबी
5. कमज़ोर या मातहत
6. मुसीबत का बहुवचन
7. पीले चेहरे
8. आंसू
9. कमज़ोरों
10. गरुड़
11. लम्बी चौड़ी आम सड़कें

## تنہائی

پھر کوئی آیا دلِ زار! نہیں کوئی نہیں
راہرو ہوگا، کہیں اور چلا جائے گا
ڈھل چکی رات، بکھرنے لگا تاروں کا غبار
لڑکھڑانے لگے ایوانوں میں خوابیدہ چراغ

سو گئی راستہ تک تک کے ہر اک راہگزار
اجنبی خاک نے دھندلا دئے قدموں کے سراغ
گل کرو شمعیں، بڑھا دو مے و مینا و ایاغ
اپنے بے خواب کواڑوں کو مقفل کر لو
اب یہاں کوئی نہیں، کوئی نہیں آئے گا

●

## صبح آزادی

(یکم اگست1947)

یہ داغ داغ اُجالا، یہ شب گزیدہ سحر
وہ انتظار تھا جس کا، یہ وہ سحر تو نہیں
یہ وہ سحر تو نہیں جس کی آرزو لے کر
چلے تھے یار کہ مل جائے گی کہیں نہ کہیں
فلک کے دشت میں تاروں کی آخری منزل
کہیں تو ہوگا شبِ سست موج کا ساحل
کہیں تو جا کے رُکے گا سفینۂ غمِ دل

## तन्हाई

फिर कोई आया दिलेज़ार[1]! नहीं कोई नहीं
राहरौ होगा, कहीं और चला जाएगा
ढल चुकी रात, बिखरने लगा तारों का गुबार
लड़खड़ाने लगे ऐवानों में ख़्वाबीदा[2] चराग़

सो गई रास्ता तक तक के हर इक राहगुज़ार[3]
अजनबी ख़ाक ने धुंधला दिये क़दमों के सुराग़
गुल करो शमएं, बढ़ा दो मयो मीना-ओ-अयाग़[4]
अपने बेख़्वाब[5] किवाड़ों को मुक़फ़्फ़ल[6] कर लो
अब यहां कोई नहीं, कोई नहीं आएगा

●

## सुब्हे आज़ादी

(1अगस्त 1947)

ये दाग़-दाग़ उजाला, ये शब गज़ीदा[7] सहर[8]
वो इंतिज़ार था जिसका, ये वो सहर तो नहीं
ये वो सहर तो नहीं जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जाएगी कहीं न कहीं
फ़लक[9] के दश्त में तारों की आख़िरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे सुस्त मौज का साहिल
कहीं तो जाके रुकेगा सफ़ीनए ग़मे दिल[10]

1. दुखी दिल
2. सोये हुए
3. रस्ता, सड़क
4. शराब, मटका और प्याला
5. न सोये हुए
6. ताला लगा हुआ
7. काटी हुई, डंक मारी हुई
8. सुबह
9. आसमान
10. दिल के ग़म की नाव

جواں لہو کی پُر اسرار شاہراہوں سے
چلے جو یار تو دامن پہ کتنے ہاتھ پڑے
دیارِ حسن کی بے صبر خواب گاہوں سے
پکارتی رہیں باہیں، بدن بُلاتے رہے
بہت عزیز تھی لیکن رخِ سحر کی لگن
بہت قریں تھا حسینانِ نور کا دامن
سبک سبک تھی تمنا، دبی دبی تھی تھکن

سنا ہے ہو بھی چکا ہے فراقِ ظلمت و نور
سنا ہے ہو بھی چکا ہے وصالِ منزل وگام
بدل چکا ہے بہت اہلِ درد کا دستور
نشاطِ وصل حلال و عذابِ ہجر حرام

جگر کی آگ، نظر کی اُمنگ، دل کی جلن
کسی پہ چارۂ ہجراں کا کچھ اثر ہی نہیں
کہاں سے آئی نگارِ صبا، کدھر کو گئی
ابھی چراغِ سرِ رہ کو کچھ خبر ہی نہیں

ابھی گرانیٔ شب میں کمی نہیں آئی
نجاتِ دیدہ و دل کی گھڑی نہیں آئی
چلے چلو کہ وہ منزل ابھی نہیں آئی

●

जवां लहू की पुरअसरार[1] शाहराहों से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे हुस्न की बेसब्र ख़्वाबगाहों[2] से
पुकारती रहीं बाहें, बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज़ थी लेकिन रुख़े सहर[3] की लगन
बहुत करीं था हसीनाने नूर[4] का दामन
सुबक[5] सुबक थी तमन्ना, दबी दबी थी थकन

सुना है हो भी चुका है फ़िराक़े ज़ुल्मतो नूर[6]
सुना है हो भी चुका है विसाले मंज़िलो गाम[7]
बदल चुका है बहुत अहले दर्द[8] का दस्तूर
निशाते वस्ल[9] हलालो अज़ाबे हिज्र[10] हराम

जिगर की आग, नज़र की उमंग, दिल की जलन
किसी पे चारए हिजरां[11] का कुछ असर ही नहीं
कहां से आई निगारे सबा[12], किधर को गई
अभी चराग़े सरेरह[13] को कुछ ख़बर ही नहीं

अभी गिरानिये[14] शब में कमी नहीं आई
निजाते दीदाओदिल[15] की घड़ी नहीं आई
चले चलो कि वो मंज़िल अभी नहीं आई

●

1. राज़ों से भरे हुए
2. सोने की जगहों
3. सुबह का चेहरा
4. रौशनी
5. हल्की
6. अंधेरा और रौशनी
7. क़दम और मंज़िल का मिलन
8. दर्द वाले लोग
9. मिलन की ख़ुशी
10. जुदाई का अज़ाब
11. जुदाई का इलाज
12. सुबह की महबूब हवा
13. रास्ते का दिया
14. रात का बोझिलपन
15. आंख और दिल का छुटकारा

# موضوعِ سخن

گل ہوئی جاتی ہے افسردہ سلگتی ہوئی شام
ڈھل کے نکلے گی ابھی چشمۂ مہتاب سے رات
اور مشتاق نگاہوں کی سنی جائے گی
اور اُن ہاتھوں سے مَس ہوں گے یہ ترسے ہوئے ہاتھ

ان کا آنچل ہے، کہ رخسار، کہ پیراہن ہے
کچھ تو ہے جس سے ہوئی جاتی ہے چلمن رنگیں
جانے اس زلف کی موہوم گھنی چھاؤں میں
ٹمٹماتا ہے وہ آویزہ ابھی تک کہ نہیں

آج پھر حسنِ دلآرا کی وہی دھج ہوگی
وہی خوابیدہ سی آنکھیں، وہی کاجل کی لکیر
رنگِ رخسار پہ ہلکا سا وہ غازے کا غبار
صندلی ہاتھ پہ دھندلی سی حنا کی تحریر

اپنے افکار کی، اشعار کی دنیا ہے یہی
جانِ مضموں ہے یہی، شاہدِ معنی ہے یہی

آج تک سرخ و سیہ صدیوں کے سائے کے تلے
آدم و حوا کی اولاد پہ کیا گزری ہے؟

# मौज़ूए सुख़न[1]

गुल हुई जाती है अफ़सुर्दा[2] सुलगती हुई शाम
धुल के निकलेगी अभी चश्मए महताब[3] से रात
और मुश्ताक़[4] निगाहों की सुनी जाएगी
और उन हाथों से मस[5] होंगे ये तरसे हुए हाथ

उनका आंचल है, कि रुख़सार, कि पैराहन[6] है
कुछ तो है जिससे हुई जाती है चिलमन रंगीं
जाने उस ज़ुल्फ़ की मौहूम[7] घनी छांव में
टिमटिमाता है वो आवेज़ा[8] अभी तक कि नहीं

आज फिर हुस्ने दिलआरा[9] की वही धज होगी
वही ख़्वाबीदा सी आंखें, वही काजल की लकीर
रंगे रुख़सार पे हल्का सा वो ग़ाज़े[10] का गुबार
सन्दली हाथ पे धुंधली सी हिना की तहरीर[11]

अपने अफ़्कार[12] की, अश्आर[13] की दुनिया है यही
जाने मज़्मूं है यही, शाहिदे-माना[14] हैं यही

आज तक सुर्ख़ो सियह सदियों के साये के तले
आदमो हव्वा की औलाद पे क्या गुज़री है?

1. बात का विषय
2. दुखी
3. चाँद के नूर का स्रोता
4. अभिलाषी
5. स्पर्श
6. पोशाक, पहनावा
7. भ्रम में डालने वाली
8. बाला, झुमका
9. दिल को सजाने वाली सुन्दरता
10. पाउडर
11. लिखाई
12 फ़िक्र का बहुवचन, बहुवचन
13. शे'र का बहुवचन
14. अर्थ का गवाह

موت اور زیست کی روزانہ صف آرائی میں
ہم پہ کیا گزرے گی، اجداد پہ کیا گزری ہے؟

ان دمکتے ہوئے شہروں کی فراواں مخلوق
کیوں فقط مرنے کی حسرت میں جیا کرتی ہے؟
یہ حسیں کھیت، پھٹا پڑتا ہے جو بن جن کا!
کس لیے ان میں فقط بھوک اُگا کرتی ہے

یہ ہر اک سمت پُراسرار کڑی دیواریں
جل بجھے جن میں ہزاروں کی جوانی کے چراغ
یہ ہر اک گام پہ اُن خوابوں کی مقتل گاہیں
جن کے پرتو سے چراغاں ہیں ہزاروں کے دماغ

یہ بھی ہیں، ایسے کئی اور بھی مضموں ہوں گے
لیکن اس شوخ کے آہستہ سے کھلتے ہوئے ہونٹ
ہائے اس جسم کے کمبخت دلآویز خطوط
آپ ہی کہیے کہیں ایسے بھی افسوں ہوں گے

اپنا موضوعِ سخن ان کے سوا اور نہیں
طبعِ شاعر کا وطن ان کے سوا اور نہیں

●

मौत और ज़ीस्त[1] की रोज़ाना सफ़आराई[2] में
हमपे क्या गुज़रेगी, अजदाद[3] पे क्या गुज़री है?

इन दमकते हुए शहरों की फ़िरावां [4] मख़्लूक़[5]
क्यों फ़क़त मरने की हसरत में जिया करती है?
यह हसीं खेत, फटा पड़ता है जोबन जिनका!
किस लिए इनमें फ़क़त भूक उगा करती है

यह हर इक सम्त पुरअसरार कड़ी दीवारें
जल बुझे जिनमें हज़ारों की जवानी के चराग़
यह हर इक गाम पे उन ख़्वाबों की मक़्तलगाहें[6]
जिनके परतौ[7] से चराग़ां [8] हैं हज़ारों के दिमाग़

यह भी हैं, ऐसे कई और भी मज़मूं होंगे
लेकिन उस शोख़[9] के आहिस्ता से खुलते हुए होंट
हाय उस जिस्म के कमबख़्त दिलआवेज़[10] ख़तूत
आप ही कहिए कहीं ऐसे भी अफ़्सूं[11] होंगे

अपना मौज़ूए सुख़न इनके सिवा और नहीं
तबए शाइर[12] का वतन इनके सिवा और नहीं

●

1. ज़िन्दगी
2. जंग आज़माई
3. बाप दादा
4. बहुत ज़्यादा
5. जनता
6. क़त्ल करने की जगहें
7. अक्स
8. बहुत से चराग़ों की रोशनी
9. चंचल
10. दिल पसन्द, मनभावन
11. जादू
12. शाइर की तबीअत

# زنداں کی ایک شام

شام کے پیچ و خم ستاروں سے
زینہ زینہ اُتر رہی ہے رات
یوں صبا پاس سے گزرتی ہے
جیسے کہہ دی کسی نے پیار کی بات
صحنِ زنداں کے بے وطن اشجار
سرنگوں، محو ہیں بنانے میں
دامنِ آسماں پہ نقش و نگار

شانۂ بام پر دمکتا ہے!
مہرباں چاندنی کا دستِ جمیل
خاک میں گھل گئی ہے آبِ نجوم
نور میں گھل گیا ہے عرش کا نیل
سبز گوشوں میں نیلگوں سائے
لہلہاتے ہیں جس طرح دل میں
موجِ دردِ فراقِ یار آئے

دل سے پیہم خیال کہتا ہے
اتنی شیریں ہے زندگی اس پل
ظلم کا زہر گھولنے والے
کامراں ہو سکیں گے آج نہ کل

# ज़िन्दां[1] की एक शाम

शाम के पेचो ख़म[2] सितारों से
ज़ीना ज़ीना उतर रही है रात
यूं सबा पास से गुज़रती है
जैसे कह दी किसी ने प्यार की बात
सहने ज़िन्दां के बेवतन अश्जार[3]
सरनिगूं[4], महव[5] हैं बनाने में
दामने आस्मां पे नक़्शो निगार

शानए बाम पर दमकता है!
मेहरबां चांदनी का दस्ते जमील[6]
ख़ाक में घुल गई है आबे नुजूम[7]
नूर में घुल गया है अर्श[8] का नील
सब्ज़ गोशों[9] में नीलगूं साये
लहलहाते हैं जिस तरह दिल में
मौजे दर्दे फ़िराक़े यार आये

दिल से पैहम[10] ख़याल कहता है
इतनी शीरीं[11] है ज़िन्दगी इस पल
ज़ुल्म का ज़हर घोलने वाले
कामरां[12] हो सकेंगे आज न कल

1. जेल
2. बल, चक्कर
3. शजर (पेड़) का बहुवचन
4. सर झुकाए हुए
5. खोये हुए, व्यस्त
6. ख़ूबसूरत हाथ
7. सितारों की चमक
8. आसमान
9. हरे किनारों
10. लगातार
11. मीठी
12. ख़ुशनसीब, कामयाब

جلوہ گاہِ وصال کی شمعیں
وہ بجھا بھی چکے اگر تو کیا
چاند کو گُل کریں تو ہم جانیں

●

## یاد

دشتِ تنہائی میں، اے جانِ جہاں، لرزاں ہیں
تیری آواز کے سائے، ترے ہونٹوں کے سراب
دشتِ تنہائی میں، دوری کے خس و خاک تلے
کِھل رہے ہیں، ترے پہلو کے سمن اور گلاب

اُٹھ رہی ہے کہیں قربت سے تری سانس کی آنچ
اپنی خوشبو میں سلگتی ہوئی مدھم مدھم
دور اُفق پار، چمکتی ہوئی قطرہ قطرہ
گر رہی ہے تری دلدار نظر کی شبنم

اس قدر پیار سے، اے جانِ جہاں، رکھا ہے
دل کے رخسار پہ اس وقت تری یاد نے ہات
یوں گماں ہوتا ہے، گرچہ ہے ابھی صبحِ فراق
ڈھل گیا ہجر کا دن، آ بھی گئی وصل کی رات

●

जलवागाहे[1] विसाल की शमएं
वो बुझा भी चुके अगर तो क्या
चांद को गुल[2] करें तो हम जानें

●

## याद

दश्ते तन्हाई में, ऐ जानेजहां[3], लरज़ां हैं
तेरी आवाज़ के साये, तिरे होंटों के सराब[4]
दश्ते तन्हाई में, दूरी के ख़सो ख़ाक[5] तले
खिल रहे हैं, तिरे पहलू के समन[6] और गुलाब

उठ रही है कहीं कुर्बत[7] से तिरी सांस की आंच
अपनी खुश्बू में सुलगती हुई मद्धिम मद्धिम
दूर उफ़ुक़ पार, चमकती हुई क़तरा क़तरा
गिर रही है तिरी दिलदार नज़र की शबनम

इस क़दर प्यार से, ऐ जाने जहां, रखा है
दिल के रुख़सार पे इस वक़्त तिरी याद ने हात
यूं गुमां होता है, गरचे है अभी सुबहे फ़िराक़
ढ़ल गया हिज्र का दिन, आ भी गई वस्ल की रात

●

1. मिलन का नज़ारा करने का स्थान 2. बुझाना
3. महबूब 4. मृगजल
5. कूड़ा करकट और मिट्टी 6. चमेली
7. नज़दीकी

# ملاقات

یہ رات اُس درد کا شجر ہے
جو مجھ سے، تجھ سے عظیم تر ہے
عظیم تر ہے کہ اس کی شاخوں
میں لاکھ مشعل بکف ستاروں
کے کارواں، گِھر کے کھو گئے ہیں
ہزار مہتاب، اس کے سائے
میں اپنا سب نُور، رو گئے ہیں

یہ رات اُس درد کا شجر ہے
جو مجھ سے تجھ سے عظیم تر ہے
مگر اسی رات کے شجر سے
یہ چند لمحوں کے زرد پتّے

گِرے ہیں، اور تیرے گیسوؤں میں
اُلجھ کے گلنار ہو گئے ہیں
اسی کی شبنم سے خامشی کے
یہ چند قطرے، تری جبیں پر
برس کے، ہیرے پرو گئے ہیں

(۲)

بہت سیہ ہے یہ رات لیکن

# मुलाक़ात

यह रात उस दर्द का शजर[1] है
जो मुझसे, तुझसे अज़ीमतर[2] है
अज़ीमतर है कि इसकी शाख़ों
में लाख मशअल बकफ़[3] सितारों
के कारवां, घिर के खो गए हैं
हज़ार महताब[4], इसके साए
में अपना सब नूर, रो गए हैं

यह रात उस दर्द का शजर है
जो मुझसे, तुझसे अज़ीमतर है
मगर इसी रात के शजर से
यह चन्द लम्हों के ज़र्द[5] पत्ते

गिरे हैं, और तेरे गेसूओं में
उलझ के गुलनार[6] हो गए हैं
इसी की शबनम से ख़ामुशी के
यह चन्द क़तरे, तिरी जबीं[7] पर
बरस के, हीरे पिरो गए हैं

(2)

बहुत सियह है यह रात लेकिन

1. पेड़
2. बहुत बड़ा
3. हाथ में शमा लिए हुए
4. चाँद
5. पीले
6. अनार का सुर्ख़ फूल
7. माथे

اِسی سیاہی میں رُونما ہے
وہ نہرِ خوں جو مری صدا ہے
اسی کے سائے میں نور گر ہے
وہ موجِ زر جو تری نظر ہے

وہ غم جو اس وقت تیری باہوں
کے گلستاں میں سُلگ رہا ہے
(وہ غم، جو اس رات کا ثمر ہے)
کچھ اور تپ جائے اپنی آہوں
کی آنچ میں تو یہی شرر ہے

ہر اک سیہ شاخ کی کماں سے
جگر میں ٹوٹے ہیں تیر جتنے
جگر سے نوچے ہیں، اور ہر اک
کا ہم نے تیشہ بنا لیا ہے

(۳)

الم نصیبوں، جگر فگاروں
کی صبح، افلاک پر نہیں ہے
جہاں پہ ہم تم کھڑے ہیں دونوں
سحر کا روشن اُفق یہیں ہے
یہیں پہ غم کے شرار کِھل کر
شفق کا گلزار بن گئے ہیں

इसी सियाही में रूनुमा[1] है
वो नहरे ख़ूं[2] जो मिरी सदा है
इसी के साए में नूर गर[3] है
वो मौजे ज़र जो तिरी नज़र है

वो ग़म जो इस वक़्त तेरी बाहों
के गुलिस्तां[4] में सुलग रहा है
(वो ग़म, जो इस रात का समर[5] है)
कुछ और तप जाए अपनी आहों
की आंच में तो यही शरर है

हर इक सियह शाख़ की कमां से
जिगर में टूटे हैं तीर जितने
जिगर से नोचे हैं, और हर इक
का हमने तेशा[6] बना लिया है

(3)

अलम नसीबों[7], जिगर फ़िगारों[8]
की सुब्ह, अफ़लाक[9] पर नहीं है
जहां पे हम तुम खड़े हैं दोनों
सहर[10] का रौशन उफ़ुक़[11] यहीं है
यहीं पे ग़म के शरार[12] खिल कर
शफ़क़[13] का गुलज़ार बन गए हैं

1. उदित
2. ख़ून की नहर
3. रोशनी का बनाने वाला
4. चमन
5. फल
6. कुल्हाड़ी, कुदाल
7. जिनके नसीब में दुख ही दुख हों
8. ज़ख़्मी जिगर वालों
9. फ़लक का (आसमान) बहुवचन
10. सुबह
11. क्षितिज
12. चिंगारियां
13. उषा

یہیں پہ قاتل دکھوں کے تیشے
قطار اندر قطار کرنوں
کے آتشیں ہار بن گئے ہیں

یہ غم جو اس رات نے دیا ہے
یہ غم سحر کا یقیں بنا ہے
یقیں جو غم سے کریم تر ہے
سحر جو شب سے عظیم تر ہے

●●●

यहीं पे क़ातिल दुखों के तेशे
क़तार अन्दर क़तार किरनों
के आतिशी[1] हार बन गए हैं

यह ग़म जो इस रात ने दिया है
यह ग़म सहर का यक़ीं बना है
यक़ीं जो ग़म से करीमतर[2] है
सहर जो शब से अज़ीमतर है

●●●

आग जैसा 2. कृपालु

میراجی

# سمندر کا بلاوا

یہ سرگوشیاں کہہ رہی ہیں اب آؤ کہ برسوں سے تم کو
بلاتے بلاتے مرے دل پہ گہری تھکن چھا رہی ہے
کبھی ایک پل کو، کبھی ایک عرصہ صدائیں سنی ہیں، مگر یہ انوکھی صدا آ رہی ہے،
بلاتے بلاتے تو کوئی نہ اب تک تھکا ہے نہ آئندہ شاید تھکے گا
مرے پیارے بچے، "مجھے تم سے کتنی محبت ہے"، "دیکھو اگر یوں کیا تو برا مجھ سے بڑھ کر
بھی کوئی نہ ہوگا"، "خدایا خدایا"
کبھی ایک سسکی، کبھی اک تبسم، کبھی صرف تیوری
مگر یہ صدائیں تو آتی رہی ہیں
انہی سے حیاتِ دوروزہ ابد سے ملی ہے
مگر یہ انوکھی صدا جس پہ گہری تھکن چھا رہی ہے
یہ ہر اک صدا کو مٹانے کی دھمکی دیے جا رہی ہے

اب آنکھوں میں جنبش، نہ چہرے پہ کوئی تبسم، نہ تیوری
فقط کان سنتے چلے جا رہے ہیں
یہ اک گلستاں ہے، ہوا لہلہاتی ہے، کلیاں چٹکتی ہیں، غنچے مہکتے ہیں
اور پھول کھلتے ہیں، کھل کھل کے مرجھا کے گرتے ہیں، اک فرشِ مخمل
بناتے ہیں جس پہ مری آرزوؤں کی پریاں عجب آن سے یوں رواں ہیں
کہ جیسے گلستاں بھی اک آئینہ ہے
اسی آئینہ میں ہر اک شکل نکھری، سنور کر مٹی اور مٹ ہی گئی پھر نہ ابھری

**मीराजी**

## समुन्दर का बुलावा

ये सरगोशियां[1] कह रही हैं अब आओ कि बरसों से तुमको
बुलाते बुलाते मिरे दिल में गहरी थकन छा रही है
कहीं एक पल को, कभी एक अर्सा सदायें[2] सुनी हैं, मगर ये अनोखी सदा आ रही है,
बुलाते बुलाते तो कोई न अब तक थका है न आइंदा शायद थकेगा
मिरे प्यारे बच्चे, "मुझे तुमसे कितनी मुहब्बत है" "देखो अगर यूं किया तो बुरा मुझसे बढ़कर भी कोई न होगा" "खुदाया खुदाया"
कभी एक सिसकी, कभी इक तबस्सुम, कभी सिर्फ़ त्योरी
मगर ये सदायें तो आती रही हैं
इन्ही से हयाते दोरोज़ा[3] अबद[4] से मिली हैं
मगर ये अनोखी सदा जिस पे गहरी थकन छा रही है
ये हर इक सदा को मिटाने की धमकी दिये जा रही है

अब आंखों मे जुम्बिश, न चेहरे पे कोई तबस्सुम, न त्योरी
फ़क़त कान सुनते चले आ रहे हैं
ये इक गुलिस्तां है, हवा लहलहाती है, कलियां चटकती हैं, गुंचे महकते हैं
और फूल खिलते हैं, खिल खिलके मुर्झा के गिरते हैं, इक फ़र्शे मख़मल
बनाते हैं, जिस पे मिरी आरज़ूओं की परियां अजब आन से यूं रवां[5] हैं
कि जैसे गुलिस्तां भी इक आईना है
इसी आईने में हर इक शक्ल निखरी, संवर कर मिटी और मिट ही गई फिर न उभरी

1. फुस्फुसाहट
2. आवाज़ें
3. दो दिन की ज़िन्दगी
4. हमेशा
5. गतिमान

یہ پربت ہے خاموش ساکن
کبھی کوئی چشمہ اُبلتے ہوئے پوچھتا ہے کہ اس کی چٹانوں کے اُس پار کیا ہے
مگر مجھ کو پربت کا دامن ہی کافی ہے، — دامن میں وادی ہے
وادی میں ندی ہے، ندی میں بہتی ہوئی ناؤ ہی آئینہ ہے
اسی آئینے میں ہر اک شکل نکھری، مگر ایک پل میں جو مٹنے لگی ہے تو وہ پھر نہ اُبھری
یہ صحرا ہے — پھیلا ہوا خشک، بے برگ صحرا
بگولے یہاں تُند بھوتوں کا عکسِ مجسم بنے ہیں
مگر میں تو دور — ایک پیڑوں کے جھرمٹ پہ اپنی نگاہیں جمائے ہوئے ہوں

نہ اب کوئی صحرا، نہ پربت نہ کوئی گلستاں
اب آنکھوں میں جنبش، نہ چہرے پہ کوئی تبسم، نہ تیوری
فقط اک انوکھی صدا کہہ رہی ہے کہ تم کو بلاتے بلاتے مرے دل پہ گہری تھکن چھا رہی۔
بلاتے بلاتے تو کوئی نہ اب تک تھکا ہے، نہ شاید تھکے گا
تو پھر یہ صدا آئینہ ہے — فقط میں تھکا ہوں کسی کو بلاتے بلاتے

●

## اونچا مکان

بے شمار آنکھوں کو چہرے میں لگائے ہوئے استادہ ہے تعمیر کا اک نقشِ عجیب
اے تمدّن کے نقیب!
تری صورت ہے مہیب!
ذہن انسانی کا طوفان کھڑا ہے گویا،
ذہن کے لہروں میں کئی گیت سنائی مجھے دیتے ہیں، مگر
ان میں اک جوش ہے بیداد کا فریاد کا اک عکسِ دراز،

ये परबत है ख़ामोश साकिन[1]

कभी कोई चश्मा उबलते हुए पूछता है कि उसकी चट्टानों के उस पार क्या है

मगर मुझको परबत का दामन ही काफ़ी है — दामन में वादी है,

वादी में नद्दी है, नद्दी में बहती हुई नाव ही आईना है,

इसी आईने में हर इक शक्ल निखरी, मगर एक पल में जो मिटने लगी है तो वो फिर न उभरी

ये सहरा है — फैला हुआ ख़ुश्क, बेबर्ग[2] सहरा

बगूले यहां तुंद भूतों का अक्से मुजस्सम[3] बने हैं

मगर मैं तो दूर — एक पेड़ों के झुरमुट पे अपनी निगाहें जमाए हुए हूं

न अब कोई सहरा, न परबत, न कोई गुलिस्तां

अब आंखों में जुम्बिश, न चेहरे पे कोई तबस्सुम, न त्योरी

फ़क़त इक अनोखी सदा कह रही है कि तुमको बुलाते बुलाते मिरे दिल पे गहरी थकन छा रही है

बुलाते बुलाते तो कोई न अब तक थका है, न शायद थकेगा

तो फिर ये सदा आईना है — फ़क़त मैं थका हूं, किसी को बुलाते बुलाते

●

## ऊँचा मकान

बेशुमार आंखों को चेहरे में लगाये हुए इस्तादा है तामीर का इक नक़्शे अजीब

ऐ तमद्दुन के नक़ीब[4]!

तिरी सूरत है मुहीब[5]!

ज़ेह्ने इंसानी का तूफ़ान खड़ा है गोया,

ढल के लहरों में कई गीत सुनाई मुझे देते हैं, मगर

उनमें इक जोश है बेदाद[6] का, फ़रियाद का इक अक्से दराज़[7]

1. स्थिर
2. बिना पत्ते का
3. जिस्म वाला, जिस्मदार
4. अग्रदूत
5. डरावनी
6. अत्याचार, अनीति
7. लम्बी परछाई

اور الفاظ میں افسانے ہیں بے خوابی کے۔
کیا کوئی روحِ حزیں
ترے سینے میں بھی بے تاب ہے تہذیب کے رخشندہ نگیں؟

گھٹ کے لہریں ترے گیتوں کی مٹیں، مجھ کو نظر آنے لگا۔
ایک تلخابہ کسی بادۂ بدرنگ کا اک ٹوٹے ہوئے ساغر میں۔
نشۂ مَے سے نظر دھندلی ہوئی جاتی ہے
رات کی تیرہ فضا کیوں مجھے گھبراتی ہے؟
رات کی تیرہ فضا میں تری آنکھوں کی چمک مجھ کو ڈرا سکتی نہیں ہے، میں تو
اس سے بھی بڑھ کے اندھیرے میں رہا کرتا تھا۔
اور اس تیرگیٔ روح میں رخشاں تھے ستارے دُکھ کے،
اور کبھی بھول میں ہر نجمِ درخشاں سے لپک اٹھتے تھے شعلے سُکھ کے،
جیسے روزن سے ترے تان لپکتی ہوئی پھیلاتی ہے بازو اپنے،
جذب کر لیتا ہے پھر اس کو خلا کا دامن،
یاد آنے لگے تنہائی میں بہتے ہوئے آنسو اپنے
وہی آنسو، وہی شعلے سُکھ کے،
لیکن اک خواب تھا، اک خواب کی مانند لپک شعلوں کی تھی،
مری تخئیل کے پر طائرِ زخمی کے پروں کی مانند
پھڑپھڑاتے ہوئے بے کار لرز اُٹھتے تھے،
مرے اعضاء کا تناؤ مجھے جینے ہی نہیں دیتا تھا، تڑپ کر، یکبار،
جستجو مجھ کو رہائی کی ہوا کرتی تھی،

और अल्फ़ाज़ में अफ़साने हैं बेख़्वाबी के
क्या कोई रूहे हज़ीं[1]
तिरे सीने में भी बेताब है तहज़ीब के रख़शंदा नगीं[2]?

घुट के लहरें तिरे गीतों की मिटीं, मुझको नज़र आने लगा!
एक तलख़ाबा[3] किसी बाद्ये बदरंग का इक टूटे हुए साग़र में!
नश्शये मय[4] से नज़र धुंधली हुई जाती है
रात की तीरा[5] फ़ज़ा क्यों मुझे घबराती है?
रात की तीरा फ़ज़ा में तिरी आंखों की चमक मुझको डरा सकती नहीं है, मैं तो
इससे भी बढ़के अंधेरे में रहा करता था!
और इस तीरगीए रूह में रख़शां[6] थे सितारे दुख के
और कभी भूल में हर नज्मे दरख़शा[7] से लिपट उठते थे शोले सुख के,
जैसे रोज़न[8] से तिरे तान लपकती हुई फैलाती है बाज़ू अपने,
जज़्ब कर लेता है फिर उसको ख़ला[9] का दामन,
याद आने लगे तन्हाई में बहते हुए आंसू अपने
वहीं आंसू, वही शोले सुख के,
लेकिन इक ख़्वाब था, इक ख़्वाब की मानिन्द लपक शोलों की थी,
मिरी तख़यील के पर ताइरे ज़ख़्मी[10] के परों की मानिंद
फड़फड़ाते हुए बेकार लरज़ उठते थे,
मिरे आज़ा[11] का तनाव मुझे जीने ही नहीं देता था, तड़प कर, यकबार,
जुस्तजू मुझको रिहाई की हुआ करती थी,

1. दुखी आत्मा
2. चमकते हुए नग
3. कड़ुआ पानी
4. शराब का नशा
5. काला, अंधेरा
6. प्रकाशमान
7. रौशन सितारे
8. सुराख़, झरोखा
9. शून्य
10. घायल पक्षी
11. अंगों

مگر افسوس کہ جب درد دوا بننے لگا مجھ سے وہ پابندی ہٹی،
اپنے اعصاب کو آسودہ بنانے کے لیے
بھول کر تیرگی روح کو میں آپہنچا
اس بلندی کے قدم میں نے لیے
جس پہ تو سیکڑوں آنکھوں کو جھپکتے ہوئے استادہ ہے۔
ترے بارے میں سنا رکھی تھی لوگوں نے مجھے
کچھ حکایاتِ عجیب
میں یہ سنتا تھا ترے جسمِ گرانبار میں بستر ہے بچھا،
اور اِک نازنیں لیٹی ہے وہاں، تنہائی
ایک پھیکی سی تھکن بن کے گھسی جاتی ہے
ذہن میں اس کے، مگر وہ بے تاب
منتظر اس کی ہے پردہ لرزے
پیرہن ایک ڈھلکتا ہوا بادل بن جائے
اور دَر آئے اک ان دیکھی، انوکھی صورت
کچھ غرض اُس کو نہیں ہے اس سے
دل کو بھاتی ہے، نہیں بھاتی ہے
آنے والے کی ادا —
اس کا ہے ایک ہی مقصود، وہ استادہ کرے
بحرِ اعصاب کی تعمیر کا اک نقشِ عجیب
جس کی صورت سے کراہت آئے
اور وہ بن جائے ترامدِ مقابل پل میں
ذہنِ انسانی کا طوفان کھڑا ہو جائے
اور وہ نازنیں بے ساختہ، بے لاگ، ارادے کے بغیر

मगर अफ़सोस कि जब दर्द दवा बनने लगा मुझसे वो पाबन्दी हटी
अपने आसाब को आसूदा बनाने के लिए
भूल कर तीरगीए रूह को मैं आ पहुंचा
उस बुलन्दी के क़दम मैंने लिये
जिस पे तू सैकड़ों आंखों को झपकते हुए इस्तादा है
तिरे बारे में सुना रक्खी थी लोगों ने मुझे
कुछ हिकायाते अजीब
मैं यह सुनता था तिरे जिस्मे गिरांबार में बिस्तर है बिछा,
और इक नाज़नीं [1] लेटी है वहां, तंहाई
एक फीकी सी थकन बन के घुसी जाती है
ज़हन में इसके मगर वो बेताब
मुन्तज़िर इसकी है पर्दा लरज़े
पैरहन एक ढलकता हुआ बादल बन जाए।
और दर आए इक अनदेखी, अनोखी सूरत,
कुछ ग़रज़ उसको नहीं है इससे
दिल को भाती है, नहीं भाती है।
आने वाले की अदा —
उसका है एक ही मक़सूद [2], वो इस्तादा करे
बह्रे आसाब की तामीर का इक नक़्शे अजीब
जिसकी सूरत से कराहत [3] आये
और वो बन जाये तिरा मद्देमुक़ाबिल [4] पल में
ज़िह्ने इंसानी का तूफ़ान खड़ा हो जाये
और वह नाज़नीं बेसाख़्ता [5], बेलाग, इरादे के बग़ैर

1. माशूक़ 2. मक़सद
3. घिन 4. प्रतिस्पर्द्धी
5. सहसा, अचानक

ایک گرتی ہوئی دیوار نظر آنے لگے
شب کے بے روح تماشائی کو،
بھول کر اپنی تھکن کا نغمہ
مختصر لرزش چشم در سے
ریگ کے قصر کی مانند سبکسار کرے،
بحرِ اعصاب کی تعمیر کا اک نقشِ عجیب
ایک گرتی ہوئی دیوار کی — مانند لچک کھا جائے

یہ حکایات مرے ذہن میں اک بوئے خراماں بن کر
جب کبھی چاہتی تھیں رقص کیا کرتی تھیں،
اور اب دیکھتا ہوں سیکڑوں آنکھوں میں تری
ایک ہی چشمِ درخشاں مجھے آتی ہے نظر،
کیا اسی چشمِ درخشاں میں ہے شعلہ شکھ کا؟
ہاتھ سے اپنے اب اس آنکھ کو میں بند کیا چاہتا ہوں

●

## لبِ جوئبارے

ایک ہی پل کے لیے بیٹھ کے پھر اُٹھ بیٹھی
آنکھ نے صرف یہ دیکھا کہ نشستہ بُت ہے
یہ بصارت کو نہ تھی تاب کہ وہ دیکھ سکے
کیسے تلوار چلی، کیسے زمیں کا سینہ
ایک لمحے کے لیے چشمے کی مانند بنا
پیچ کھاتے ہوئے یہ لہر اُٹھی دل میں مرے

एक गिरती हुई दीवार नज़र आने लगे
शब के बेरूह तमाशाई को ;
भूल कर अपनी थकन का नग़्मा
मुख़्तसर लरज़िशे चश्मे दर से
रेग के क़स्र[1] की मानिंद सुबुकसार करे,
बहरे आसाब की तामीर का इक नक़्शे अजीब
एक गिरती हुई दीवार की — मानिंद लचक खा जाये

ये हिकायात मिरे ज़ेह्न में इक बूए ख़िरामां बनकर
जब कभी चाहती थीं रक़्स किया करती थीं
और अब देखता हूं सैकड़ों आंखों में तिरी
एक ही चश्मे दरख़्शां मुझे आती है नज़र,
क्या इसी चश्मे दरख़्शां में है शोला सुख का?
हाथ से अपने अब इस आंख को मैं बंद किया चाहता हूं

●

## लबे जूएबारे

एक ही पल के लिए बैठ के फिर उठ बैठी
आंख ने सिर्फ़ ये देखा कि नशिस्ता[2] बुत है
ये बसारत[3] को न थी ताब कि वह देख सके
कैसे तलवार चली, कैसे ज़मीं का सीना
एक लम्हे के लिए चश्मे की मानिंद बना
पेच खाते हुए ये लह्र उठी दिल में मिरे

1. महल
2. बैठा हुआ
3. देखने की ताक़त

کاش یہ جھاڑیاں اک سلسلۂ کوہ بنیں
دامنِ کوہ میں مَیں جا کے ستادہ ہو جاؤں
ایسی انہونی جو ہو جائے تو کیوں یہ بھی نہ ہو
خشک پتّوں کا زمیں پر جو بچھا ہے بستر
وہ بھی اک ساز بنے — ساز تو ہے، ساز تو ہے
نغمہ بیدار ہوا تھا جو ابھی، کان ترے
کیوں اُسے سُن نہ سکے؟ سننے سے مجبور رہے
پردۂ چشم نے صرف ایک نشستہ بُت کو
ذہن کے اک دائرہ خاص میں مرکوز کیا

یاد آتا ہے مجھے — کان ہوئے تھے بیدار
خشک پتّوں سے جب آئی تھی تڑپنے کی صدا
اور دامن کی ہر اک لہر چمک اُٹھی تھی
پڑ رہا تھا اُسی تلوار کا سایہ شاید
جو نکل آئی تھی اک پل میں نہاں خانے سے
جیسے بے ساختہ انداز میں بجلی چمکے

لیکن اُس دامنِ آلودہ کی ہر لہر مٹی
جل پری دیکھتے ہی دیکھتے روپوش ہوئی
میں ستادہ ہی رہا، میں نے نہ دیکھا (افسوس!)
کیسے تلوار چلی، کیسے زمیں کا سینہ
ایک لمحہ کے لیے چشمے کی مانند بہا

دامنِ کوہ میں استادہ نہیں ہوں اس وقت
جھاڑیاں سلسلۂ کوہ نہیں، پردہ ہیں
جس کے اس پار جھلکتا نظر آتا ہے مجھے
منظر انجان، اچھوتی سی دُلہن کی صورت

काश! ये झाड़ियां इक सिलसिलए कोह[1] बनें
दामने कोह[2] में मैं आके सितादा हो जाऊँ
ऐसी अनहोनी जो हो जाए तो क्यों ये भी न हो
ख़ुश्क पत्तों का ज़मीं पर जो बिछा है बिस्तर
वो भी इक साज़ बने — साज़ तो है, साज़ तो है
नग़मा बेदार हुआ था जो अभी, कान तिरे
क्यों उसे सुन न सके? सुनने से मजबूर रहे
पर्दए चश्म[3] ने सिर्फ़ एक नशिस्ता बुत को
ज़ेह्न के इक दायरए ख़ास में मर्कूज़ किया

याद आता है मुझे — कान हुए थे बेदार[4]
ख़ुश्क पत्तों से जब आई थी तड़पने की सदा
और दामन की हर इक लह्र चमक उठ्ठी थी
पड़ रहा था उसी तलवार का साया शायद
जो निकल आई थी इक पल में निहांख़ाने[5] से
जैसे बेसाख़्ता अंदाज़ में बिजली चमके

लेकिन उस दामने आलूदा[6] की हर लह्र मिटी
जल परी देखते ही देखते रूपोश[7] हुई
मैं सितादा ही रहा, मैंने न देखा (अफ़सोस!)
कैसे तलवार चली कैसे ज़मीं का सीना
एक लम्हे के लिए चश्मे की मानिंद बना

दामने कोह में इस्तादा[8] नहीं हूं इस वक़्त
झाड़ियां सिलसिलए कोह नहीं, पर्दा हैं
जिसके उस पार झलकता नज़र आता है मुझे
मंज़र अंजान, अछूती सी दुल्हन की सूरत

1. पहाड़ों का सिलसिला
2. पहाड़ों की गोद
3. आंख का पर्दा
4. जाग उठे
5. छुपे हुए स्थान
6. भीगे हुए दामन
7. छुप जाना
8. खड़ा

ہاں تصور کو میں اب اپنے بنا کر دولہا
اسی پردے کے نہاں خانے میں لے جاؤں گا
کیسے تلوار چلی، کیسے زمیں کا سینہ
دلِ بے تاب کی مانند تڑپ اٹھا تھا؟
ایک بے ساختہ انداز میں بجلی کی طرح
جل پری گوشۂ خلوت سے نکل آئی تھی!
زندگی گرم تھی ہر بوند میں آبِی پاؤں
خشک پتّوں پہ پھسلتے ہوئے جا پہنچے تھے
میں بھی موجود تھا — اک کرمکِ بے نام ونشاں
میں نے دیکھا کہ گھٹا شق ہوئی، دھارا نکلی
برق رفتاری سے اک تیرکماں نے چھوڑا
اور وہ خم کھا کے، لچکتا ہوا تھرّا کے گرا
قلّۂ کوہ سے گرتے ہوئے پتھر کی طرح
کوئی بھی روک نہ تھی اُس کے لئے، اُس کے لئے
خشک پتّوں کا زمیں پر ہی بچھا تھا بستر
اسی بستر پہ وہ انجان پری لیٹ گئی!

اور میں کرمکِ بے نام، گھٹا کی صورت
اسی امید میں تکتا رہا، تکتا ہی رہا
اب اُسی وقت کوئی جل کی پری آجائے
بنسری ہاتھ میں لے کر میں گوالا بن جاؤں

جل پری آئے کہاں سے؟ وہ اسی بستر پر
میں نے دیکھا ابھی آسودہ ہوئی، لیٹ گئی
لیکن افسوس کہ میں اب بھی کھڑا ہوں تنہا

हां, तसव्वुर[1] को मैं अब अपने बनाकर दुल्हा
उसी पर्दे के निहांख़ाने में ले जाऊँगा
कैसे तलवार चली, कैसे ज़मीं का सीना
दिले बेताब की मानिन्द तड़प उठ्ठा था?
एक बेसाख़्ता अंदाज़ में बिजली की तरह
जलपरी गोशए ख़ल्वत[2] से निकल आयी थी!
ज़िंदगी गर्म थी हर बूंद में आबी[3] पांव
खुश्क पत्तों पे फिसलते हुए आ पहुंचे थे
मैं भी मौजूद था — इक किर्मके[4] बेनामो निशां
मैंने देखा कि घटा शक़्क़[5] हुई, धारा निकली
बर्क़ रफ़्तारी से इक तीर कमां ने छोड़ा
और वो ख़म खा के, लचकता हुआ थर्रा के गिरा
क़ुल्लये कोह[6] से गिरते हुए पत्थर की तरह
कोई भी रोक न थी उसके लिए, उसके लिए
खुश्क पत्तों का ज़मीं पे ही बिछा था बिस्तर
उसी बिस्तर पे वो अंजान परी लेट गयी!

और मैं क्रिमके बेनाम, घटा की सूरत,
इसी उम्मीद में तकता रहा, तकता ही रहा
अब इसी वक़्त कोई जल की परी आ जाए
बंसुरी हाथ में लेकर मैं ग्वाला बन जाऊँ

जलपरी आये कहां से? वो उसी बिस्तर पर
मैंने देखा अभी आसूदा हुई लेट गई
लेकिन अफ़सोस कि मैं अब भी खड़ा हूं तन्हा

1. कल्पना
2. तन्हाई
3. भीगे हुए
4. कीड़े मकोड़े
5. फट जाना
6. पहाड़ की चोटी

ہاتھ آلودہ ہے، نمدار ہے، دھندلی ہے نظر
ہاتھ سے آنکھوں کے آنسو تو نہیں پونچھے تھے!

●

# جاتری

ایک آ گیا، دوسرا آئے گا، دیر سے دیکھتا ہوں یوں ہی رات اس کی گذر جائے گی، میں کھڑا ہوں یہاں کس لیے، مجھ کو کیا کام ہے، یاد آتا نہیں، یاد بھی ٹمٹماتا ہوا اک دِیا بن گئی، جس کی رکتی ہوئی اور جھجکتی ہوئی ہر کرن بے صدا قہقہہ ہے، مگر میرے کانوں نے کیسے اسے سُن لیا، ایک آندھی چلی، چل کے مٹ بھی گئی، آج تک میرے کانوں میں موجود ہے سائیں سائیں مچلتی ہوئی اور اُبلتی ہوئی، پھیلتی پھیلتی، —— دیر سے میں کھڑا ہوں یہاں، ایک آیا، گیا، دوسرا آئے گا، رات اس کی گذر جائے گی، ایک ہنگامہ برپا ہے دیکھیں جدھر، آرہے ہیں کئی لوگ چلتے ہوئے، آرہے جارہے ہیں اِدھر سے اُدھر اور اُدھر سے اِدھر۔ جیسے دل میں مرے دھیان کی لہر سے ایک طوفان ہے ویسے آنکھیں مری دیکھتی ہی چلی جارہی ہیں کہ اک ٹمٹماتے دیے کی کرن زندگی کو پھسلتے ہوئے اور گرتے ہوئے ڈھب سے ظاہر کیے جارہی ہے، مجھے دھیان آتا ہے اب تیرگی اِک اُجالا بنی ہے۔ مگر اس اُجالے سے رِستی چلی جارہی ہیں وہ امرت کی بوندیں جنہیں میں ہتھیلی پہ اپنی سنبھالے رہا ہوں، ہتھیلی مگر ٹمٹماتا ہوا اک دِیا بن گئی تھی، لپک سے اُجالا ہوا، لو گری، پھر اندھیرا سا چھانے لگا، بیٹھتا بیٹھتا، بیٹھ کر ایک ہی پل میں اُٹھتا ہوا، جیسے آندھی کے تیکھے تھپیڑوں سے دروازے کے طاق کھلتے رہیں، بند ہوتے رہیں۔

پھڑ پھڑاتے ہوئے طائرِ زخم خوردہ کی مانند میں دیکھتا ہی رہا ایک آیا، گیا۔ دوسرا آئے گا، سوچ آئی مجھے، پاؤں بڑھنے سے انکار کرتے گئے، میں کھڑا ہی رہا، دل میں اِک بوند نے یہ کہا رات یونہی گذر جائے گی، دل کی اِک بوند کو آنکھ میں لے کے میں دیکھتا ہی رہا،

हाथ आलूदा है, नमदार है, धुंधली है नज़र
हाथ से आंखों के आंसू तो नहीं पोंछे थे!

●

## मीराजी

# जातरी

एक आ गया, दूसरा आयेगा, देर से देखता हूं यूं ही रात उसकी गुज़र जायेगी, मैं खड़ा हूं यहां किस लिए, मुझको क्या काम है, याद आता नहीं, याद भी टिमटिमाता हुआ इक दिया बन गई, जिसकी रुकती हुई और झिझकती हुई हर किरन बेसदा क़हक़हा है, मगर मेरे कानों ने कैसे उसे सुन लिया — एक आंधी चली, चल के मिट भी गयी, आज तक मेरे कानों में मौजूद है सायं सायं मचलती हुई और उबलती हुई, फैलती फैलती — देर से मैं खड़ा हूं यहां, एक आया, गया, दूसरा आयेगा, रात इसकी गुज़र जाएगी, एक हंगामा बरपा है देखें जिधर, आ रहे हैं कई लोग चलते हुए, आ रहे जा रहे हैं, इधर से उधर और उधर से इधर — जैसे दिल में मिरे ध्यान की लहर से एक तूफ़ान है वैसे आंखें मिरी देखती ही चली जा रही हैं कि इक टिमटिमाते दीये की किरन ज़िंदगी को फिसलते हुए और गिरते हुए ढब से ज़ाहिर किये जा रही है, मुझे ध्यान आता है अब तीरगी इक उजाला बनी है। मगर इस उजाले से रिसती चली जा रही हैं वो अमृत की बूंदे जिन्हें मैं हथेली पे अपनी संभाले रहा हूं, हथेली मगर टिमटिमाता हुआ इक दीया बन गयी थी, लपक से उजाला हुआ, लौ गिरी, फिर अंधेरा सा छाने लगा, बैठता बैठता, बैठकर एक ही पल में उठता हुआ, जैसे आंधी के तीखे थपेड़ों से दरवाज़े के ताक़ खुलते रहें, बन्द होते रहें।

फड़फड़ाते हुए ताइरे ज़ख़्म ख़ुर्दा[1] की मानिंद मैं देखता ही रहा, एक आया, गया, —दूसरा आयेगा, सोच आई मुझे, पांव बढ़ने से इंकार करते गए, मैं खड़ा ही रहा, दिल

1. घायल

پھڑ پھڑاتے ہوئے طائرِ زخم خوردہ کی مانند دروازے کے طاق اک بار جب مل گئے مجھ کو آہستہ آہستہ احساس ہونے لگا — اب یہ زخمی پرندہ نہ تڑپے گا لیکن مرے دل کو ہر وقت تڑپائے گا، میں ہتھیلی پہ اپنی سنبھالے رہوں گا وہ امرت کی بوندیں جنہیں آنکھ سے میری رِسنا تھا، لیکن مری زندگی ٹمٹماتا ہوا اک دیا بن گئی، جس کی رکتی ہوئی اور جھجکتی ہوئی ہر کرن بے صدا قہقہہ ہے کہ اس تیرگی میں کوئی بات ایسی نہیں، جس کو پہلے اندھیرے میں دیکھا ہو میں نے، سفر یہ اُجالے، اندھیرے کا چلتا رہا ہے — تو چلتا رہے گا، یہی رسم ہے راہ کی ایک آیا، گیا، دوسرا آئے گا، رات ایسے گذر جائے گی، ٹمٹماتے ستارے بتاتے تھے۔ رستہ کی ندی بہی جا رہی ہے، بہے جا، اس اُلجھن سے ایسے نکل جا، کوئی سیدھا منزل پہ جاتا تھا لیکن کئی قافلے بھول جاتے تھے انجم کے دورِ یگانہ کے مبہم اشارے مگر وہ بھی چلتے ہوئے اور بڑھتے ہوئے شام سے پہلے ہی دیکھ لیتے تھے مقصود کا بند دروازہ کھلنے لگا۔ مگر میں کھڑا ہوں یہاں مجھ کو کیا کام ہے، میرا دروازہ کھلتا نہیں ہے، مجھے پھیلے صحرا کی سوئی ہوئی ریگ کا ذرّہ ذرّہ یہی کہہ رہا ہے کہ ایسے خرابے میں سوکھی ہتھیلی ہے اک ایسا تلوا کہ جس کو کسی خار کی نوک چبھنے پہ بھی کہہ نہیں سکتی مجھ کو کوئی بوند اپنے لہو کی پلا دو، مگر میں کھڑا ہوں یہاں کس لیے؟ — کام کوئی نہیں ہے تو میں بھی اِن آتے ہوئے اور جاتے ہوئے ایک دو، تین — لاکھوں بگولوں میں مل کر یوں ہی چلتے چلتے کہیں ڈوب جاتا کہ جیسے یہاں بہتی لہروں میں کشتی ہر اک موج کو تھام لیتی ہے اپنی ہتھیلی کے پھیلے کنول میں، مجھے دھیان آتا نہیں ہے کہ اس راہ میں تو ہر اک جانے والے کے بس میں ہے منزل، میں چل دُوں، چلوں — آیئے آیئے، آپ کیوں اس جگہ ایسے چُپ چاپ، تنہا کھڑے ہیں، اگر آپ کہیے تو ہم اک اچھوتی سی ٹہنی سے دو پھول — بس بس، مجھے اِس کی کوئی ضرورت نہیں ہے، میں اک دوست کا راستہ دیکھتا ہوں! — مگر وہ چلا بھی گیا ہے مجھے پھر بھی تسکین آتی نہیں ہے کہ میں ایک صحرا کا باشندہ معلوم ہونے

में इक बूंद ने यह कहा रात यूंही गुज़र जाएगी, दिल की इक बूंद को आंख में ले के मैं देखता ही रहा, फड़फड़ाते हुए ताइरे ज़ख़्म ख़ुर्दा की मानिंद दरवाज़े के ताक़ इक बार जब मिल गए, मुझको आहिस्ता आहिस्ता एहसास होने लगा— अब ये ज़ख़्मी परिंदा न तड़पेगा लेकिन मिरे दिल को हर वक़्त तड़पाएगा, मैं हथेली पे अपनी संभाले रहूंगा, वो अमृत की बूंदे जिन्हें आंख से मेरी रिसना था, लेकिन मिरी ज़िन्दगी टिमटिमाता हुआ इक दीया बन गई, जिसकी रुकती हुई और झिझकती हुई हर किरन बेसदा क़हक़हा है कि इस तीरगी में कोई बात ऐसी नहीं, जिसको पहले अंधेरे में देखा हो मैंने, सफ़र यह उजाले, अंधेरे का चलता रहा है — तो चलता रहेगा, यही रस्म है राह की एक आया, गया, दूसरा आयेगा, रात ऐसे गुज़र जाएगी, टिमटिमाते सितारे बताते थे। रस्ते की नद्दी बही जा रही है, बहे जा, इस उलझन से ऐसे निकल जा, कोई सीधा मंज़िल पे जाता था लेकिन कई क़ाफ़िले भूल जाते थे अंजुम के दौरे यगाना के मुब्हम[1] इशारे मगर वो भी चलते हुए और बढ़ते हुए शाम से पहले ही देख लेते थे मक़सूद का बंद दरवाज़ा खुलने लगा, मगर मैं खड़ा हूं यहां, मुझको क्या काम है, मेरा दरवाज़ा खुलता नहीं है, मुझे फैले सहरा की सोई हुई रेग का ज़र्रा ज़र्रा[2] यही कह रहा है कि ऐसे ख़राबे[3] में सूखी हथेली है इक ऐसा तलवा कि जिसको किसी ख़ार की नोक चुभने पे भी कह नहीं सकती मुझको कोई बूंद अपने लहू की पिला दो, मगर मैं खड़ा हूं यहां किस लिए? —काम कोई नहीं है तो मैं भी इन आते हुए और जाते हुए एक, दो, तीन — लाखों बगूलों में मिलकर यूं ही चलते चलते कहीं डूब जाता कि जैसे यहां बहती लहरों में कश्ती हर इक मौज को थाम लेती है अपनी हथेली के फैले कंवल में, मुझे ध्यान आता नहीं है कि इस राह में तो हर इक जाने वाले के बस में है मंज़िल, मैं चल दूं, चलूं — आईये आईये, आप क्यों इस जगह ऐसे चुपचाप, तंहा खड़े हैं, अगर आप कहिए तो हम इक अछूती सी टहनी से दो फूल — बस बस, मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, मैं इक दोस्त का रास्ता देखता हूं:— मगर वो चला भी गया है मुझे फिर भी तसकीन[1] आती

1. अस्पष्ट    2. कण कण
3. वीराने

لگا ہوں خود اپنی نظر میں، مجھے اب کوئی بند دروازہ کھلتا نظر آئے، یہ بات ممکن نہیں ہے، میں اِک اور آندھی کا مشتاق ہوں جو مجھے اپنے پردے میں یکسر چھپالے، مجھے اب یہ محسوس ہونے لگا ہے سہانا سماں جتنا بس میں تھا میرے وہ سب بہتا سا ایک جھونکا بنا ہے جسے ہاتھ میرے نہیں روک سکتے کہ میری ہتھیلی میں امرت کی بوندیں تو باقی نہیں ہیں، فقط ایک پھیلا ہوا، خشک، بے برگ، بے رنگ صحرا ہے جس میں یہ ممکن نہیں میں کہوں۔ایک آیا، گیا، دوسرا آئے گا، رات میری گذر جائے گی۔

●

## کلرک کا نغمۂ محبت

سب رات مری سپنوں میں گزر جاتی ہے اور میں سوتا ہوں
پھر صبح کی دیوی آتی ہے،
اپنے بستر سے اٹھتا ہوں، منہ دھوتا ہوں،
لایا کل جو ڈبل روٹی
اس میں سے آدھی کھائی تھی
باقی جو بچی وہ میرا آج کا ناشتہ ہے،

دنیا کے رنگ انوکھے ہیں
جو میرے سامنے رہتا ہے اس کے گھر میں گھر والی ہے،
اور دائیں پہلو میں اک منزل کا ہے مکاں، وہ خالی ہے،
اور بائیں جانب اک عیاش ہے جس کے ہاں اک داشتہ ہے،
اور ان سب میں اک میں بھی ہوں لیکن بس تو ہی نہیں،
ہیں تو اور سب آرام مجھے، اک گیسوؤں کی خوشبو ہی نہیں،
فارغ ہوتا ہوں ناشتے سے اور اپنے گھر سے نکلتا ہوں

नहीं है कि मैं इक सहरा का बाशिन्दा मालूम होने लगा हूं खुद अपनी नज़र में, मुझे अब कोई बंद दरवाज़ा खुलता नज़र आये। ये बात मुमकिन नहीं है, मैं इक और आंधी का मुश्ताक़[1] हूं जो मुझे अपने पर्दे में यक्सर छुपाले, मुझे अब यह महसूस होने लगा है सुहाना समां जितना बस में था मेरे वो सब बहता सा एक झोंका बना है जिसे हाथ मेरे नहीं रोक सकते कि मेरी हथेली में अमृत की बूंदें तो बाक़ी नहीं हैं, फ़क़त एक फैला हुआ, खुश्क, बेबर्ग, बेरंग सहरा है जिसमें यह मुमकिन नहीं मैं कहूं —एक आया, गया, दूसरा आयेगा, रात मेरी गुज़र जाएगी।

●

## कलर्क का नग़मए मुहब्बत

सब रात मिरी सपनों में गुज़र जाती है और मैं सोता हूं
फिर सुब्ह की देवी आती है,
अपने बिस्तर से उठता हूं, मुंह धोता हूं,
लाया कल जो डबल रोटी
उसमें से आधी खाई थी
बाक़ी जो बची वो मेरा आज का नाश्ता है

दुनिया के रंग अनोखे हैं
जो मेरे सामने रहता है उसके घर में घर वाली है,
और दायें पहलू में इक मंज़िल का है मकां, वो ख़ाली है,
और बाईं जानिब इक अय्याश है जिसके हां इक दाश्ता[2] है,
और इन सब में इक मैं भी हूं लेकिन बस तू ही नहीं,
हैं तो और सब आराम मुझे, इक गेसुओं[3] की ख़ुश्बू ही नहीं,

1. चाहने वाला
2. रखैल
3. लम्बे बाल, जटा

دفتر کی راہ پر چلتا ہوں،
رستے میں شہر کی رونق ہے، اک تانگہ ہے، دو کاریں ہیں،
بچے مکتب کو جاتے ہیں، اور تانگوں کی کیا بات کہوں؟
کاریں تو چھچھلتی بجلی ہیں، تانگوں کے تیروں کو کیسے سہوں؟

یہ مانا ان میں شریفوں کے گھر کی دولت ہے، مایا ہے،
کچھ شوخ بھی ہیں، معصوم بھی ہیں،
لیکن رستے پر پیدل مجھ سے بدقسمت، مغموم بھی ہیں،
تانگوں پر برقِ تبسم ہے،
باتوں کا میٹھا ترنّم ہے،
اکساتا ہے دھیان یہ رہ رہ کر، قدرت کے دل میں ترحّم ہے؟
ہر چیز تو ہے موجود یہاں اک تو ہی نہیں، اک تو ہی نہیں،
اور میری آنکھوں میں رونے کی ہمت ہی نہیں، آنسو ہی نہیں!

جوں توں رستہ کٹ جاتا ہے اور بندیخانہ آتا ہے،
چل کام میں اپنے دل کو لگا یوں کوئی مجھے سمجھاتا ہے،
میں دھیرے دھیرے دفتر میں اپنے دل کو لے جاتا ہوں
نادان ہے دل، مورکھ بچہ — اک اور طرح دے جاتا ہوں،
پھر کام کا دریا بہتا ہے اور ہوش مجھے کب رہتا ہے،

جب آدھا دن ڈھل جاتا ہے تو گھر سے افسر آتا ہے
اور اپنے کمرے میں مجھ کو چپراسی سے بلواتا ہے،
یوں کہتا ہے، ووں کہتا ہے، لیکن بےکار ہی رہتا ہے،
میں اس کی ایسی باتوں سے تھک جاتا ہوں، تھک جاتا ہوں،

फ़ारिग़ होता हूं नाश्ते से और अपने घर से निकलता हूं
दफ़्तर की राह पर चलता हूं,
रस्ते में शहर की रौनक़ है, इक तांगा है, दो कारें हैं
बच्चे मकतब को जाते हैं, और तांगों की क्या बात कहूं?
कारें तो छछलती बिजली हैं, तांगों के तीरों को कैसे सहूं?
यह माना इनमें शरीफ़ों के घर की दौलत है, माया है,
कुछ शोख़[1] भी हैं, मासूम भी हैं,
लेकिन रस्ते पर पैदल मुझसे बदक़िस्मत, मग़मूम[2] भी हैं,
तांगों पर बर्क़ तबस्सुम[3] है,
बातों का मीठा तरन्नुम है,
उकासाता है ध्यान यह रह रह कर, क़ुदरत के दिल में तरहहुम[4] है?
हर चीज़ तो है मौजूद यहां इक तू ही नहीं, इक तू ही नहीं,
और मेरी आंखों में रोने की हिम्मत ही नहीं, आंसू ही नहीं!

जूं तूं रस्ता कट जाता है और बन्दीख़ाना आता है,
चल काम में अपने दिल को लगा यूं, कोई मुझे समझाता है,
मैं धीरे धीरे दफ़्तर में अपने दिल को ले जाता हूं,
नादान[5] है दिल, मूरख बच्चा — इक और तरह दे जाता हूं,
फिर काम का दरिया बहता है, और होश मुझे कब रहता है,

जब आधा दिन ढल जाता है तो घर से अफ़सर आता है
और अपने कमरे में मुझको चपरासी से बुलवाता है,
यूं कहता है, त्यूं कहता है, लेकिन बेकार ही रहता है,
मैं उसकी ऐसी बातों से थक जाता हूं, थक जाता हूं,

1. चंचल
2. दुखी
3. मुस्कान की बिजली
4. दया
5. नासमझ

پل بھر کے لیے اپنے کمرے کو فائل لینے آتا ہوں،
اور دل میں آگ سلگتی ہے: میں بھی جو کوئی افسر ہوتا
اس شہر کی دھول اور گلیوں سے کچھ دور مرا پھر گھر ہوتا،
اور تو ہوتی!
لیکن میں اک منشی ہوں تو اونچے گھر کی رانی ہے
یہ میری پریم کہانی ہے اور دھرتی سے بھی پرانی ہے!

●●●

पल भर के लिए अपने कमरे को फाइल लेने आता हूं,
और दिल में आग सुलगती है : मैं भी जो कोई अफसर होता
इस शहर की धूल और गलियों से कुछ दूर मेरा फिर घर होता,
और तू होती!
लेकिन मैं इक मुंशी हूं तू ऊँचे घर की रानी है
ये मेरी प्रेम कहानी है और धरती से भी पुरानी है!

●●●

## معین احسن جذبی

# فطرت ایک مفلس کی نظر میں

فطرت کے پجاری کچھ تو بتا، کیا حسن ہے ان گلزاروں میں
ہے کون سی رعنائی آخر ان پھولوں میں ان خاروں میں
وہ خواہ سلگتے ہوں شب بھر، وہ خواہ چمکتے ہوں ہوں شب بھر
میں نے بھی تو دیکھا ہے اکثر کیا بات نئی ہے تاروں میں
اس چاند کی ٹھنڈی کرنوں سے مجھ کو سکوں ہوتا ہی نہیں
مجھ کو تو جنوں ہوتا ہی نہیں، جب پھرتا ہوں گلزاروں میں
یہ چپ چپ نرگس کی کلیاں، کیا جانے کیسی کلیاں ہیں
جو کھلتی ہیں، جو ہنستی ہیں اور پھر بھی ہیں بیماروں میں
یہ لال شفق، یہ لالہ و گل اک چنگاری بھی جن میں نہیں
شعلے بھی نہیں، گرمی بھی نہیں، ہیں تیرے آتش زاروں میں
اس وقت کہاں تو ہوتا ہے جب موسم گرما کا سورج
دوزخ کی تپش بھر دیتا ہے، دریاؤں میں، کہساروں میں
جاڑے کی بھیانک راتوں میں وہ سرد ہواؤں کی تیزی
ہاں وہ تیزی وہ بے مہری جو ہوتی ہے تلواروں میں
دریا کے تلاطم کا منظر ہاں تجھ کو مبارک ہو لیکن
اک ٹوٹی پھوٹی کشتی بھی چکراتی ہے منجدھاروں میں
کوئل کے رسیلے گیت سنے لیکن یہ کبھی سوچا تو نے
ہیں الجھے ہوئے نغمے کتنے اک ساز کے ٹوٹے تاروں میں
بادل کی گرج، بجلی کی چمک، بارش میں وہ تیزی تیروں کی
میں ٹھٹھرا سمٹا سڑکوں پر، تو جام بلب مے خواروں میں
سب ہوش و خرد کے دشمن ہیں، سب قلب و نظر کے رہزن ہیں
رکھا ہے بھلا کیا اس کے سوا ان راحت جاں مہ پاروں میں
وہ لاکھ ہلالوں سے بھی حسیں، کیسی زہرہ، کیسی پرویں

मुईन अहसन जज़्बी

# फ़ितरत एक मुफ़लिस की नज़र में

फ़ितरत के पुजारी कुछ तो बता, क्या हुस्न है इन गुल्ज़ारों में
है कौन सी रानाई आख़िर इन फूलों में इन ख़ारों में
वो ख़्वाह सुलगते हों शब भर, वो ख़्वाह चमकते हों शब भर
मैंने भी तो देखा है अक्सर क्या बात नई है तारों में
इस चांद की ठंडी किरनों से मुझको तो सुकूं होता ही नहीं
मुझको तो जुनूं होता ही नहीं, जब फिरता हूं गुल्ज़ारों में
ये चुप चुप नरगिस की कलियां, क्या जानें कैसी कलियां हैं
जो खिलती हैं, जो हंसती हैं और फिर भी हैं बीमारों में
ये लाल शफ़क़, ये लालओ गुल इक चिन्गारी भी जिनमें नहीं
शोले भी नहीं, गर्मी भी नहीं, हैं तेरे आतिशज़ारों में
उस वक़्त कहां तू होता है जब मौसमे गर्मा का सूरज
दौज़ख़ की तपिश भर देता है, दरियाओं में, कुहसारों में
जाड़े की भयानक रातों में वो सर्द हवाओं की तेज़ी
हां वो तेज़ी वो बे महरी जो होती है तलवारों में
दरिया के तलातुम का मंज़र हां तुझ को मुबारक हो लेकिन
इक टूटी फूटी कश्ती भी चकराती है मंझधारों में
कोयल के रसीले गीत सुने लेकिन यह कभी सोचा तूने
हैं उलझे हुए नग़्मे कितने इस साज़ के टूटे तारों में
बादल की गर्ज, बिजली की चमक, बारिश में वो तेज़ी तीरों की
मैं ठिठरा सिमटा सडकों पर, तू जाम बल्ब मयख़्वारों में
सब होशो ख़ेरद के दुश्मन हैं, सब क़ल्बो नज़र के रहज़न हैं
रखखा है भला क्या इस के सिवा इन राहतेजां महपारों में
वो लाख हलालों से भी हसीं, कैसी ज़ोहरा, कैसी पर्दे

اک روٹی کا ٹکڑا جو کہیں مل جائے مجھے بازاروں میں
جب جیب میں پیسے بجتے ہیں جب پیٹ میں روٹی ہوتی ہے
اُس وقت یہ ذرّہ ہیرا ہے، اُس وقت یہ شبنم موتی ہے

●●●

## موت

اپنی سوئی ہوئی دنیا کو جگا لوں تو چلوں
اپنے غم خانے میں اک دھوم مچا لوں تو چلوں
اور اک جام مئے تلخ چڑھا لوں تو چلوں
ابھی چلتا ہوں ذرا خود کو سنبھالوں تو چلوں

جانے کب پی تھی ابھی تک ہے مئے غم کا خمار
دھندلا دھندلا نظر آتا ہے جہانِ بیدار
آندھیاں چلتی ہیں، دنیا ہوئی جاتی ہے غبار
آنکھ تو مل لوں، ذرا ہوش میں آ لوں تو چلوں

وہ مرا سحر وہ اعجاز کہاں ہے لانا
میری کھوئی ہوئی آواز کہاں ہے لانا
میرا ٹوٹا ہوا وہ ساز کہاں ہے لانا
اک ذرا گیت بھی اس ساز پہ گا لوں تو چلوں

میں تھکا ہارا تھا، اتنے میں جو آئے بادل
کسی متوالے نے چپکے سے بڑھا دی بوتل
اُف وہ رنگین پُراسرار خیالوں کے محل
ایسے دو چار محل اور بنا لوں تو چلوں

مجھ سے کچھ کہنے کو آئی ہے مرے دل کی جلن
کیا کیا میں نے زمانے میں نہیں جس کا چلن
آنسوؤ! تم نے تو بے کار بھگویا دامن
اپنے بھیگے ہوئے دامن کو سکھا لوں تو چلوں

इक रोटी का टुकड़ा जो कहीं मिल जाए मुझे बाज़ारों में
जब जेब में पैसे बजते हैं जब पेट में रोटी होती है
उस वक़्त ये ज़र्रा हीरा है, उस वक़्त यह शबनम मोती है

●●●

## मौत

अपनी सोई हुई दुनिया को जगा लूं तो चलूं
अपने ग़मख़ाने में इक धूम मचा लूं तो चलूं
और इक जाम मय तल्ख़ चढ़ा लूं तो चलूं
अभी चलता हूं ज़रा ख़ुद को संभालूं तो चलूं

जाने कब पी थी अभी तक है मय ग़म का खुमार
धुंदला धुंदला नज़र आता है जहाने बेदार
आंधियां चलती हैं, दुनिया हुई जाती है गुबार
आंख तो मल लूं, ज़रा होश में आ लूं तो चलूं

वो मिरा सहर वो एजाज़ कहां है लाना
मेरी खोई हुई आवाज़ कहां है लाना
मेरा टूटा हुआ वो साज़ कहां है लाना
इक ज़रा गीत भी इस साज़ पे गा लूं तो चलूं

मैं थका हारा था, इतने में जो आए बादल
किसी मतवाले ने चुपके से बढ़ा दी बोतल
उफ़ वो रंगीन पुरइसरार ख़यालों के महल
ऐसे दो-चार महल और बना लूं तो चलूं

मुझ से कुछ कहने को आई है मिरे दिल की जलन
क्या किया मैंने ज़माने में नहीं जिस का चलन
आंसूओ! तुमने तो बेकार भिगोया दामन
अपने भीगे हुए दामन को सुखा लूं तो चलूं

میری آنکھوں میں ابھی تک ہے محبت کا غرور
میرے ہونٹوں کو ابھی تک ہے صداقت کا غرور
میرے ماتھے پہ ابھی تک ہے شرافت کا غرور
ایسے وہموں سے بھی اب خود کو نکالوں تو چلوں

●●●

## طوائف

اپنی فطرت کی بلندی پہ مجھے ناز ہے کب
ہاں تری پست نگاہی سے گلہ ہے مجھ کو
تو گرا دے گی مجھے اپنی نظر سے ورنہ
تیرے قدموں پہ تو سجدہ بھی روا ہے مجھ کو

تو نے ہر آن بدلتی ہوئی اس دنیا میں
میری پایندگیِ غم کو تو دیکھا ہوتا
کلیاں بیزار ہیں شبنم کے تلون سے مگر
تو نے اس دیدۂ پُرنم کو تو دیکھا ہوتا

ہائے جلتی ہوئی حسرت یہ تری آنکھوں میں
کہیں مل جائے محبت کا سہارا تجھ کو
اپنی پستی کا بھی احساس پھر اتنا احساس
کہ نہیں میری محبت بھی گوارا تجھ کو

اور یہ زرد سے رخسار، یہ اشکوں کی قطار
مجھ سے بیزار، مری عرضِ وفا سے بیزار

●●●

मेरी आंखों में अभी तक है मुहब्बत का गुरूर
मेरे हांटों को अभी तक है सदाक़त का गुरूर
मेरे माथे पे अभी तक है शराफ़त का गुरूर
ऐसे वहमों से भी अब खुद को निकालूं तो चलूं

●●●

## तवायफ़

अपनी फ़ितरत की बुलन्दी पे मुझे नाज़ है कब
हां तेरी पस्त निगाही से गिला है मुझको
तू गिरा देगी मुझे अपनी नज़र से वर्ना
तेरे क़दमों पे तो सजदा भी रवा है मुझको

तूने हर आन बदलती हुई इस दुनिया में
मेरी पायन्दगिए ग़म को तो देखा होता
कलियां बेज़ार हैं शबनम के तलव्वुन से मगर
तूने इस दीदए पुरनम को तो देखा होता

हाय जलती हुई हसरत ये तिरी आंखों में
कही मिल जाए मुहब्बत का सहारा तुझको
अपनी पसती का भी एहसास फिर इतना एहसास
कि नहीं मेरी मुहब्बत भी गवारा तुझको
**और ये ज़र्द से रुख़सार, ये अश्कों की क़तार**
**मुझसे बेज़ार, मिरी अर्ज़ वफ़ा से बेज़ार**

●●●

## علی سردار جعفری

### فریب
(15 راگست اور اس کے بعد)

(1)

ناگہاں شور ہوا
لو شبِ تار غلامی کی سحر آ پہنچی
انگلیاں جاگ اٹھیں
بربط و طاؤس نے انگڑائی لی
اور مطرب کی ہتھیلی سے شعاعیں پھوٹیں
کھل گئے ساز میں نغموں کے مہکتے ہوئے پھول
لوگ چلائے کہ فریاد کے دن بیت گئے
راہزن ہار گئے
راہرو جیت گئے
قافلے دور تھے منزل سے، بہت دور، مگر
خود فریبی کی گھنی چھاؤں میں دم لینے لگے
چن لیا راہ کے روڑوں کو، خذف ریزوں کو
اور سمجھ بیٹھے کہ بس لعل و جواہر ہیں یہی
راہزن ہنسنے لگے چھپ کے کمیں گاہوں میں
ہمنشیں یہ تھا فرنگی کی فراست کا طلسم
رہبر قوم کی ناکارہ قیادت کا فریب

अली सरदार जाफ़री

## फ़रेब

(15 अगस्त और उसके बाद)

(1)

नागहां[1] शोर हुआ
लो शबे तारे गुलामी की सहर[2] आ पहुंची
उंगलियां जाग उठीं
बर्बतो[3] ताऊस ने अंगड़ाई ली
और मुतरिब[4] की हथेली से शुआयें फूटीं
खिल गए साज़ में नग़मों के महकते हुए फूल
लोग चिल्लाए कि फ़रियाद के दिन बीत गए
राहज़न[5] हार गए
राहरौ[6] जीत गए
क़ाफ़िले दूर थे मंज़िल से, बहुत दूर, मगर
खुद फ़रेबी की घनी छांव में दम लेने लगे
चुन लिया राह के रोड़ों को, ख़ज़फ़रेज़ों[7] को
और समझ बैठे कि बस लालो जवाहर हैं यही
राहज़न हंसने लगे छुप के कमींगाहों[8] में
हमनशीं[9] ये था फ़िरंगी[10] की फ़िरासत[11] का तिलिस्म
रहबरे क़ौम[12] की नाकारा क़यादत[13] का फ़रेब

1. अचानक
2. सुबह
3. एक तरह का बाजा
4. गवैया
5. डाकू
6. रास्ता चलने वाले
7. ठीकरे के टुकड़े
8. घात लगाने की जगहों
9. साथी
10. अंग्रेज़
11. चतुराई
12. क़ौम के मार्गदर्शक
13. नेतृत्व

ہم نے آزردگیٔ شوق کو منزل جانا
اپنی ہی گردِ سرِ راہ کو محمل جانا
گردشِ حلقۂ گرداب کو ساحل جانا
اب جدھر دیکھو اُدھر موت ہی منڈلاتی ہے
در و دیوار سے رونے کی صدا آتی ہے
خواب زخمی ہیں، امنگوں کے کلیجے چھلنی
میرے دامن میں ہیں زخموں کے دہکتے ہوئے پھول
خون میں لتھڑے ہوئے پھول
میں جنھیں کوچۂ و بازار سے چُن لایا ہوں
قوم کے راہبرو، راہزنو
اپنے ایوانِ حکومت میں سجالو ان کو
اپنے گلدانِ سیاست میں لگالو ان کو
اپنی صد سالہ تمناؤں کا حاصل ہے یہی
موجِ پایاب کا ساحل ہے یہی
تم نے فردوس کے بدلے میں جہنم لے کر
کہہ دیا ہم سے گلستاں میں بہار آئی ہے
چند سکوں کے عوض چند ملوں کی خاطر
تم نے ناموسِ شہیدانِ وطن بیچ دیا
باغباں بن کے اُٹھے اور چمن بیچ دیا

(2)

کون آزاد ہوا؟
کس کے ماتھے سے سیاہی چھوٹی

हमने आज़ुर्दगिये शौक़[1] को मंज़िल[2] जाना
अपनी ही गर्द सरेराह[3] को महमिल[4] जाना
गर्दिशे हल्क़ए गिर्दाब[5] को साहिल जाना
अब जिधर देखो उधर मौत ही मंडलाती है
दरो दीवार से रोने की सदा आती है
ख़्वाब ज़ख़्मी हैं, उमंगों के कलेजे छलनी
मेरे दामन में हैं ज़ख़्मों के दहकते हुए फूल
ख़ून में लुथड़े हुए फूल
मैं जिन्हें कूचओ बाज़ार से चुन लाया हूं
क़ौम के रहबरो, रहज़नो
अपने ऐवाने हुकूमत में सजा लो इनको
अपने गुलदाने सियासत में लगा लो इनको
अपनी सदसाला[6] तमन्नाओं का हासिल है यही
मौजे पायाब[7] का साहिल है यही
तुमने फ़िरदौस[8] के बदले में जहन्नम[9] लेकर
कह दिया हमसे गुलिस्तां[10] में बहार आई है
चंद सिक्कों के एवज़, चंद मिलों की ख़ातिर
तुमने नामूसे शहीदाने वतन[11] बेच दिया
बाग़बां[12] बन के उठे और चमन बेच दिया

(2)

कौन आज़ाद हुआ?
किसके माथे से सियाही छूटी

1. शौक़ की उदासी
2. गंतव्य
3. रास्ते की धूल
4. कजावा, भंवर
5. भंवर
6. सौ साला
7. थोड़े पानी की मौज
8. ऊंट की पीठ पर बांधा जाने वाला कजावा
9. नरक
10. चमन
11. मुल्क के शहीदों की इज़्ज़त
12. चमन का रखवाला, माली

میرے سینے میں ابھی درد ہے محکومی کا
مادرِ ہند کے چہرے پہ اداسی ہے وہی

خنجر آزاد ہیں سینوں میں اُترنے کے لیے
موت آزاد ہے لاشوں پہ گزرنے کے لئے
چور بازاروں میں بدشکل چڑیلوں کی طرح
قیمتیں کالی دکانوں پہ کھڑی رہتی ہیں
ہر خریدار کی جیبوں کو کترنے کے لیے
کارخانوں پہ لگا رہتا ہے
سانس لیتی ہوئی لاشوں کا ہجوم
بیچ میں اُن کے پھرا کرتی ہے بیکاری بھی
اپنا خونخوار دَہن کھولے ہوئے

اور سونے کے چمکتے سکّے
ڈنک اٹھائے ہوئے، پھن پھیلائے
روح اور دِل پہ چلا کرتے ہیں
مُلک اور قوم کو دن رات ڈسا کرتے ہیں
روٹیاں چکلوں کی قحبائیں ہیں
جن کو سرمایہ کے دلّالوں نے
نفع خوری کے جھروکوں میں سجا رکھا ہے
بالیاں دھان کی، گیہوں کے سنہرے خوشے
مصر و یونان کے مجبور غلاموں کی طرح
اجنبی دیس کے بازاروں میں بِک جاتے ہیں
اور بدبخت کسانوں کی بلکتی ہوئی روح

मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी[1] का
मादरे हिंद[2] के चेहरे पे उदासी है वही

ख़ंजर आज़ाद हैं सीनों में उतरने के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पे गुज़रने के लिए
चोर बाज़ारों में बद-शक्ल चुड़ैलों की तरह
क़ीमतें काली दुकानों पे खड़ी रहती हैं
हर ख़रीदार की जेबों को कतरने के लिए
कारख़ानों पे लगा रहता है
सांस लेती हुई लाशों का हुजूम[3]
बीच में उनके फिरा करती है बेकारी भी
अपना ख़ूंख़ार दहन[4] खोले हुए

और सोने के चमकते सिक्के
डंक उठाये हुए, फन फैलाये
रूह और दिल पे चला करते हैं
मुल्क और क़ौम को दिन रात डसा करते हैं
रोटियां चकलों[5] की क़ह्बायें[6] हैं
जिनको सरमाये के दल्लालों ने
नफ़ाख़ोरी के झरोकों में सजा रखा है
बालियां धान की, गेहूं के सुनहरे ख़ोशे[7]
मिसरो यूनान के मजबूर गुलामों की तरह
अजनबी देस[8] के बाज़ारों में बिक जाते हैं
और बद्बख़्त[9] किसानों की बिलकती हुई रूह

1. गुलामी
2. भारत माता
3. झुंड
4. मुंह
5. वेश्याओं के रहने का स्थान
6. वेश्यायें
7. बालियां
8. देश का उर्दूकरण
9. अभागा

اپنے افلاس میں منہ ڈھانپ کے سو جاتی ہے
ہم کہاں جائیں، کہیں کس سے کہ نادار ہیں ہم
کس کو سمجھائیں، غلامی کے گنہگار ہیں ہم
طوق خود ہم نے پنہا رکھا ہے ارمانوں کو
اپنے سینے میں جکڑ رکھا ہے طوفانوں کو

اب بھی زندانِ غلامی سے نکل سکتے ہیں
اپنی تقدیر کو ہم آپ بدل سکتے ہیں

(3)

آج پھر ہوتی ہیں زخموں سے زبانیں پیدا
تیرہ و تار فضاؤں سے برستا ہے لہو
راہ کی گرد کے نیچے سے ابھرتے ہیں قدم

تارے آکاش پہ کمزور حبابوں کی طرح
شب کے سیلابِ سیاہی میں بہے جاتے ہیں
پھوٹنے والی ہے مزدور کے ماتھے سے کرن
سُرخ پرچم افقِ صبح پہ لہراتے ہیں

●

## ایک خواب اور

خواب اب حسنِ تصوّر کے اُفق سے ہیں پرے
دل کے اک جذبۂ معصوم نے دیکھے تھے جو خواب

अपने इफ़्लास[1] में मुंह ढांप के सो जाती है

हम कहां जायें, कहें किससे कि नादार[2] हैं हम
किसको समझायें, गुलामी के गुनहगार हैं हम
तौक़ खुद हमने पिनहा रखा है अरमानों को
अपने सीने में जकड़ रखा है तूफ़ानों को

अब भी ज़िंदाने गुलामी[3] से निकल सकते हैं
अपनी तक़दीर को हम आप बदल सकते हैं

(3)

आज फिर होती हैं ज़ख़्मों से ज़बानें पैदा
तीरओ तार[4] फ़ज़ाओं से बरसता है लहू
राह की गर्द के नीचे से उभरते हैं क़दम

तारे आकाश पे कमज़ोर हबाबों[5] की तरह
शब के सैलाबे सियाही में बहे जाते हैं
फूटने वाली है मज़दूर के माथे से किरन
सुर्ख़[6] परचम[7] उफ़ुके सुब्ह[8] पे लहराते हैं

●

## एक ख़्वाब और

ख़्वाब अब हुस्ने तसव्वुर[9] के उफ़ुक़ से हैं परे
दिल के इक जज़्बए मासूम ने देखे थे जो ख़्वाब

1. ग़रीबी
2. ग़रीब
3. गुलामी के क़ैदख़ानों
4. घुप अंधेरा
5. बुलबुलों
6. लाल
7. झंडा
8. सुबह की क्षितिज
9. कल्पना की सुंदरता

اور تعبیروں کے تپتے ہوئے صحراؤں میں
تشنگی آبلہ پا، شعلہ بکف موجِ سراب
یہ تو ممکن نہیں بچپن کا کوئی دِن مِل جائے
یا پلٹ آئے کوئی ساعتِ نایابِ شباب
پھوٹ نکلے کسی افسردہ تبسم سے کرن
یاد دمک اُٹھے کسی دستِ بُریدہ میں گلاب
آہ پتھر کی لکیریں ہیں کہ یادوں کے نقوش
کون لکھ سکتا ہے پھر عمرِ گزشتہ کی کتاب
بیتے لمحات کے سوئے ہوئے طوفانوں میں
تیرتے پھرتے ہیں پھوٹی ہوئی آنکھوں کے حباب
تابشِ رنگِ شفق، آتشِ روئے خورشید
مَل کے چہرے پہ سحر آئی ہے خونِ احباب
جانے کس موڑ پہ کس راہ میں کیا بیتی ہے
کس سے ممکن ہے تمناؤں کے زخموں کا حساب
آستینوں کو پُکاریں گے کہاں تک آنسو
اب تو دامن کو پکڑتے ہیں لہو کے گرداب
دیکھتی پھرتی ہے ایک ایک کا منہ خاموشی
جانے کیا بات ہے شرمندہ ہے اندازِ خطاب
دَر بدر ٹھوکریں کھاتے ہوئے پھرتے ہیں سوال

और ताबीरों[1] के तपते हुए सहराओं[2] में
तश्नगी[3] आबला पा[4], शोला बकफ़ मौजे सराब
ये तो मुमकिन नहीं बचपन का कोई दिन मिल जाए
या पलट आए कोई साअते नायाबे शबाब[5]
फूट निकले किसी अफ़्सुर्दा[6] तबस्सुम से किरन
या दमक[7] उठ्ठे किसी दस्ते बुरीदा[8] में गुलाब
आह पत्थर की लकीरें हैं कि यादों के नुक़ूश[9]
कौन लिख सकता है फिर उम्रे गुज़िश्ता[10] की किताब
बीते लम्हात के सोये हुए तूफ़ानों में
तैरते फिरते हैं फूटी हुई आंखों के हबाब
ताबिशे रंगे शफ़क़[11], आतिशे रूये ख़ुर्शीद
मल के चेहरे पे सहर आयी है ख़ूने अहबाब
जाने किस मोड़ पे किस राह में क्या बीती है
किससे मुमकिन है तमन्नाओं के ज़ख़्मों का हिसाब
आसतीनों को पुकारेंगे कहां तक आंसू
अब तो दामन को पकड़ते हैं लहू के गिर्दाब
देखती फिरती है एक एक का मुंह ख़ामोशी
जाने क्या बात है शर्मिन्दा है अंदाज़े ख़िताब[12]
दर बदर ठोकरें खाते हुए फिरते हैं सवाल

1. स्वप्नफलों
2. मरुस्थलों
3. प्यास
4. पांव का फफोला
5. जवानी की न मिलने वाली घड़ी
6. उदास
7. चमक
8. कटे हुए हाथ
9. चिन्ह
10. गुज़री हुई उम्र
11. सुब्ह और शाम आकाश पर छायी हुई लालिमा की चमक

اور مجرم کی طرح ان سے گریزاں ہے جواب
سر کشی، پھر میں تجھے آج صدا دیتا ہوں
میں ترا شاعرِ آوارہ و بے باک و خراب
پھینک پھر جذبۂ بے تاب کی عالم پہ کمند
ایک خواب اور بھی اے ہمتِ دشوار پسند

●

## میرا سفر

"ہمچو سبزہ بارہا روئیدہ ایم" (رومی)

پھر اک دن ایسا آئے گا
آنکھوں کے دیے بجھ جائیں گے
ہاتھوں کے کنول کمھلائیں گے
اور برگِ زباں سے نطق و صدا
کی ہر تتلی اُڑ جائے گی
اک کالے سمندر کی تہہ میں
کلیوں کی طرح سے کھلتی ہوئی
پھولوں کی طرح سے ہنستی ہوئی
ساری شکلیں کھو جائیں گی
خوں کی گردش، دل کی دھڑکن
سب راگنیاں سو جائیں گی
اور نیلی فضا کی مخمل پر
ہنستی ہوئی ہیرے کی یہ کنی
یہ میری جنت، میری زمیں
اس کی صبحیں، اس کی شامیں

और मुजरिम की तरह उनसे गुरेज़ां[1] है जवाब
सरकशी[2], फिर मैं तुझे आज सदा[3] देता हूं
मैं तिरा शाइरे आवारा व बेबाको ख़राब[4]
फेंक फिर जज़्बए बेताब की आलम[5] पे कमंद
एक ख़्वाब और भी ऐ हिम्मते दुश्वार[6] पसंद

●

## मेरा सफ़र

"हमचूं सब्ज़ा बारहा रुईदा ऐम[7]" (रूमी)

फिर इक दिन ऐसा आयेगा
आंखों के दिये बुझ जायेंगे
हाथों के कंवल कुम्हलायेंगे
और बर्गे ज़बां[8] से नुत्क़ो सदा[9]
की हर तितली उड़ जायेगी
इक काले समुन्दर की तह में
कलियों की तरह से खिलती हुई
फूलों की तरह से हंसती हुई
सारी शक्लें खो जायेंगी
ख़ूं की गर्दिश, दिल की धड़कन
सब रागनियां सो जायेंगी
और नीली फ़ज़ा की मख़मल पर
हंसती हुई हीरे की यह कनी
ये मेरी जन्नत, मेरी ज़मीं
इसकी सुब्हें इसकी शामें

1. भागते हुए
2. अवज्ञा
3. आवाज़
4. निडर और मस्त
5. दुनिया
6. कठिनाई को पसंद करने वाली हिम्मत
7. सब्ज़े की तरह मैं बारहा उगा हुआ हूं
8. ज़बान की पत्ती
9. बात और आवाज़

بے جانے ہوئے، بے سمجھے ہوئے
اِک مُشتِ غبارِ انساں پر
شبنم کی طرح رو جائیں گی
ہر چیز بھلا دی جائے گی
یادوں کے حسیں بُت خانے سے
ہر چیز اُٹھا دی جائے گی
پھر کوئی نہیں یہ پوچھے گا
سردار کہاں ہے محفل میں

لیکن میں یہاں پھر آؤں گا
بچوں کے دہن سے بولوں گا
چڑیوں کی زباں سے گاؤں گا
جب بیج ہنسیں گے دھرتی میں
اور کونپلیں اپنی اُنگلی سے
مٹی کی تہوں کو چھیڑیں گی
میں پتی پتی، کلی کلی
اپنی آنکھیں پھر کھولوں گا
سرسبز، ہتھیلی پر لے کر
شبنم کے قطرے تولوں گا
میں رنگِ حنا، آہنگِ غزل
اندازِ سخن بن جاؤں گا
رُخسارِ عروسِ نَو کی طرح
ہر آنچل سے چھن جاؤں گا
جاڑوں کی ہوائیں دامن میں
جب فصلِ خزاں کو لائیں گی

बेजाने हुए, बे समझे हुए
इक मुश्ते गुबारे[1] इंसां पर
शबनम की तरह रो जायेगी
हर चीज़ भुला दी जायेगी
यादों के हसीं बुतख़ाने से
हर चीज़ उठा दी जायेगी
फिर कोई नहीं ये पूछेगा
सरदार कहां है महफ़िल में

लेकिन मैं यहां फिर आऊंगा
बच्चों के दहन[2] से बोलूंगा
चिड़ियों की ज़बां से गाऊंगा
जब बीज हंसेंगे धरती में
और कोंपलें अपनी उंगली से
मिट्टी की तहों को छेड़ेंगी
मैं पत्ती पत्ती, कली कली
अपनी आंखें फिर खोलूंगा
सरसब्ज़ हथेली पर ले कर
शबनम के क़तरे तोलूंगा
मैं रंगे हिना[3], आहंगे ग़ज़ल[4]
अंदाज़े सुख़न बन जाऊंगा
रुख़सारे उरूसे नौ[5] की तरह
हर आंचल से छन जाऊंगा
जाड़ों की हवायें दामन में
जब फ़स्ले ख़ज़ां[6] को लायेंगी

1. मुट्ठी भर मिट्टी से बने इंसान
2. मुंह
3. मेहंदी का रंग
4. ग़ज़ल की आवाज़ या राग
5. नई नवेली दुल्हन के गालों
6. पतझड़ की रुत

رہ رو کے جواں قدموں کے تلے
سوکھے ہوئے پتوں سے میرے
ہنسنے کی صدائیں آئیں گی
دھرتی کی سنہری سب ندیاں
آکاش کی نیلی سب جھیلیں
ہستی سے مری بھر جائیں گی
اور سارا زمانہ دیکھے گا
ہر قصہ مرا افسانہ ہے
ہر عاشق ہے سردار یہاں
ہر معشوقہ سلطانہ ہے

میں ایک گریزاں لمحہ ہوں
ایام کے افسوں خانے میں
میں ایک تڑپتا قطرہ ہوں
مصروفِ سفر جو رہتا ہے
ماضی کی صُراحی کے دل سے
مستقبل کے پیمانے میں
میں سوتا ہوں اور جاگتا ہوں
اور جاگ کے پھر سو جاتا ہوں
صدیوں کا پُرانا کھیل ہوں میں
میں مَر کے امر ہو جاتا ہوں

●

## تم نہیں آئے تھے جب

تم نہیں آئے تھے جب، تب بھی تو موجود تھے تم
آنکھ میں نور کی اور دل میں لہو کی صورت

रहरौ[1] के जवां क़दमों के तले
सूखे हुए पत्तों से मेरे
हंसने की सदायें आयेंगी
धरती की सुनहरी सब नदियां
आकाश की नीली सब झीलें
हस्ती[2] से मिरी भर जायेंगी
और सारा ज़माना देखेगा
हर क़िस्सा मिरा फ़साना है
हर आशिक़ है सरदार यहां
हर माशूक़ा सुल्ताना है

मैं एक गुरेज़ां लम्हा हूं
अय्याम[3] के अफ़सूं ख़ाने[4] में
मैं एक तड़पता क़तरा हूं
मसरूफ़े सफ़र जो रहता है
माज़ी[5] की सुराही के दिल से
मुस्तक़बिल[6] के पैमाने में
मैं सोता हूं और जागता हूं
और जाग के फिर सो जाता हूं
सदियों का पुराना खेल हूं मैं
मैं मर के अमर हो जाता हूं

●

## तुम नहीं आये थे जब

तुम नहीं आये थे जब, तब भी तो मौजूद थे तुम
आंख में नूर[7] की और दिल मे लहू की सूरत

1. राही
2. अस्तित्व
3. यौम (दिन) का बहुवचन
4. जादुई घर
5. अतीत
6. भविष्य
7. रौशनी

درد کی لَو کی طرح، پیار کی خوشبو کی طرح
بے وفا وعدوں کی دِلداری کا انداز لئے
تم نہیں آئے تھے جب، تب بھی تو تم آئے تھے
رات کے سینے میں مہتاب کے خنجر کی طرح
صبح کے ہاتھ میں خورشید کے ساغر کی طرح
شاخِ خوں رنگ تمنّا میں گُلِ تر کی طرح
تم نہیں آؤ گے جب، تب بھی تو تم آؤگے
یاد کی طرح، دھڑکتے ہوئے دل کی صورت
غم کے پیمانۂ سرشار کو چھلکاتے ہوئے
برگ ہائے لب و رخسار کو مہکاتے ہوئے
دل کے بجھتے ہوئے انگارے کو دہکاتے ہوئے
زُلف در زُلف بکھر جائے گا پھر رات کا رنگ
شب تنہائی میں بھی لطفِ ملاقات کا رنگ
روز لائے گی صبا کُوئے صباحت سے پیام
روز گائے گی سحر تہنیتِ جشنِ فراق
آؤ آنے کی کریں باتیں کہ تم آئے ہو
اب تم آئے ہو تو میں کون سی شئے نذر کروں
کہ مرے پاس بجز مہروفا کچھ بھی نہیں
ایک خوں گشتہ تمنّا کے سِوا کچھ بھی نہیں

●

दर्द की लौ की तरह, प्यार की ख़ुश्बू की तरह
बेवफ़ा वादों की दिलदारी का अंदाज़ लिये
तुम नहीं आये थे जब, तब भी तो तुम आये थे
रात के सीने में महताब[1] के ख़ंजर की तरह
सुब्ह के हाथ में ख़ुर्शीद[2] के साग़र की तरह
शाख़े ख़ूं रंगे तमन्ना में गुलेतर[3] की तरह
तुम नहीं आओगे जब, तब भी तो तुम आओगे
याद की तरह, धड़कते हुए दिल की सूरत
ग़म के पैमानए सरशार को छलकाते हुए
बर्ग हाये लबो रुख़्सार को महकाते हुए
दिल के बुझते हुए अंगारे को दहकाते हुए
ज़ुल्फ़[4] दर ज़ुल्फ़ बिखर जायेगा फिर रात का रंग
शबे तन्हाई[5] में भी लुत्फ़े मुलाक़ात का रंग
रोज़ लाएगी सबा[6] कूए सबाहत[7] से पयाम[8]
रोज़ गायेगी सहर तहनियत जश्ने फ़िराक़
आओ आने की करें बात कि तुम आये हो
अब तुम आये हो तो मैं कौन सी शय[9] नज़्र करूँ
कि मिरे पास बजुज़[10] मिहरो वफ़ा कुछ भी नहीं
एक ख़ूं गुश्ता तमन्ना के सिवा कुछ भी नहीं

●

1. चाँद
2. सूरज
3. ताज़ा फूल
4. बाल
5. रात की तंहाई
6. पूरब की हवा
7. महबूब की गली
8. ख़बर
9. चीज़
10. अतिरिक्त

# قتلِ آفتاب

شفق کے رنگ میں ہے قتلِ آفتاب کا رنگ
اُفق کے دل میں ہے خنجر، لہولہان ہے شام
سفید شیشۂ نور اور سیاہ بارشِ سنگ
زمیں سے تابہ فلک ہے بلند رات کا نام۔

یقیں کا ذکر ہی کیا ہے کہ اب گماں بھی نہیں
مقامِ ورد نہیں، منزلِ فغاں بھی نہیں
وہ بے حسی ہے کہ جو قابلِ بیاں بھی نہیں
کوئی ترنگ ہی باقی رہی نہ کوئی اُمنگ
جبینِ شوق نہیں سنگِ آستاں بھی نہیں
رقیب جیت گئے ختم ہو چکی ہے جنگ
دلوں میں شعلۂ غم بجھ گیا ہے کیا کیجے
کوئی حسین نہیں کس سے اب وفا کیجے
سوائے اس کے کہ قاتل ہی کو دعا دیجے

مگر یہ جنگ نہیں وہ جو ختم ہو جائے
اک انتہا ہے فقط حسنِ ابتدا کے لئے
بچھے ہیں خار کہ گزریں گے قافلے گل کے
خموشی مُہر بہ لب ہے کسی صدا کے لئے
اُداسیاں ہیں یہ سب نغمہ و نوا کے لئے

# क़त्ले आफ़ताब

शफ़क़[1] के रंग में है क़त्ले आफ़ताब का रंग
उफ़ुक़ के दिल में है खंजर, लहू लुहान है शाम
सफ़ेद शीशए नूर और सियाह बारिशे संग
ज़मीं से ताबा फ़लक है बुलन्द रात का नाम

यक़ीं का ज़िक्र ही क्या है कि अब गुमां भी नहीं
मक़ामे दर्द नहीं, मंज़िले फ़ुग़ां[2] भी नहीं
वो बेहिसी है कि जो क़ाबिले बयां भी नहीं
कोई तरंग ही बाक़ी रही न कोई उमंग
जबीने शौक़[3] नहीं संगे आस्तां[4] भी नहीं
रक़ीब[5] जीत गये ख़त्म हो चुकी है जंग
दिलों में शोलए ग़म बुझ गया है क्या कीजे
कोई हसीन नहीं किससे अब वफ़ा कीजे
सिवाये इसके कि क़ातिल ही को दुआ दीजे

मगर ये जंग नहीं वो जो ख़त्म हो जाए
इक इंतिहा[6] है फ़क़त[7] हुस्ने इब्तिदा[8] के लिए
बिछे हैं ख़ार[9] कि गुज़रेंगे क़ाफ़िले गुल के
ख़मोशी मुहर बलब[10] है किसी सदा के लिए
उदासियां हैं ये सब नग़्मओ नवा[11] के लिए

1. वह लाली जो सुबह होने से पहले और सूरज डूबने के बाद आसमान पर उजागर होती है।
2. रोना धोना
3. शौक़ का माथा
4. चौखट का पत्थर
5. प्रतिद्वंदी
6. चरम सीमा
7. सिर्फ़
8. प्रारम्भ
9. कांटे
10. मुहर लगे हुए होंट
11. गीत और आवाज़

وہ پہنا شمع نے پھر خونِ آفتاب کا تاج
ستارے لے کے اُٹھے نورِ آفتاب کے جام
پلک پلک پہ فروزاں ہیں آنسوؤں کے چراغ
لویں لچکتی ہیں یا بجلیاں چمکتی ہیں
تمام پیرہنِ شب میں بھر گئے ہیں شرار

ہزار لب سے زمیں کہہ رہی ہے قصۂ درد
ہزار گوشِ جنوں سُن رہے ہیں افسانہ

چٹک رہی ہیں کہیں تیرگی کی دیواریں
لچک رہی ہیں کہیں شاخِ گل کی تلواریں
سنک رہی ہے کہیں دشتِ سرکشی میں ہوا
چہک رہی ہے کہیں بلبلِ بہارِ نوا
مہک رہا ہے وفا کے چمن میں دل کا گلاب
چھلک رہی ہے لب و عارض و نظر کی شراب

جوان خوابوں کے جنگل سے آرہی ہے نسیم
نفس میں نکہتِ پیغامِ انقلاب لئے
خبر ہے قافلۂ رنگ و نور نکلے گا
سحر کے دوش پہ اک تازہ آفتاب لئے

●

## پیراہنِ شرر

کھڑا ہے کون یہ پیراہنِ شرر پہنے
بدن ہے چور، تو ماتھے سے خون جاری ہے

वो पहना शमा ने फिर ख़ूने आफ़ताब का ताज
सितारे ले के उठे नूरे आफ़ताब के जाम
पलक पलक पे फ़रोज़ा[1] हैं आंसूओं के चिराग़
लवें लचकती हैं या बिजलियां चमकती हैं
तमाम पैराहने शब[2] में भर गये हैं शरार[3]

हज़ार लब से ज़मीं कह रही है क़िस्सए दर्द
हज़ार गोशे जुनूं[4] सुन रहे हैं अफ़साना

चटक रही हैं कहीं तीरगी की दीवारें
लचक रही हैं कहीं शाख़े गुल की तलवारें
सनक रही है कहीं दश्ते सरकशी में हवा
चहक रही है कहीं बुलबुले बहारे नवा
महक रहा है वफ़ा के चमन में दिल का गुलाब
छलक रही है लबो आरिज़ो नज़र[5] की शराब

जवान ख़्वाबों के जंगल से आ रही है नसीम[6]
नफ़स[7] में नक्हते पैग़ामे इंक़लाब लिए
ख़बर है क़ाफ़िलए रंगो नूर निकलेगा
सहर के दोश पे इक ताज़ा आफ़ताब लिए

●

## पैराहने शरर

खड़ा है कौन ये पैराहने शरर पहने
बदन है चूर, तो माथे से ख़ून जारी है

1. रौशन
2. रात के लिबास
3. चिंगारियां
4. जुनून के कान
5. होंट, गाल और आंख
6. सुब्ह की हवा
7. सांस, घड़ी

زمانہ گزرا کہ فرہاد و قیس ختم ہوئے
یہ کس پہ اہلِ جہاں، حکمِ سنگ باری ہے
یہاں تو کوئی بھی شیریں ادا نگار نہیں
یہاں تو کوئی بھی لیلیٰ بدن بہار نہیں
یہ کس کے نام پہ زخموں کی لالہ کاری ہے

کوئی دِوانہ ہے، لیتا ہے سچ کا نام اب تک
فریب و مکر کو کرتا نہیں سلام اب تک
ہے بات صاف سزا اِس کی سنگ ساری ہے

●●●

ज़माना गुज़रा कि फ़रहादो कैस ख़त्म हुए
ये किस पे अह्ले जहां[1], हुक्मे संगबारी[2] है
यहां तो कोई भी शीरीं अदा निगार[3] नहीं
यहां तो कोई भी लैला बदन बहार नहीं
यह किसके नाम पे ज़ख़्मों की लालाकारी है

कोई दिवाना है, लेता है सच का नाम अब तक
फ़रेबो मक्र को करता नहीं सलाम अब तक
है बात साफ़ सज़ा इसकी संगसारी[4] है

●●●

1. दुनिया वालों
2. पत्थर बरसाने का हुक्म
3. लुभावनी अदाओं वाला महबूब
4. पत्थर मार-मार कर जान ले लेना

جاں نثار اختر

# زندگی

تمتمائے ہوئے عارض پہ یہ اشکوں کی قطار
مجھ سے اس درجہ خفا آپ سے اتنی بے زار
میں نے کب تیری محبت سے کیا ہے انکار

مجھ کو اک لمحہ کبھی چین بھی آیا تجھ بن
عشق ہی ایک حقیقت تو نہیں ہے لیکن
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

سوچ دنیا سے الگ بھاگ کے جائیں گے کہاں
اپنی جنت بھی بسائیں تو بسائیں گے کہاں
امن اس عالمِ افکار میں پائیں گے کہاں

پھر زمانے سے نگاہوں کا چرانا کیسا
عشق کی ضد میں فرائض کو بھلانا کیسا
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

تیرِ افلاس سے کتنوں کے کلیجے ہیں فگار
کتنے سینوں میں ہے گھٹتی ہوئی آہوں کا غبار
کتنے چہرے نظر آتے ہیں تبسم کا مزار

اک نظر بھول کے اس سمت بھی دیکھا ہوتا
کچھ محبت کے سوا اور بھی سوچا ہوتا
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

## जां निसार अख़्तर

# ज़िन्दगी

तमतमाए हुये आरिज़[1] पे ये अश्कों की क़तार
मुझसे इस दर्जा ख़फ़ा आपसे इतनी बेज़ार[2]
मैंने कब तेरी मुहब्बत से किया है इन्कार

मुझको इक लम्हा कभी चैन भी आया तुझ बिन
इश्क़ ही एक हक़ीक़त तो नहीं है लेकिन
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

सोच दुनिया से अलग भाग के जायेंगे कहां
अपनी जन्नत भी बसायें तो बसायेंगे कहां
अम्न इस आलमे अफ़्कार[3] में पायेंगे कहां

फिर ज़माने से निगाहों का चुराना कैसा
इश्क़ की ज़िद में फ़राइज़[4] को भुलाना कैसा
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

तीरे इफ़लास[5] से कितनों के कलेजे हैं फ़िगार[6]
कितने सीनों में है घुटती हुई आहों का गुबार
कितने चेहरे नज़र आते हैं तबस्सुम का मज़ार

इक नज़र भूल के उस सम्त भी देखा होता
कुछ मुहब्बत के सिवा और भी सोचा होता
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

1. गाल
2. नाख़ुश
3. चिंताओं की दुनिया
4. फ़र्ज़ (कर्तव्य) का बहुवचन
5. ग़रीबी के तीर
6. ज़ख़्मी, घायल

رنجِ غربت کے سوا جبر کے پہلو بھی تو ہیں
جو ٹپکتے نہیں آنکھوں سے وہ آنسو بھی تو ہیں
زخم کھائے ہوئے مزدور کے بازو بھی تو ہیں

خاک اور خون میں غلطاں ہیں نظارے کتنے
قلبِ انساں میں دہکتے ہیں شرارے کتنے
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

عرصۂ دہر پہ سرمایہ و محنت کی یہ جنگ
امن و تہذیب کے رخسار سے اُڑتا ہوا رنگ
یہ حکومت، یہ غلامی، یہ بغاوت کی اُمنگ

قلبِ آدم کے یہ رِستے ہوئے کہنہ ناسُور
اپنے احساس سے ہے فطرتِ انساں مجبور
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

آپ کو بندِ غلامی سے چھڑانا ہے ہمیں
خود محبت کو بھی آزاد بنانا ہے ہمیں
اک نئی طرز پہ دنیا کو سجانا ہے ہمیں

تو بھی آ وقت کے سینے میں شرارا بن جا
تو بھی اب عرشِ بغاوت کا ستارا بن جا
زندگی صرف محبت تو نہیں ہے انجم

●

रन्जे गुर्बत के सिवा जब्र के पहलू भी तो हैं
जो टपकते नहीं आंखों से वो आंसू भी तो हैं
ज़ख़्म खाये हुये मज़दूर के बाज़ू भी तो हैं

ख़ाक और ख़ून में ग़ल्ता[1] हैं नज़ारे कितने
क़ल्बे इंसा[2] में दहकते हैं शरारे कितने
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

अर्सए दह्‌र पे सरमाया व मेहनत की ये जंग
अम्नो तहज़ीब के रुख़सार से उड़ता हुआ रंग
ये हुकूमत, ये गुलामी, ये बग़ावत की उमंग

क़ल्बे आदम के ये रिस्ते हुये कुहना नासूर
अपने एहसास से है फ़ित्‌रते-इंसा[3] मजबूर
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

आपको बन्दे गुलामी से छुड़ाना है हमें
खुद मुहब्बत को भी आज़ाद बनाना है हमें
इक नयी तर्ज़ पे दुनिया को सजाना है हमें

तू भी आ वक़्त के सीने में शरारा बन जा
तू भी अब अर्शे बग़ावत का सितारा बन जा
ज़िन्दगी सिर्फ़ मुहब्बत तो नहीं है अन्जुम

●

1. डूबे हुये
2. इंसान के दिल
3. मानव प्रवृति

## خاموش آواز

(جنوری کی چاندنی رات میں صفیہ کے مزار پر)

کتنے دن میں آئے ہو ساتھی
میرے سوتے بھاگ جگانے
مجھ سے الگ اس ایک برس میں
کیا کیا بیتی تم پہ نہ جانے

دیکھو کتنے تھک سے گئے ہو
کتنی تھکن آنکھوں میں گھلی ہے
آؤ، تمھارے واسطے ساتھی
اب بھی مری آغوش کھلی ہے

چپ ہو کیوں؟ کیا سوچ رہے ہو؟
آؤ سب کچھ آج بھلا دو
آؤ اپنے پیارے ساتھی
پھر سے مجھے اک بار جلا دو

بولو ساتھی! کچھ تو بولو!
کب تک آخر آہ بھروں گی
تم نے مجھ پر ناز کئے ہیں
آج میں تم سے ناز کروں گی

آؤ میں تم سے روٹھ سی جاؤں
آؤ مجھے تم ہنس کے منالو
مجھ میں سچ مچ جان نہیں ہے
آؤ مجھے ہاتھوں پہ اُٹھالو

# ख़ामोश आवाज़

(जनवरी की चांदनी रात में सफ़िया[1] के मज़ार पर)

कितने दिन में आये हो साथी
मेरे सोते भाग जगाने
मुझसे अलग इस एक बरस में
क्या क्या बीती तुम पे न जाने

देखो कितने थक से गये हो
कितनी थकन आंखों में घुली है
आओ, तुम्हारे वास्ते साथी
अब भी मिरी आग़ोश[2] खुली है

चुप हो क्यों? क्या सोच रहे हो?
आओ सब कुछ आज भुला दो
आओ अपने प्यारे साथी
फिर से मुझे इक बार जिला दो

बोलो साथी! कुछ तो बोलो!
कब तक आख़िर आह भरूंगी
तुमने मुझ पर नाज़ किये हैं
आज मैं तुमसे नाज़ करूंगी

आओ मैं तुमसे रूठ सी जाऊँ
आओ मुझे तुम हंस के मना लो
मुझ में सचमुच जान नहीं है
आओ मुझे हाथों पे उठा लो

1. जांनिसार अख़्तर की बीवी का नाम 2. गोद

تم کو میرا غم ہے ساتھی
کیسے اب اس غم کو بھلاؤں
اپنا کھویا جیون بولو
آج کہاں سے ڈھونڈ کے لاؤں

یہ نہ سمجھنا میرے ساجن
دے نہ سکی میں ساتھ تمھارا
یہ نہ سمجھنا میرے دل کو
آج تمھارا دُکھ ہے گوارا

یہ نہ سمجھنا میں نے تم سے
جان کے یوں منہ موڑ لیا ہے
یہ نہ سمجھنا میں نے تم سے
دل کا ناتا توڑ لیا ہے

یہ نہ سمجھنا تم سے میں نے
آج کیا ہے کوئی بہانا
دنیا مجھ سے روٹھ چکی ہے
ساتھی تم بھی روٹھ نہ جانا

آج بھی ساجن میں ہوں تمھاری
آج بھی تم ہو میرے اپنے
آج بھی ان آنکھوں میں بسے ہیں
پیار کے انمِٹ گہرے سپنے

دل کی دھڑکن ڈوب بھی جائے
دل کی صدائیں تھک نہ سکیں گی
مٹ بھی جاؤں پھر بھی تم سے
میری وفائیں تھک نہ سکیں گی

तुमको मेरा ग़म है साथी
कैसे अब इस ग़म को भुलाऊँ
अपना खोया जीवन बोलो
आज कहां से ढूंढ के लाऊँ

ये न समझना मेरे साजन
दे न सकी मैं साथ तुम्हारा
ये न समझना मेरे दिल को
आज तुम्हारा दुख है गवारा

ये न समझना मैंने तुमसे
जान के यूं मुंह मोड़ लिया है
ये न समझना मैंने तुमसे
दिल का नाता तोड़ लिया है

ये न समझना तुमसे मैंने
आज किया है कोई बहाना
दुनिया मुझसे रूठ चुकी है
साथी तुम भी रूठ न जाना

आज भी साजन मैं हूं तुम्हारी
आज भी तुम हो मेरे अपने
आज भी इन आंखों में बसे हैं
प्यार के अनमिट गहरे सपने

दिल की धड़कन डूब भी जाये
दिल की सदाएं थक न सकेंगी
मिट भी जाऊँ फिर भी तुमसे
मेरी वफ़ाएं थक न सकेंगी

یہ تو پوچھو مجھ سے چھٹ کر
تیرے دل پر کیا کیا گزری
تم بن میری ناؤ تو ساجن
ایسی ڈوبی پھر نہ اُبھری

ایک تمھارا پیار بچا ہے
ورنہ سب کچھ لُٹ سا گیا ہے
ایک مسلسل رات کہ جس میں
آج مرا دم گھٹ سا گیا ہے

آج تمھارا رستہ تکتے
میں نے پورا سال بِتایا
کتنے طوفانوں کی زد پر
میں نے اپنا دیپ جلایا

تم بن سارے موسم بیتے
آئے جھونکے سرد ہوا کے
نرم گلابی جاڑے گزرے
میرے دل میں آگ لگا کے

ساون آیا دھوم مچاتا
گھِر گھِر کالے بادل چھائے
میرے دل پر جم سے گئے ہیں
جانے کتنے گہرے سائے

چاند سے جب بھی بادل گزرا
دل سے گزرا عکس تمھارا
پھول جو چٹکے میں نے جانا
تم نے شاید مجھ کو پکارا

ये तो पूछो मुझसे छुटकर
तेरे दिल पर क्या क्या गुज़री
तुम बिन मेरी नाव तो साजन
ऐसी डूबी फिर न उभरी

एक तुम्हारा प्यार बचा है
वर्ना सब कुछ लुट सा गया है
एक मुसलसल रात कि जिसमें
आज मिरा दम घुट सा गया है

आज तुम्हारा रस्ता तकते
मैंने पूरा साल बिताया
कितने तूफ़ानों की ज़द पर
मैंने अपना दीप जलाया

तुम बिन सारे मौसम बीते
आये झोंके सर्द हवा के
नर्म गुलाबी जाड़े गुज़रे
मेरे दिल में आग लगा के

सावन आया धूम मचाता
घिर घिर काले बादल छाये
मेरे दिल पर जम से गये हैं
जाने कितने गहरे साये

चांद से जब भी बादल गुज़रा
दिल से गुज़रा अक्स तुम्हारा
फूल जो चटके मैंने जाना
तुमने शायद मुझको पुकारा

آئیں بہاریں مجھ کو منانے
تم بن میں تو منہ سے نہ بولی
لاکھ فضا میں گیت سے گونجے
لیکن میں نے آنکھ نہ کھولی

کتنی نکھری صبحیں گزریں
کتنی مہکی شامیں چھائیں
میرے دل کو دور سے تکنے
جانے کتنی یادیں آئیں

اتنی مدت بعد تو پریتم
آج کلی ہردے کی کھلی ہے
کتنی راتیں جاگ کے ساجن
آج مجھے یہ رات ملی ہے

بولو ساتھی! کچھ تو بولو!
کچھ تو دل کی بات بتاؤ
آج بھی مجھ سے دور رہو گے
آؤ مرے نزدیک تو آؤ

آؤ میں تم کو بہلا لوں گی
بیٹھ تو جاؤ میرے سہارے
آج تمھیں کیوں غم ہے بولو
آج تو میں ہوں پاس تمھارے

اچھا میرا غم نہ بھلاؤ
میرا غم ہر غم میں سمولو
اس سے اچھی بات نہ ہوگی
یہ تو تمھیں منظور ہے بولو

आयीं बहारें मुझको मनाने
तुम बिन मैं तो मुंह से न बोली
लाख फ़ज़ा में गीत से गूंजे
लेकिन मैंने आंख न खोली

कितनी निखरी सुब्हें गुज़रीं
कितनी महकी शामें छायीं
मेरे दिल को दूर से तकने
जाने कितनी यादें आयीं

इतनी मुद्दत बाद तो प्रीतम
आज कली हृदय की खिली है
कितनी रातें जाग के साजन
आज मुझे ये रात मिली है

बोलो साथी! कुछ तो बोलो
कुछ तो दिल की बात बताओ
आज भी मुझ से दूर रहोगे
आओ मिरे नज़दीक तो आओ

आओ मैं तुमको बहला लूंगी
बैठ तो जाओ मेरे सहारे
आज तुम्हें क्यों ग़म है बोलो
आज तो मैं हूं पास तुम्हारे

अच्छा मेरा ग़म न भुलाओ
मेरा ग़म हर ग़म में समोलो
इससे अच्छी बात न होगी
ये तो तुम्हें मंज़ूर है बोलो

میرے غم کو میرے شاعر!
اپنے جواں گیتوں میں رچالو
میرے غم کو میرے شاعر!
سارے جگ کی آگ بنالو!

میرے غم کی آنچ سے ساتھی
چونک اُٹھے گا عزم تمھارا
بات تو جب ہے لاکھوں دل کو
چھو لے اپنے پیار کا دھارا

میں جو تمھارے ساتھ نہیں ہوں
دل کو مت مایوس کرو تم
تم ہو تنہا، تم ہو اکیلے
ایسا کیوں محسوس کرو تم

آج ہمارے لاکھوں ساتھی
ساتھی ہمت ہار نہ جاؤ
آج کروڑوں ہاتھ بڑھیں گے
ایک ذرا تم ہاتھ بڑھاؤ

اچھا اب تو ہنس دو ساتھی
ورنہ دیکھو رو سی پڑوں گی
بولو ساتھی کچھ تو بولو
آج میں سچ مچ تم سے لڑوں گی

جاگ اُٹھی لو دنیا میری
آئی ہنسی وہ لب پہ تمھارے
دیکھو دیکھو میری جانب
دوڑ پڑے ہیں چاند ستارے

मेरे ग़म को मेरे शाइर!
अपने जवां गीतों में रचा लो
मेरे ग़म को मेरे शाइर!
सारे जग की आग बना लो!

मेरे ग़म की आँच से साथी
चौंक उठेगा अज़्म तुम्हारा
बात तो जब है लाखों दिल को
छू ले अपने प्यार का धारा

मैं जो तुम्हारे साथ नहीं हूं
दिल को मत मायूस करो तुम
तुम हो तन्हा तुम हो अकेले
ऐसा क्यों महसूस करो तुम

आज हमारे लाखों साथी
साथी हिम्मत हार न जाओ
आज करोड़ों हाथ बढ़ेंगे
एक ज़रा तुम हाथ बढ़ाओ

अच्छा अब तो हंस दो साथी
वर्ना देखो रो सी पड़ूंगी
बोलो साथी कुछ तो बोलो
आज मैं सचमुच तुमसे लड़ूंगी

जाग उठी लो दुनिया मेरी
आयी हंसी वो लब पे तुम्हारे
देखो देखो मेरी जानिब
दौड़ पड़े हैं चांद सितारे

جھِل مِل جھِل مِل کرنیں آئیں
مجھ کو چندن ہار پنہانے
جگ مگ جگ مگ تارے آئے
پھر سے میری مانگ سجانے

آئیں ہوائیں جھانجھ بجاتی
گیتوں مورا انگنا جاگا
مورے ماتھے جھومر دمکا
مورے ہاتھوں کنگنا جاگا

جاگ اُٹھا ہے سارا عالم
جاگ اُٹھی ہے رات ملن کی
آؤ زمیں کی گود میں ساجن
سیج سجی ہے آج دُلہن کی

آؤ جاتی رات ہے ساتھی
پیار تمھارا دل میں بھرلوں
آؤ تمھاری گود میں ساجن
تھک کر آنکھیں بند سی کر لوں

اُٹھو ساتھی دور اُفق کا
نرم کنارا کانپ اُٹھا ہے
میرے دل کی دھڑکن بن کر
صبح کا تارا کانپ اُٹھا ہے

دل کی دھڑکن ڈوب کے رہ جا
جاگی نبضو، تھم سی جاؤ

झिल मिल झिल मिल किरने आयीं
मुझको चन्दन हार पिन्हाने
जगमग जगमग तारे आये
फिर से मेरी मांग सजाने

आयीं हवाएं झांझ बजाती
गीतों मोरा अंगना जागा
मोरे माथे झूमर दमका
मोरे हाथों कंगना जागा

जाग उठा है सारा आलम
जाग उठी है रात मिलन की
आओ ज़मीं की गोद में साजन
सेज सजी है आज दुल्हन की

आओ जाती रात है साथी
प्यार तुम्हारा दिल में भर लूं
आओ तुम्हारी गोद में साजन
थक कर आंखें बन्द सी कर लूं

उठो साथी दूर उफ़क़[1] का
नर्म कनारा कांप उठा है
मेरे दिल की धड़कन बनकर
सुब्ह का तारा कांप उठा है

दिल की धड़कन डूब के रह जा
जागी नब्ज़ों, थम सी जाओ

1. क्षितिज

پھر سے میری بے نم آنکھو!
پتھر بن کر جم سی جاؤ

میرے غم کا غم نہ کرو تم
اچھا اب سے غم نہ کروں گی
میرے ارادوں والے ساتھی
جاؤ میں ہمت کم نہ کروں گی

تم کو ہنس کر رخصت کر دوں
سب کچھ میں نے ہنس کے سہا ہے
تم بن مجھ میں کچھ نہ رہے گا
یوں بھی اب کیا خاک رہا ہے

دیکھو! کتنے کام پڑے ہیں
اچھا اب مت دیر کرو تم
کیسے جم کر رہ سے گئے ہو
اتنا مت اندھیر کرو تم

بولو، تم کو کیسے روکوں
دنیا سو الزام دھرے گی
ایسے پاگل پیار کو ساتھی
ساری خلقت نام دھرے گی

آؤ، میں اُلجھے بال سنواروں
مجھ سے کوئی کام تو لے لو
پھر سے گلے اک بار لگا کے
پیار سے میرا نام تو لے لو

اچھا ساتھی! جاؤ سدھارو
اب کی اتنے دن نہ لگانا

फिर से मेरी बेनम आंखो!
पत्थर बन कर जम सी जाओ

मेरे ग़म का ग़म न करो तुम
अच्छा अब से ग़म न करूंगी
मेरे इरादों वाले साथी
जाओ मैं हिम्मत कम न करूंगी

तुमको हंस कर रुख़सत कर दूं
सब कुछ मैंने हंस के सहा है
तुम बिन मुझमें कुछ न रहेगा
यूं भी अब क्या ख़ाक रहा है

देखो! कितने काम पड़े हैं
अच्छा अब मत देर करो तुम
कैसे जम कर रह से गये हो
इतना मत अंधेर करो तुम

बोलो, तुमको कैसे रोकूं
दुनिया सौ इल्ज़ाम धरेगी
ऐसे पागल प्यार को साथी
सारी ख़िल्क़त नाम धरेगी

आओ, मैं उलझे बाल संवारूं
मुझसे कोई काम तो ले लो
फिर से गले इक बार लगा के
प्यार से मेरा नाम तो ले लो

अच्छा साथी! जाओ सिधारो
अब की इतने दिल न लगाना

پیاسی آنکھیں راہ تکیں گی!
ساجن جلدی لوٹ کے آنا

لیکن ٹھہرو، ٹھہرو ساتھی!
دل کو ذرا تیار تو کرلوں
آؤ، مرے پردیسی ساجن!
آؤ، میں تم کو پیار تو کرلوں

●

## آخری ملاقات

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

دو پانوں بنے ہریالی پر
اک تتلی بیٹھی ڈالی پر!
کچھ جگ مگ جگنو جنگل سے
کچھ جھومتے ہاتھی بادل سے
یہ ایک کہانی نیند بھری
اک تخت پہ بیٹھی ایک پری
کچھ گن گن کرتے پروانے
دو ننھے ننھے دستانے
کچھ اڑتے رنگین غبارے
ببو کے دوپٹے کے تارے
یہ چہرا بنو بوڑھی کا
یہ ٹکڑا ماں کی چوڑی کا

प्यासी आंखें राह तकेंगी
साजन जल्दी लौट के आना

लेकिन ठहरो, ठहरो साथी!
दिल को ज़रा तैयार तो कर लूं
आओ मिरे परदेसी साजन!
आओ, मैं तुमको प्यार तो कर लूं

●

## आख़िरी मुलाक़ात

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

दो पांव बने हरियाली पर
इक तितली बैठी डाली पर!
कुछ जगमग जुगनू जंगल से
कुछ झूमते हाथी बादल से
ये एक कहानी नींद भरी
इक तख़्त पे बैठी एक परी
कुछ गुन गुन करते परवाने
दो नन्हे नन्हे दस्ताने
कुछ उड़ते रंगीन ग़ुब्बारे
बिब्बो के दुपट्टे के तारे
ये चेहरा बन्नो बूढ़ी का
ये टुकड़ा मां की चूड़ी का

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

السائی ہوئی رُت ساون کی
کچھ سوندھی خوشبو آنگن کی
اک ٹوٹی رسّی جھولے کی
اک چوٹ کسکتی کولہے کی
سلگی سی انگیٹھی جاڑوں میں
اک چہرہ کتنی آڑوں میں
کچھ چاندنی راتیں گرمی کی
اک لب پر باتیں نرمی کی
کچھ رُوپ حسیں کاشانوں کا
کچھ رنگ ہرے میدانوں کا
کچھ ہار مہکتی کلیوں کے
کچھ نام وطن کی گلیوں کے

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

کچھ چاند چمکتے گالوں کے
کچھ بھنورے کالے بالوں کے
کچھ نازک شکنیں آنچل کی
کچھ نرم لکیریں کاجل کی

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

अलसायी हुयी रुत सावन की
कुछ सोंधी ख़ुश्बू आंगन की
इक टूटी रस्सी झूले की
इक चोट कसकती कूल्हे की
सुलगी सी अंगेठी जाड़ों में
इक चेहरा कितनी आड़ों में
कुछ चांदनी रातें गर्मी की
इक लब पर बातें नर्मी की
कुछ रूप हसीं काशानों[1] का
कुछ रंग हरे मैदानों का
कुछ हार महकती कलियों के
कुछ नाम वतन की गलियों के

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

कुछ चांद चमकते गालों के
कुछ भंवरे काले बालों के
कुछ नाज़ुक शिकनें आंचल की
कुछ नर्म लकीरें काजल की

1. ख़ूबसूरत छोटा घर

اک کھوئی کڑی افسانوں کی
دو آنکھیں روشن دانوں کی
اک سرخ دُلائی گوٹ لگی
کیا جانے کب کی چوٹ لگی
اک چھلّا پھیکی رنگت کا
اک لاکٹ سوں کی صورت کا
رومال کئی ریشم سے کڑھے
وہ خط جو کبھی میں نے نہ پڑھے

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

اُجڑی ہوئی مانگیں شاموں کی
آواز شکستہ جاموں کی
کچھ ٹکڑے خالی بوتل کے
کچھ گھنگھرو ٹوٹی پائل کے
کچھ بکھرے تنکے چلمن کے
کچھ پرزے اپنے دامن کے
کچھ تار سے یہ تھرّائے ہوئے
کچھ گیت کبھی کے گائے ہوئے
کچھ شعر پرانی غزلوں کے
عنوان ادھوری نظموں کے
ٹوٹی ہوئی اک اشکوں کی لڑی
اک خشک قلم، اک بند گھڑی

इक खोई कड़ी अफ़सानों की
दो आंखें रोशनदानों की
इक सुर्ख़ दुलाई गोट लगी
क्या जाने कब की चोट लगी
इक छल्ला फीकी रंगत का
इक लाकेट सूं की सूरत का
रूमाल कई रेशम से कढ़े
वो ख़त जो कभी मैंने न पढ़े

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

उजड़ी हुई मांगें शामों की
आवाज़ शिकस्ता[1] जामों की
कुछ टुकड़े ख़ाली बोतल के
कुछ घुंघरू टूटी पायल के
कुछ बिखरे तिनके चिलमन के
कुछ पुर्ज़े अपने दामन के
कुछ तार से ये थर्राए हुये
कुछ गीत कभी के गाये हुये
कुछ शेर पुरानी ग़ज़लों के
उनवान[2] अधूरी नज़्मों के
टूटी हुयी इक अश्कों की लड़ी
इक ख़ुश्क क़लम, इक बन्द घड़ी

1. टूटे हुये
2. शीर्षक

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

کچھ ساتھی چھوٹے چھوٹے سے
کچھ رشتے ٹوٹے ٹوٹے سے
کچھ بگڑی بگڑی تصویریں
کچھ دھندلی دھندلی تحریریں
کچھ آنسو چھلکے چھلکے سے
کچھ موتی ڈھلکے ڈھلکے سے
کچھ نقش یہ حیراں حیراں سے
کچھ عکس یہ لرزاں لرزاں سے
کچھ اُجڑی اُجڑی دنیائیں
کچھ بھٹکی بھٹکی آشائیں
کچھ بکھرے بکھرے سپنے ہیں
یہ غیر نہیں سب اپنے ہیں

مت روکو انھیں پاس آنے دو
یہ مجھ سے ملنے آئے ہیں
میں خود نہ جنھیں پہچان سکوں
کچھ اتنے دھندلے سائے ہیں

●

## آخری لمحہ
(اپنی بیٹی عنیزہ کے نام)

تم مری زندگی میں آئی ہو
میرا اک پاؤں جب رکاب میں ہے

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

कुछ साथी छूटे-छूटे से
कुछ रिश्ते टूटे-टूटे से
कुछ बिगड़ी-बिगड़ी तस्वीरें
कुछ धुंधली-धुंधली तहरीरें
कुछ आंसू छलके-छलके से
कुछ मोती ढलके-ढलके से
कुछ नक़्श ये हैरां-हैरां से
कुछ अक्स ये लरज़ां-लरज़ां से
कुछ उजड़ी-उजड़ी दुनियाएं
कुछ भटकी-भटकी आशाएं
कुछ बिखरे-बिखरे सपने हैं
ये ग़ैर नहीं सब अपने हैं

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंधले साये हैं

●

## आख़िरी लम्हा

(अपनी बेटी अनीक़ा के नाम)

तुम मिरी ज़िन्दगी में आयी हो
मेरा इक पांव जब रकाब[1] में है

1. रकाब: घोड़े की काठी का झूलता पायदान

دل کی دھڑکن ہے ڈوبنے کے قریب
سانس ہر لحظہ پیچ و تاب میں ہے
ٹوٹتے بے خروش تاروں کی
آخری کپکپی رباب میں ہے
کوئی منزل نہ جادۂ منزل
راستہ گم کسی سراب میں ہے
تم کو چاہا کیا خیالوں میں
تم کو پایا بھی جیسے خواب میں ہے
تم مری زندگی میں آئی ہو
میرا اک پاؤں جب رکاب میں ہے

میں سوچتا تھا کہ تم آؤ گی تمھیں پا کر
میں اس جہان کے دکھ درد بھول جاؤں گا
گلے میں ڈال کے بانہیں جو جھول جاؤ گی
میں آسمان کے تارے بھی توڑ لاؤں گا

تم ایک بیل کی مانند بڑھتی جاؤ گی
نہ چھو سکیں گی حوادث کی آندھیاں تم کو
میں اپنی جان پہ سو آفتیں اٹھالوں گا
چھپا کے رکھوں گا بانہوں کے درمیاں تم کو

مگر میں آج بہت دور جانے والا ہوں
بس اور چند نفس کو تمھارے پاس ہوں میں
تمھیں جو پا کے خوشی ہے تم اس خوشی پہ نہ جاؤ
تمھیں یہ علم نہیں کس قدر اُداس ہوں میں

दिल की धड़कन है डूबने के क़रीब
सांस हर लहज़ा पेचो ताब में है
टूटते बेख़रोश[1] तारों की
आख़िरी कपकपी रबाब[2] में है
कोई मंज़िल न जादए मंज़िल
रास्ता गुम किसी सराब[3] में है
तुमको चाहा किया ख़यालों में
तुमको पाया भी जैसे ख़्वाब में है
तुम मिरी ज़िन्दगी में आयी हो
मेरा इक पांव जब रकाब में है

मैं सोचता था कि तुम आओगी तुम्हें पाकर
मैं इस जहान के दुख दर्द भूल जाऊंगा
गले में डाल के बांहें जो झूल जाओगी
मैं आसमान के तारे भी तोड़ लाऊंगा

तुम एक बेल की मानिन्द बढ़ती जाओगी
न छू सकेंगी हवादिस[4] की आंधियां तुमको
मैं अपनी जान पे सौ आफ़तें उठा लूंगा
छुपा के रख्खूंगा बांहों के दरमियां तुमको

मगर मैं आज बहुत दूर जाने वाला हूं
बस और चन्द नफ़्स[5] को तुम्हारे पास हूं मैं
तुम्हें जो पा के खुशी है तुम इस खुशी पे न जाओ
तुम्हें ये इल्म[6] नहीं किस क़दर उदास हूं मैं

1. बेआवाज़, ख़ामोश
2. सितार के प्रकार का एक बाजा
3. मरीचिका
4. मुसीबतों
5. सांस
6. ज्ञान

کیا تم کو خبر اس دنیا کی، کیا تم کو پتہ اس دنیا کا
معصوم دلوں کو دکھ دینا، شیوہ ہے اس دنیا کا
غم اپنا نہیں غم اس کا ہے، کل جانے تمھارا کیا ہوگا
پروان چڑھوگی تم کیسے؟ جینے کا سہارا کیا ہوگا
آؤ کہ ترستی بانہوں میں اک بار تو تم کو بھرلوں میں
دو چار نفس کی فرصت ہے کچھ تم سے باتیں کرلوں میں
کل تم جو بڑی ہو جاؤ گی، جب تم کو شعور آ جائے گا
کتنے ہی سوالوں کا دھارا احساس سے ٹکرا جائے گا
سوچوگی کہ دنیا طبقوں میں تقسیم ہے کیوں یہ پھیر ہے کیا
انسان کا انساں بیری ہے، یہ ظلم ہے کیا اندھیر ہے کیا
یہ نسل ہے کیا؟ یہ ذات ہے کیا؟ یہ نفرت کی تعلیم ہے کیوں
دولت تو بہت ہے ملکوں میں، دولت کی مگر تقسیم ہے کیوں
تاریخ بتائے گی تم کو، انساں سے کہاں پر بھول ہوئی
سرمائے کے ہاتھوں لوگوں کی کس طرح محبت دھول ہوئی
صدیوں سے برابر محنت کش حالات سے لڑتے آئے ہیں
چھائی ہے جواب تک دھرتی پر، اس رات سے لڑتے آئے ہیں
دنیا سے ابھی تک مٹ نہ سکا، یہ راج اجارہ داری کا
غربت ہے وہی، افلاس وہی، رونا ہے وہی بیکاری کا
محنت کی ابھی تک قدر نہیں، محنت کا ابھی تک مول نہیں
ڈھونڈے نہیں ملتیں وہ آنکھیں، جو آنکھیں ہوں کشکول نہیں
سوچا تھا کہ کل اس دھرتی پر اک رنگ نیا چھا جائے گا!
انسان ہزار برسوں کی محنت کا ثمر پا جائے گا
جینے کا برابر حق سب کو جب ملتا، وہ پل آ نہ سکا

क्या तुम को ख़बर इस दुनिया की, क्या तुमको पता इस दुनिया का
मासूम दिलों को दुख देना, शेवा[1] है इस दुनिया का
ग़म अपना नहीं ग़म इसका है, कल जाने तुम्हारा क्या होगा
परवान चढ़ोगी तुम कैसे? जीने का सहारा क्या होगा
आओ कि तरसती बांहों में इक बार तो तुमको भर लूं मैं
दो चार नफ़्स की फ़ुर्सत है कुछ तुमसे बातें कर लूं मैं
कल तुम जो बड़ी हो जाओगी, जब तुम को शुऊर आ जायेगा
कितने ही सवालों का धारा एहसास से टकरा जायेगा
सोचोगी कि दुनिया तब्क़ों[2] में तक़सीम[3] है क्यों यह फेर है क्या
इंसान का इंसां बैरी है, यह ज़ुल्म है क्या अंधेर है क्या
ये नस्ल है क्या? ये ज़ात है क्या? ये नफ़रत की तालीम है क्यों
दौलत तो बहुत है मुल्कों में, दौलत की मगर तक़सीम है क्यों
तारीख़ बतायेगी तुमको, इंसां से कहां पर भूल हुयी
सरमाए के हाथों लोगों की किस तरह मुहब्बत धूल हुयी
सदियों से बराबर मेहनतकश हालात से लड़ते आये हैं
छायी है जो अब तक धरती पर, उस रात से लड़ते आये हैं
दुनिया से अभी तक मिट न सका, पर राज इजारहदारी का
गुर्बत[4] है वही, इफ़लास[5] वही, रोना है वही बेकारी का
मेहनत की अभी तक क़द्र नहीं, मेहनत का अभी तक मोल नहीं
ढूंढे नहीं मिलतीं वो आंखें, जो आंखें हों कशकोल[6] नहीं
सोचा था कि कल इस धरती पर इक रंग नया छा जायेगा!
इंसान हज़ार बरसों की मेहनत का समर[7] पा जायेगा
जीने का बराबर हक़ सबको मिलता, अब वो पल आ न सका

1. प्रवृति
2. वर्गों
3. विभाजित
4. ग़रीबी
5. निर्धनता
6. भिक्षापात्र
7. फल

جس کل کی خاطر جیتے جی مرتے رہے وہ کل آ نہ سکا
لیکن یہ لڑائی ختم نہیں، یہ جنگ نہ ہوگی بند کبھی
سو زخم بھی کھا کر میداں سے ہٹتے نہیں جرأت مند کبھی

وہ وقت کبھی تو آئے گا، جب دل کے چمن لہرائیں گے
مر جاؤں تو کیا مرنے سے مرے، یہ خواب نہیں مر جائیں گے
یہ خواب ہی میری دولت ہیں، یہ خواب تمھیں دے جاؤں گا
اس دہر میں جینے مرنے کے آداب تمھیں دے جاؤں گا
ممکن ہے کہ یہ دنیا کی روش پل بھر کو تمھارا ساتھ نہ دے
کانٹوں ہی کا تحفہ نذر کرے، پھولوں کی کوئی سوغات نہ دے
ممکن ہے تمھارے رستے میں، ہر ظلم و ستم دیوار بنے
سینے میں دہکتے شعلے ہوں، ہر سانس کوئی آزار بنے
ایسے میں نہ گھل کر رہ جانا، اشکوں سے نہ آنچل بھر لینا
غم آپ بڑی اک طاقت ہے، یہ طاقت بس میں کر لینا
ہو عزم تو لو دے اٹھتا ہے، ہر زخم سلگتے سینے کا
جو اپنا حق خود چھین سکے، ملتا ہے اسے حق جینے کا
لیکن یہ ہمیشہ یاد رہے اک فرد کی طاقت کچھ بھی نہیں
جو بھی ہو اکیلے انساں سے دنیا کی بغاوت کچھ بھی نہیں
تنہا جو کسی کو پائیں گے طاقت کے شکنجے جکڑیں گے
سو ہاتھ اُٹھیں گے جب مل کر دنیا کا گریباں پکڑیں گے
انسان وہی ہے، تابندہ اس راز سے جس کا سینا ہے
اوروں کے لئے تو جینا ہی، خود اپنے لئے بھی جینا ہے

جینے کی ہر طرح سے تمنا حسین ہے
ہر شر کے باوجود یہ دنیا حسین ہے

जिस कल की ख़ातिर जीते जी मरते रहे वो कल आ न सका
लेकिन यह लड़ाई ख़त्म नहीं, ये जंग न होगी बन्द कभी
सो ज़ख़्म भी खाकर मैदां से हटते नहीं जुरअत-मन्द कभी

वो वक़्त कभी तो आयेगा, जब दिल के चमन लहरायेंगे
मर जाऊं तो क्या मरने से मिरे, ये ख़्वाब नहीं मर जायेंगे
ये ख़्वाब ही मेरी दौलत हैं, ये ख़्वाब तुम्हें दे जाऊंगा
इस दह्र में जीने मरने के आदाब तुम्हें दे जाऊंगा
मुमकिन है कि ये दुनिया की रविश[1] पल भर को तुम्हारा सात न दे
कांटों का ही तोहफ़ा नज़्र[2] करे, फूलों की कोई सौग़ात न दे
मुमकिन है तुम्हारे रस्ते में, हर ज़ुल्मो सितम दीवार बने
सीने में दहकते शोले हों, हर सांस कोई आज़ार[3] बने
ऐसे में न खिल कर रह जाना, अश्कों से न आंचल भर लेना
ग़म आप बड़ी इक ताक़त है, ये ताक़त बस में कर लेना
हो अज़्म[4] तो लौ दे उठता है, हर ज़ख़्म सुलगते सीने में
जो अपना हक़ ख़ुद छीन सके, मिलता है उसे हक़ जीने का
लेकिन ये हमेशा याद रहे इक फ़र्द की ताक़त कुछ भी नहीं
जो भी हो अकेले इन्सां से दुनिया की बग़ावत कुछ भी नहीं
तन्हा जो किसी को पायेंगे ताक़त के शिकंजे जकड़ेंगे
सौ हाथ उठेंगे जब मिल कर, दुनिया का गिरेबां पकड़ेंगे
इन्सान वही है, ताबन्दा[5] इस राज़ से जिसका सीना है
औरों के लिये तो जीना ही, ख़ुद अपने लिये भी जीना है

जीने की हर तरह से तमन्ना हसीन है
हर शर के बावजूद ये दुनिया हसीन है

1. नीति
2. भेंट
3. रोग
4. संकल्प
5. रौशन

دریا کی تند باڑھ بھیانک سہی مگر
طوفاں سے کھیلتا ہوا تنکا حسین ہے
صحرا کا ہر سکوت ڈراتا رہے تو کیا
جنگل کو کاٹتا ہوا رستا حسین ہے
دل کو ہلائے لاکھ گھٹاؤں کی گھن گرج
مٹی پہ جو گرا ہے وہ قطرہ حسین ہے
دہشت دلا رہی ہیں چٹانیں تو کیا ہوا
پتھر میں جو صنم ہے وہ کتنا حسین ہے
راتوں کی تیرگی ہے جو پُر ہول غم نہیں
صبحوں کا جھانکتا ہوا چہرہ حسین ہے
ہوں لاکھ کوہسار بھی حائل تو کیا ہوا
پل پل چمک رہا ہے جو تیشہ حسین ہے
لاکھوں صعوبتوں کا اگر سامنا بھی ہو
ہر جہد، ہر عمل کا تقاضا حسین ہے

چمن سے چند ہی کانٹے میں چن سکا لیکن
بڑی ہے بات جو تم رنگِ گل نکھار سکو
یہ دور دورِ جہاں کاش تم کو راس آئے
تم اس زمین کو کچھ اور بھی سنوار سکو
عمل تمھارا یہ توفیق دے سکے تم کو
کہ زندگی کا ہر اک قرض تم اُتار سکو

سفر حیات کا آسان ہو ہی جاتا ہے
اگر ہو دل کو سہارا کسی کی چاہت کا

दरिया की तुन्द बाढ़ भयानक सही मगर
तूफ़ां से खेलता हुआ तिन्का हसीन है
सहरा[1] का हर सुकूत[2] डराता रहे तो क्या
जंगल को काटता हुआ रस्ता हसीन है
दिल को हिलाये लाख घटाओं की घन गरज
मिट्टी पे जो गिरा है वो क़तरा हसीन है
दहशत दिला रही हैं चट्टानें तो क्या हुआ
पत्थर में जो सनम[3] है वो कितना हसीन है
रातों की तीरगी है जो पुरहौल, ग़म नहीं
सुब्हों का झांकता हुआ चेहरा हसीन है
हों लाख कोहसार भी हाइल तो क्या हुआ
पल पल चमक रहा है जो तेशा[4] हसीन है
लाखों सुऊबतों[5] का अगर सामना भी हो
हर जह्द[6], हर अमल का तक़ाज़ा हसीन है

चमन से चन्द ही कांटे मैं चुन सका लेकिन
बड़ी है बात जो तुम रंगे गुल निखार सको
ये दौर दौरेजहां काश तुम को रास आये
तुम इस ज़मीन को कुछ और भी संवार सको
अमल तुम्हारा ये तौफ़ीक़ दे सके तुम को
कि ज़िन्दगी का हर इक क़र्ज़ तुम उतार सको

सफ़र हयात[7] का आसान हो ही जाता है
अगर हो दिल को सहारा किसी की चाहत का

1. वन, जंगल
2. मौन, सन्नाटा
3. मूर्ति
4. कुदाल
5. तकलीफ़ों
6. प्रयास
7. ज़िंदगी

وہ پیار جس میں نہ ہو عقل و دل کی یک جہتی
کسی طریق سے جذبہ نہیں محبت کا
ہزاروں سال میں تہذیبِ جسم نکھری ہے
بجا کہ جنس تقاضا ہے ایک فطرت کا

تمھیں کل اپنے شریکِ سفر کو چُننا ہے
وہ جس سے تم کو محبت ملے رفاقت بھی
ہزار ایک ہوں، دو ذہن مختلف ہونگے
یہ بات تلخ ہے لیکن ہے عین فطرت بھی
بہت حسین ہے ذہنی مفاہمت لیکن
بڑی عظیم ہے آدرش کی حفاظت بھی

کبھی یہ گل بھی نظر کو فریب دیتے ہیں
ہر ایک پھول میں تمیزِ رنگ و بو رکھنا
خیال جس کا گزر گاہِ صد بہاراں ہے
ہر اک قدم اسی منزل کی آرزو رکھنا
کوئی بھی فرض ہو خواہش سے پھر بھی برتر ہے
تمام عمر فرائض کی آبرو رکھنا!

تم ایک ایسے گھرانے کی لاج ہو جس نے
ہر ایک دور کو تہذیب و آگہی دی ہے
تمام منطق و حکمت، تمام علم و ادب
چراغ بن کے زمانے کو روشنی دی ہے
جلا وطن ہوئے آزادیِ وطن کے لئے
مرے تو ایسے کہ اوروں کو زندگی دی ہے

वो प्यार जिसमें न हो अक़्लो दिल की यकजहती[1]
किसी तरीक़ से जज़्बा नहीं मुहब्बत का
हज़ारों साल में तहज़ीबे जिस्म निखरी है
बजा कि जिंस तक़ाज़ा है एक फ़ित्रत का

तुम्हें कल अपने शरीके सफ़र को चुनना है
वो जिससे तुमको मुहब्बत मिले रफ़ाक़त भी
हज़ार एक हों दो ज़ेह्न मुख़्तलिफ़ होंगे
यह बात तल्ख़ है लेकिन है ऐन फ़ित्रत भी
बहुत हसीन है ज़ेह्नी मफ़ाहमत[2] लेकिन
बड़ी अज़ीम है आदर्श की हिफ़ाज़त भी

कभी ये गुल भी नज़र को फ़रेब देते हैं
हर एक फूल में तमयीज़े रंगो बू रखना
ख़याल जिसका गुज़रगाहे सदबहारां है
हर इक क़दम उसी मंज़िल की आरज़ू रखना
कोई भी फ़र्ज़ हो ख़्वाहिश से फिर भी बरतर[3] है
तमाम उम्र फ़राइज़[4] की आबरू रखना!

तुम एक ऐसे घराने की लाज हो जिसने
हर एक दौर को तहज़ीबो आगही दी है
तमाम मन्तिक़ो हिकमत, तमाम इल्मो अदब
चराग़ बन के ज़माने को रौशनी दी है
जिला-वतन हुये आज़ादिए वतन के लिये
मरे तो ऐसे कि औरों को ज़िन्दगी दी है

1. एकता
2. समझौता
3. श्रेष्ठ
4. फ़र्ज़ (कर्तव्य) का बहुवचन

غمِ حیات سے لڑتے گزار دی میں نے
مگر یہ غم ہے تمھیں کچھ خوشی نہ دے پایا
وہ پیار جس سے لڑکپن کے دن مہک اُٹھیں
وہ پیار بھی میں تمھیں دو گھڑی نہ دے پایا
میں جانتا ہوں کہ حالات سازگار نہ تھے
مگر میں خود کو تسلّی کبھی نہ دے پایا

یہ میری نظم مرا پیار ہے تمھارے لئے
یہ شعر تم کو مری روح کا پتا دیں گے
یہی تمھیں مرے عزم و عمل کی دیں گے خبر
یہی تمھیں مری مجبوریاں بتا دیں گے
کبھی جو غم کے اندھیرے میں ڈگمگاؤ گی
تمھاری راہ میں کتنے دیے جلا دیں گے

اب مرے پاس اور وقت نہیں
سانس ہر لحظہ اضطراب میں ہے
لرزاں لرزاں کوئی دھندلکا سا
ڈوبتے زرد آفتاب میں ہے
موت کو کس لئے حجاب کہیں
کس کو معلوم کیا حجاب میں ہے

جسم و جاں کا یہ عارضی رشتہ
کتنا ملتا ہوا حباب میں ہے
آج جو ہے وہ کل نہیں ہوگا
آدمی کون سے حساب میں ہے

ग़मे हयात से लड़ते गुज़ार दी मैंने
मगर यह ग़म है तुम्हें कुछ ख़ुशी न दे पाया
वो प्यार जिससे लड़कपन के दिन महक उठ्ठें
वो प्यार भी मैं तुम्हें दो घड़ी न दे पाया
मैं जानता हूं कि हालात साज़गार न थे
मगर मैं ख़ुद को तसल्ली कभी न दे पाया

ये मेरी नज़्म मिरा प्यार है तुम्हारे लिये
ये शे'र तुमको मिरी रूह का पता देंगे
यही तुम्हें मेरे अज़्मो अमल[1] की देंगे ख़बर
यही तुम्हें मिरी मजबूरियां बता देंगे
कभी जो ग़म के अंधेरे में डगमगाओगी
तुम्हारी राह में कितने दिये जला देंगे

अब मिरे पास और वक़्त नहीं
सांस हर लहज़ा इज़्तिराब[2] में है
लर्ज़ां लर्ज़ां कोई धुंधलका सा
डूबते ज़र्द आफ़ताब[3] में है
मौत को किस लिये हिजाब[4] कहें
किसको मालूम क्या हिजाब में है

जिस्मो जां का ये आरज़ी[5] रिश्ता
कितना मिलता हुआ हबाब[6] में है
आज जो है वो कल नहीं होगा
आदमी कौन से हिसाब में है

1. संकल्प और कर्म
2. बेचैनी
3. सूरज
4. पर्दा
5. अस्थायी
6. पानी का बुलबुला

خود زمانے بدلتے رہتے ہیں
زندگی صرف انقلاب میں ہے

آؤ آنکھوں میں ڈال دو آنکھیں
روح اب نزع کے عذاب میں ہے
تھر تھراتا ہوا تمھارا عکس
کب سے اس دیدۂ پُر آب میں ہے

روشنی دیر سے آنکھوں کی بجھی جاتی ہے
ٹھیک سے کچھ بھی دکھائی نہیں دیتا مجھ کو
ایک چہرا مرے چہرے پہ جھکا آتا ہے
کون ہے یہ بھی سجھائی نہیں دیتا مجھ کو

صرف سناٹے کی آواز چلی آتی ہے
اور تو کچھ بھی سنائی نہیں دیتا مجھ کو

آؤ اس چاند سے ماتھے کو ذرا چوم تو لوں
پھر نہ ہوگا تمھیں یہ پیار نصیب آجاؤ
آخری لمحہ ہے سینے پہ مرے سر رکھ دو
دل کی حالت ہوئی جاتی ہے عجیب آجاؤ
نہ اعزا، نہ احبا، نہ خدا ہے نہ رسول
کوئی اس وقت نہیں میرے قریب آجاؤ
تم تو قریب آجاؤ!

●●●

खुद ज़माने बदलते रहते हैं
ज़िन्दगी सिर्फ़ इंक़िलाब में है

आओ आंखों में डाल दो आंखें
रूह अब नज़्अ[1] के अज़ाब में है
थरथराता हुआ तुम्हारा अक्स
कब से इस दीदए पुरआब में है

रौशनी देर से आंखों की बुझी जाती है
ठीक से कुछ भी दिखाई नहीं देता मुझको
एक चेहरा मिरे चेहरे पे झुका आता है
कौन है ये भी सुझाई नहीं देता मुझको

सिर्फ़ सन्नाटे की आवाज़ चली आती है
और तो कुछ भी सुनाई नहीं देता मुझको

आओ इस चाँद से माथे को ज़रा चूम तो लूं
फिर न होगा तुम्हें ये प्यार नसीब आ जाओ
आख़िरी लम्हा है सीने पे मिरे सर रख दो
दिल की हालत हुयी जाती है अजीब आ जाओ
न अइज़्ज़ा[2], न अहिब्बा[3], न ख़ुदा है न रसूल
कोई इस वक़्त नहीं मेरे क़रीब आ जाओ
तुम तो क़रीब आ जाओ!

●●●

1. जानकनी
2. अज़ीज़ (सम्बन्धी) का बहुवचन
3. हबीब (मित्र) का बहुवचन

اختر الایمان

## ایک لڑکا

دیارِ شرق کی آبادیوں کے اونچے ٹیلوں پر
کبھی آموں کے باغوں میں، کبھی کھیتوں کی مینڈوں پر
کبھی جھیلوں کے پانی میں، کبھی بستی کی گلیوں میں
کبھی کچھ نیم عریاں کم سنوں کی رنگ رلیوں میں
سحر دم، جھٹپٹے کے وقت، راتوں کے اندھیرے میں
کبھی میلوں میں، ناٹک ٹولیوں میں، ان کے ڈیرے میں
تعاقب میں کبھی گم، تتلیوں کے، سونی راہوں میں
کبھی ننھے پرندوں کی نہفتہ خواب گاہوں میں
برہنہ پاؤں، جلتی ریت، یخ بستہ ہواؤں میں
گریزاں بستیوں سے، مدرسوں سے، خانقاہوں میں
کبھی ہم سن حسینوں میں بہت خوش کام و دل رفتہ
کبھی پیچاں بگولہ سا، کبھی جیوں چشمِ خوں بستہ
ہوا میں تیرتا، خوابوں میں بادل کی طرح اڑتا
پرندوں کی طرح شاخوں میں چھپ کر جھولتا، مڑتا
مجھے اک لڑکا، آوارہ منش، آزاد سیلانی
مجھے اک لڑکا، جیسے تند چشموں کا رواں پانی
نظر آتا ہے یوں لگتا ہے، جیسے یہ بلائے جاں
مرا ہمزاد ہے، ہر گام پر، ہر موڑ پر جولاں

अख़्तरुल ईमान

# एक लड़का

दयारे शर्क़[1] की आबादियों के ऊँचे टीलों पर
कभी आमों के बाग़ों में, कभी खेतों की मेंडो पर
कभी झीलों के पानी में, कभी बस्ती की गलियों में
कभी कुछ नीम उर्यां[2] कमसिनों की रंगरलियों में
सहर दम, झुटपुटे के वक़्त, रातों के अंधेरे में
कभी मेलों में, नाटक टोलियों में, उनके डेरे में
तआक़्क़ुब[3] में कभी गुम, तितलियों के, सूनी राहों में
कभी नन्हें परिन्दों की निहुफ़्ता[4] ख़्वाबगाहों में
बरहना पांव[5], जलती रेत, यख़बस्ता हवाओं में
गुरेज़ां बस्तियों से, मदरसों से, ख़ानक़ाहों में
कभी हमसिन[6] हसीनों में बहुत ख़ुशकामो दिल रफ़्ता
कभी पेचां बगूला सा, कभी ज्यों चश्में ख़ूं बस्ता
हवा में तैरता, ख़्वाबों में बादल की तरह उड़ता
परिन्दों की तरह शाख़ों में छुपकर झूलता मुड़ता
मुझे इक लड़का, आवारा मनिश[7], आज़ाद सैलानी
मुझे इक लड़का जैसे तुंद चश्मों का, रवां पानी
नज़र आता है, यूं लगता है, जैसे ये बलाए जां
मिरा हमज़ाद[8] है, हर गाम[9] पर, हर मोड़ पर जौलां[10]

1. पूरब
2. अर्धनग्न
3. पीछा करना
4. छुपी हुई
5. नंगे पांव
6. हम उम्र
7. आदत, मिज़ाज
8. जो साथ पैदा हुआ हो
9. क़दम
10. बेड़ी या जंज़ीर (जो क़ैदियों के पैरों में डाली जाती है)

اسے ہمراہ پاتا ہوں، یہ سائے کی طرح میرا
تعاقب کر رہا ہے، جیسے میں مفرور ملزم ہوں
یہ مجھ سے پوچھتا ہے اخترالایمان تم ہی ہو؟

خدائے عزّوجل کی نعمتوں کا معترف ہوں میں
مجھے اقرار ہے اس نے زمیں کو ایسے پھیلایا
کہ جیسے بسترِ کم خواب ہو، دیبا و مخمل ہو
مجھے اقرار ہے یہ خیمۂ افلاک کا سایہ
اُسی کی بخششیں ہیں، اس نے سورج چاند تاروں کو
فضاؤں میں سنوارا، اک حدِ فاصل مقرر کی
چٹانیں چیر کر دریا نکالے خاکِ اسفل سے
مری تخلیق کی مجھ کو جہاں کی پاسبانی دی
سمندر موتیوں مونگوں سے، کانیں لعل و گوہر سے
ہوائیں مست کن خوشبوؤں سے معمور کردی ہیں
وہ حاکم قادرِ مطلق ہے، یکتا اور دانا ہے
اندھیرے کو اُجالے سے جدا کرتا ہے، خود کو میں
اگر پہچانتا ہوں اس کی رحمت اور سخاوت ہے!
اسی نے خسروی دی ہے لئیموں کو، مجھے نکبت
اسی نے یاوہ گویوں کو مرا خازن بنایا ہے
تونگر ہرزہ کاروں کو کیا دریوزہ گر مجھ کو

इसे हमराह पाता हूं, ये साये की तरह मेरा
तआक़्क़ुब कर रहा है जैसे मैं मफ़रूर[1] मुल्ज़िम हूं
ये मुझसे पूछता है अख़्तरुल ईमान तुम ही हो?

ख़ुदाए इज़्ज़ोजल[2] की नेमतों का मोतरिफ़ हूं मैं
मुझे इक़रार है उसने ज़मीं को ऐसे फैलाया
कि जैसे बिस्तरे कमख़्वाब हो, दीबाओ मख़मल[3] हो
मुझे इक़रार है ये खेमए अफ़लाक का साया
उसी की बख़्शिशें हैं, उसने सूरज चांद तारों को
फ़ज़ाओं में संवारा, इक हदे फ़ासिल मुक़र्रर की
चटानें चीर कर दरिया निकाले, ख़ाके असफ़ल[4] से
मिरी तख़लीक़[5] की मुझको जहां की पासबानी दी
समुन्दर मोतियों, मूंगों से, कानें लालो-गौहर[6] से
हवाए मस्तकुन ख़ुश्बूओं से मामूर कर दी हैं
वह हाकिम क़ादिरे मुत्लक़[7] है, यकता और दाना[8] है
अंधेरे को उजाले से जुदा करता है, ख़ुद को मैं
अगर पहचानता हूं उसकी रहमत और सख़ावत[9] है!
उसी ने ख़ुसरवी[10] दी है लईमों[11] को, मुझे नक्बत[12]
उसी ने यावह गोयों[13] को मेरा ख़ाज़िन[14] बनाया है
तवंगर हरज़ाकारों[15] को किया दरयुज़ागर[16] मुझको

1. भागा हुआ
2. मान सम्मान वाला
3. बारीक रेश्मी कपड़ा
4. बहुत नीचे की मिट्टी
5. रचना
6. मोती
7. सर्व शक्तिमान
8. सबकुछ जानने वाला
9. बख़्शिश
10. बादशाहत
11. कन्जूसों
12. ग़रीबी
13. बकवास करने वालों
14. ख़ज़ांची
15. बेहूदों
16. भिकारी

مگر جب جب کسی کے سامنے دامن پسارا ہے
یہ لڑکا پوچھتا ہے اخترالایمان تم ہی ہو؟

معیشت دوسروں کے ہاتھ میں ہے میرے قبضہ میں
جز اک ذہنِ رسا کچھ بھی نہیں، پھر بھی مگر مجھ کو
خروشِ عمر کے اتمام تک اک بار اُٹھانا ہے
عناصر منتشر ہو جانے، نبضیں ڈوب جانے تک
نوائے صبح ہو یا نالۂ شب کچھ بھی گانا ہے
ظفر مندوں کے آگے رزق کی تحصیل کی خاطر
کبھی اپنا ہی نغمہ اُن کا کہہ کر مسکراتا ہے
وہ خامہ سوزی شب بیداریوں کا جو نتیجہ ہو
اسے اک کھوٹے سکّے کی طرح سب کو دکھانا ہے
کبھی جب سوچتا ہوں اپنے بارے میں تو کہتا ہوں
کہ تو اک آبلہ ہے جس کو آخر پھوٹ جانا ہے
غرض گرداں ہوں بادِ صبح گاہی کی طرح، لیکن
سحر کی آرزو میں شب کا دامن تھامتا ہوں جب
یہ لڑکا پوچھتا ہے اخترالایمان تم ہی ہو؟

یہ لڑکا پوچھتا ہے جب تو میں جھلّا کے کہتا ہوں
وہ آشفتہ مزاج، اندوہ پرور، اضطراب آسا
جسے تم پوچھتے رہتے ہو کب کا مر چکا ظالم
اسے خود اپنے ہاتھوں سے کفن دے کر فریبوں کا

मगर जब जब किसी के सामने दामन पसारा है
ये लड़का पूछता है अख़तरुल ईमान तुम ही हो?

मईशत दूसरों के हाथ में हैं मेरे क़ब्ज़े में
जुज़ इक ज़ेहने रसा कुछ भी नहीं, फिर भी मगर मुझको
ख़रोशे उम्र के इत्माम[1] तक इक बार उठाना है
अनासिर मुन्तशिर हो जाने, नब्ज़ें डूब जाने तक
नवाए सुब्ह[2] हो या नालए शब कुछ भी गाना है
ज़फ़रमन्दों[3] के आगे रिज़्क़[4] की तहसील की ख़ातिर
कभी अपना ही नग़्मा उनका कहकर मुस्कुराना है
वो ख़ामासोज़ी शब-बेदारियों[5] का जो नतीजा हो
उसे इक खोटे सिक्के की तरह सबको दिखाना है
कभी जब सोचता हूं अपने बारे में तो कहता हूं
कि तू इक आबला[6] है जिसको आख़िर फूट जाना है
ग़रज़ गर्दां हूं बादे सुब्ह गाही की तरह, लेकिन
सहर की आरज़ू में शब का दामन थामता हूं जब
ये लड़का पूछता है अख़तरुल ईमान तुम ही हो?

ये लड़का पूछता है जब तो मैं झल्ला के कहता हूं
वो आशुफ़्ता[7] मिज़ाज, अन्दोहपरवर[8], इज़्तिराब आसा
जिसे तुम पूछते रहते हो कब का मर चुका ज़ालिम
उसे ख़ुद अपने हाथों से कफ़न देकर फ़रेबों का

1. तमाम करना
2. सुब्ह की आवाज़
3. विजेताओं
4. आजीविका
5. रात्रि जागरण
6. फफोला
7. परेशान
8. दुखी

اُس کی آرزوؤں کی لحد میں پھینک آیا ہوں!
میں اس لڑکے سے کہتا ہوں وہ شعلہ مر چکا جس نے
کبھی چاہا تھا اک خاشاکِ عالم پھونک ڈالے گا
یہ لڑکا مسکراتا ہے، یہ آہستہ سے کہتا ہے
یہ کذب و افترا ہے، جھوٹ ہے، دیکھو میں زندہ ہوں!

●

## عہدِ وفا

یہی شاخ تم جس کے نیچے کسی کے لئے چشم نم ہو، یہاں اب سے کچھ سال پہلے
مجھے ایک چھوٹی سی بچی ملی تھی، جسے میں نے آغوش میں لے کے پوچھا تھا، بیٹی!
یہاں کیوں کھڑی رو رہی ہو، مجھے اپنے بوسیدہ آنچل میں پھولوں کے گہنے دکھا کر
وہ کہنے لگی میرا ساتھی اُدھر، اس نے انگلی اٹھا کر بتایا، اُدھر اس طرف ہی
(جدھر اونچے محلوں کے گنبد، ملوں کی سیہ چمنیاں آسماں کی طرف سر اُٹھائے کھڑی ہیں)
یہ کہہ کر گیا ہے کہ میں سونے چاندی کے گہنے ترے واسطے لینے جاتا ہوں رامی

●

## تبدیلی

اس بھرے شہر میں کوئی ایسا نہیں
جو مجھے راہ چلتے کو پہچان لے
اور آواز دے 'او بے او سر پھرے'
دونوں اک دوسرے سے لپٹ کر وہیں
گرد و پیش اور ماحول کو بھول کر
گالیاں دیں، ہنسیں، ہاتھا پائی کریں

उसकी आरज़ुओं की लहद[1] में फेंक आया हूं
मैं उस लड़के से कहता हूं वो शोला मर चुका जिसने
कभी चाहा था इक ख़ाशाके आलम फूंक डालेगा
ये लड़का मुस्कराता है, ये आहिस्ता से कहता है
ये किज़्बो इफ़्तरा[2] है, झूठ है, देखो मैं ज़िन्दा हूं!

●

## अह्दे वफ़ा

यही शाख़ तुम जिसके नीचे किसी के लिये चश्मे नम हो, यहां अब से कुछ साल पहले
मुझे एक छोटी सी बच्ची मिली थी, जिसे मैंने आग़ोश में ले के पूछा था, बेटी!
यहां क्यों खड़ी रो रही हो, मुझे अपने बोसीदा आंचल में फूलों के गहने दिखाकर
वो कहने लगी मेरा साथी 'उधर' उसने उंगली उठाकर बताया, उधर उस तरफ़ ही
(जिधर ऊँचे महलों के गुम्बद, मिलों की सियह चिमनियां आस्मां की तरफ़ सर उठाये खड़ी हैं)
ये कह कर गया है कि मैं सोने चांदी के गहने तिरे वास्ते लेने जाता हूं रामी।

●

## तब्दीली

इस भरे शहर में कोई ऐसा नहीं
जो मुझे राह चलते को पहचान ले
और आवाज़ दे 'ओ बे ओ सर फिरे'
दोनों इक दूसरे से लिपट कर वहीं
गिर्दो पेश और माहौल को भूल कर
गालियां दें, हंसे, हाथा पाई करे

1. क़ब्र    2. झूठ और पाखंड

پاس کے پیڑ کی چھاؤں میں بیٹھ کر
گھنٹوں اک دوسرے کی سُنیں اور کہیں
اور اس نیک روحوں کے بازار میں
میری یہ قیمتی بے بہا زندگی
ایک دن کے لئے اپنا رُخ موڑ لے!

●

## شیشہ کا آدمی

اٹھاؤ ہاتھ کہ دستِ دعا بلند کریں
ہماری عمر کا اک اور دن تمام ہوا
خدا کا شکر بجا لائیں آج کے دن بھی
نہ کوئی واقعہ گزرا نہ ایسا کام ہوا
زباں سے کلمۂ حق راست کچھ کہا جاتا
ضمیر جاگتا اور اپنا امتحاں ہوتا
خدا کا شکر بجا لائیں آج کا دن بھی
اسی طرح سے کٹا، منہ اندھیرے اٹھ بیٹھے
پیالی چائے کی پی، خبریں دیکھیں، ناشتہ پر
ثبوت بیٹھے بصیرت کا اپنی دیتے رہے
بخیر و خوبی پلٹ آئے جیسے شام ہوئی
اور اگلے روز کا موہوم خوف دل میں لئے
ڈرے ڈرے سے ذرا بال پڑ نہ جائے کہیں
لیے دیے یونہی بستر میں جا کے لیٹ گئے

●

पास के पेड़ की छांव में बैठकर
घन्टों इक दूसरे की सुनें और कहें
और इस नेक रूहों के बाज़ार में
मेरी ये क़ीमती बेबहा ज़िन्दगी
एक दिन के लिये अपना रुख़ मोड़ ले!

●

## शीशा का आदमी

उठाओ हाथ कि दस्ते दुआ[1] बुलन्द करें
हमारी उम्र का इक और दिन तमाम हुआ
ख़ुदा का शुक्र बजा लायें आज के दिन भी
न कोई वाक़िआ गुज़रा न ऐसा काम हुआ
ज़बां से कलमए हक़[2] रास्त कुछ कहा जाता
ज़मीर[3] जागता और अपना इम्तिहां होता
ख़ुदा का शुक्र बजा लायें आज का दिन भी
इसी तरह से कटा मुंह अंधेरे उठ बैठे
प्याली चाय की पी, ख़बरें देखीं, नाश्ते पर
सुबूत बैठे बसीरत[4] का अपनी देते रहे
बख़ैरो ख़ूबी पलट आये जैसे शाम हुयी
और अगले रोज़ का मौहूम ख़ौफ़ दिल में लिये
डरे डरे से ज़रा बाल पड़ न जाए कहीं
लिये दिये यूं ही बिस्तर में जाके लेट गये

●

1. दुआ के हाथ
2. सच्च बात
3. अंतरात्मा
4. अंतदृष्टि

# اپاہج گاڑی کا آدمی

کچھ ایسے ہیں جو زندگی کو مہ و سال سے ناپتے ہیں
گوشت سے، ساگ سے، دال سے ناپتے ہیں
خط و خال سے، گیسوؤں کی مہک، چال سے ناپتے ہیں
صعوبت سے، جنجال سے ناپتے ہیں
یا اپنے اعمال سے ناپتے ہیں
مگر ہم اسے عزمِ پامال سے ناپتے ہیں

یہ لمحہ جو گزرا مرے خون کی اس میں سرخی ملی ہے؟
مرے آنسوؤں کا نمک اس کی لذت میں شامل ہوا ہے؟
پسینے سے گرداب ساحل ہوا ہے؟
یہ لا کا سفر لا رہے گا کہ کچھ اس کا حاصل ہوا ہے
کہ جیسی تھی برسوں سے ویسی ہی تشنہ دلی ہے؟

میں کب سے زمیں پر زمیں کی طرح چل رہا ہوں
یہ دیوانہ اندھا سفر کب کہاں جا کے چھوڑے گا مجھ کو؟
میں اس زندگی کی بہت سی بہاریں غذا کی طرح کھا چکا ہوں
پہن اوڑھ کر پیرہن کی طرح پھاڑ دی ہیں
میں ریشم کا کیڑا ہوں، کویے میں چھپ جاتا ہوں ڈر کے مارے
اسی کویے کو کھاتا رہتا ہوں اور کاٹ کر اس سے آتا ہوں باہر
اور اپنے جینے کا مقصد، سبب جاننا چاہتا ہوں
مرا دل خدا کی رضا ڈھونڈتا پھر رہا ہے
مرا جسم لذات کی جستجو میں لگا ہے

# अपाहिज गाड़ी का आमदी

कुछ ऐसे हैं जो ज़िन्दगी को महो साल से नापते हैं
गोश्त से, साग से, दाल से नापते हैं
ख़तो ख़ाल[1] से, गेसुओं की महक, चाल से नापते हैं
सुऊबत[2] से, जंजाल से नापते हैं
या अपने आमाल[3] से नापते हैं
मगर हम इसे अज़्मे पामाल[4] से नापते हैं

ये लम्हा जो गुज़रा मिरे खून की उसमें सुर्ख़ी मिली है?
मिरे आंसुओं का नमक उसकी लज़्ज़त में शामिल हुआ है?
पसीने से गिर्दाब[5] साहिल हुआ है?
ये ला[6] का सफ़र ला रहेगा कि कुछ इसका हासिल हुआ है
कि जैसी थी बरसों से वैसी ही तिश्ना-दिली है?

मैं कब से ज़मीं पर ज़मीं की तरह चल रहा हूं
ये दीवाना अंधा सफ़र कब कहां जाके छोड़ेगा मुझको?
मैं इस ज़िन्दगी की बहुत सी बहारें गिज़ा[7] की तरह खा चुका हूं
पहन ओढ़ कर पैरहन की तरह फाड़ दी हैं
मैं रेशम का कीड़ा हूं कूए में छुप जाता हूं डर के मारे
इसी कूए को खाता रहता हूं और काट कर इससे आता हूं बाहर
और अपने जीने का मक़सद, सबब[8] जानना चाहता हूं
मिरा दिल खुदा की रज़ा[9] ढूंढता फिर रहा है
मिरा जिस्म लज़्ज़ात[10] की जुस्तजू में लगा है

1. आकृति
2. दुश्वारी
3. कर्मों
4. रौंदा हुआ इरादा
5. जलावर्त
6. नहीं
7. खुराक
8. कारण
9. मर्ज़ी
10. लज़्ज़त का बहुवचन

گذر گاہِ شام و سحر پر کہیں ایک دن میں اُگا تھا
نباتات کی طرح جیتا ہوں اس کارگاہِ جہاں میں
نہ احساس، ایمان، ایقان کوئی
نہ دنیا میں شامل، نہ خود اپنی پہچان کوئی
گنہ اور جہنم، ثواب اور جنت؟
یہ کیوں ہے کہ بے مزد کچھ بھی نہیں مل سکا ہے
نہ کل مل سکے گا
اساطیر فرماں رواؤں کے احکام اور صوفیا کی کرامت کے قصے
پیمبر کی دل سوزیوں کے مظاہر
قلم بند ہیں سب!
انھیں ہم نے تعویذ کی طرح اپنے گلوں میں حمائل کیا ہے
انھیں ہم نے تہہ خانوں کی کوٹھری میں مقفل کیا ہے
جہاں لڑکھڑاتے ہیں ان کی مدد لے کے چلتے ہیں آگے
مگر راستوں کا تعین نہیں ہے!

میں بکھرا ہوا آدمی ہوں
مری ذہنی بیماریوں کا سبب یہ زمیں ہے
میں اُس دن سے ڈرتا ہوں جب برف ساری پگھل کر
اِسے غرق کر دے!
نئے آسمانی حوادث
صفر میں بدل دیں
یا آدمی اپنے اعمال سے خود

गुज़रगाहे शामो सहर पर कहीं एक दिन मैं उगा था
नबातात[1] की तरह जीता हूं इस कारगाहे जहां में
न एहसास, ईमान, ईका़न[2] कोई
न दुनिया में शामिल, न खुद अपनी पहचान कोई
गुनह और जहन्नम, सवाब[3] और जन्नत?
ये क्यों है कि बेमुज़्द[4] कुछ भी नहीं मिल सका है
न कल मिल सकेगा
असातीर, फ़रमारवाओं के अह्काम और सूफ़िया की करामत के क़िस्से
पयम्बर[5] की दिलसोज़ियों के मज़ाहिर
क़लमबन्द हैं सब!
इन्हें हमने तावीज़ की तरह अपने गलों में हमाइल किया है
इन्हें हमने तहख़ानों की कोठरी में मुक़फ़्फ़ल[6] किया है
जहां लड़खड़ाते हैं इनकी मदद ले के चलते हैं आगे
मगर रास्तों का तअय्युन नहीं है!

मैं बिखरा हुआ आदमी हूं
मिरी ज़ेहनी बीमारियों का सबब ये ज़मीं है
मैं उस दिन से डरता हूं जब बर्फ़ सारी पिघल कर
इसे ग़र्क़ कर दे!
नये आसमानी हवादिस[7]
सिफ़र में बदल दे
या आदमी अपने आमाल[8] से खुद

1. वनस्पतियें
2. यक़ीन होना
3. पुण्य
4. बिना मज़दूरी
5. संदेशवाहक
6. ताला बंद किया हुआ
7. हादसा (घटना) का बहुवचन
8. कर्मों

اسے اک کہانی بنا دے!
زمیں شورہ پشتوں کی آماجگہ بن گئی ہے

خدا ایک ہے یوں تو وادین میں صاف لکھا ہوا ہے
مگر زیرِ وادین بھی چھوٹی چھوٹی بہت تختیاں ہیں
جلی حرف جن کے بہت اُمتوں کا پتہ دے رہے ہیں
جو یہ تختیاں اپنی گردن میں لٹکائے
زنار پہنے ہوئے، کوئی تسبیح تھامے
اپنی گردِ سفر کے دھندلکے میں لپٹے چلے جا رہے ہیں
زیتون کی شاخ، تُلسی کے پتّے
ہوا میں اُڑے جا رہے ہیں
چیونٹوں کی قطاریں قرن در قرن
مختلف پیچ در پیچ راہوں سے گزری چلی جا رہی ہیں
سینکڑوں سر کٹے دھڑ بہت راستوں پر پڑے ہیں
ہون ہو رہے ہیں
یگیہ کے منتروں کی صدا
آگ میں جلنے والی سامگری کی بہت تیز بُو
ہر طرف پھیل کر بس گئی ہے ہوا میں
اور وادین کی قید میں جو خدا ہے
لامکاں سے
جو ہوتا ہے، ہوتا رہے گا
بیٹھا چپ چاپ سب دیکھتا ہے

ہم بھی کیوں نہ خدا کی طرح یونہی چپ سادھ لیں

उसे इक कहानी बना दे!

ज़मीं शोरा पुश्तों[1] की आमाजगह[2] बन गयी है

खुदा एक है यूं तो वावैन में साफ़ लिक्खा हुआ है

मगर ज़ेरे वावैन भी छोटी छोटी बहुत तख़्तियां हैं

जली हर्फ़[3] जिनके बहुत उम्मतों[4] का पता दे रहे हैं

जो ये तख़्तियां अपनी गर्दन में लटकाये

ज़ुन्नार[5] पहने हुये, कोई तस्बीह थामे

अपनी गर्दे सफ़र के धुंधलके में लिपटे चले जा रहे हैं

ज़ैतून की शाख़, तुलसी के पत्ते

हवा में उड़े जा रहे हैं

च्यूंटों की क़तारें क़र्न दर क़र्न[6]

मुख़्तलिफ़[7] पेंच दर पेच राहों से गुज़री चली जा रही हैं

सैंकड़ों सर कटे धड़ बहुत रास्तों पर पड़े हैं

हवन हो रहे हैं

यज्ञ के मन्त्रों की सदा

आग में जलने वाली सामग्री की बहुत तेज़ बू

हर तरफ़ फैलकर बस गयी है हवा में

और वावैन की क़ैद में जो खुदा है

ला मकां से

जो होता है, होता रहेगा

बैठा चुपचाप सब देखता है

हम भी क्यों न खुदा की तरह यूं ही चुप साध लें

1. झगड़ालुओं, फ़िसादियों
2. निशाने की जगह
3. रौशन अक्षर
4. अनुयायियों
5. जनेऊ
6. युग
7. विभिन्न

پیڑ پودوں کی مانند جیتے رہیں
ذبح ہوتے رہیں!
وہ دعائیں جو بارود کی بُو میں بس کر
بھٹکتی ہوئی زیرِ عرش بریں پھر رہی ہیں
انہیں بھول جائیں
زندگی کو خدا کی عطا جان کر ذہن ماؤف کر لیں
یاوہ گوئی میں یا ذہنی ہذیان میں خود کو مصروف کر لیں
ان میں مل جائیں جو زندگی کو
گوشت سے، ساگ سے، دال سے ناپتے ہیں
مہ و سال سے ناپتے ہیں
اپنا ہی خون پینے لگے ہیں
چاک دامانیاں غم سے سینے لگے ہیں

●●●

पेड़ पौदों की मानिन्द[1] जीते रहें
ज़िब्ह होते रहें!
वो दुआयें जो बारूद की बू में बस कर
भटकती हुयी ज़ेरे अर्श बरीं फिर रही हैं
उन्हें भूल जायें
ज़िन्दगी को खुदा की अता[2] जान कर ज़ेहन माऊफ़[3] कर लें
यावह-गोई में या ज़ेहनी हिज़्यान में खुद को मसरूफ़ कर लें
उनमें मिल जायें जो ज़िन्दगी को
गोश्त से, साग से, दाल से नापते हैं
महो साल से नापते हैं
अपना ही खून पीने लगे हैं
चाक दामनयां ग़म से सीने लगे हैं!

●●●

1. भांति
2. नेमत
3. विकृत

علی جواد زیدی

## ہولی

پہلے زمانہ اور تھا، مے اور تھی، دَور اور تھا
وہ بولیاں ہی اور تھیں، وہ ٹولیاں ہی اور تھیں، وہ ہولیاں ہی اور تھیں
لیکن مرے پیر مغاں!
کل تو نیا انداز تھا
اک دَور کا تھا خاتمہ، اک دَور کا آغاز تھا
تیرے وفاداروں نے جب کھیلیں گلابی ہولیاں
نکلے بنا کر ٹولیاں
ہنستے چلے، گاتے چلے
اپنے گلابی رنگ سے دنیا کو نہلاتے چلے
مسجد سے منہ موڑے ہوئے
مندر کا سنگِ آستاں چھوڑے ہوئے
گرجا سے کترائے ہوئے
جیسے کہ ہوں روحانیت کی زندگانی ہی سے گھبرائے ہوئے
دورِ وفاداری کا یہ انجام تھا
فکرِ گنہگاری کا تازہ دلربا پیغام تھا
تیرے ہی کوچے میں یہ سب عہدِ وفا توڑے گئے
رشتے نئے جوڑے گئے
اور پھر گنہگاروں نے کیا رندانہ ہنگامے کیے
اُس وقت ان کو یاد تھا بس ایک ترسانا ترا

अली जव्वाद ज़ैदी

## होली

पहले ज़माना और था, मय और थी दौर और था
वो बोलियां ही और थीं, वो टोलियां ही और थीं, वो होलियां ही और थीं
लेकिन मिरे पीरे मुग़ां[1] !
कल तो नया अंदाज़ था
इक दौर का था ख़ातिमा, इक दौर का आग़ाज़ था
तेरे वफ़ादारों ने जब खेलीं गुलाबी होलियां
निकले बनाकर टोलियां
हंसते चले, गाते चले
अपने गुलाबी रंग से दुनिया को नहलाते चले
मस्जिद से मुंह मोड़े हुए
मन्दिर का संगे आस्तां[2] छोड़े हुए
गिरजा से कतराए हुए
जैस कि हों रूहानियत[3] की ज़िन्दगानी ही से घबराये हुए
दौरे वफ़ादारी का यह अंजाम था
फ़िक्रे गुनहगारी का ताज़ा, दिलरुबा पैग़ाम था
तेरे ही कूचे में यह सब अहदे वफ़ा[4] तोड़े गए
रिश्ते नये जोड़े गए
और फिर गुनहगारों ने क्या रिंदाना[5] हंगामे किए
उस वक़्त उनको याद था बस एक तरसाना तिरा

1 शराब बेचने वाला, मुर्शिद, गुरू
2. ड्योढ़ी का पत्थर
3. अध्यात्मवाद
4. मुहब्बत के वादे
5. स्वच्छंदात्मक, मस्ताना

مفلس و ناداروں کو للچاتا ترا
جب میکدے کی گود میں
تیری جفا، تیری سزا کے نام پر ساغر چلے
سوکھے ہوئے کاسے لبالب بھر چلے
سب اپنے لب تر کر چلے
پھر توڑ دیں وہ پیالیاں جن میں سدا پی آئے تھے
شیشے چھنا چھن، چھن چھنا چھن ٹوٹتے
اور رند لذت لوٹتے
ٹوٹے ہوئے شیشوں کا اک انبار تھا
شیشوں کے اس انبار میں اک وہ بھی کہنہ جام تھا
جس کو سکندر کے قوی ہیکل جواں
بھاگے تھے پورس کی زمیں کو چھوڑ کر
ان میں وہ کاسے بھی تو ہیں جن کو عرب لے آئے تھے
اپنی عبا سے ڈھانپ کر
پینے سے پہلے دیکھتے تھے محتسب کو جھانک کر
لیکن کبھی
پینے سے باز آتے نہ تھے، فاتح جو تھے
ان میں ہیں ایسے جام بھی
جن پر پٹھانوں کی قوی ہاتھوں کے دھندلے سے نشاں
کچھ آج بھی موجود ہیں
اور ان نشانوں میں ہے خوں مفتوح ہندستان کا

मुफ़लिसो नादारों[1] को ललचाना तिरा
जब मयकदे[2] की गोद में
तेरी जफ़ा, तेरी सज़ा के नाम पर साग़र[3] चले
सूखे हुए कासे लबालब भर चले
सब अपने लब तर कर चले
फिर तोड़ दीं वो प्यालियां जिनमें सदा पी आये थे
शीशे छनाछन, छन छना छन टूटते
और रिंद[4] लज़्ज़त लूटते
टूटे हुए शीशों का इक अंबार था
शीशों के इस अंबार में इक वो भी कुह्ना जाम[5] था
जिसको सिकन्दर के क़वी हैकल जवां
भागे थे पोरस की ज़मीं को छोड़कर
उनमें वह कासे[6] भी तो हैं जिनको अरब ले आये थे
अपनी अबा[7] से ढांप कर
पीने से पहले देखते थे मुह्तसिब को झांक कर
लेकिन कभी
पीने से बाज़ आते न थे, फ़ातेह[8] जो थे
उनमें हैं ऐसे जाम भी
जिन पर पठानों के क़वी हाथों के धुंधले से निशां
कुछ आज भी मौजूद हैं
और इन निशानों में है ख़ूं मफ़्तूह[9] हिंदुस्तान का

1. निर्धन और दरिद्र
2. शराब ख़ाने
3. शराब का प्याला
4. शराबी
5. पुरानी शराब
6. प्याले
7. लम्बा चोग़ा
8. विजेता
9. पराजित

اور ان میں ہیں وہ جام بھی جن کو مغل لے آئے تھے
تاتار سے، قندھار سے، کابل سے، رُکنا باد سے
مفتوح ہندستان میں
جن کو وہ اپنے قصرِ عالیشان میں چھلکاتے رہے
تیغوں سے کھنکاتے رہے
اور وہ حسیں، نازک، سُبک، ہلکی صراحی کس کی ہے
پیرس کے میخانوں میں یہ مشہور تھی
لایا تھا اک تاجر اسے جو بعد میں فاتح بنا
یہ ہلکے شیشوں کے گلاس اور یہ نئے ہلکے سے پک
جن پر لکھا ہے "یہ بنے تھے ملک انگلستان میں"
اور حال کی صدیوں میں یہ چلتے رہے
پینے کو مل جاتی تھی پی لیتے تھے ہم
لیکن تبھی دتی کا یہ عالم تھا دل جلتے رہے
ہم آج گھبرا ہی گئے
اور ان سبھی شیشوں کو چکنا چور کر ڈالا وفورِ جوش میں
چھن چھن چھنا چھن توڑ کر
جیسے کہ بربادی کی دیوی چھم چھما چھم ناچتی
ہولی منانے کے لیے میخانے میں آ ہی گئی
ٹوٹے ہوئے شیشوں کے اس انبار پر
ہم نے جلائی آگ یوں
زردشت کا پاکیزہ دل سچائیوں پر ہنس دیا
جیسے کہ یہ کہنے لگا
"جلنے دو جلنے دو یونہی، شیشے پگھلنے دو یونہی"

और इनमें हैं वह जाम भी जिनको मुग़ल ले आये थे
तातार से, क़ंधार से, काबुल से, रुकनाबाद[1] से
मफ़्तूह हिंदुस्तान में
जिनको वो अपने क़स्रे आलीशान[2] में छलकाते रहे
तेग़ों[3] से खनकाते रहे
और वो हसीं, नाज़ुक, सुबुक[4], हल्की सुराही किस की है
पेरिस के मैख़ानों में यह मश्हूर थी
लाया था इक ताजिर[5] उसे जो बाद में फ़ातेह बना
ये हल्के शीशों के गिलास और ये नये हल्के से पा
जिन पर लिखा है "यह बने थे मुल्क इंगिलस्तान में"
और हाल की सदियों में ये चलते रहे
पीने को मिल जाती थी पी लेते थे हम
लेकिन तहीदस्ती[6] का ये आलम था दिल जलते रहे
हम आज घबरा ही गये
और उन सभी शीशों को चकनाचूर कर डाला वफ़ूरे जोश[7] में
छन छन छना छन तोड़कर
जैसे कि बरबादी की देवी छम छमा छम नाचती
होली मनाने के लिए मयख़ाने में आ ही गयी
टूटे हुए शीशों के उस अंबार पर
हमने जलाई आग यूं
ज़रदुश्त[8] का पाकीज़ा दिल सच्चाईयों पर हंस दिया
जैसे कि ये कहने लगा
"जलने दो, जलने दो, यूं ही, शीशे पिघलने दो यूं ही"

1. शीराज़ (ईरान में सैर करने की जगह)
2. आलीशान महल
3. तलवारों
4. हल्की
5. व्यापारी
6. कंगाली, ख़ाली हाथ होना
7. जोश की प्रचुरता
8. आग की पूजा करने वालों का पैग़म्बर

تیرے وفاداروں نے یوں پیرِ مغاں
شب بھر جلائیں ہولیاں
نعرے وہ مستانے لگے اس جوش میں
دل گر پڑے احساس کی آغوش میں
اور بول اٹھے ''تسلیم، اے پیرِ مغاں' جاتے ہیں ہم
کل پھر پلٹ کر آئیں گے
اس وقت اس میخانے میں سامان ہوں گے دوسرے
تیرے پرانے ذہن کے معیار توڑے جائیں گے
تعمیرِ نو کی جائے گی
لیکن ہمارے سال خوردہ، مہربان، پیر مغاں!
تجھ کو بُرا لگتا ہے کیوں؟
غیروں کا کیا، تیرا بھی کیا؟
یہ میکدہ ہم سب کا ہے پنچایتی
تو کیا ہے، تیرا خوف کیا؟
کہہ تو دیا، پیر مغاں! کل پھر پلٹ کر آئیں گے
ہرگز نہ ہم باز آئیں گے
کس کو ڈراتا ہے کہ تم اس کی سزا پا جاؤ گے
گاتے تھے ہم، گاتے ہیں ہم، گائیں گے ہم
ہرگز نہ باز آئیں گے ہم
جو عمر بھر پیتے جائیں گے
جھیلیں گے، جیتے جائیں گے
پیروں میں ہے زنجیر لیکن ٹوٹ بھی سکتی ہے یہ
ہاں آج ہستی قید ہے، کل چھوٹ بھی سکتی ہے یہ
گانے دے گانے دے ہمیں

तेरे वफ़ादारों ने यूं पीरे मुग़ां

शब भर[1] जलायीं होलियां

नारे वह मस्ताने लगे इस जोश में

दिल गिर पड़े एहसास की आग़ोश[2] में

और बोल उठे, "तस्लीम ऐ पीरे मुग़ां, जाते हैं हम

कल फिर पलट कर आयेंगे

उस वक़्त इस मयख़ाने में सामान होंगे दूसरे

तेरे पुराने ज़ेह्न के मेयार[3] तोड़े जायेंगे

तामीरे नौ[4] की जायेगी

लेकिन हमारे साल ख़ुर्दा[5], मेहरबां, पीरे मुग़ां!

तुझको बुरा लगता है क्यों?

ग़ैरों का क्या? तेरा भी क्या?

यह मैकदा हम सबका है पंचायती

तू क्या है तेरा ख़ौफ़ क्या?

कह तो दिया, पीरे मुग़ां! कल फिर पलटकर आयेंगे

हरगिज़ न हम बाज़ आयेंगे

किसको डराता है कि तुम इसकी सज़ा पा जाओगे

गाते थे हम, गाते हैं हम, गायेंगे हम

हरगिज़ न बाज़ आयेंगे हम

जो उम्र भर पीते थे पीते जायेंगे

झेलेंगे, जीते जायेंगे

पैरों में है ज़ंजीर लेकिन टूट भी सकती है ये

हां आज हस्ती[6] क़ैद है, कल छूट भी सकती है ये

गाने दे गाने दे हमें

1. रात भर
2. गोद
3. कसौटी
4. नई तामीर
5. बूढ़े
6. ज़िंदगी, अस्तित्व

دھوم میں مچانے دے ہمیں
شیشے کو شیشے سے لڑانے دے ہمیں
چھن چھن چھنا چھن کی صدا
بڑھنے دے، بڑھنے دے ابھی
ہم مست و بے خود، ناچتے، گاتے، جلاتے، توڑتے
ہنستے رہیں، چلتے رہیں
اور تو بھی خود پیرِ مغاں!
ہولی کے نغمے سُن ذرا اور دیکھ اپنی آنکھ سے
تیرے وفاداروں نے کیا کھیلیں گلابی ہولیاں"

منہ میکدے سے موڑ کر ہولی کی یہ ٹولی چلی
گلزار میں
سبزے لچکتی ڈالیاں، گنجان، سندر جھاڑیاں
پانی کی سینچی کیاریاں، کانٹوں میں چھپتی پتیاں
یہ سب سہی، لیکن یہاں وہ شے کہاں
جس کے لیے مشہور ہے انگور ناب
ہاں، کیا کہا پیرِ مغاں؟
تلووں کے نیچے پھول ہیں، ان میں سے دو اک چُن بھی لوں
"خالی ہیں گلدستے ترے"
تجھ کو نہیں معلوم ابھی
خالی یہ گلدستے ترے خالی ہی رہ جائیں گے اب
پھولوں نے ٹھانی ہے کہ شاخوں ہی پہ مرجھائیں گے اب
اور تیرے کمروں میں وہ نہ آئیں گے اب
منہ بند کلیاں اب کہاں؟
جو اپنی سندر، موہنی مسکان کر دیں رائیگاں

धूमें मचाने दे हमें
शीशे को शीशे से लड़ाने दे हमें
छन छन छना छन की सदा
बढ़ने दे, बढ़ने दे अभी
हम मस्तो बेख़ुद[1], नाचते, गाते, जलाते, तोड़ते
हंसते रहें, चलते रहें
और तू भी ख़ुद पीरे मुग़ां!
होली के नग़मे सुन ज़रा और देख अपनी आंख से
तेरे वफ़ादारों नें क्या खेलीं गुलाबी होलियां"

मुंह मैकदे से मोड़कर होली की ये टोली चली
गुलज़ार[2] में
सब्ज़े लचकती डालियां, गुंजान, सुंदर झाड़ियां
पानी की सींची क्यारियां, कांटों मैं चुभती पत्तियां
ये सब सही, लेकिन यहां वो शय[3] कहां
जिसके लिए मशहूर है अंगूरे नाब[4]
हां, क्या कहा पीरे मुग़ां?
तलुओं के नीचे फूल हैं, उनमें से दो इक चुन भी लूं
"ख़ाली हैं गुलदस्ते तिरे"
तुझको नहीं मालूम अभी
ख़ाली यह गुलदस्ते तिरे ख़ाली ही रह जायेंगे अब
फूलों ने ठानी है कि शाख़ों ही पे मुरझायेंगे अब
और तेरे कमरों में न वो आयेंगे अब
मुंह बंद कलियां अब कहां?
जो अपनी सुंदर, मोहिनी मुस्कान कर दें रायगां[5]

1. मस्त और बेसुध
2. बाग़
3. चीज़
4. असली अंगूर की शराब
5. बेकार

اور اپنا گلشن چھوڑ دیں، سینے میں خوشبوئیں لیے
اور اجنبی ماحول میں
طاقِ نظر کی کانپتی زینت بنیں
کلیوں کے منہ اب کھل چکے، منہ بند کلیاں اب کہاں
کلیاں کہاں، یہ پھول ہیں
خاکِ چمن کی گود میں آرام جاں یہ پھول ہیں
آتش زباں یہ پھول ہیں
اور دیکھ تو یہ پھول کتنے شوخ ہیں
جو ٹوٹ کر شاخوں سے گر جاتے ہیں تیری راہ میں
اے دلشکن پیر مغاں!
آ دیکھ ان کی ہمتیں
یہ چاہتے ہیں روک دیں گلزار میں راہیں تری
تیرے لیے چارہ ہی کیا اب رہ گیا
ان بے حیا پھولوں کی آنکھوں کا تو پانی بہہ گیا
اب ہیں یہ ان کی جراتیں روکیں گے تیرے راستے
تو بھی خدا کے واسطے
ان کو کچل دے، پیس دے
ورنہ خدا نہ خواستہ
یہ روک ہی لیں راستہ
کلیاں نہیں، کانٹے ہیں یہ
کانٹوں سے بھی بدتر ہیں یہ، نشتر ہیں یہ، خنجر ہیں یہ
گلزار میں تیرے قدم کچھ آج تو آئے نہیں
تو نے انھیں سبزوں پہ کی ہے مے کشی
صدیوں سے تیرا دَور ہے
گلزار پر ہے حق ترا

और अपना गुलशन छोड़ दें, सीने में खुश्बूयें लिये
और अजनबी माहौल में
ताके नज़र की कांपती ज़ीनत बनें
कलियों के मुंह अब खुल चुके, मुंह बंद कलियां अब कहां
कलियां कहां, ये फूल हैं
ख़ाके चमन की गोद में आरामे जां ये फूल हैं
आतिश ज़बां ये फूल हैं
और देख तो ये फूल कितने शोख़[1] हैं
जो टूटकर शाख़ों से गिर जाते हैं तेरी राहों में
ऐ दिलशिकन[2] पीरे मुग़ां!
आ देख इनकी हिम्मतें
यह चाहते हैं रोक दें गुलज़ार में राहें तिरी
तेरे लिए चारा[3] ही क्या अब रह गया
इन बेहया फूलों की आंखों का तो पानी बह गया
अब हैं ये उनकी जुरअतें, रोकेंगे तेरे रास्ते
तू भी खुदा के वास्ते
इनको कुचल दे, पीस दे
वरना खुदा नाख़्वास्ता[4]
ये रोक ही लें रास्ता
कलियां नहीं, कांटे हैं ये
कांटों से भी बद्तर हैं ये, नश्तर हैं ये, ख़ंजर हैं ये
गुलज़ार में तेरे क़दम कुछ आज तो आए नहीं
तूने इन्हीं सब्ज़ों पे की है मैकशी
सदियों से तेरा दौर है
गुलज़ार पर है हक़ तिरा

1. चंचल
2. दिल को तोड़ने वाले
3. उपाय
4. खुदा न करे

توڑ گیا ہو پیرِ مغاں
کتنا بھیانک خواب تھا
تعبیر کچھ بھی ہو مگر
تیرے وفاداروں نے کل
کس آن سے، کس بان سے، کس شان سے
کھیلیں گلابی ہولیاں

●

## بھولتی ہوئی یاد

تمہیں جب یاد کرتا ہوں تو اک مٹتی ہوئی دنیا
مری آنکھوں کے آئینے میں پہروں جھلملاتی ہے
کہیں دم گھٹ رہا ہے مسکراتے سرخ پھولوں کا
کہیں کلیوں کے سینے میں ہوا رُک رُک کے آتی ہے
کہیں کجلا گئے ہیں دن کے چمکائے ہوئے ذرّے
کہیں راتوں کی ہنستی روشنی غم میں نہاتی ہے
وہی دنیا جو کل تک دل کا دامن تھام لیتی تھی
اُسی دنیا کے ہر ذرّے میں اب بے التفاتی ہے
تمنّا اپنی ناکامی پہ کانپ اُٹھتی ہے یوں جیسے
بگولے میں کوئی سوکھی سی پتّی تھرتھراتی ہے
گھنے کہرے میں جیسے ڈھنکتے جاتے ہوں ہرے سبزے
یوں ہی بیتے دنوں کی شکل دھندلی پڑتی جاتی ہے
جوانی کی اندھیری رات آدھی بھی نہیں گزری
محبت کے دیئے کی لو ابھی سے تھرتھراتی ہے

●●●

तू डर गया, पीरे मुग़ां
कितना भयानक ख़्वाब था
ताबीर[1] कुछ भी हो मगर
तेरे वफ़ादारों ने कल
किस आन से, किस बान से, किस शान से
खेलीं गुलाबी होलियां

●

## भूलती हुई याद

तुम्हें जब याद करता हूं तो इक मिटती हुई दुनिया
मिरी आंखों के आईने में पहरों झिलमिलाती है
कहीं दम घुट रहा है मुस्कुराते सुर्ख़ फूलों का
कहीं कलियों के सीने में हवा रुक रुक के आती है
कहीं कजला गये हैं दिन के चमकाये हुये ज़र्रे[2]
कहीं रातों की हंसती रौशनी ग़म में नहाती है
वही दुनिया जो कल तक दिल का दामन थाम लेती थी
उसी दुनिया के हर ज़र्रे में अब बे इल्तिफ़ाती[3] है
तमन्ना अपनी नाकामी पे कांप उठती है यूं जैसे
बगूले[4] में कोई सूखी सी पत्ती थरथराती है
घने कुहरे में जैसे ढंकते जाते हों हरे सब्ज़े
यु ही बीते दिनों की शक्ल धुंधली पड़ती जाती है
जवानी की अंधेरी रात आधी भी नहीं गुज़री
मुहब्बत के दिये की लौ अभी से थरथराती है

●●●

1. स्वप्नफल
2. कण
3. बेतवज्जुही
4. बवंडर

# کیفی اعظمی

## ابنِ مریم

تم خدا ہو
خدا کے بیٹے ہو
یا فقط امن کے پیمبر ہو
یا کسی کا حسیں تخیل ہو
جو بھی ہو مجھ کو اچھے لگتے ہو
مجھ کو سچے لگتے ہو
اس ستارے میں جس میں صدیوں کے
جھوٹ اور کذب کا اندھیرا ہے
اس ستارے میں، جس کو ہر رُخ سے
رینگتی سرحدوں نے گھیرا ہے
اس ستارے میں، جس کی آبادی
امن بوتی ہے جنگ کاٹتی ہے
رات پیتی ہے نور مکھڑوں کا
صبح سینوں کا خون چاٹتی ہے
تم نہ ہوتے تو جانے کیا ہوتا
تم نہ ہوتے تو اس ستارے میں
دیوتا، راکشس، غلام، امام
پارسا، رند، راہ بر، رہزن
برہمن، شیخ، پادری، بھکشو

## कैफ़ी आज़मी

### इब्ने मर्यम [1]

तुम खुदा हो
खुदा के बेटे हो
या फ़क़त अम्न के पयम्बर हो
या किसी का हसीं तख़ैयुल[2] हो
जो भी हो मुझको अच्छे लगते हो
मुझको सच्चे लगते हो
इस सितारे[3] में जिसमें सदियों के
झूट और किज़्ब का अंधेरा है
इस सितारे में, जिसको हर रुख़ से
रेंगती सरहदों ने घेरा है
इस सितारे में, जिसकी आबादी
अम्न बोती है जंग काटती है
रात पीती है नूर मुखड़ों का
सुब्ह सीनों का खून चाटती है
तुम न होते तो जाने क्या होता
तुम न होते तो इस सितारे में
देवता, राक्षस, गुलाम, इमाम
पारसा[4], रिन्द[5], राहबर[6], रहज़न[7]
ब्रह्मण, शैख़, पादरी, भिक्षु

1. मर्यम का बेटा (ईसा मसीह)
2. विचार में लाना
3. धरती
4. नेक
5. शराबी
6. राह दिखाने वाला
7. डाकू

سبھی ہوتے مگر ہمارے لیے
کون چڑھتا خوشی سے سولی پر

جھونپڑوں میں گھرا یہ ویرانہ
مچھلیاں دن میں سوکھتی ہیں جہاں
بلّیاں دور بیٹھی رہتی ہیں
اور خارش زدہ سے کچھ کتے
لیٹے رہتے ہیں بے نیازانہ
دُم مروڑے کہ کوئی سر کچلے
کاٹنا کیا وہ بھونکتے بھی نہیں

اور جب وہ دہکتا انگارہ
چھن سے ساگر میں ڈوب جاتا ہے
تیرگی اوڑھ لیتی ہے دنیا
کشتیاں کچھ کنارے آتی ہیں
بھنگ، گانجا، چرس، شراب، افیون
جو بھی لائیں جہاں سے بھی لائیں
دوڑتے ہیں اِدھر سے کچھ سایے
اور سب کچھ اُتار لاتے ہیں
گاڑی جاتی ہے عدل کی میزان
جس کا حصہ اُسی کو ملتا ہے
یہاں خطرہ نہیں خیانت کا
تم یہاں کیوں کھڑے ہو مدت سے
یہ تمھاری تھکی تھکی بھیڑیں
رات جن کوزمیں کے سینے پر

सभी होते मगर हमारे लिए
कौन चढ़ता ख़ुशी से सूली पर

झोंपड़ों में घिरा यह वीराना
मछलियां दिन में सूखती हैं जहां
बिल्लियां दूर बैठी रहती हैं
और ख़ारिशज़दा[1] से कुछ कुत्ते
लेटे रहते हैं बेनियाज़ाना[2]
दुम मरोड़े कि कोई सर कुचले
काटना क्या वो भौंकते भी नहीं

और जब वो दहकता अंगारा[3]
छत्र से सागर में डूब जाता है
तीरगी ओढ़ लेती है दुनिया
कश्तियां कुछ किनारे आती हैं
भंग, गांजा, चरस, शराब, अफ़्यून
जो भी लायें जहां से भी लायें
दौड़ते हैं इधर से कुछ साये
और सब कुछ उतार लाते हैं
गाड़ी जाती है अद्ल[4] की मीज़ान[5]
जिसका हिस्सा उसी को मिलता है
यहां ख़तरा नहीं ख़ियानत[6] का
तुम यहां क्यों खड़े हो मुद्दत से
ये तुम्हारी थकी थकी भेड़ें
रात जिनको ज़मीं के सीने पर

1. खुजली वाला
2. जिसे कुछ लेने देने की इच्छा न हो
3. यहां मुराद सूरज से है
4. इंसाफ़, न्याय
5. तराज़ू
6. ग़बन

صبح ہوتے اُنڈیل دیتی ہے
منڈیوں، دفتروں، ملوں کی طرف
ہانک دیتی، دھکیل دیتی ہے
راستے میں یہ رُک نہیں سکتیں
توڑ کے گھٹنے جھک نہیں سکتیں
ان سے تم کیا توقع رکھتے ہو
بھیڑیا ان کے ساتھ چلتا ہے

تکتے رہتے ہو اس سڑک کی طرف
دفن جس میں کئی کہانیاں ہیں
دفن جن میں کئی جوانیاں ہیں
جس پہ اک ساتھ بھاگی پھرتی ہیں
خالی جیبیں بھی اور تجوریاں بھی
جانے کس کا ہے انتظار تمھیں

مجھ کو دیکھو کہ میں وہی تو ہوں
جس کو کوڑوں کی چھاؤں میں دنیا
بیچتی بھی خریدتی بھی تھی
مجھ کو دیکھو کہ میں وہی تو ہوں
جس کو کھیتوں سے ایسے باندھا تھا
جیسے میں ان کا ایک حصہ تھا
کھیت بکتے تو میں بھی بکتا تھا
مجھ کو دیکھو کہ میں وہی تو ہوں
کچھ مشینیں بنائیں جب میں نے
اُن مشینوں کے مالکوں نے مجھے
بے جھجک ان میں ایسے جھونک دیا

सुब्ह होते उंडेल देती है
मंडियों, दफ़्तरों, मिलों की तरफ़
हांक देती, धकेल देती है
रास्तें में ये रुक नहीं सकतीं
तोड़ के घुटने झुक नहीं सकतीं
इनसे तुम क्या तवक़्क़ो[1] रखते हो
भेड़िया इनके साथ चलता है

तकते रहते हो उस सड़क की तरफ़
दफ़्न जिसमें कई कहानियां हैं
दफ़्न जिनमें कई जवानियां हैं
जिसपे इक साथ भागी फिरती है
ख़ाली जेबें भी और तिजोरियां भी
जाने किसका है इंतिज़ार तुम्हें

मुझको देखो कि मैं वही तो हूं
जिसको कोड़ों की छांव में दुनिया
बेचती भी ख़रीदती भी थी
मुझको देखो कि मैं वही तो हूं
जिसको खेतों से ऐसे बांधा था
जैसे मैं इनका एक हिस्सा था
खेत बिकते तो मैं भी बिकता था
मुझको देखो कि मैं वही तो हूं
कुछ मशीनें बनाई जब मैं ने
उन मशीनों के मालिकों ने मुझे
बेझिझक उनमें ऐसे झोंक दिया

1. आशा

جیسے میں کچھ نہیں ہوں ایندھن ہوں

مجھ کو دیکھو کہ میں تھکا ہارا
پھر رہا ہوں جگنوں سے آوارہ
تم یہاں سے ہٹو تو آج کی رات
سو رہوں میں اسی چبوترے پر

تم یہاں سے ہٹو خدا کے لیے
جاؤ وہ ویتنام کے جنگل
اُس کے مصلوب شہر، زخمی گاؤں
جن کو انجیل پڑھنے والوں نے
روند ڈالا ہے پھونک ڈالا ہے
جانے کب سے پکارتے ہیں تمھیں

جاؤ اک بار پھر ہمارے لیے
تم کو چڑھنا پڑے گا سولی پر

●

## مکان

آج کی رات بہت گرم ہوا چلتی ہے
آج کی رات نہ فٹ پاتھ پہ نیند آئے گی
سب اُٹھو، میں بھی اُٹھوں، تم بھی اُٹھو، تم بھی اُٹھو
کوئی کھڑکی اسی دیوار میں کھل جائے گی

یہ زمیں تب بھی نگل لینے پہ آمادہ تھی
پاؤں جب ٹوٹتی شاخوں سے اتارے ہم نے

जैसे मैं कुछ नही हूं ईंधन हूं

मुझको देखो कि मैं थका हारा
फिर रहा हूं जुगों से आवारा
तुम यहां से हटो तो आज की रात
सो रहूं मैं इसी चबूतरे पर

तुम यहां से हटो खुदा के लिए
जाओ वो वियत्नाम के जंगल
उसके मस्लूब[1] शह्र, ज़ख़्मी गांव
जिनको इंजील पढ़ने वालों ने
रौंद डाला है फूंक डाला है
जाने कब से पुकारते हैं तुम्हें

जाओ इक बार फिर हमारे लिये
तुमको चढ़ना पड़ेगा सूली पर

●

## मकान

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आएगी
सब उठो, मैं भी उठूं, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी

ये ज़मीं तब भी निगल लेने पे आमादा थी
पांव जब टूटती शाख़ों से उतारे हम ने

1. सूली पर चढ़ाये गये

ان مکانوں کو خبر ہے نہ مکینوں کو خبر
اُن دنوں کی جو گپھاؤں میں گزارے ہم نے

ہاتھ ڈھلتے گئے سانچے میں تو تھکتے کیسے
نقش کے بعد نئے نقش نکھارے ہم نے
کی یہ دیوار بلند، اور بلند، اور بلند
بام و در اور، ذرا اور سنوارے ہم نے

آندھیاں توڑ لیا کرتی تھیں شمعوں کی لویں
جڑ دیے اس لیے بجلی کے ستارے ہم نے
بن گیا قصر تو پہرے پہ کوئی بیٹھ گیا
سو رہے خاک پہ ہم شورشِ تعمیر لیے

اپنی نس نس میں لئے محنتِ پیہم کی تھکن
بند آنکھوں میں اِسی قصر کی تصویر لیے
دن پگھلتا ہے اسی طرح سروں پر اب تک
رات آنکھوں میں کھٹکتی ہے سیہ تیر لیے

آج کی رات بہت گرم ہوا چلتی ہے
آج کی رات نہ فٹ پاتھ پہ نیند آئے گی
سب اُٹھو، میں بھی اُٹھوں، تم بھی اُٹھو، تم بھی اُٹھو
کوئی کھڑکی اِسی دیوار میں کھل جائے گی

●

## آوارہ سجدے

(کمیونسٹ اکائی کے ٹوٹنے پر)

ایک یہی سوزِ نہاں کُل مرا سرمایہ ہے
دوستوں میں کسے یہ سوزِ نہاں نذر کروں

उन मकानों को ख़बर है न मकीनों को ख़बर
उन दिनों की जो गुफाओं में गुज़ारे हमने

हाथ ढलते गये सांचे में तो थकते कैसे
नक़्श के बाद नये नक़्श निखारे हमने
की ये दीवार बलन्द, और बलन्द, और बलन्द
बामो दर[1] और, ज़रा और संवारे हमने

आंधियां तोड़ लिया करती थीं शम्मओं की लवें
जड़ दिये इसलिए बिजली के सितारे हमने
बन गया क़स्र[2] तो पहरे पे कोई बैठ गया
सो रहे ख़ाक पे हम शोरिशे तामीर लिये

अपनी नस नस में लिये मेहनते पैहम[3] की थकन
बन्द आंखों में इसी क़स्र की तस्वीर लिए
दिन पिघलता है इसी तरह सरों पे अब तक
रात आंखों में खटकती है सियह तीर लिए

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आएगी
सब उठो, मैं भी उठूं, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी

●

## आवारा सज्दे

(कम्युनिस्ट इकाई के टूटने पर)

इक यही सोज़े निहां[4] कुल मेरा सरमाया है
दोस्तो मैं किसे यह सोज़े निहां नज़्र करूं

1. छत और दरवाज़े
2. महल
3. लगातार मेहनत
4. छुपा हुआ दर्द या जलन

کوئی قاتل سرِ مقتل نظر آتا ہی نہیں
کس کو دل نذر کروں اور کسے جاں نذر کروں

تم بھی محبوب مرے، تم بھی ہو دلدار مرے
آشنا مجھ سے مگر تم بھی نہیں، تم بھی نہیں

ختم ہے تم پہ مسیحا نفسی، چارہ گری
محرمِ دردِ جگر تم بھی نہیں، تم بھی نہیں

اپنی لاش آپ اٹھانا کوئی آسان نہیں
دست و بازو مرے ناکارہ ہوئے جاتے ہیں

جن سے ہر دور میں چمکی ہے تمہاری دہلیز
آج سجدے وہی آوارہ ہوئے جاتے ہیں

دُور منزل تھی، مگر ایسی بھی کچھ دُور نہ تھی
لے کے پھرتی رہی رستے ہی میں وحشت مجھ کو

ایک زخم ایسا نہ کھایا کہ بہار آ جاتی
دار تک لے کے گیا شوقِ شہادت مجھ کو

راہ میں ٹوٹ گئے پاؤں تو معلوم ہوا
جُز مرے اور میرا راہ نما کوئی نہیں

ایک کے بعد خدا ایک چلا آتا تھا
کہہ دیا عقل نے تنگ آ کے خدا کوئی نہیں

●

## دائرہ

روز بڑھتا ہوں جہاں سے آگے
پھر وہیں لوٹ کے آ جاتا ہوں
بار ہا توڑ چکا ہوں جن کو

कोई क़ातिल सरे मक़्तल नज़र आता ही नहीं
किसको दिल नज़्र करूं और किसे जां नज़्र करूं
तुम भी महबूब मिरे, तमु भी हो दिलदार मिरे
आशना[1] मुझसे मगर तुम भी नहीं, तुम भी नहीं
ख़त्म है तुम पे मसीहा नफ़्सी[2], चारागरी[3]
महरमे दर्दे जिगर तुम भी नहीं, तुम भी नहीं
अपनी लाश आप उठाना कोई आसान नहीं
दस्तो बाज़ू मिरे नाकारा हुए जाते हैं
जिनसे हर दौर में चमकी है तुम्हारी दहलीज़[4]
आज सज्दे वही आवारा हुए जाते हैं
दूर मंज़िल थी, मगर ऐसी भी कुछ दूर न थी
लेके फिरती रही रस्ते ही में वहशत मुझको
एक ज़ख़्म ऐसा न खाया कि बहार आ जाती
दार[5] तक ले के गया शौक़े शहादत मुझको
राह में टूट गये पांव तो मालूम हुआ
जुज़ मिरे और मेरा राहनुमा कोई नहीं
एक के बाद ख़ुदा एक चला आता था
कह दिया अक़्ल ने तंग आके ख़ुदा कोई नहीं

●

## दाइरा[6]

रोज़ बढ़ता हूं जहां से आगे
फिर वहीं लौट के आ जाता हूं
बारहा तोड़ चुका हूं जिनको

1. परिचित
2. बीमार को अच्छा करने, और मुर्दे को ज़िन्दा करने की विशेषता
3. इलाज
4. चौखट
5. सूली
6. गोलाकार, वृत्त

انہیں دیواروں سے ٹکراتا ہوں
روز بستے ہیں کئی شہر نئے
روز دھرتی میں سما جاتے ہیں
زلزلوں میں تھی ذرا سی گرمی
وہ بھی اب روز ہی آ جاتے ہیں

جسم سے روح تلک ریت ہی ریت
نہ کہیں دھوپ، نہ سایہ، نہ سراب
کتنے ارمان ہیں کس صحرا میں
کون رکھتا ہے مزاروں کا حساب
نبض بجھتی بھی بھڑکتی بھی ہے
دل کا معمول ہے گھبرانا بھی
رات اندھیرے نے اندھیرے سے کہا
ایک عادت ہے جیئے جانا بھی

قوس اک رنگ کی ہوتی ہے طلوع
ایک ہی چال بھی پیمانے کی
گوشے گوشے میں کھڑی ہے مسجد
شکل کیا ہو گئی میخانے کی
کوئی کہتا تھا سمندر ہوں میں
اور مری جیب میں قطرہ بھی نہیں
خیریت اپنی لکھا کرتا ہوں
اب تو تقدیر میں خطرہ بھی نہیں
اپنے ہاتھوں کو پڑھا کرتا ہوں
کبھی قرآں، کبھی گیتا کی طرح

उन्हीं दीवारों से टकराता हूं
रोज़ बसते हैं कई शह्र नये
रोज़ धरती में समा जाते हैं
ज़लज़लों[1] में थी ज़रा सी गर्मी
वो भी अब रोज़ ही आ जाते हैं

जिस्म से रूह तलक रेत ही रेत
न कहीं धूप, न साया, न सराब[2]
कितने अरमान हैं किस सह्रा में
कौन रखता है मज़ारों का हिसाब
नब्ज़ बुझती भी भड़कती भी है
दिल का मा'मूल है घबराना भी
रात अंधेरे ने अंधेरे से कहा
एक आदत है जिए जाना भी

क़ौस[3] इक रंग की होती है तुलूअ[4]
एक ही चाल भी पैमाने की
गोशे गोशे में खड़ी है मस्जिद
शक्ल क्या हो गयी मैख़ाने की
कोई कहता था समुन्दर हूं मैं
और मिरी जेब में क़तरा भी नहीं
ख़ैरियत अपनी लिखा करता हूं
अब तो तक़दीर में ख़तरा भी नहीं
अपने हाथों को पढ़ा करता हूं
कभी कुरआं, कभी गीता की तरह

1. भूकम्पां 2. मृग तृष्णा
3. आसमान का नौवां बुर्ज जो कमान की तरह दिखाई देता है
4. निकलना, उदय

چند ریکھاؤں میں سیماؤں میں
زندگی قید ہے سیتا کی طرح
رام کب لوٹیں گے، معلوم نہیں
کاش راون ہی کوئی آ جاتا

●

## انتشار

کبھی جمود کبھی صرف انتشار سا ہے
جہاں کو اپنی تباہی کا انتظار سا ہے
منو کی مچھلی، نہ کشتیِ نوح اور یہ فضا
کہ قطرے قطرے میں طوفان بے قرار سا ہے
میں کس کو اپنے گریباں کا چاک دکھلاؤں
کہ آج دامنِ یزداں بھی تار تار سا ہے
سجا سنوار کے جس کو ہزار ناز کیے
اُسی پہ خالقِ کونین شرمسار سا ہے
تمام جسم ہے بیدار، فکر خوابیدہ
دماغ پچھلے زمانے کی یادگار سا ہے
سب اپنے پاؤں پہ رکھ رکھ کے پاؤں چلتے ہیں
خود اپنے دوش پہ ہر آدمی سوار سا ہے
جسے پکاریئے ملتا ہے اک کھنڈر سے جواب
جسے بھی دیکھئے ماضی کا اشتہار سا ہے

चन्द रेखाओं में सीमाओं में
ज़िन्दगी क़ैद है सीता की तरह
राम कब लौटेंगे, मालूम नहीं
काश रावन[1] ही कोई आ जाता

●

## इंतिशार[2]

कभी जुमूद[3] कभी सिर्फ़ इंतिशार सा है
जहां को अपनी तबाही का इंतिज़ार सा है
मनु की मछली, न कश्तिए नूह और ये फ़ज़ा
कि क़तरे क़तरे में तूफ़ान बेक़रार सा है
मैं किसको अपने ग़रीबां का चाक[4] दिखलाऊं
कि आज दामने यज़्दां[5] भी तार तार सा है
सजा संवार के जिसको हज़ार नाज़ किये
उसी पे ख़ालिक़े कौनेन[6] शर्मसार[7] सा है
तमाम जिस्म है बेदार, फ़िक्र ख़्वाबीदा[8]
दिमाग़ पिछले ज़माने की यादगार सा है
सब अपने पांव पे रख रख के पांव चलते हैं
ख़ुद अपने दोश[9] पे हर आदमी सवार सा है
जिसे पुकारिए मिलता है इक खंडर से जवाब
जिसे भी देखिए माज़ी[10] का इश्तिहार[11] सा है

1. रावण
2. व्यस्तता, बिखराव
3. जम जाना
4. फटना या फटा हुआ
5. खुदा
6. दोनों जहां का पैदा करने वाला
7. शर्मिन्दा
8. सोई हुई
9. कंधों
10. भूतकाल
11. विज्ञापन

ہوئی تو کیسے بیاباں میں آ کے شام ہوئی
کہ جو مزار یہاں ہے مرا مزار سا ہے
کوئی تو سُود چکائے کوئی تو ذمہ لے
اُس انقلاب کا جو آج تک اُدھار سا ہے

●

## زندگی

آج اندھیرا میری نس نس میں اُتر جائے گا
آنکھیں بجھ جائیں گی، بجھ جائیں گے احساس وشعور
اور یہ صدیوں سے جلتا سا سلگتا سا وجود
اس سے پہلے کہ سحر ماتھے پہ شبنم چھڑکے
اس سے پہلے کہ مری بیٹی کے وہ پھول سے ہاتھ
گرم رخسار کو ٹھنڈک بخشیں
اس سے پہلے کہ مرے بیٹے کا مضبوط بدن
تنِ مفلوج میں شکتی بھر دے
اس سے پہلے کہ مری بیوی کے ہونٹ
میرے ہونٹوں کی تپش پی جائیں
راکھ ہو جائے گا جلتے جلتے
اور پھر راکھ بکھر جائے گی

زندگی کہنے کو بے مایہ سہی
غم کا سرمایہ سہی
میں نے اس کے لئے کیا کیا نہ کیا
کبھی آسانی سے اِک سانس بھی یم راج کو اپنا نہ دیا

हुई तो कैसे बयाबां में आके शाम हुई
कि जो मज़ार यहां है मिरा मज़ार सा है
कोई तो सूद चुकाए कोई तो ज़िम्मा ले
उस इन्क़िलाब का जो आज तक उधार सा है

●

## ज़िन्दगी

आज अंधेरा मेरी नस नस में उतर जायेगा
आंखें बुझ जायेंगी, बुझ जायेंगे एहसासो शऊर[1]
और ये सदियों से जलता सा सुलगता सा वुजूद[2]
इससे पहले के सहर[3] माथे पे शबनम छिड़के
इससे पहले कि मिरी बेटी के वो फूल से हाथ
गर्म रुख़्सार को ठंडक बख़्शें
इससे पहले कि मिरे बेटे का मज़्बूत बदन
तने मफ़्लूज[4] में शक्ति भर दे
इससे पहले कि मिरी बीवी के होंट
मेरे होंटों की तपिश पी जायें
राख हो जायेगा जलते जलते
और फिर राख बिखर जायेगी

ज़िन्दगी कहने को बेमाया सही
ग़म का सरमाया सही
मैंने इसके लिए क्या क्या न किया
कभी आसानी से इक सांस भी यमराज को अपना न दिया

1. भावना एवं विवेक
2. अस्तित्व
3. सुबह
4. अपाहिज

آج سے پہلے بہت پہلے
اسی آنگن میں
دھوپ بھرے دامن میں
میں کھڑا تھا مرے تلووں سے دھواں اٹھتا تھا
ایک بے نام سا بے رنگ سا خوف
کچے احساس پہ چھایا تھا کہ جل جاؤں گا
میں پگھل جاؤں گا
اور پگھل کر مرا کمزور سا ''میں''
قطرہ قطرہ مرے ماتھے سے ٹپک جائے گا
رو رہا تھا مگر اشکوں کے بغیر
چیختا تھا مگر آواز نہ تھی
موت لہراتی تھی سو شکلوں میں
میں نے ہر شکل کو گھبرا کے خدا مان لیا
کاٹ کے رکھ دیے صندل کے پُر اسرار درخت
اور پتھر سے نکالا شعلہ
اور روشن کیا اپنے سے بڑا ایک الاؤ
جانور ذبح کیے اتنے کہ خوں کی لہریں
پاؤں سے اُٹھ کے کمر تک آئیں
اور کمر سے مرے سر تک آئیں

سوم رس مَیں نے پیا
رات دن رقص کیا
ناچتے ناچتے تلوے مرے خوں دینے لگے
مرے اعضا کی تھکن
بن گئی کانپتے ہونٹوں پہ بھجن

आज से पहले, बहुत पहले
इसी आंगन में
धूप भरे दामन में
मैं खड़ा था, मिरे तलवों से धुआं उठता था
एक बेनाम सा बेरंग सा ख़ौफ़
कच्चे एहसास पे छाया था कि जल जाऊंगा
मैं पिघल जाऊंगा
और पिघल कर मिरा कमज़ोर सा "मैं"
क़तरा क़तरा मिरे माथे से टपक जायेगा
रो रहा था मगर अश्कों[1] के बग़ैर
चीख़ता था मगर आवाज़ न थी
मौत लहराती थी सौ शक्लों में
मैं ने हर शक्ल को घबरा के ख़ुदा मान लिया
काट के रख दिये सन्दल के पुरअसार दरख़्त
और पत्थर से निकाला शोला
और रौशन किया अपने से बड़ा एक अलाव
जानवर ज़िब्ह किये इतने कि ख़ूं की लहरें
पांव से उठ के कमर तक आयीं
और कमर से मिरे सर तक आयीं

सोमरस मैंने पिया
रात दिन रक़्स किया
नाचते नाचते तलवे मिरे ख़ूं देने लगे
मेरे आज़ा[2] की थकन
बन गई कांपते होंटों पे भजन

1. आंसुओं
2. अंगों

ہڈیاں میری چٹخنے لگیں ایندھن کی طرح
منتر ہونٹوں سے ٹپکنے لگے روغن کی طرح
''اگنی ماتا مری اگنی ماتا
سوکھی لکڑی کے یہ بھاری کندے
جو تری بھینٹ کو لے آیا ہوں
اُن کو سویکار کر اور ایسے دھدھک
کہ مچلتے شعلے کھینچ لیں جوش میں
سورج کی سنہری زلفیں
آگ میں آگ ملے
جو امر کر دے مجھے
ایسا کوئی راگ ملے''

اگنی ماں سے بھی نہ جینے کی سند جب پائی
زندگی کے نئے امکان نے لی انگڑائی
اور کانوں میں کہیں دور سے آواز آئی
بدھم شرنم گچھامی
دھمم شرنم گچھامی
سنگھم شرنم گچھامی
چار ابرو کا صفایا کر کے
بے سلے وستر سے ڈھانپا یہ بدن
پونچھ کے پتنی کے ماتھے سے دمکتی بندیا
سوتے بچوں کو بنا پیار کیے
چل پڑا ہاتھ میں کشکول لیے
چاہتا تھا کہیں بھکشا ہی میں جیون مل جائے
جو کبھی بند نہ ہو دل کو وہ دھڑکن مل جائے

हड्डियां मेरी चटख़ने लगीं ईंधन की तरह
मंत्र होंटों से टपकने लगे रौग़न की तरह
"अग्नि माता मिरी अग्नि माता
सूखी लकड़ी के ये भारी कुन्दे
जो तिरी भेंट को ले आया हूं
उनको स्वीकार कर और ऐसे धधक
कि मचलते शोले खींच लें जोश में
सूरज की सुनहरी जुल्फ़ें
आग में आग मिले
जो अमर कर दे मुझे
ऐसा कोई राग मिले"

अग्नि मां से भी न जीने की सनद जब पाई
ज़िन्दगी के नए इमकान[1] ने ली अंगड़ाई
और कानों में कहीं दूर से आवाज़ आई
बुद्धम् शरणम् गच्छामि
धम्मम् शरणम् गच्छामि
संघम् शरणम् गच्छामि
चार अबरू का सफ़ाया करके
बेसिले वस्त्र से ढांपा ये बदन
पोंछ के पत्नी के माथे से दमकती बिन्दिया
सोते बच्चों को बिना प्यार किये
चल पड़ा हाथ में कश्कोल[2] लिये
चाहता था कहीं भिक्शा[3] ही में जीवन मिल जाये
जो कभी बंद न हो दिल को वो धड़कन मिल जाये

1. संभावना
2. भिक्षा-पात्र
3. भिक्षा

مجھ کو بھکشا میں مگر زہر ملا
ہونٹ تھرّانے لگے جیسے کرے کوئی گلہ
جھک کے سولی سے اسی وقت کسی نے یہ کہا
تیرے اِک گال پہ جس پَل کوئی تھپڑ مارے
دوسرا گال بھی آگے کر دے
تیری دنیا میں بہت ہنسا ہے
اس کے سینے میں اہنسا بھر دے
کہ یہ جینے کا طریقہ بھی ہے انداز بھی ہے
تیری آواز بھی ہے، میری آواز بھی ہے
مَیں اُٹھا جس کو اہنسا کا سبق سکھلانے
مجھ کو لٹکا دیا سولی پہ اُسی دنیا نے

آ رہا تھا میں کئی کوچوں سے ٹھوکر کھا کر
ایک آواز نے روکا مجھ کو
کسی مینار سے نیچے آ کر
اللہ اکبر، اللہ اکبر
ہوا دل کو یہ گماں
کہ یہ پر جوش اذاں
موت سے دے گی اماں
پھر تو پہنچا میں جہاں
میں نے دوہرائی کچھ ایسے یہ اذاں
گونج اُٹھا سارا جہاں
اللہ اکبر، اللہ اکبر
اسی آواز میں اک اور بھی گونجا اعلان
کلّ من علیہا فان
اک طرف ڈھل گیا خورشید جہاں تاب کا سر

मुझको भिक्शा में मगर ज़ह्र मिला
होंट थर्राने लगे जैसे करे कोई गिला
झुक के सूली से उसी वक़्त किसी ने ये कहा
तेरे इक गाल पे जिस पल कोई थप्पड़ मारे
दूसरा गाल भी आगे कर दे
तेरी दुनिया में बहुत हिंसा है
उसके सीने में अहिंसा भर दे
कि ये जीने का तरीक़ा भी है अंदाज़ भी है
तेरी आवाज़ भी है, मेरी आवाज़ भी है
मैं उठा जिसको अहिंसा का सबक़ सिखलाने
मुझ को लटका दिया सूली पे उसी दुनिया ने

आ रहा था मैं कई कूचों से ठोकर खाकर
एक आवाज़ ने रोका मुझ को
किसी मीनार से नीचे आकर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
हुआ दिल को ये गुमां
कि ये पुर्जोश अज़ां
मौत से देगी अमां
फिर तो पहुंचा मैं जहां
मैं ने दुहराई कुछ ऐसे यह अज़ां
गूंज उठा सारा जहां
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
इसी आवाज़ में इक और भी गूंजा एलान
कुल्लो मन अलैहा फ़ान[1]
इक तरफ़ ढल गया ख़ुर्शीदे-जहां-ताब[2] का सर

1. सब एक को फ़ना होना है 2. दुनिया को रौशनी देने वाला सूरज

ہوا فالج کا اثر
پھٹ گئی نس کوئی شریانوں میں خوں جم سا گیا
ہو گیا زخمی دماغ
ایسا لگتا تھا کہ بجھ جائے گا جلتا ہے جو صدیوں سے چراغ
آج اندھیرا مری نس نس میں اُتر جائے گا
یہ سمندر جو بڑی دیر سے طوفانی تھا
ایسا تڑپا کہ مرے کمرے کے اندر آیا
آتے آتے وہ مرے واسطے امرت لایا
اور لہرا کے کہا
شیو نے یہ بھجوایا ہے لو پیو اور
آج شیو علم ہے، امرت ہے عمل
اب وہ آساں ہے جو دشوار تھا کل
رات جو موت کا پیغام لیے آئی تھی
بیوی بچوں نے مرے
اس کو کھڑکی سے پرے پھینک دیا
اور جو وہ زہر کا اک جام لیے آئی تھی
اس نے وہ خود ہی پیا
صبح اتری جو سمندر میں نہانے کے لیے
رات کی لاش ملی پانی میں

●●●

हुआ फ़ालिज का असर
फट गई नस कोई शिरयानों[1] में ख़ूं जम सा गया
हो गया ज़ख़्मी दिमाग़
ऐसा लगता था कि बुझ जायेगा जलता है जो सदियों से चराग़
आज अंधेरा मिरी नस नस में उतर जायेगा
ये समुन्दर जो बड़ी देर से तूफ़ानी था
ऐसा तड़पा कि मिरे कमरे के अन्दर आया
आते आते वो मिरे वास्ते अमृत लाया
और लहरा के कहा
शिव ने यह भिजवाया है लो पियो और
आज शिव इल्म है, अमृत है अमल
अब वो आसां है जो दुश्वार था कल
रात जो मौत का पैग़ाम लिये आई थी
बीवी बच्चों ने मेरे
इसको खिड़की से परे फेंक दिया
और जो वो ज़हर का इक जाम लिये आई थी
उसने वो ख़ुद ही पिया
सुब्ह उतरी जो समुन्दर में नहाने के लिये
रात की लाश मिली पानी में

●●●

1. शिरों

خورشیدالاسلام

## پیاس

دور سے چل کے آیا تھا میں ننگے پاؤں ننگے سر
سر میں گرد، زباں میں کانٹے، پاؤں میں چھالے، ہوش تھے گم
اتنا پیاسا تھا میں اس دن جتنا چاہ کا مارا ہو
چاہ کا مارا وہ بھی ایسا جس نے چاہ نہ دیکھی ہو

اتنے میں کیا دیکھا میں نے، ایک کنواں ہے ستھرا سا
جس کی من ہے پکّی اونچی، جس پر چھاؤں ہے پیڑوں کی
چڑھ کر من پر جھانکا میں نے جوشِ طلب کی مستی میں
کتنا گہرا، اتنا گہرا، جتنی ہجر کی پہلی رات
کیسا اندھا، ایسا اندھا، جیسی قبر کی پہلی رات

کنکر لے کے پھینکا تہہ میں
پانی کی آواز نہ آئی
اس کا دل بھی خالی تھا

●

## نئی مریم

کیسی توانا، کیسی چنچل، کتنی شوخ اور کیا بیباک
کیسی اُمنگیں، کیسی ترنگیں، کتنی صاف اور کیسی پاک
ہوش کی باتیں، شوق کی گھاتیں، جوشِ جوانی سینہ چاک

## ख़ुर्शीदुल इस्लाम

### प्यास

दूर से चलके आया था मैं नंगे पांव नंगे सर
सर में गर्द, ज़बां में कांटे, पांव में छाले, होश थे गुम
इतना प्यासा था मैं उस दिन जितना चाह का मारा हो
चाह का मारा वो भी ऐसा जिसने चाह न देखी हो

इतने में क्या देखा मैंने, एक कुआँ है सुथरा सा
जिसकी मन है पक्की ऊंची, जिसपर छांव है पेड़ों की
चढ़कर मन पर झांका मैंने जोशे तलब की मस्ती में
कितना गहरा, इतना गहरा, जितनी हिज्र की पहली रात
कैसा अन्धा, ऐसा अन्धा, जैसी क़ब्र की पहली रात

कंकर लेके फेंका तह में,
पानी की आवाज़ न आयी
उसका दिल भी ख़ाली था

●

### नयी मर्यम

कैसी तवाना[1], कैसी चंचल, कितनी शोख़ और क्या बेबाक[2]
कैसी उमंगें, कैसी तरंगें, कितनी साफ़ और कैसी पाक
होश की बातें, शौक़ की घातें, जोशे जवानी सीना चाक

1. शक्तिशाली 2. निडर

خندہ ایسا جیسے رقص
باتیں ایسی جیسے ساز
کیسی توجہ، کیسی محبت، جس میں شامل کم کم ناز

●

## انقلاب

وہ کاروانِ گلِ تازہ جس کے مژدے سے
دماغِ عشق معطر ہے اور فضا معمور
دلوں سے کتنا قریں ہے، نظر سے کتنی دور!

●

## انتظار کی رات

تیری وادی کے صنوبر، میرے صحرا کے ببول
اُن پہ اک لرزہ سا طاری، ان کے مُرجھائے سے پھول
تیرا جی ان سے خفا اور میرا دل ان پر ملول

کیا یہ ممکن ہے کہ ان کا فاصلہ ہو جائے کم
خاک کے سینے پہ آخر کب تلک یہ بارِ غم!

●●●

ख़न्दा[1] ऐसा जैसे रक़्स
बातें ऐसी जैसे साज़
कैसी तवज्जोह, कैसी मुहब्बत, जिसमें शामिल कम कम नाज़

●

## इन्क़िलाब

वो कारवाने गुले ताज़ा जिसके मुज़्दे[2] से
दिमाग़े इश्क़ मुअत्तर[3] है और फ़ज़ा मामूर[4]
दिलों से कितना क़रीं[5] है नज़र से कितनी दूर!

●

## इन्तिज़ार की रात

तेरी वादी के सनोबर[6] मेरे सहरा[7] के बबूल
उन पे इक लर्ज़ा सा तारी, इनके मुर्झाये से फूल
तेरा जी उनसे ख़फ़ा और मेरा दिल इन पर मलूल

क्या ये मुम्किन है कि उनका फ़ासला हो जाये कम
ख़ाक के सीने पे आख़िर कब तलक ये बारे ग़म

●●●

1. हंसी
2. ख़ुशख़बरी
3. ख़ुश्बूदार
4. आबाद
5. क़रीब
6. चीड़ (एक पेड़ का नाम)
7. रेगिस्तान

سلام مچھلی شہری

## ڈرائنگ رُوم

یہ سینری ہے، یہ تاج محل، یہ کرشن ہیں اور یہ رادھا ہیں
یہ کوچ ہے، یہ پائپ ہے مرا، یہ ناول ہے، یہ رسالہ ہے
یہ ریڈیو ہے، یہ بجلی ہے، یہ میز ہے، یہ گلدستہ ہے
یہ گاندھی ہیں، ٹیگور ہیں یہ، یہ شاہنشہ، یہ ملکہ ہیں!
— ہر چیز کی بابت پوچھتی ہے، جانے کتنی معصوم ہے یہ
ہاں اس پر رات کو سونے سے میٹھی میٹھی نیند آتی ہے
ہاں اس کے دبانے سے بجلی کی روشنی گُل ہو جاتی ہے
سمجھی کہ نہیں، یہ کمرہ ہے ہاں میرا ڈرائنگ روم ہے یہ
—اتنی جلدی مزدور عورت! آخر یہ گلے میں باہیں کیوں
لے دیر ہوئی اب بھاگ بھی جا، بس اتنی محبت کافی ہے
اس ملک کے بھوکے پیاسوں کو پیسے کی حاجت کافی ہے
اتنی ہنس مُکھ خاموشی، اتنی مانوس نگاہیں کیوں
میں سوچ رہا ہوں کچھ بیٹھا پائپ کے دھوئیں کے بادل میں
میں چھپ سا گیا ہوں اک نازک احساس کے میلے آنچل میں

●

## جنگلی ناچ

جنگلی لباس میں ایک پیکر گداز
چل رہا ہے جھاڑیوں میں سانپ جھوم جھوم کر

**सलाम मछली शहरी**

## ड्राइंग रूम

ये सीनरी है, ये ताजमहल, ये कृश्न[1] हैं और ये राधा हैं
ये कोच है, ये पाइप है मेरा, ये नावेल् है, ये रिसाला है
ये रेडियो है, ये बिजली है, ये मेज़ है, ये गुलदस्ता है
ये गांधी हैं, टेगोर हैं ये, ये शाहंशह, ये मलिका हैं
—हर चीज़ की बाबत[2] पूछती है जाने कितनी मासूम है ये
हां इस पर रात को सोने से मीठी मीठी नींद आती है
हां इसके दबाने से बिजली की रौशनी गुल हो जाती है
समझी कि नहीं, ये कमरा है हां मेरा ड्राइंग रूम है यह
—इतनी जल्दी मज़दूर औरत! आख़िर यह गले में बाहें क्यों
ले देर हुई अब भाग भी जा, बस इतनी मुहब्बत काफ़ी है
इस मुल्क के भूके प्यासों को पैसे की हाजत[3] काफ़ी है
इतनी हंसमुख ख़ामोशी, इतनी मानूस[4] निगाहें क्यों
मैं सोच रहा हूं कुछ बैठा पाइप के धुएं के बादल में
मैं छुप सा गया हूं इक नाज़ुक एहसास के मैले आंचल में

●

## जंगली नाच

जंगली लिबास में एक पैकरे गुदाज़[5]
चल रहा है झाड़ियों में सांप झूम झूम कर

1. कृष्ण का उर्दूकरण
2. बारे में
3. ज़रूरत
4. परिचित
5. नर्मो नाज़ुक जिस्म

اُڑ رہا ہے مور اپنے بال چوم چوم کر
جھیل مانگنے لگی شام کی ہوا سے ساز
ایک بار— تین بار
دست صندلی اُٹھے
پاؤں لہر کھا گئے
جسم ناز کے شرار
جھیل کے کنارے مست ہو کے ناچنے لگے
جنگلی جوان شام کو سکون پا گئے
جھونپڑوں سے اپنے اپنے سازے لے کے آ گئے
آسماں سے چاند اور ستارے جھانکنے لگے
چاندنی میں جاگ اُٹھی
سو رہی تھی صبح سے
بول گئے خواب تھے
میرے بدھ کی مورتی
جھاڑیوں سے سرخ زرد پھول توڑ توڑ کر
ایک بار — تین بار — اب تو بار بار
مورتی پہ جنگلی حسینہ کرتی ہے نثار
چشم و لب کے رقص پر ہاتھ موڑ موڑ کر
رقص کی شراب میں
مور مست ہو گیا
سانپ جیسے سو گیا
عکس ماہ تاب میں
ایک پیکرِ گداز نور ناچنے لگا

उड़ रहा है मोर, अपने बाल चूम चूम कर
झील मांगने लगी शाम की हवा से साज़[1]
एक बार तीन बार
दस्ते संदली उठे
पांव लहर खा गये
जिस्मे नाज़ के शरार[2]
झील के किनारे मस्त होके नाचने लगे
जंगली जवान शाम को सुकून पा गये
झोंपड़ों से अपने अपने साज़े ले के आ गये
आसमां से चाँद और सितारे झांकने लगे
चांदनी में जाग उठी
सो रही थी सुब्ह से
बोल गये ख़्वाब थे
मेरे बुध की मूर्ती
झाड़ियों से सुर्ख़[3] ज़र्द[4] फूल तोड़ तोड़ कर
एक बार तीन बार, अब तो बार बार
मूर्ती पे जंगली हसीना करती है निसार
चश्मो लब[5] के रक़्स[6] पर हाथ मोड़ मोड़ कर

रक़्स की शराब में
मोर मस्त हो गया
सांप जैसे सो गया
अक्से माहताब में
एक पैकरे गुदाज़ नूर नाचने लगा

1. बाजा
2. चिंगारी
3. लाल
4. पीले
5. आंख और होंट
6. नाच

ڈھولکوں کی مست چیخ اور تیز ہو گئی
جنگلی حسینہ اور شعلہ ریز ہوگئی
مورتی کا دیوتا خود ہی مسکرا اُٹھا—
اور ایسے چونک کر
رقص بند ہوگیا
کس قدر غرور تھا
کامیاب رقص پر؟
●

## پیتل کا سانپ

—اور پیتل کا یہ زہریلا سانپ
جس کی نازک سی زباں پر یہ خنک شمع کی لو
لہر کی طرح اندھیرے میں اُٹھا کرتی ہے
میرے اک دوست نے تحفے میں مجھے بھیجا ہے

ہیں یہ ٹیگور کے بے ربط تخیل کے نقوش
اور یہ چین کے نغمات کا مجموعہ ہے
میز کے گوشے پہ رکھا ہوا گوتم کا یہ بُت
تم کو اچھا نہ لگے گا شاید

مدتیں گزریں اسی کمرے میں جس میں ہم تم
گفتگو کرتے تھے
اس جنگ پر
اس دنیا پر—
اور موجودہ ادب پر یہ خیالات کی رو

ढोलकों की मस्त चीख़ और तेज़ हो गयी
जंगली हसीना और शोलारेज़ हो गयी
मूर्ती का देवता ख़ुद ही मुस्कुरा उठा
और ऐसे चौंक कर
रक़्स बन्द हो गया
किस क़द्र गुरूर था
कामियाब रक़्स पर?

●

## पीतल का सांप

— और पीतल का यह ज़हरीला सांप
जिसकी नाज़ुक सी ज़बां पर ये ख़ुनक[1] शमा की लौ
लहर की तरह अंधेरे में उठा करती है
मेरे इक दोस्त ने तोहफ़े में मुझे भेजा है
हैं यह टैगोर के बेरब्त तख़ैयुल[2] के नुक़ूश
और यह चीन के नग़मात का मजमूआ[3] है
मेज़ के गोशे[4] पे रखा हुआ गौतम का यह बुत
तुमको अच्छा न लगेगा शायद

मुद्दतें गुज़रीं इसी कमरे में जिसमें हम तुम
गुफ़्तगू करते थे
इस जंग पर
इस दुनिया पर —
और मौजूदा अदब पर यह ख़यालात की रौ

1. ठंडी
2. विचार में लाना
3. संग्रह
4. कोना

آرٹ اور جنگ!!!

جنوری کی یہ حسیں رات اور اس پر اے دوست!!
یہ مسہری جو پڑی ہے میری
جس کے بازو پر یہ پیتل کے حسیں سانپ کا عکس
آج کی رات بھی لہراتا ہے
تم کوئی پریوں کا قصہ تو نہ سمجھو گے اسے
میں اگر تم سے کہوں
یہ کہ پیتل کے اس سانپ نے کاٹا ہے اسے
ایک معصوم سی دوشیزہ کو

جنوری کی یہ حسیں رات اور اس پر اے دوست
میرے آراستہ کمرے کا نکھار
——ایک پکار
سرد——اور موت کی مانند اندھیری اک رات
بوندیں جاڑے کی
غریبی کے مسلسل آنسو
ایک عورت کی جبیں پر تارے
سرد——تاریک ستارے یعنی
ایک دوشیزہ کے رخسار پہ بوسوں کے نشاں
نقرئی بوسے
طلائی بوسے!!

اب بھی ہر رات اسی کمرے میں
اسی شیشے کی مسہری پہ کتابیں لے کر
"چین کی نظموں کا مجموعہ

आर्ट और जंग!!

जनवरी की यह हसीं रात और इस पर ऐ दोस्त!!
यह मसह्री जो पड़ी है मेरी
जिसके बाज़ू पर यह पीतल के हसीं सांप का अक्स
आज की रात भी लहराता है
तुम कोई परियों का क़िस्सा तो न समझोगे उसे
मैं अगर तुम से कहूं
यह कि पीतल के इस सांप ने काटा है इसे
एक मासूम सी दोशीज़ा[1] को

जनवरी की यह हसीं रात और इस पर ऐ दोस्त
मेरे आरास्ता[2] कमरे का निखार
— एक पुकार
सर्द — और मौत की मानिंद अंधेरी इक रात
बूंदें जाड़ की
ग़रीबी के मुसल्सल आंसू
एक औरत की जबीं[3] पर तारे
सर्द — तारीक सितारे यानी
एक दोशीज़ा के रुख़सार पे बोसों के निशां
नुक़रई[4] बोसे
तिलाई[5] बोसे!!

अब भी हर रात, उसी कमरे में
उसी शीशे की मसह्री पे किताबें लेकर
"चीन की नज़्मों का मज्मूआ

1. कुंवारी
2. सजे हुये
3. माथे
4. रूपहला
5. स्वर्णिम

نقوشِ ٹیگور

اور کبھی سادے سے کاغذ پہ خود اپنے ہی خیالوں کے لیے

ایک سکوں

ایک گناہوں کے لئے

ایک قرار"

کچھ اسی قسم کے افکار میں بس ڈوبا ہوا

سو ہی جاتا ہوں بہرحال اے دوست!!

میز پر رکھے ہوئے بت کے حسیں سایے میں

اور پیتل کا یہ زہریلا سانپ

شمع کو ڈس کے سویرے ہی سے چلا جاتا ہے

"جنگ — موت — اور گناہ!!"

●

## اندیشہ

آرٹسٹ! اپنی یہ تصویر مکمل کر لے

ہاں یہ ہونٹ اور بھی پتلے ہوں یہ آنکھیں اور بھی مست

لیکن ان گالوں کی سرخی کو ذرا کم کر دے

میں نے شاید اُنہیں مرجھایا ہوا پایا ہے

ہلکے آنسو سے ان آنکھوں کو ذرا نم کر دے

میں نے افسردہ نگاہوں سے یہی سمجھا ہے

آج بھی میں نے سرِ راہ اسے دیکھا ہے

ایک شاہ کار اسے جلد بنا لے اے دوست!

ورنہ تصویر کا خاکہ ہی بدلنا ہوگا

●●●

नुकूशे[1] टैगोर
और कभी सादे से काग़ज़ पे ख़ुद अपने हां ख़यालों के लिये
एक सुकूं
एक गुनाहों के लिये
एक क़रार"

कुछ इसी क़िस्म के अफ़्कार[2] में बस डूबा हुआ
सो ही जाता हूं बहरहाल ऐ दोस्त!!
मेज़ पर रख्खे हुये बुत के हसीं साये में
और पीतल का यह ज़हरीला सांप
शमा को डस के सवेरे ही से चला जाता है
"जंग — मौत — और गुनाह!!!"

●

## अंदेशा

आर्टिस्ट! अपनी यह तस्वीर मुकम्मल कर ले
हां, यह होंट और भी पतले हों यह आंखें और भी मस्त
लेकिन इन गालों की सुर्ख़ी[3] को ज़रा कम कर दे
मैंने शायद इन्हें मुरझाया हुआ पाया है
हल्के आंसू से इन आंखों को ज़रा नम कर दे
मैंने अफ़्सुर्दा[4] निगाहों से यही समझा है
आज भी मैंने सरे राह[5] उसे देखा है
एक शाहकार[6] इसे जल्द बनाले ऐ दोस्त!
वर्ना तस्वीर का ख़ाका ही बदलना होगा

●●●

1. नक्स का बहुवचन
2. फ़िक्र का बहुवचन
3. लाली
4. दुखी
5. रास्ते में
6. कलाकृति

## ساحرلدھیانوی

### شہکار

مصوّر! میں ترا شہکار واپس کرنے آیا ہوں

اب اِن رنگین رخساروں میں تھوڑی زردیاں بھر دے
حجاب آلود نظروں میں ذرا بے باکیاں بھر دے
لبوں کی بھیگی بھیگی سلوٹوں کو مضمحل کردے
نمایاں رنگ پیشانی پہ عکسِ سوزِ دل کردے
تبسم آفریں چہرے میں کچھ سنجیدہ پن بھردے
جواں سینے کی مخروطی اٹھانیں سرنگوں کردے
گھنے بالوں کو کم کردے مگر رخشندگی دیدے
نظر سے تمکنت لے کر مذاقِ عاجزی دیدے
مگر ہاں بنچ کے بدلے اسے صوفے پہ بٹھلادے
یہاں میری بجائے اک چمکتی کار دکھلادے

●

### شکست

اپنے سینے سے لگائے ہوئے امید کی لاش
مدتوں زیست کو ناشاد کیا ہے میں نے
تو نے تو ایک ہی صدمے سے کیا تھا دوچار
دل کو ہر طرح سے برباد کیا ہے میں نے

साहिर लुधियानवी

## शहकार[1]

मुसव्विर[2] ! मैं तेरा शहकार वापस करने आया हूं
अब इन रंगीन रुख़सारों में थोड़ी ज़र्दियां भर दे
हिजाब आलूद[3] नज़रों में ज़रा बेबाकियां[4] भर दे
लबों की भीगी भीगी सिलवटों को मुज़्महिल[5] कर दे
नुमायां रंग पेशानी पे अक्स सोज़े दिल कर दे
तबस्सुम-आफ़रीं[6] चेहरे में कुछ संजीदापन भर दे
जवां सीने की मख़रूती[7] उठानें सरनिगूं कर दे
घने बालों को कम कर दे मगर रख़शन्दगी[8] दे दे
नज़र से तमकनत[9] लेकर मज़ाके आजिज़ी दे दे
मगर हां बेंच के बदले इसे सोफ़े पे बिठला दे
यहां मेरी बजाये इक चमकती कार दिखला दे

●

## शिकस्त

अपने सीने से लगाये हुये उम्मीद की लाश
मुद्दतों ज़ीस्त[10] को नाशाद[11] किया है मैंने
तूने तो एक ही सद्‌मे से किया था दोचार
दिल को हर तरह से बर्बाद किया है मैंने

1. कलाकृति
2. चित्रकार
3. पर्दे वाली
4. निर्भीकता
5. शिथिल
6. मुस्कराते हुये
7. नुकीली
8. चमक
9. घमंड
10. ज़िन्दगी
11. उदास

جب بھی راہوں میں نظر آئے حریری ملبوس
سرد آہوں میں تجھے یاد کیا ہے میں نے
اور اب جب کہ مری روح کی پہنائی میں
ایک سنسان سی مغموم گھٹا چھائی ہے
تو دمکتے ہوئے عارض کی شعاعیں لے کر
گل شدہ شمعیں جلانے کو چلی آئی ہے
میری محبوب، یہ ہنگامۂ تجدید وفا
میری افسردہ جوانی کے لئے راس نہیں
میں نے جو پھول چُنے تھے ترے قدموں کے لئے
اُن کا دھندلا سا تصور بھی مرے پاس نہیں
ایک یخ بستہ اُداسی ہے دل و جاں پہ محیط
اب مری روح میں باقی ہے نہ اُمید نہ جوش
رہ گیا دب کے گراں بار سلاسل کے تلے
میری درماندہ جوانی کی اُمنگوں کا خروش
ریگ زاروں میں بگولوں کے سِوا کچھ بھی نہیں
سایۂ ابر گریزاں سے مجھے کیا لینا
بجھ چکے ہیں مرے سینے میں محبت کے کنول
اب ترے حسنِ پشیماں سے مجھے کیا لینا
ترے عارض پہ یہ ڈھلکے ہوئے سیمیں آنسو
میری افسردگیٔ غم کا مداوا تو نہیں
تیری محبوب نگاہوں کا پیامِ تجدید
اک تلافی ہی سہی — میری تمنا تو نہیں

●

जब भी राहों में नज़र आये हरीरी मल्बूस
सर्द आहों में तुझे याद किया है मैंने
और अब जब कि मेरी रूह की पहनाई में
एक सुनसान सी मग़्मूम[2] घटा छाई है
तो दमकते हुये आरिज़ की शोआएं लेकर
गुलशुदा[3] शम्में जलाने को चली आयी है
मेरी महबूब, ये हंगामए तज्दीदे वफ़ा
मेरी अफ़सुर्दा जवानी के लिये रास नहीं
मैंने जो फूल चुने थे तेरे क़दमों के लिये
उनका धुंधला सा तसव्वुर[4] भी मेरे पास नहीं
एक यख़बस्ता उदासी है दिलो जां पे मुहीत[5]
अब मेरी रूह में बाक़ी है न उम्मीद न जोश
रह गया दब के गिरां बार[6] सलासिल[7] के तले
मेरी दरमांदा[8] जवानी की उमंगों का ख़रोश
रेगज़ारों[9] में बगूलों के सिवा कुछ भी नहीं
सायए अब्रे गुरेज़ां से मुझे क्या लेना
बुझ चुके हैं मेरे सीने में मुहब्बत के कंवल
अब तेरे हुस्ने पशेमां से मुझे क्या लेना
तेरे आरिज़ पे ये ढलके हुये सीमीं[10] आंसू
मेरी अफ़सुर्दगिए ग़म का मुदावा[11] तो नहीं
तेरी महबूब निगाहों का पयामे तज्दीद
इक तलाफ़ी[12] ही सही — मेरी तमन्ना तो नहीं

●

1. रेशमी लिबास
2. उदास
3. बुझी हुयी
4. कल्पना
5. घेरने वाला
6. बोझिल
7. सिलसिला का बहुवचन,बेड़ियां
8. आजिज़, लाचार
9. रेगिस्तान
10. चांदी जैसे
11. इलाज, उपाय
12. क्षतिपूर्ति

## ردِّعمل

چند کلیاں نشاط کی چن کر
مدّتوں محوِ یاس رہتا ہوں
تیرا ملنا خوشی کی بات سہی
تجھ سے مل کر اُداس رہتا ہوں

●

## گریز

مرا جنونِ وفا ہے زوال آمادہ
شکست ہوگیا تیرا فسونِ زیبائی
ان آرزوؤں پہ چھائی ہے گردِ مایوسی
جنھوں نے تیرے تبسم میں پرورش پائی
فریب شوق کے رنگیں طلسم ٹوٹ گئے
حقیقتوں نے حوادث سے پھر جلا پائی
سکون و خواب کے پردے سرکتے جاتے ہیں
دماغ و دل میں ہیں وحشت کی کارفرمائی
وہ تارے جن میں محبت کا نور تاباں تھا
وہ تارے ڈوب گئے لے کے رنگ و رعنائی
سلا گئی تھیں جنھیں تیری ملتفت نظریں
وہ درد جاگ اُٹھے پھر سے لے کے انگڑائی
عجیب عالمِ افسردگی ہے رو بہ فروغ

## रद्दे अमल[1]

चन्द कलियां निशात[2] की चुनकर
मुद्दतों महवे यास[3] रहता हूं
तेरा मिलना ख़ुशी की बात सही
तुझसे मिल कर उदास रहता हूं

●

## गुरेज़

मिरा जनूने वफ़ा है ज़वाल आमादा[4]
शिकस्त हो गया तेरा फ़ुसूने ज़ेबाई[5]
इन आरज़ुओं पे छाई है गर्दे मायूसी
जिन्होंने तेरे तबस्सुम में परवरिश पाई
फ़रेबे शौक़ के रंगीं तिलिस्म टूट गये
हक़ीक़तों ने हवादिस[6] से फिर जिला पाई
सुकूनो ख़्वाब के पर्दे सरकते जाते हैं
दिमाग़ो दिल में है वहशत की कारफ़रमाई
वो तारे जिनमें मुहब्बत का नूर ताबां[7] है
वो तारे डूब गये ले के रंगो रानाई
सुला गयी थीं जिन्हें तेरी मुल्तफ़ित[8] नज़रें
वो दर्द जाग उठे फिर से ले के अंगड़ाई
अजीब आलमे अफ़सुर्दगी है रू ब फ़रोग़

1. प्रतिक्रिया
2. ख़ुशी
3. निराशा में खोया हुआ
4. पतनशील
5. सुन्दरता का जादू
6. हादसा का बहुवचन
7. रौशन
8. आकृष्ट

نہ اب نظر کو تقاضا نہ دل تمنائی
تری نظر، ترے گیسو، تری جبیں، ترے لب
مری اُداس طبیعت ہے سب سے اُکتائی
میں زندگی کے حقائق سے بھاگ آیا تھا
کہ مجھ کو خود میں چھپائے تری فسوں زائی
مگر یہاں بھی تعاقب کیا حقائق نے
یہاں بھی مل نہ سکی جنتِ شکیبائی
ہر ایک ہاتھ میں لے کر ہزار آئینے
حیات بند دریچوں سے بھی گزر آئی
مرے ہر ایک طرف ایک شور گونج اُٹھا
اور اس میں ڈوب گئی عشرتوں کی شہنائی
کہاں تلک کوئی زندہ حقیقتوں سے بچے
کہاں تلک کرے چھپ چھپ کے نغمہ پیرائی
وہ دیکھ سامنے کے پُرشکوہ ایواں سے
کسی کرائے کی لڑکی کی چیخ ٹکرائی
وہ پھر سماج نے دو پیار کرنے والوں کو
سزا کے طور پہ بخشی طویل تنہائی
پھر ایک تیرہ و تاریک جھونپڑی کے تلے
سسکتے بچے پہ بیوہ کی آنکھ بھر آئی
وہ پھر بکی کسی مجبور کی جواں بیٹی!
وہ پھر جھکا کسی در پر غرورِ برنائی
وہ پھر کسانوں کے مجمع پہ گن مشینوں سے
حقوق یافتہ طبقے نے آگ برسائی
سکوتِ حلقۂ زنداں سے ایک گونج اُٹھی

न अब नज़र को तक़ाज़ा न दिल तमन्नाई
तेरी नज़र, तेरे गेसू, तेरी जबीं, तेरे लब
मेरी उदास तबीयत है सबसे उकताई
मैं ज़िंदगी के हक़ाइक़[1] से भाग आया था
कि मुझको ख़ुद में छुपाये तेरी फ़ुसूंज़ाई
मगर यहां भी तआक़ुब[2] किया हक़ाइक़ ने
यहां भी मिल न सकी जन्नते शकेबाई[3]
हर एक हाथ में लेकर हज़ार आईने
हयात बन्द दरीचों से भी गुज़र आयी
मेरे हर एक तरफ़ एक शोर गूंज उठा
और उसमें डूब गयी इशरतों[4] की शहनाई
कहां तलक कोई ज़िन्दा हक़ीक़तों से बचे
कहां तलक करे छुप छुप के नग़्मा पैराई
वो देख सामने के पुरशिकोह[5] ऐवां से
किसी किराये की लड़की की चीख़ टकराई
वो फिर समाज ने दो प्यार करने वालों को
सज़ा के तौर पर बख़्शी तवील तन्हाई
फिर एक तीरओ तारीक[6] झोंपड़ी के तले
सिसकते बच्चे पे बेवा की आंख भर आयी
वो फिर बिकी किसी मजबूर की जवां बेटी!
वो फिर झुका किसी दर पर ग़रुरे बरनाई
वो फिर किसानों के मजमे पे गन मशीनों से
हक़ूक़ याफ़ता तबके ने आग बरसाई
सुकूते हल्क़ए ज़िन्दां से एक गूंज उठी

1. हक़ीक़त का बहुवचन
2. पीछा करना
3. सब्र की जन्नत
4. ख़ुशियों
5. आलीशान
6. अंधेरी

اور اس کے ساتھ مرے ساتھیوں کی یاد آئی
نہیں نہیں مجھے یوں ملتفت نظر سے نہ دیکھ
نہیں نہیں مجھے اب تاب نغمہ پیرائی
مرا جنونِ وفا ہے زوال آمادہ
شکست ہو گیا تیرا فسونِ زیبائی

●

## تاج محل

تاج تیرے لئے اک مظہرِ الفت ہی سہی
تجھ کو اس وادیٔ رنگیں سے عقیدت ہی سہی
میری محبوب کہیں اور ملا کر مجھ سے

بزمِ شاہی میں غریبوں کا گزر کیا معنی
ثبت جس راہ میں ہوں سطوتِ شاہی کے نشاں
اس پہ اُلفت بھری روحوں کا سفر کیا معنی

میری محبوب پسِ پردۂ تشہیرِ وفا
تو نے سطوت کے نشانوں کو تو دیکھا ہوتا
مردہ شاہوں کے مقابر سے بہلنے والی
اپنے تاریک مکانوں کو تو دیکھا ہوتا
ان گنت لوگوں نے دنیا میں محبت کی ہے
کون کہتا ہے کہ صادق نہ تھے جذبے ان کے
لیکن اُن کے لئے تشہیر کا سامان نہیں
کیوں کہ وہ لوگ بھی اپنی ہی طرح مفلس تھے
یہ عمارات و مقابر یہ فصیلیں یہ حصار

और इसके साथ मेरे साथियों की याद आयी
नहीं, नहीं मुझे यूं मुल्तफ़ित नज़र से न देख
नहीं नहीं मुझे अब ताबे नग़मा पैराई
मिरा जुनूने वफ़ा है ज़वाल आमादा
शिकस्त हो गया तेरा फ़ुसूने ज़ेबाई

●

## ताज महल

ताज तेरे लिये एक मज़हरे उल्फ़त[1] ही सही
तुझको इस वादिए रंगी से अक़ीदत[2] ही सही
मेरी महबूब कहीं और मिला कर मुझसे

बज़्मे शाही में ग़रीबों का गुज़र क्या मानी
सब्त जिस राह में हों सत्वते शाही[3] के निशां
उस पे उल्फ़त भरी रूहों का सफ़र क्या मानी

मेरी महबूब पसे पर्दए तश्हीरे वफ़ा
तूने सत्वत के निशानों को तो देखा होता
मुर्दा शाहों के मक़ाबिर से बहलने वाली
अपने तारीक मकानों को तो देखा होता
अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहब्बत की है
कौन कहता है कि सादिक़[4] न थे जज़्बे उनके
लेकिन उनके लिये तश्हीर[5] का सामान नहीं
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफ़लिस थे
ये इमारातोमक़ाबिर ये फ़सीलें ये हिसार

1. प्रेम को दर्शाने वाला
2. श्रद्धा
3. शाही रौब
4. सच्चे
5. प्रचार

مطلق الحکم شہنشاہوں کی عظمت کے ستوں
سینۂ دہر کے ناسور ہیں کہنہ ناسور
جذب ہے ان میں ترے اور مرے اجداد کا خوں

میری محبوب! انھیں بھی تو محبت ہوگی!
جن کی صناعی نے بخشی ہے اسے شکلِ جمیل
ان کے پیاروں کے مقابر رہے بے نام ونمود
آج تک ان پہ جلائی نہ کسی نے قندیل
یہ چمن زار، یہ جمنا کا کنارہ، یہ محل
یہ منقّش درودیوار یہ محراب یہ طاق
اک شہنشاہ نے دولت کا سہارا لے کر
ہم غریبوں کی محبت کا اُڑایا ہے مذاق

میری محبوب! کہیں اور ملا کر مجھ سے

●

## خوبصورت موڑ

چلو اک بار پھر سے اجنبی بن جائیں ہم دونوں
نہ میں تم سے کوئی امید رکھوں دل نوازی کی
نہ تم میری طرف دیکھو غلط انداز نظروں سے
نہ میرے دل کی دھڑکن لڑکھڑائے میری باتوں میں
نہ ظاہر ہو تمھاری کش مکش کا راز نظروں سے
تمھیں بھی کوئی الجھن روکتی ہے پیش قدمی سے
مجھے بھی لوگ کہتے ہیں کہ یہ جلوے پرائے ہیں

मत्लकुल-हुक्म[1] शहंशाहों की अज़्मत के सुतूं
सीनए दह्र के नासूर हैं कुहना नासूर
जज़्ब है इनमें तेरे और मेरे अजदाद[2] का खूं

मेरी महबूब! उन्हें भी तो मुहब्बत होगी
जिनकी सन्नाई[3] ने बख़्शी है इसे शक्ले जमील[4]
उनके प्यारों के मक़ाबिर रहे बे नामो नमूद[5]
आज तक उन पे जलायी न किसी ने क़न्दील

ये चमनज़ार, ये जमना का किनारा, ये महल
ये मुनक़्क़श दरो दीवार ये मेहराब ये ताक़
इक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर
हम ग़रीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मज़ाक़

मेरी महबूब! कहीं और मिलाकर मुझसे

●

## ख़ूबसूरत मोड़

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनों
न मैं तुमसे कोई उम्मीद रक्खूं दिलनवाज़ी की
न तुम मेरी तरफ़ देखो ग़लत अन्दाज़ नज़रों से
न मेरे दिल की धड़कन लड़खड़ाये मेरी बातों में
न ज़ाहिर हो तुम्हारी कशमकश का राज़ नज़रों से
तुम्हें भी कोई उलझन रोकती है पेशक़दमी से
मुझे भी लोग कहते हैं कि ये जलवे पराये हैं

1. निर्द्वन्द
2. पुरखों
3. कारीगरी
4. ख़ूबसूरत चेहरा
5. बेनामो निशान

مرے ہمراہ بھی رسوائیاں ہیں میرے ماضی کی
تمھارے ساتھ بھی گزری ہوئی راتوں کے سائے ہیں

تعارف روگ ہو جائے تو اُس کو بھولنا بہتر
تعلق بوجھ بن جائے تو اُس کو توڑنا اچھا
وہ افسانہ جسے تکمیل تک لانا نہ ہو ممکن
اُسے اک خوبصورت موڑ دے کر چھوڑنا اچھا

چلو اک بار پھر سے اجنبی بن جائیں ہم دونوں

●●●

मेरे हमराह भी रुसवाईयां हैं मेरे माज़ी[1] की
तुम्हारे साथ भी गुज़री हुयी रातों के साये हैं

तआरुफ़ रोग हो जाये तो उसको भूलना बेहतर
तअल्लुक़ बोझ बन जाये तो उसको तोड़ना अच्छा
वो अफ़साना जिसे तकमील तक लाना न हो मुमकिन
उसे इक ख़ूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनों

●●●

1. अतीत

سلیمان اریب

## تسکینِ انا

جب کوئی قرض صداقت کا چکانے کے لیے
زہر کا دُردِ تہِ جام بھی پی لیتا ہے
اپنا سر ہنس کے کٹا دیتا ہے
زندگی جبر سہی، جبرِ مسلسل ہی سہی
سہتا ہے
اور اس جبر کو سو رنگ عطا کرتا ہے
حرف کا، صوت کا، صورت کا، فسوں کاری کا
میں اسے دیکھ کے چپکے سے کھسک جاتا ہوں
یہ تو میں خود ہوں وہ احمق جس کی
اپنی رسوائی میں تسکینِ انا ہوتی ہے

●

## تم کس سے ملنے آئے ہو

تم کس سے ملنے آئے ہو
کس چہرے سے کام ہے تم کو
کن آنکھوں سے بات کرو گے
تم جو چہرہ دیکھ رہے ہو
اس میں ہیں کتنے ہی چہرے

## सुलैमान अरीब

### तसकीने अना[1]

जब कोई क़र्ज़ सदाक़त[2] का चुकाने के लिये
ज़ह्र का दुर्द तहे जाम[3] भी पी लेता है
अपना सर हंस के कटा देता है
ज़िंदगी जब्र सही, जब्रे मुसल्सल ही सही
सहता है
और इस जब्र को सौ रंग अता करता है
हर्फ़ का, सौत[4] का, सूरत का, फ़सूंकारी[5] का
मैं उसे देख के चुपके से खिसक जाता हूं
यह तो मैं ख़ुद हूं वो अहमक़[6] जिसकी
अपनी रुसवाई में तसकीने अना होती है

●

### तुम किससे मिलने आये हो

तुम किससे मिलने आये हो
किस चेहरे से काम है तुमको
किन आंखों से बात करोगे
तुम जो चेहरा देख रहे हो
इसमें हैं कितने ही चेहरे

1. अहं की संतुष्टि
2. सच्चाई
3. शराब के नीचे की तलछट
4. आवाज़
5. जादूगरी
6. मूर्ख

جن کو لگائے میں پھرتا ہوں
تم کس سے ملنا چاہو گے
اُس شاعر سے جس کو تم نے
دیکھا ہے اسٹیج پہ اکثر
سب کو بھولے، خود کو بھلائے
بدمستوں کا بھیس بنائے
جس نے فلک پر حکم چلائے
سنگِ ملامت جس پر آئے
محفل کی محفل جھوم اُٹھی
جس نے ایسے شعر سنائے

تم کس سے ملنے آئے ہو
اس لمبے گورے چہرے سے
جس پر آگ کے پھول کھلے ہیں
جو اک سیدھے قدم کو سنبھالے
دل میں سیکڑوں زخم چھپائے
اپنی انا کی لاش اٹھائے
کم ظرفوں کی اس دنیا میں
کتنے ٹکڑوں سے سرگرداں ہے

تم کس سے ملنے آئے ہو
اُس انساں سے جس کے اندر
ایک قاتل، زانی، سارق کے
تینوں چہرے ایک ہوئے ہیں

जिनको लगाये मैं फिरता हूं
तुम किससे मिलना चाहोगे
उस शाइर से जिसको तुमने
देखा है स्टेज पे अक्सर
सब को भूले, खुद को भुलाये
बद्मस्तों[1] का भेस बनाये
जिसने फ़लक[2] पर हुक्म चलाये
संगे मलामत[3] जिस पर आये
महफ़िल की महफ़िल झूम उठी
जिसने ऐसे शे'र सुनाये

तुम किससे मिलने आये हो
उस लम्बे चेहरे से
जिसपर आग के फूल खिले हैं
जो इक सीधे क़दम को संभाले
दिल में सैंकड़ों ज़ख़्म छुपाये
अपनी अना की लाश उठाये
कमज़र्फ़ों[4] की इस दुनिया में
कितने युगों से सरगर्दां[5] है

तुम किससे मिलने आये हो
उस इंसां से जिसके अंदर
एक क़ातिल, ज़ानी[6], सारिक़[7] के
तीनों चेहरे एक हुये हैं

1. मदमस्तों
2. आसमान
3. धिक्कार के पत्थर
4. कमीनों
5. हैरान और परेशान
6. बलात्कारी
7. चोर

لیکن اس کے ہاتھ بندھے ہیں
پیروں میں زنجیریں پڑی ہیں
اور وہ قاتل اب بُزدل ہے
اور وہ زانی اب شوہر ہے
اور وہ سارق اب منصف ہے

تم کس سے ملنے آئے ہو
میں خود اپنے آپ سے مل کر
پہروں سوچ میں پڑ جاتا ہوں
کس چہرے سے بات کروں

●●●

लेकिन उसके हाथ बंधे हैं
पैरों में ज़ंजीरें पड़ी हैं
और वो क़ातिल अब बुज़दिल है
और वो ज़ानी अब शौहर है
और वो सारिक़ अब मुन्सिफ़[1] है

तुम किससे मिलने आये हो
मैं ख़ुद अपने आप से मिलकर
पहरों सोच में पड़ जाता हूं
किस चेहरे से बात करूं

●●●

1. न्याय करने वाला

## بمل کرشن اشک

### وہ: ایک

میں جب اس سے ملنے جاتا ہوں اکیلے راستے پر
ان گنت آنکھیں ستاروں، سنگریزوں، پتیوں کی
میرے قدموں پر جمی ہوتی ہیں لیکن
میرے سر پر ہات ہوتا ہے کسی کا

جب مرے کپڑوں کے گہرے زخم — بے آواز جیبیں —
بھر نہیں سکتے، تمنائیں سرِ مژگانِ غربت
میرے دل میں پھوٹ کر روتی ہیں لیکن
میرے سر پر ہات ہوتا ہے کسی کا

گو تصور کے بھیانک جنگلوں میں دن دہاڑے
ان گنت غم کی چڑیلیں، زہر کی گھمسان کھیتی
دامنِ احساس پر بوتی ہیں لیکن
میرے سر پر ہات ہوتا ہے کسی کا

●

### پیارے وہ

ننھی منّی دودھ کی خوشبو لنڈھاتی، گڈھلیوں چلتی محبت بانٹتی
تتلاہٹوں کا قافلہ سالار ہے وہ،
رس سے بھاری ہونٹ، چندن سی مہکتی زلف، امرت سے بھرے

**बिमल कृष्ण अश्क**

## वो : एक

मैं जब उससे मिलने जाता हूं अकेले रास्ते पर
अनगिनत आंखें सितारों, संगरेज़ों, पत्तियों की
मेरे क़दमों पर जमी होती हैं लेकिन
मेरे सर पर हात होता है किसी का

जब मिरे कपड़ों के गहरे ज़ख़्म — बेआवाज़ जेबें —
भर नहीं सकते, तमन्नाएं सरे मिज़गाने गुर्बत[1]
मेरे दिल में फूट कर रोती हैं लेकिन
मेरे सर पर हात होता है किसी का

गो तसव्वुर[2] के भयानक जंगलों में दिन दहाड़े
अनगिनत ग़म की चुड़ैलें, ज़हर की घमसान खेती
दामने एहसास पर बोती हैं लेकिन
मेरे सर पर हात होता है किसी का

●

## प्यार है वो

नन्हीं मुन्नी दूध की ख़ुश्बू लुंढ़ाती, गुढलियों चलती, मुहब्बत बांटती
तुतलाहटों का क़ाफ़िला सालार[3] है वो,
रस से भारी होंट, चंदन सी महकती ज़ुल्फ़, अमृत से भरे

1. कंगाली की पलकें
2. कल्पना
3. अगुवा

الٹے کٹوروں، لجلجی لذت سے بوجھل ٹہنیوں کا، خندقوں، قوسوں
تکونوں کا علمبردار ہے وہ،
جھکتی کمروں، برف سے بالوں، بدن کے دُکھتے جوڑوں، جلتی پیروں
کی خاطر صورتِ دستار ہے وہ،
صبحِ تخلیق و تصوّر ہے جوانی کی دوپہری ہے
وصالِ زیست کا تیوہار ہے وہ
پیار ہے وہ

●

## نام اُس کا

نام جب لیتا ہوں ہونٹوں پر زباں کو پھیرتا ہوں کیوں کہ
اُس کے نام میں اُس کی زباں اُس کے لبوں کا ذائقہ ہے
جب بدن وہ نام لیتا ہے تو ایسے جھنجھناتا ہے کہ جیسے
اُس کی زہری انگلیوں نے چھو لیا ہو
نام اُس کا اُس کے اپنے بازوؤں کے دائرے کی طرح
شوریدہ بدن کو گھیرتا ہے
نام اُس کا پانیوں میں گھول کر پی لو —— زباں لکنت زدہ
ہو جائے ہے، آنکھیں الگ چڑھ جائیں ہیں، جی کچھ کہے
لب کچھ کہے ہے،
نام اُس کا —— زانوے ناکتخدائی پر لکھے سے چھاتیوں
میں دودھ چھلکانے لگے ہے
نام اُس کا سیاہیوں میں گھولنے سے شعر لافانی لکھے ہے،
نام بنجر دھرتیوں میں تھوڑا سا چھڑک دینے سے

उलटे कटोरों, लिजलिजी लज़्ज़त से बोझल टहनियों का, ख़न्दकों, क़ौसों
तिकोनों का अलमबरदार है वो,
झुकती कमरों, बर्फ़ से बालों, बदन के दुखते जोड़ों, जन्नती पैरों
की ख़ातिर सूरते दस्तार है वो,
सुब्हे तख़्लीक़ो तसव्वुर[1] है जवानी की दोपहरी है
विसाले ज़ीस्त[2] का त्योहार है वो
प्यार है वो

●

## नाम उसका

नाम जब लेता हूं होंटों पर ज़बान को फेरता हूं क्योंकि
उसके नाम में उसकी ज़बां उसके लबों का ज़ायक़ा है
जब बदन वो नाम लेता है तो ऐसे झनझनाता है कि जैसे
उसकी ज़हरी उंगलियों ने छू लिया हो,
नाम उसका उसके अपने बाज़ुओं के दाइरे की तरह
शोरीदा[3] बदन को घेरता है
नाम उसका पानियों में घोलकर पी लो — ज़बां लुकनत-ज़दा
हो जाये है, आंखें अलग चढ़ जायें हैं, जी कुछ कहे
लब कुछ कहे,
नाम उसका ज़ानूए नाकतखुदाई[4] पर लिखे से छातियों
में दूध छलकाने लगे है,
नाम उसका सियाहियों में घोलने से शेर लाफ़ानी[5] लिखे है,
नाम बन्जर धरतियों में थोड़ा थोड़ा सा छिड़क देने से

1. रचना और कल्पना की सुबह
2. ज़िन्दगी का मिलन
3. मस्ताना
4. अविवाहिता
5. जिसका नाश न हो सके

ہر پل بیل بوٹے کھینچ دے ہے
نام اُس ہرجائی کا لینے سے ہر سانکل کھلے ہے
اُس کو اُس کے نام سے آواز دے دیجے تو چاروں سمت
جو کوئی سنے ہے اس کے لاکھوں نام دہرانے لگے ہے

اور کبھی اُس نام کے سنتے ہی اندر سے کوئی پوچھے ہے
کس کا نام لو ہو
اور تب احساس ہووے ہے کہ اُس کا ہو کہ اپنا ہو
وہی اک نام تو ہے
اور تب احساس ہووے ہے وہ ہم میں ہے کہ اُس کا نام
ہم ہیں
اور تب احساس ہووے ہے کہ یوسف سے زلیخا، شام سے
رادھا کے بچھے ہی جدا ہیں ورنہ چاروں
کا تماشہ ایک سا ہے

●●●

हर पल बेल बूटे खींच दे है

नाम उस हरजाई का लेने से हर सांकल खुले है

उसको उसके नाम से आवाज़ दे दिजे तो चारों सम्त

जो कोई सुने है उसके लाखों नाम दुहराने लगे है

और कभी उस नाम के सुनते ही अन्दर से कोई पूछे है

किसका नाम लो हो

और तब एहसास होवे है कि उसका हो कि अपना हो

वही इक नाम तो है

और तब एहसास होवे है वो हम में है कि उसका नाम

हम हैं

और तब एहसास होवे है कि यूसुफ़ से ज़ुलेख़ा, शाम से

राधा के हिज्जे ही जुदा हैं वर्ना चारों

का तमाशा एक सा है

●●●

منیب الرحمٰن

## باز دید

تم جو آؤ تو دھندلکے میں لپٹ کر آؤ
پھر وہی کیفِ سرِ شام لیے
جب لرزتے ہیں صداؤں کے سمٹتے سائے
اور آنکھیں خلشِ حسرت ناکام لیے
ہر گزرتے ہوئے لمحے کو تکا کرتی ہیں
خود فریبی سے ہم آغوش رہا کرتی ہیں

تم جو آؤ تو اندھیرے میں لپٹ کر آؤ
مستیِ بادِ سبک گام لیے
شبنمی شیشوں کو سہلائیں لچکتی شاخیں
اور مہتابِ زمستاں کوئی پیغام لیے
یوں چلا آئے کہ در باز نہ ہو
کوئی آواز نہ ہو

تم جو آؤ تو اُجالے میں لپٹ کر آؤ
پھر وہی لذتِ انجام لیے
جب تمنائیں کسی خوف سے چیخ اُٹھتی ہیں
اور خاموشیِ لب سیکڑوں ابہام لیے

मुनीबुर्रहमान

## बाज़दीद[1]

तुम जो आओ तो धुंदलके में लिपट कर आओ
फिर वही कैफ़े सरे शाम[2] लिये
जब लरज़ते[3] हैं सदाओं के सिमटते साये
और आंखें ख़लिशे हसरते नाकाम लिये
हर गुज़रते हुए लम्हे को तका करती हैं
ख़ुद फ़रेबी[4] से हमआगोश[5] रहा करती हैं

तुम जो आओ तो अंधेरे में लिपट कर आओ
मस्तिए बादे सुबुक गाम लिये
शब्नमी शीशों को सहलाएं लचकती शाख़ें
और महताबे ज़मिस्ता[6] कोई पैग़ाम लिये
यूं चला आये कि दर[7] बाज़ न हो
कोई आवाज़ न हो

तुम जो आओ तो उजाले में लिपट कर आओ
फिर वही लज़्ज़ते अंजाम लिये
जब तमन्नाएं किसी ख़ौफ़ से चीख़ उठती हैं
और ख़ामोशिए लब सैकड़ों इब्हाम[8] लिये

1. फिर से देखना
2. शाम का नशा
3. कांपते
4. स्वयं को धोका देना
5. बग़लगीर
6. सर्दी का चांद
7. दरवाज़ा
8. भ्रम

ایک سنگین حقیقت میں بدل جاتی ہے
زندگی درد میں ڈھل جاتی ہے
●

## مکافات

آؤ کہ میکدوں میں گزاریں تمام رات
تنہائیوں میں صحبتِ جام و سبو رہے
خاموشیوں میں کیفیتِ گفتگو رہے
یادوں کے پیچ و خم کو سنواریں تمام رات
زہرِ حیات دل میں اُتاریں تمام رات

یہ در جو بند ہو تو کہیں اور اُٹھ چلیں
ظلمت بڑھے تو آتشِ غم تیز تر کریں
پروانہ وار جل کے بنیں خاکِ رہ نشیں
انبوہ گردباد میں رقصِ شرر کریں
افتادگی میں آرزوئے بال و پر کریں

لے جائیں کس کے پاس یہ داغِ خود آگہی
اے سوزِ ہجر، کوئی ترا رازداں نہیں
یہ شہرِ ناشناس، یہ ویرانیِ ہجوم
اس قافلے میں اہلِ نظر کا نشاں نہیں
سب اجنبی ہیں، کوئی یہاں ہمزباں نہیں

एक संगीन हक़ीक़त में बदल जाती है

ज़िंदगी दर्द में ढल जाती है

●

## मुकाफ़ात[1]

आओ कि मैकदों[2] में गुज़ारें तमाम रात
तन्हाईयों में सुहबते जामो सुबु रहे
ख़ामोशियों में कैफ़ियते गुफ़्तगू रहे
यादों के पेचो ख़म[3] को संवारें तमाम रात
ज़ह्रे हयात[4] दिल में उतारें तमाम रात

यह दर जो बंद हो तो कहीं और उठ चलें
ज़ुल्मत बढ़े तो आतिशे ग़म तेज़तर करें
परवानावार जल के बनें ख़ाके रहनशीं[5]
अम्बोहे गर्दबाद[6] में रक़्से शरर करें
उफ़तादगी[7] में आरज़ूए बालो पर करें

ले जाएं किसके पास ये दाग़े ख़ुद आगही[8]
ऐ सोज़े हिज्र कोई तेरा राज़दां[9] नहीं
ये शहरे नाशनास, ये वीरानिए हुजूम
इस क़ाफ़िले में अह्ले नज़र[10] का निशां नहीं
सब अजनबी हैं कोई यहां हमज़बां नहीं

1. बुराई की सज़ा
2. शराबख़ानों
3. उलझाव
4. जिन्दगी का ज़हर
5. रास्ते की धूल
6. तीव्र बगूला
7. लाचारी, बेचारगी
8. आत्मज्ञान का धब्बा
9. राज़ जानने वाला
10. पारखी

بیٹھیں شفق کے سایے میں، خونِ جگر پئیں
آؤ کہ رسمِ اہلِ خرابات ہے یہی
ہر عشق سخت جاں کی مکافات ہے یہی

●

## برگد کا پیڑ

آنکھیں میچے، سوچ میں گم
دھونی رمائے کوئی سادھو جیسے بیٹھا ہو
بچے کھیل رہے ہیں
جن کی چیخوں سے
خاموشی کے ساکن جوہڑ میں ہلچل ہے
جھونکے آتے ہیں
لیکن یہ چپ سادھے رہتا ہے
موت بھی شاید اس کے بڑھاپے کو چھونے سے ڈرتی ہے
اس کا تن ماضی سے بوجھل ہے
اور ہمارے دن اس کے بھاری پن کو
سہمی سہمی نظروں سے دیکھ رہے ہیں
اس کے پتوں نے کیوں ہر کونپل کو ڈھانپ رکھا ہے
اس کی شاخیں کیوں مٹی میں گھس کر جڑ بن جاتی ہیں

●

बैठें शफ़क़[1] के साये में, ख़ूने जिगर पियें
आओ कि रस्मे अह्ले ख़राबात[2] है यही
हर इश्क़ सख़्त जां की मुकाफ़ात है यही

●

## बरगद का पेड़

आंखें मीचे, सोच में गुम
धूनी रमाए कोई साधू जैसे बैठा हो
बच्चे खेल रहे हैं
जिनकी चीख़ों से
ख़ामोशी के साकिन[3] जोहड़[4] में हलचल है
झोंके आते हैं
लेकिन यह चुप साधे रहता है
मौत भी शायद इसके बुढ़ापे को छूने से डरती है
इसका तन माज़ी[5] से बोझल है
और हमारे दिन उसके ग़रीपन को
सहमी सहमी नज़रों से देख रहे हैं
उसके पत्तों ने क्यों हर कोंपल को ढांप रखा है
उसकी शाख़ें क्यों मिट्टी में घुसकर जड़ बन जाती हैं

●

1. क्षितिज की लालिमा
2. शराबख़ाने वालों की रस्म
3. स्थिर
4. बरसाती तालाब
5. भूतकाल

## سنتھالی ناچ

یہ چٹانوں کے بھنور ہیں
جن سے ظلمت چیختی ہے
آندھیوں کے دل کی دھڑکن
دیوداروں کے تنوں میں
مست شیروں کی گرج ہے
جنگلوں میں
مورچھل، نیزے، کمانیں
لذتوں کے منہ سے باہر تند شعلوں کی زبانیں
عورتوں کی آبنوسی چھاتیوں سے
درد بن کر زہر کی بوندیں گریں گی
ان کی رانیں تشنۂ پیکاں رہیں گی
اور وحشت سنگریزوں پر چلے گی
خون بن کر تال دے گی

●

## تم اپنے خواب گھر پر چھوڑ آؤ

تم اپنے خواب گھر پر چھوڑ آؤ
نہیں تو خار بن کر یہ چبھیں گے
تمہاری روح کو پیہم ڈسیں گے
مبادا یہ تمہارا منہ چڑائیں

## सन्थाली नाच

यह चट्टानों के भंवर हैं
जिनसे ज़ुल्मत[1] चीख़ती है
आंधियों के दिल की धड़कन
देवदारों के तनों में
मस्त शेरों की गरज है
जंगलों में
मोरछल, नेज़े, कमानें
लज़्ज़तों के मुंह से बाहर तुंद[2] शोलों[3] की ज़बानें
औरतों की आबनूसी छातियों से
दर्द बनकर ज़हर की बूंदें गिरेंगी
उनकी रानें तिश्नए पैकां[4] रहेंगी
और वह्शत संगरेज़ों[5] पर चलेगी
ख़ून बनकर ताल देगी

●

## तुम अपने ख़्वाब घर पर छोड़ आओ

तुम अपने ख़्वाब घर पर छोड़ आओ
नहीं तो ख़ार[6] बनकर ये चुभेंगे
तुम्हारी रूह[7] को पैहम[8] डसेंगे
मबादा[9] ये तुम्हारा मुंह चिड़ायें
तुम इन सब आईनों को तोड़ आओ

1. अंधेरा
2. तेज़
3. लपटों
4. बर्छी की अनी की प्यासी
5. पत्थर के टुकड़ों
6. कांटा
7. आत्मा
8. लगातार
9. ख़ुदा न करे ऐसा हो

تم ان سب آئنوں کو توڑ آؤ

تم اپنی عقل و منطق پر ہو نازاں
یہ ناخن اس جگہ کیا کام دیں گے
جہاں دل کی گرہ اُلجھی ہوئی ہو
تمہارے ہاتھ اپنی بے بسی پر
تمہیں ہر گام پر الزام دیں گے
کہاں ہے وہ کتابیں، وہ صحائف
کہ جن میں زخم اپنے رکھ دیے تھے
اس انساں نے جو شعلوں میں جلا تھا
اس انساں نے جو سولی پر چڑھا تھا
اس انساں نے جو مر مر کر جیا تھا

تم اپنے خواب گھر پر چھوڑ آؤ
تمہاری دھوپ سایوں میں ڈھلے گی
تمہاری رات شبنم پر چلے گی
ضمیر زہر آلودہ کے چیونٹے
نہ رینگیں گے تمہاری بے حسی میں
تمہارا تن تمہارا تن بنے گا
تمہارا دل تمہارا ساتھ دے گا
تمہیں کیا چاہیے پھر زندگی میں
تم اپنے خواب گھر پر چھوڑ آؤ

●●●

तुम अपनी अक़्लो मन्तिक़[1] पर हो नाज़ां[2]
ये नाख़ुन उस जगह क्या काम देंगे
जहां दिल की गिरह् उलझी हुई हो
तुम्हारे हाथ अपनी बेबसी पर
तुम्हें हर गाम[3] पर इल्ज़ाम देंगे

कहां हैं वो किताबें, वो सहाइफ़
कि जिनमें ज़ख़्म अपने रख दिए थे
उस इंसां ने जो शोलों में जला था
उस इंसां ने जो सूली पे चढ़ा था
उस इंसां ने जो मर मर कर जिया था

तुम अपने ख़्वाब घर पर छोड़ आओ
तुम्हारी धूप सायों में ढलेगी
तुम्हारी रात शबनम[4] पर चलेगी
ज़मीरे ज़ह्र आलूदा[5] के च्यूंटे
न रेंगेंगे तुम्हारी बेहिसी में
तुम्हारा तन तुम्हारा तन बनेगा
तुम्हारा दिल तुम्हारा साथ देगा
तुम्हें क्या चाहिए फिर ज़िन्दगी में
तुम अपने ख़्वाब घर पर छोड़ आओ

●●●

1. अक़्ल और तर्क
2. गर्व करना
3. पग-पग
4. ओस
5. ज़ह्र में डूबा हुआ

عزیز تمنائی

## قصۂ درد

چاند نے مسکرا کر کہا
دوستو
قصۂ درد چھیڑے سرِ راہ کون؟
پھر بھی تارے مصر تھے
کہ ہم آج کی شب سنیں گے
وہی ان سنی داستاں
دیر تک چاند سوچا کیا
دور آفاق کی سمت دیکھا کیا
اور تاروں کی آنکھیں چھلکتی رہیں
رات کے دامنِ تر کو
آہستہ آہستہ
لمحوں کا ٹھنڈا لہو
جذب ہو ہو کے رنگین کرتا رہا
ناگہاں ایک نادیدہ زریں رقم
دستِ سیمیں بڑھا اور اُفق تا اُفق
ایک جنبش میں کھینچے ہزاروں کروڑوں طلائی خطوط
ڈوب کر رہ گئے شب کے سارے نقوط

## अज़ीज़ तमन्नाई

### क़िस्सए दर्द

चांद ने मुस्कुराकर कहा
दोस्तो
क़िस्सए दर्द छेड़े सरे राह कौन?
फिर भी तारे मुसिर[1] थे
कि हम आज की शब सुनेंगे
वही अनसुनी दास्तां
देर तक चांद सोचा किया
दूर आफ़ाक़[2] की सम्त[3] देखा किया
और तारों की आंखें छलकती रहीं
रात के दामने तर को
आहिस्ता आहिस्ता
लम्हों का ठंडा लहू
जज़्ब हो हो के रंगीन करता रहा
नागहां[4] एक नादीदा[5] ज़र्री रक़म
दस्ते सीमीं[6] बढ़ा और उफ़ुक़ ता उफ़ुक़
एक जुंबिश में खींचे हज़ारों करोड़ों तिलाई[7] ख़ुतूत
डूबकर रह गये शब[8] के सारे नुक़ूत[9]

1. हठ करने वाला
2. उफ़ुक़ (क्षितिज) का बहुवचन
3. दिशा
4. अचानक
5. न देखी हुई
6. चांदी जैसे हाथ अर्थात ख़ूबसूरत हाथ
7. सुनहरे
8. रात
9. नुक़्ते, बिन्दियां

چشمِ آفاق سے
اولیں قطرۂ درد ٹپکا
کسی برگِ نوخیز پر
عکسِ انجام رخسارِ آغاز پر!

●

## ہیولیٰ

مہ و سال کے تانے بانے کو
زرّیں شعاعوں کی گل کاریاں
میری نظروں نے بخشی ہیں
آفاق کے خدّ و خالِ بہار آفریں میں
مرے خوں کی سوغات شامل ہے
ہر وسعتِ بے کراں میں
مری دھڑکنیں گونجتی ہیں

ہر اک لمحہ کوئی نہ کوئی بگولہ اُٹھا
اور مرے نقشِ پا کو مٹانے کی دُھن میں چلا
لیکن آوازِ پا کی گرجتی گھٹاؤں سے
ٹکرا کے دشتِ خموشی میں
گُم ہو گیا
ہر اک گام سمتوں نے

चश्मे आफ़ाक़ से
अव्वलीं क़तरए दर्द टपका
किसी बर्गे नौख़ेज़[1] पर
अक्से अंजाम[2] रुख़सारे आग़ाज़[3] पर :

●

## हयूला[4]

महो साल[5] के ताने बाने को
ज़री शुआओं की गुलकारियां
मेरी नज़रों ने बख़्शी हैं
आफ़ाक़ के ख़दो ख़ाले बहार-आफ़रीं[6] में
मेरे ख़ूं की सौग़ात शामिल है
हर वुस्अते बेकरां[7] में
मेरी धड़कनें गूंजती हैं

हर इक लम्हा कोई न कोई बगूला उठा
और मिरे नक़्शे पा[8] को मिटाने की धुन में चला
लेकिन आवाज़े पा[9] की गरजती घटाओं से
टकरा के दश्ते ख़मोशी[10] में
गुम हो गया
हर इक गाम सम्तों ने

1. नई निकली हुई पत्ती
2. अंत का अक्स
3. आरम्भ के गाल
4. ढांचा
5. साल और महीने
6. बहार लाने वाले रंगरूप
7. जिसका कोई किनारा न हो
8. पैरों के निशान
9. पैरों की आवाज़
10. ख़ामोशी के जंगल

سنگیں شکنجوں میں کسنے کی
حسرت کو رسوا کیا
مری فکر کی لَو
سموم و صبا کی
فسوں کاریوں سے گریزاں
مسلسل فروزاں رہی
یہ وہ آنچ ہے جس کی حدّت سے
ہر قوّتِ سنگ سازی پگھلتی رہی

مگر آج میری انا کے ہیولیٰ میں
خود ساختہ کچھ لکیریں اُبھر آئی ہیں
مجھ کو ڈر ہے
کہیں پھیلتے پھیلتے یہ لکیریں
مری ذات کو پارہ پارہ نہ کر دیں
عناصر کو پھر آشکارہ نہ کر دیں!

●●●

संगी शिकंजों में कसने की
हसरत को रुसवा किया
मेरी फ़िक्र की लौ
सम्मूमो सबा[1] की
फ़ुसूंकारियों[2] से गुरेज़ां
मुसल्सल फ़रोज़ां[3] रही
ये वो आंच है जिसकी हिद्दत[4] से
हर कुव्वते संग साज़ी[5] पिघलती रही

मगर आज मेरी अना[6] के हयूले में
खुदसाख़्ता[7] कुछ लकीरें उभर आयी हैं
मुझको डर है
कहीं फैलते फैलते ये लकीरें
मेरी ज़ात को पारा पारा[8] न कर दें
अनासिर[9] को फिर अ ाकारा[10] न कर दें

●●●

1. गर्म हवा और पुरवाई
2. जादूगरियों
3. रौशन
4. गर्मी
5. पत्थर बनाने की कुव्वत
6. अहं
7. आत्मनिर्मित
8. टुकड़े - टुकड़े
9. उंसुर (तत्व) का बहुवचन
10. ज़ाहिर

رفعت سروش

## نجمِ سحر

وقتِ سحر، خاموش دھندلکا ناچ رہا ہے صحنِ جہاں میں
تابندہ، پرُنور ستارے، جگمگ جگمگ کرتے کرتے
ہار چکے ہیں اپنی ہمت، ڈوب چکے ہیں بحرِ فلک میں
تاریکی کے طوفانوں میں، اپنی کشتی کھیتے کھیتے

لیکن اک باہمت تارا اب بھی آنکھیں کھول رہا ہے
اب بھی جہاں کو دیکھ رہا ہے اپنی مستانہ نظروں سے
جیسے کسی تالاب میں لچکے کوئی شگفتہ پھول کنول کا
جیسے بیلے کی شاخوں میں دور سے ایک شگوفہ چمکے

وقتِ سحر، خاموش دھندلکا، ایک ستارہ کانپ رہا ہے
جیسے کوئی بوسیدہ کشتی طوفانوں میں ڈول رہی ہو
کوئی دِیا روشن ہو جیسے قبرستان میں طاقِ لحد پر
جس کی لَو انجام کے ڈر سے گھٹتی ہو اور تھرّاتی ہو

وقتِ سحر، خاموش دھندلکا، ایک ستارہ کانپ رہا ہے
رُخ پر جس کے کھیل رہا ہے اب بھی تبسم ہلکا ہلکا
وہ آیا اک نور کا دھارا، جلووں کی بوندیں برساتا
جگمگ جگمگ کرتا کرتا ڈوب گیا معصوم ستارہ

●

## रिफ़अत सरोश

# नज़्मे सहर[1]

वक़्ते सहर, ख़ामोश धुंदलका नाच रहा है सहनेजहां[2] में
ताबिन्दा, पुरनूर सितारे, जगमग जगमग करते करते
हार चुके हैं अपनी हिम्मत डूब चुके हैं बह्रे फ़लक[3] में
तारीकी के तूफ़ानों में, अपनी कश्ती खेते खेते

लेकिन इक बाहिम्मत तारा अब भी आंखें खोल रहा है
अब भी जहां को देख रहा है अपनी मस्ताना नज़रों से
जैसे किसी तालाब में लचके कोई शिगुफ़्ता फूल कंवल का
जैसे बेले की शाख़ों में दूर से एक शिगूफ़ा चमके

वक़्ते सहर, ख़ामोश धुंदलका, एक सितारा कांप रहा है
जैसे कोई बोसीदा[4] कश्ती तूफ़ानों में डोल रही हो
कोई दिया रौशन हो जैसे क़ब्रिस्तान में ताक़े लहद[5] पर
जिसकी लौ अंजाम के डर से घटती हो और थर्राती हो

वक़्ते सहर, ख़ामोश धुंदलका, एक सितारा कांप रहा है
रुख़ पर जिसके खेल रहा है अब भी तबस्सुम हल्का हल्का
वो आया इक नूर का धारा, जलवों की बूंदे बरसाता
जगमग जगमग करता करता, डूब गया मासूम सितारा

●

1. सुबह का सितारा
2. दुनिया का आंगन
3. आस्मान का समुन्दर
4. पुरानी टूटी-फूटी
5. क़ब्र का आला

# تجسّس

بہت دور سے ایک آواز آئی

''میں اک غنچۂ ناشگفتہ ہوں، کوئی مجھے گدگدائے
میں تخلیق کا نغمۂ جانفزا ہوں، مجھے کوئی گائے
میں انسان کی منزلِ آرزو ہوں، مجھے کوئی پائے''
بہت دور سے ایک آواز آئی

میں ہاتھوں میں لے کر تجسّس کی مشعل
بہت دور پہنچا ستاروں سے آگے
مری رہگذر کہکشاں بن کے چمکی
مرے ساتھ آئی اُفق کے کنارے
مرے نقشِ پا بن گئے چاند سورج
بھڑکتے رہے آرزو کے شرارے

وہ آواز تو آ رہی ہے مسلسل
مگر عرش کی رفعتوں سے اُتر کر
میں فرشِ یقیں پر کھڑا سوچتا ہوں
ہر اک جادۂ رنگ و بو سے گذر کر

مری جستجو انتہا تو نہیں ہے
ابھی اور نکھریں گے رنگیں نظارے
یہ بے نور ذرّے بنیں گے ستارے
ستارے بنیں گے ابھی ماہ پارے

# तजस्सुस[1]

बहुत दूर से एक आवाज़ आयी
''मैं इक गुन्चए नाशिगुफ़ता हूं, कोई मुझे गुदगुदाये
मैं तख़लीक़ का नग़मए जां फ़िज़ा हूं, मुझे कोई गाए
मैं इंसान की मंज़िले आरज़ू हूं, मुझे कोई पाये''
बहुत दूर से एक आवाज़ आई
मैं हाथों में लेकर तजस्सुस की मशअल
बहुत दूर पहुंचा सितारों से आगे
मेरी रहगुज़र कहकशां बन के चमकी
मेरे साथ आयी उफ़ुक़[2] के कनारे
मेरे नक़्शे पा बन गये चांद सूरज
भड़कते रहे आरज़ू के शरारे

वो आवाज़ तो आ रही है मुसलसल
मगर अर्श की रिफ़अतों[3] से उतर कर
मैं फ़र्शे यक़ीं पर खड़ा सोचता हूं
हर इक जादए रंगो बू से गुज़र कर

मेरी जुस्तजू[4] इंतिहा तो नहीं है
अभी और निखरेंगे रंगीं नज़ारे
ये बेनूर ज़र्रे बनेंगे सितारे
सितारे बनेंगे अभी माहपारे

1. जिज्ञासा
2. क्षितिज
3. ऊँचाइयों
4. तलाश

یہ آواز جادو جگاتی رہے گی
یہ منزل یونہی گیت گاتی رہے گی
نئے آدمی کو، نئے کارواں کو
پیامِ تجسّس سناتی رہے گی

●

## نوحہ

نوحہ ان کا نہیں گذر گئے جو
زندگی کی اُداس راہوں سے
پھینک کر بوجھ اپنے کاندھوں کا

نوحہ ان کا جو اب بھی جیتے ہیں
درد کو زندگی بنائے ہوئے
مرنے والوں کا بوجھ اُٹھائے ہوئے

●●●

ये आवाज़ जादू जगाती रहेगी
ये मंज़िल यूं ही गीत गाती रहेगी
नये आदमी को, नये कारवां को
पयामें तजस्सुस सुनाती रहेगी

●

## नौहा

नौहा उनका नहीं गुज़र गये जो
ज़िन्दगी की उदास राहों से
फेंक कर बोझ अपने कांधों का

नौहा उनका जो अब भी जीते हैं
दर्द को ज़िन्दगी बनाये हुए
मरने वालों का बोझ उठाये हुये

●●●

خلیل الرحمٰن اعظمی

## نیا عہد نامہ

برسوں سے یہ بام و در کہ جن پر
مہکی ہوئی صبح کے ہیں بوسے
یادوں کے یہی نگر کہ جن پر
سجتے ہیں یہ شام کے دھندلکے
یہ موڑ یہ رہگذر کہ جن پر
لگتے ہیں اداسیوں کے میلے

ہیں میرے عزیز، میرے ساتھی
کب سے مرا آسرا رہے ہیں
سنتے ہیں یہ میرے دل کی دھڑکن
جیسے یہ مجھے سکھا رہے ہیں
ہنس بول کے عمر کاٹ دینا
میرے یہی دست و پا رہے ہیں

برسوں سے یہ میری زندگی ہیں
برسوں سے میں ان کو جانتا ہوں
ہیں میری وفا پہ یہ بھی نازاں
ہر بات میں ان کی مانتا ہوں
لیکن مرے دل کو کیا ہوا ہے
میں آج کچھ اور ٹھانتا ہوں

## ख़लीलुर्रहमान आज़मी

### नया अहदनामा

बरसों से ये बामो दर[1] कि जिन पर
महकी हुयी सुब्ह के हैं बोसे[2]
यादों के यही नगर कि जिन पर
सजते हैं ये शाम के धुंधलके
ये मोड़ ये रहगुज़र कि जिन पर
लगते हैं उदासियों के मेले

हैं मेरे अज़ीज़, मेरे साथी
कब से मिरा आसरा रहे हैं
सुनते हैं ये मेरे दिल की धड़कन
जैसे ये मुझे सिखा रहे हैं
हंस बोल के उम्र काट देना
मेरे यही दस्तोपा रहे हैं

बरसों से ये मेरी ज़िन्दगी हैं
बरसों से मैं इनको जानता हूं
है मेरी वफ़ा पे ये भी नाज़ां
हर बात मैं इनकी मानता हूं
लेकिन मिरे दिल को क्या हुआ
मैं आज कुछ और ठानता हूं

1. अटारी व दरवाज़े 2. चुम्बन

لگتا ہے یہ شہرِ دلبراں بھی
ہے پاؤں کی میرے کوئی زنجیر
بس ایک ہی رات ایک دن ہے
ہر روز وہی پرانی تصویر
ہر صبح وہی پرانے چہرے
ہو جاتے ہیں شام کو جو دلگیر

اب اور کہیں سے چل کے دیکھیں
کس طرح سحر کی نرم کلیاں
کرنوں کا سلام لے رہی ہیں
جاگ اٹھتی ہیں کس طرح سے گلیاں
سب کام پہ ایسے جا رہے ہیں
جیسے کہ منائیں رنگ رلیاں

دیکھیں کہیں شام کو نکل کر
ڈھلتے ہوئے اجنبی سے سائے
یوں ہاتھ میں ہاتھ لے رہے ہوں
جیسے کہیں گھاس سرسرائے
اس طرح سے پاؤں چل رہے ہوں
جیسے کوئی پی کے لڑکھڑائے

آنے ہی کو ہوں ملن کی گھڑیاں
سورج کہیں غم کا ڈوبتا ہو
مہکی ہو کہیں پہ شب کی دلہن
کچنار کہیں پہ کھل رہا ہو
ہر گام پہ اک نیا ہو عالم
ہر موڑ پہ اک نیا خدا ہو

●

लगता है ये शह्रे दिलबरां भी
है पांव की मेरे कोई ज़ंजीर
बस एक ही रात एक दिन है
हर रोज़ वही पुरानी तस्वीर
हर सुब्ह वही पुराने चेहरे
हो जाते हैं शाम को जो दिलगीर

अब और कहीं से चल के देखें
किस तरह सहर[1] की नर्म कलियां
किरनों का सलाम ले रही हैं
जाग उठती हैं किस तरह से गलियां
सब काम पे ऐसे जा रहे हैं
जैसे कि मनाएं रंग रलियां

देखें कहीं शाम को निकल कर
ढलते हुये अजनबी से साये
यूं हाथ में हाथ ले रहे हों
जैसे कहीं घास सरसराये
इस तरह से पांव चल रहे हों
जैसे कोई पी के लड़खड़ाए

आने ही को हों मिलन की घड़ियां
सूरज कहीं ग़म का डूबता हो
महकी हो कहीं पे शब की दुल्हन
कचनार कहीं पे खिल रहा हो
हर गाम पे इक नया हो आलम
हर मोड़ पे इक नया ख़ुदा हो

●

1. सुब्ह

## خوابوں سے ڈر لگتا ہے

کل کا سورج اسی دہلیز پہ دیکھے گا مجھے
کل بھی کشکول مرا شام کو بھر جائے گا
کل کی تخلیق بھی ہوگی یہی اک نانِ جویں
کل بھی ہر دن کی طرح یونہی گزر جائے گا

بھوک کی آگ جو بجھتی ہے تو نیند آتی ہے
نیند آتی ہے تو کچھ خواب دکھاتی ہے مجھے
خواب میں ملتے ہیں کچھ لوگ بچھڑ جاتے ہیں
ان کی یاد اور بھی رہ رہ کے ستاتی ہے مجھے

کل بھی ڈھونڈوں گا انھیں جا کے گلی کوچوں میں
کل بھی مل جائیں گے ان خوابوں کے پیکر کتنے
کل بھی یہ ہاتھ لگاتے ہی بدل جائیں گے
کل بھی پھینکیں گے مری سمت یہ پتھر کتنے

آج کی رات مجھے نیند نہیں آئے گی
آج کی رات مجھے خوابوں سے ڈر لگتا ہے

●

## لمحے کی موت

کچھ دور تلک،
کچھ دور تلک،
وہ لمحہ اس کے ساتھ چلا

## ख़्वाबों से डर लगता है

कल का सूरज इसी देहलीज़[1] पे देखेगा मुझे
कल भी कश्कोल[2] मेरा शाम को भर जायेगा
कल की तख़लीक़[3] भी होगी यही इक नाने जवीं[4]
कल भी हर दिन की तरह यूं ही गुज़र जायेगा

भूक की आग जो बुझती है तो नींद आती है
नींद आती है तो कुछ ख़्वाब दिखाती है मुझे
ख़्वाब में मिलते हैं कुछ लोग बिछड़ जाते हैं
उनकी याद और भी रह रह के सताती है मुझे

कल भी ढूंढूगा उन्हें जा के गली कूचों में
कल भी मिल जायेंगे इन ख़्वाबों के पैकर कितने
कल भी ये हाथ लगाते ही बदल जायेंगे
कल भी फेकेंगे मेरी सम्त ये पत्थर कितने

आज की रात मुझे नींद नहीं आयेगी
आज की रात मुझे ख़्वाबों से डर लगता है

●

## लम्हे की मौत

कुछ दूर तलक,
कुछ दूर तलक,
वो लम्हा उसके साथ चला

1. चौखट
2. भिक्षापात्र
3. रचना
4. जौ की रोटी

جب اس نے دل میں یہ سوچا
یہ گرتی دیواریں
یہ دھواں
یہ کالی چھتیں
یہ اندھے دیئے
سنولاتے ہوئے سارے چہرے
اب اس کی نگاہوں سے اوجھل ہو جائیں گے
جب نگر نگر کی سیاحی
ان ٹیڑھی میڑھی سڑکوں کی
آوارہ گردی
ہنستے جسم
کھنکتے پیالوں
کی موسیقی
اس کو راس نہ آئی
اس نے کہا
اب آؤ لوٹ چلیں
اک شام وہ اپنے گھر پہنچا
اور اس سے ملنے کو آئے
سب ساتھی اس کے بچپن کے
سب کہنے لگے
ان جگ مگ کرتے شہروں کا
کچھ حال بتاؤ
اپنے سفر کی
کچھ روداد کہو
وہ خاموش رہا

जब उसने दिल में ये सोचा
ये गिरती दीवारें
ये धुंआ
ये काली छतें
ये अन्धे दिये
संवलाते हुये सारे चेहरे
अब उसकी निगाहों से ओझल हो जायेंगे
जब नगर नगर की सैयाही
उन टेढ़ी मेढ़ी सड़कों की
आवारागर्दी
हंसते जिस्म
खनकते प्यालों
की मूसीक़ी[1]
उसको रास न आयी
उसने कहा
अब आओ लौट चलें
इक शाम वो अपने घर पहुंचा
और उससे मिलने को आये
सब साथी उसके बचपन के
सब कहने लगे
उन जगमग करते शहरों का
कुछ हाल बताओ
अपने सफ़र की
कुछ रूदाद कहो
वो ख़ामोश रहा

1. संगीत

وہ دیکھ رہا تھا اس میلے سے طاق کو
جس پر
اب بھی ایک گھڑی رکھی تھی
اور وہ بند پڑی تھی

●

## کتبہ

یہ کتبہ فلاں سن کا ہے
یہ سن اس لئے اس پر کندہ کیا
کہ سب وارثوں پر یہ واضح رہے
کہ اس روز برسی ہے مرحوم کی
عزیز و اقارب، یتامیٰ، مساکین کو
ضیافت سے اپنی نوازیں، سبھی کو بلائیں
کہ سب مل کے مرحوم کے حق میں دستِ دعا کو اُٹھائیں
زباں سے کہیں اپنی "مرحوم کی مغفرت ہو"
بزرگِ مقدس کے نامِ مقدس پہ بھیجیں درود و سلام
سبھی خاص و عام
مگر یہ بھی ملحوظِ خاطر رہے
عزیز و اقارب کا شرب و طعام
اور اس کا نظام
الگ ہو وہاں سے

वो देख रहा था उस मैले से ताक़ को
जिस पर
अब भी एक घड़ी रखी थी
और वो बन्द पड़ी थी

●

## कत्बा[1]

ये कत्बा फ़लां सन् का है
ये सन् इसलिये उस पर कंदा किया
कि सब वारिसों पर ये वाज़ेह[2] रहे
कि इस रोज़ बरसी है मरहूम[3] की
अज़ीज़ व अक़ारिब[4], यतामा, मसाकीन[5] को
ज़ियाफ़त[6] से अपनी नवाजें, सभी को बुलायें
कि सब मिल के मरहूम के हक़ में दस्ते दुआ[7] को उठायें
ज़बां से कहें अपनी 'मरहूम की मग़फ़िरत[8] हो'
बुजुर्गे मुक़द्दस के नामे मुक़द्दस पे भेजें दरूदो सलाम
सभी ख़ासो आम
मगर ये भी मलहूज़े ख़ातिर[9] रहे
अज़ीज़ो अक़ारिब का शर्बो तआम[10]
और उसका निज़ाम
अलग हो वहां से

1. क़ब्र के सिरहाने लिखा शिलालेख
2. स्पष्ट
3. स्वर्गीय
4. सगे संबंधी
5. मिस्कीन, (दरिद्र) का बहुवचन
6. भोज
7. दुआ के हाथ
8. मोक्ष
9. ध्यान
10. खाना और पीना

جہاں ہوں یتامیٰ، مساکین، اندھے، بھکاری
پھٹے اور میلے لباسوں میں سب عورتیں اور بچے
کئی لُولے لنگڑے، مریض اور گندے
وہی جن کو کہتے ہیں ہم سب عوام
وہاں ہوگا اک شوروغل، اژدہام
یہ کردیں گے ہم سب کا جینا حرام

●

## میں گوتم نہیں ہوں

میں گوتم نہیں ہوں
مگر میں بھی جب گھر سے نکلا تھا
یہ سوچتا تھا
کہ میں اپنے ہی آپ کو
ڈھونڈنے جارہا ہوں
کسی پیڑ کی چھاؤں میں
میں بھی بیٹھوں گا
اک دن مجھے بھی
کوئی گیان ہوگا
مگر جسم کی آگ
جو گھر سے لے کر چلا تھا
سلگتی رہی
گھر سے باہر ہوا تیز تھی
اور بھی یہ بھڑکتی رہی
اور ایک اک پیڑ جل کر ہوا راکھ

जहां हों यतामा, मसाकीन, अंधे, भिकारी
फटे और मैले लिबासों में सब औरतें और बच्चे
कई लूले लंगड़े, मरीज़ और गंदे
वही जिनको कहते हैं हम सब अवाम
वहां होगा इक शोरो गुल, इज़्दिहाम[1]
ये कर देंगे हब सब का जीना हराम

●

## मैं गौतम नहीं हूं

मैं गौतम नहीं हूं
मगर मैं भी जब घर से निकला था
ये सोचता था
कि मैं अपने ही आप को
ढूंढने जा रहा हूं
किसी पेड़ की छांव में
मैं भी बैठूंगा
इक दिन मुझे भी
कोई ज्ञान होगा
मगर जिस्म की आग
जो घर से लेकर चला था
सुलगती रही
घर से बाहर हवा तेज़ थी
और भी ये भड़कती रही
और एक इक पेड़ जलकर हुआ राख

1. भीड़

میں اپنے صحرا میں اب پھر رہا ہوں
جہاں میں ہی میں ہوں
جہاں میرا سایہ ہے
سائے کا سایہ ہے
اور دور تک
بس خلا ہی خلا ہے

●●●

मैं अपने सहरा में अब फिर रहा हूं

जहां मैं ही मैं हूं

जहां मेरा साया है

साये का साया है

और दूर तक

बस ख़ला[1] ही ख़ला है

●●●

1. शून्य, रिक्त स्थान

راہی معصوم رضا

## چاند کی بڑھیا

ماں سے اک بچے نے پوچھا
چاند میں یہ دھبا کیسا ہے
ماں یہ بولی
چندا بیٹے
جس کو تم دھبا کہتے ہو وہ تو اک پاگل بڑھیا ہے
بچے نے معصوم آنکھوں سے کچھ لمحوں تک ماں کو بڑی حیرت سے دیکھا
اور یہ پوچھا:
ماں! جب میں چندا بیٹا ہوں تو مجھ میں بھی اک پاگل بڑھیا ہوگی
ماں نے اس کو بھینچ لیا
اس کے لب چومے
گردن چومی، ماتھا چوما
اور یہ بولی: ہاں تجھ میں بھی اک بڑھیا ہے

●

## گریباں کا فاصلہ

کٹ گئی رات مگر
ہجر کے جاگتے پیراہن سے
رات کی ملگجی، افسردہ مہک آتی ہے
حلقۂ بادِ صبا گردن میں
وقت سڑکوں پہ کھنچا پھرتا ہے
راہ جاتی ہی نہیں کوئی بیاباں کی طرف
ہاتھ بڑھتے ہی نہیں اپنے گریباں کی طرف

●

राही मासूम रज़ा

## चाँद की बुढ़िया

मां से इक बच्चे ने पूछा
चाँद में ये धब्बा कैसा है
मां ये बोली
चंदा बेटे
जिसको तुम धब्बा कहते हो वो तो इक पागल बुढ़िया है
बच्चे ने मासूम आंखों से कुछ लम्हों तक मां को बड़ी हैरत से देखा
और ये पूछा:
मां! जब मैं चंदा बेटा हूं तो मुझमें भी इक पागल बुढ़िया होगी
मां ने उसको भींच लिया
उसके लब चूमे
गर्दन चूमी, माथा चूमा
और ये बोली : हां तुझमें भी इक बुढ़िया है

●

## गिरेबाँ का फ़ासला

कट गयी रात मगर
हिज्र के जागते पैराहन से
रात की मलगजी अफ़सुर्दा महक आती है
हल्क़ए बादे सबा गर्दन में
वक़्त सड़कों पे खिंचा फिरता है
राह जाती ही नहीं कोई बयाबां की तरफ़
हाथ बढ़ते ही नहीं अपने गिरेबाँ की तरफ़

●

## خواب

آؤ،
واپس چلیں
رات کے راستے پر وہاں
نیند کی بستیاں تھیں جہاں
خاک چھانیں
کوئی خواب ڈھونڈیں
کہ سورج کے رستے کا رختِ سفر خواب ہے
اور اِس دن کے بازار میں
کل تلک
خواب کمیاب تھا
آج
نایاب ہے

●

## ایک نظم صبح کے انتظار میں

کٹ گئی رات
مگر
رات ابھی باقی ہے
حسرتِ دید ابھی زندہ ہے
دل دھڑکتا ہے ابھی
شوقِ ملاقات ابھی زندہ ہے
دل کے صحرائے وفا میں ہے غزالوں کا ہجوم

## ख़्वाब

आओ,

वापस चलें

रात के रास्ते पर वहां

नींद की बस्तियां थीं जहां

ख़ाक छानें

कोई ख़्वाब ढूंढ़ें

कि सूरज के रस्ते का रख़्ते सफ़र[1] ख़्वाब है

और इस दिन के बाज़ार में

कल तलक

ख़्वाब कमयाब[2] था

आज

नायाब है

●

## एक नज़्म सुब्ह के इंतिज़ार में

कट गयी रात

मगर

हसरते दीद[3] अभी ज़िन्दा है

दिल धड़कता है अभी

शौके मुलाक़ात अभी ज़िन्दा है

दिल के सहराए वफ़ा में है ग़ज़ालों[4] का हुजूम

1. सफ़र का सामान 2. दुर्लभ

3. देखने की तमन्ना 4. हिरनों

اور اس چاند کے پیالے سے چھلکتی ہے مری پیاس ابھی
زندگی آئی نہیں راس ابھی
صبح سے پہلی ملاقات ابھی باقی ہے
کٹ گئی رات
مگر
رات ابھی باقی ہے

●

## دردِ تنہائی کا

نیم کے پیڑ میں اٹکا ہوا چاند
نیم کے پیڑ سے چھن چھن کے برستا ہوا درد
درد یادوں بھری تنہائی کا
درد اُن یادوں کی رعنائی کا
دردِ شبنم کے بیاباں میں مری پیاس کی زیبائی کا
درد ہر لمحہ کی جلتی ہوئی پنہائی کا
عشق و احساسِ شکیبائی کا درد
وقت کے چہرے پہ ہے گزری ہوئی شام کی گرد
رات کے ہاتھ ہیں سرد
نیم کے پیڑ سے چھن چھن کے برستا ہوا درد
اور ہر درد ہے مانند
نیم کے پیڑ پہ اٹکا ہوا چاند

●●●

और उस चाँद के प्याले से छलकती है मेरी प्यास अभी
ज़िन्दगी आयी नहीं रास अभी
सुब्ह से पहली मुलाक़ात अभी बाक़ी है
कट गयी रात
मगर
रात अभी बाक़ी है

●

## दर्द तन्हाई का

नीम के पेड़ में अटका हुआ चाँद
नीम के पेड़ से छन छन के बरसता हुआ दर्द
दर्द यादों भरी तन्हाई का
दर्द उन यादों की रानाई का
दर्द शब्नम के बयाबां में मेरी प्यास की ज़ेबाई[1] का
दर्द हर लम्हे की जलती हुयी पिनहाई का
इश्क़ो एहसासे शिकेबाई का दर्द
वक़्त के चेहरे पे है गुज़री हुई शाम की गर्द
रात के हाथ हैं सर्द
नीम के पेड़ से छन छन के बरसता हुआ दर्द
और हर दर्द है मानिन्द
नीम के पेड़ पे अटका हुआ चाँद

●●●

1. श्रंगार, सजावट

## باقر مہدی

# دیمک

خون کا ہر اک قطرہ جیسے
دیمک بن کر دوڑے
ناکامی کے زہر کو چاٹے
درد میں گھلتا جائے
چھلنی جسم سے رِستے، لیکن
ارمانوں کے رنگ
جن کا روپ میں آنا مشکل
اور جب بھی الفاظ میں ڈھل کر
کاغذ پر بہہ نکلے
خاکے تصویروں کے بنائے

آنکھیں تارے، ہاتھ شعاعیں
دل ایک صدف ہے جس میں
کتنے سچے موتی بھرے ہوئے ہیں
باہر آتے ہی یہ موتی
شبنم بن کر اُڑ جاتے ہیں
جیسے اپنا کھویا سورج ڈھونڈ رہے ہیں

میں اپنے انجام سے پہلے
شاید اک دن
ان خاکوں میں رنگ بھروں گا
یہ بھی تو ممکن ہے لیکن

## बाक़र मेहदी

### दीमक

ख़ून का हर इक क़तरा, जैसे
दीमक बनकर दौड़े
नाकामी के ज़हर को चाटे
दर्द में घुलता जाये
छलनी जिस्म से रिस्ते, लेकिन
अरमानों के रंग
जिनका रूप में आना मुश्किल
और जब भी अल्फ़ाज़ में ढ़लकर
कागज़ पर बह निकले
ख़ाके तस्वीरों के बनाये

आंखें, तारे, हाथ शुआयें[1]
दिल एक सदफ़[2] है जिसमें
कितने सच्चे मोती भरे हुये हैं
बाहर आते ही ये मोती
शबनम बनकर उड़ जाते हैं
जैसे अपना खोया सूरज ढूंढ रहे हैं

मैं अपने अन्जाम से पहले
शायद इक दिन
इन ख़ाकों में रंग भरूंगा
ये भी तो मुमकिन है लेकिन

1. किरनें  2. सीप

میں بھی اک خاکہ بن جاؤں
جس کو دیمک چاٹ رہی ہو
●

## نروان

اک خوشبو، درد سر کی مرجھائی کلیوں کو کھلائے جاتی ہے
ذہن میں بچھو امیدوں کے ڈنک لگاتے ہیں
ہچکی لے کر پھر خود ہی مر جاتے ہیں
دل کی دھڑکن سچائی کے تلخ دھوئیں کو گہرا کرتی پیہم بڑھتی جاتی ہے
پیٹ میں بھوک ڈکاریں لیتی رہتی ہے
پھر رگ رگ میں سوئیاں بن کر بھاگی بھاگی پھرتی ہے
پورے جسم میں درد کا اک لاوا سا بہتا رہتا ہے
ایسا مجھ کو لگتا ہے
جیسے میں
آخری قے میں اس دنیا کی ساری غذائیں، خواب و حقیقت کی آلائش
آدرشوں کی میٹھی شرابیں
اک بے معنی کشش میں اُلجھا
—یہ جیون
سارا کا سارا اُگل دوں گا
شاید مجھ کو اُس لمحے نروان ملے!
●

## خامشی

کوئی امیج کسی بات کا حسیں سایہ
نئے پرانے خیالوں کا اک اچھوتا میل،

मैं भी इक ख़ाका बन जाऊँ
जिसको दीमक चाट रही है

●

## निर्वान

इक खुश्बू, दर्द सर की मुर्झाई कलियों को खिलाये जाती है
ज़ेहन में बिच्छू उम्मीदों के डंक लगाते हैं
हिचकी लेकर फिर ख़ुद ही मर जाते हैं
दिल की धड़कन सच्चाईयों के तल्ख़ धुंए को गहरा करती पैहम बढ़ती जाती है
पेट में भूक डकारें लेती रहती है
फिर रग रग में सूइयां बनकर भागी भागी फिरती है
पूरे जिस्म में दर्द का इक लावा सा बहता रहता है
ऐसा मुझको लगता है
जैसे मैं,
आख़िरी कै में इस दुनिया की सारी ग़िज़ायें, ख़्वाबे हक़ीक़त की आलाइश,
आदर्शों की मीठी शराबें
इक बेमानी कशिश में उलझा
ये जीवन —
सारा का सारा उगल दूंगा
शायद मुझको उस लम्हे निर्वान मिले!

●

## ख़ामुशी

कोई इमेज किसी बात का हसीं साया
नये पुराने ख़यालों का इक अछूता मेल

کسی کی یاد کا بھٹکا ہوا کوئی جگنو
کسی کے نیلے سے کاغذ پہ چند ادھورے لفظ
بغاوتوں کا پرانا گھِسا پٹا نعرہ
کسی کتاب میں زندہ مگر چھپی امید
پرانی غزلوں کی اک راکھ، بے دلی ایسی
خود اپنے آپ سے اُلجھن، عجیب بیزاری
غرض کہ موڈ کے سو رنگ، آئینے، پرتو
مگر یہ کیا ہوا اب کچھ بھی لکھ نہیں سکتا
نہ جانے کب سے یہ بے معنی خامشی ہے محیط
خود اپنے سائے سے میں چھٹ گیا ہوں یا شاید
کہیں میں لفظوں کی دنیا کو چھوڑ آیا ہوں!

●

## گوڈو

ہوائیں چلتی ہیں، تھمتی ہیں بہنے لگتی ہیں
نئے لباس، نئے رنگ روپ، سج دھج سے
پرانے زخم نئے دن کو یاد کرتے ہیں
وہ دن جو آ کے نقابیں اُتار ڈالے گا
نظر کو دل سے ملائے گا، دل کو باتوں سے
ہر ایک لفظ میں معنی کی روشنی ہوگی!

مگر یہ خواب کی باتیں، سراب کی یادیں
ہر ایک بار پشیمان، دل گرفتہ ہیں
صبح کے سارے ہی اخبار وحشت افزا ہیں

किसी की याद का भटका हुआ कोई जुगनू
किसी के नीले से कागज़ पे चंद अधूरे लफ़्ज़
बग़ावतों का पुराना घिसा पिटा नारा
किसी किताब में ज़िन्दा मगर छुपी उम्मीद
पुरानी ग़ज़लों की इक राख, बेदिली ऐसी
ख़ुद अपने आप से उलझन, अजीब बेज़ारी
ग़रज़ कि मूड के सौ रंग, आईने परतौ
मगर ये क्या हुआ अब कुछ भी लिख नहीं सकता
न जाने कब से ये बेमानी ख़ामुशी है मुहीत
ख़ुद अपने साये से मैं छट गया हूं या शायद
कहीं मैं लफ़्ज़ों की दुनिया को छोड़ आया हूं!

●

## गोडो[1]

हवाएं चलती हैं, थमती हैं बहने लगती हैं
नये लिबास, नये रंग रूप, सज धज से
पुराने ज़ख़्म नये दिन को याद करते हैं
वो दिन जो आ के, नक़ाबें उतार डालेगा
नज़र को दिल से मिलायेगा, दिल को बातों से
हर एक लफ़्ज़ में मानी की रौशनी होगी!

मगर ये ख़्वाब की बातें सराब[2] की यादें
हर एक बार पशेमान, दिल गिरफ़्ता हैं
सुब्ह के सारे ही अख़बार वहशत अफ़ज़ा हैं

1. सेमुएल बैकेट का मशहूर अलामती पात्र—गोडो का इंतिज़ार!
2. मृगतृष्णा

ہر ایک رہزن و رہبر کی آج بن آئی
کہ اب ہر ایک جیالا ہے سورما سب ہیں!

بتاؤں کس سے کہ میں منتظر ہوں جس دن کا
وہ شاید اب نہ کبھی آئے گا زمانے میں
کہاں پہ ہے "مرا گوڈو" مجھے خبر ہی نہیں
اُسے میں ڈھونڈ چکا روم اور لندن میں
نہ ماسکو میں ملا اور نہ چین و پیرس میں
بھلا ملے گا کہاں بمبئی کی گلیوں میں

یہ انتظارِ مسلسل، یہ جاں کنی یہ عذاب!
ہر ایک لمحہ جہنّم — ہر ایک خواب سراب!!

●●●

हर एक रहज़नों रहबर की आज बन आई
कि अब हर एक जियाला है, सूरमा सब हैं

बताऊँ किससे कि मैं मुंतज़िर हूं जिस दिन का
वो शायद अब न कभी आयेगा ज़माने में
कहां पे है मिरा 'गोडो' मुझे ख़बर ही नहीं
उसे मैं ढूंढ चुका रोम और लन्दन में
न मास्को में मिला और न चीनो पेरिस में
भला मिलेगा कहां बम्बई की गलियों में

ये इंतिज़ारे मुसलसल, ये जांकनी[1], ये अज़ाब!
हर एक लम्हा जहन्नुम — हर एक ख़्वाब सराब!!

●●●

1. मौत की हालत

محمد علوی

## مجھے ان جزیروں میں لے جاؤ

مجھے ان جزیروں میں لے جاؤ
جو کانچ جیسے
چمکتے ہوئے پانیوں میں گھرے ہیں
جہاں لڑکیاں
ناریل کے درختوں کے پتوں سے
اپنے بدن کے
خطرناک حصے چھپاتی ہیں
پھولوں کے گجرے پہن کر
بڑی شان سے مسکراتی ہیں
بچے جہاں
ریت کے گھر بناتے ہیں
اور ساحلوں کی چمکتی ہوئی ریت پر
لوگ سن باتھ لیتے ہیں
پانی میں غوطہ لگا کر
سیپیاں — مچھلیاں اور گھونگھے پکڑتے ہیں
اور رات کو
چاندنی میں
ناچتے اور گاتے ہیں
اور پھونس کے

**मुहम्मद अलवी**

# मुझे उन जज़ीरों[1] में ले जाओ

मुझे उन जज़ीरो में ले जाओ
जो कांच जैसे
चमकते हुए पानियों में घिरे हैं
जहां लड़कियां
नारियल के दरख़्तों के पत्तों से
अपने बदन के
ख़तरनाक हिस्से छुपाती हैं
फूलों के गजरे पहन कर
बड़ी शान से मुस्कराती हैं
बच्चे जहां
रेत के घर बनाते हैं
और साहिलों की चमकती हुई रेत पर
लोग सनबाथ लेते हैं
पानी में ग़ोता लगाकर
सीपियां — मछलियां और घोंघे पकड़ते हैं
और रात को
चांदनी में
नाचते और गाते हैं
और फूंस के

1. द्वीपों

ننھے منّے مکانوں میں
آرام کی نیند سو جاتے ہیں
مجھے ان جزیروں میں لے جاؤ
جو کانچ جیسے
چمکتے ہوئے پانیوں میں گھرے ہیں
تو ممکن ہے میں
اور کچھ روز جی لوں
کہ شہروں میں اب
میرا دم گھٹ گیا ہے!

●

## خالی مکان

جالے تنے ہوئے ہیں، گھر میں کوئی نہیں
''کوئی نہیں'' اک اک کونا چلّاتا ہے
دیواریں اُٹھ کر کہتی ہیں ''کوئی نہیں''
''کوئی نہیں'' دروازہ شور مچاتا ہے
کوئی نہیں اس گھر میں کوئی نہیں لیکن
کوئی مجھے اس گھر میں روز بلاتا ہے
روز یہاں میں آتا ہوں ہر روز کوئی
میرے کان میں چپکے سے کہہ جاتا ہے
''کوئی نہیں اس گھر میں کوئی نہیں پگلے
کس سے ملنے روز یہاں تو آتا ہے؟''

●

नन्हें मुन्ने मकानों में
आराम की नींद सो जाते हैं
मुझे उन जज़ीरों में ले जाओ
जो कांच जैसे
चमकते हुए पानियों में घिरे हैं
तो मुमकिन है मैं
और कुछ रोज़ जी लूं
कि शहरों में अब
मेरा दम घुट गया है

●

## ख़ाली मकान

जाले तने हुए हैं, घर में कोई नहीं
"कोई नहीं" इक इक कोना चिल्लाता है
दीवारें उठ कर कहती हैं "कोई नहीं"
"कोई नहीं" दरवाज़ा शोर मचाता है
कोई नहीं इस घर में, कोई नहीं लेकिन
कोई मुझे इस घर में रोज़ बुलाता है
रोज़ यहां मैं आता हूं हर रोज़ कोई
मेरे कान में चुपके से कह जाता है
"कोई नहीं इस घर में कोई नहीं पगले
किससे मिलने रोज़ यहां तू आता है"

●

## نوحہ

نہ مرنے کا ڈر ہے
نہ جینے میں کوئی مزا ہے
خلا ہی خلا ہے!
ہر اک چیز جیسے
اندھیرے میں گُم ہو گئی ہے
اُجالے کی اِک اک کرن کھو گئی ہے
ہر اک آرزو سو گئی ہے!
گنہ میں بھی اب کوئی لذّت نہیں ہے
وہ دوزخ نہیں
اب وہ جنّت نہیں ہے
کوئی بھی نہیں ہے!
بس اب میں ہوں
اور میرا سنسان دل ہے
خدا کے نہ ہونے کا غم
کس قدر جاں گسل ہے!!

●

## آخری دن کی تلاش

خدا نے قرآن میں کہا ہے
کہ لوگو میں نے

## नौहा[1]

न मरने का डर है
न जीने में कोई मज़ा है
ख़ला[2] ही ख़ला है!
हर इक चीज़ जैसे
अंधेरे में गुम हो गई है
उजाले की इक इक किरन खो गई है
हर इक आरज़ू सो गई है!
गुनह में भी अब कोई लज़्ज़त नहीं है
वो दोज़ख़[3] नहीं
अब वो जन्नत नहीं है
कोई भी नहीं है!
बस अब मैं हूं
और मेरा सुनसान दिल है
ख़ुदा के न होने का ग़म
किस क़दर जांगुसल[4] है!!

●

## आख़िरी दिन की तलाश

ख़ुदा ने क़ुरआन में कहा है
कि लोगो मैंने

1. मातम
2. ख़ाली जगह
3. नरक
4. जान को तोड़ने वाला

تمھاری خاطر
فلک بنایا
فلک کو تاروں سے
چاند، سورج سے جگمگایا
کہ لوگو میں نے
تمھاری خاطر
زمیں بنائی
زمیں کے سینے پہ
ندیوں کی لکیریں کھینچیں
سمندروں کو
زمیں کی آغوش میں بٹھایا
پہاڑ رکھے
درخت اُگائے
درخت پہ
پھول، پھل لگائے
کہ لوگو میں نے
تمھاری خاطر
یہ دن بنایا
کہ دن میں کچھ کام کر سکو تم
کہ لوگو میں نے
تمھاری خاطر
یہ شب بنائی
کہ شب میں آرام کر سکو تم

तुम्हारी ख़ातिर

फ़लक बनाया

फ़लक को तारों से

चांद, सूरज से जगमगाया

कि लोगो मैंने

तुम्हारी ख़ातिर

ज़मीं बनाई

ज़मीं के सीने पे

नद्दियों की लकीरें खींचीं

समुन्दरों को

ज़मीं की आग़ोश में बिठाया

पहाड़ रक्खे

दरख़्त उगाए

दरख़्त पे

फूल, फल लगाए

कि लोगो मैंने

तुम्हारी ख़ातिर

यह दिन बनाया

कि दिन में कुछ काम कर सको तुम

कि लोगो मैंने

तुम्हारी ख़ातिर

यह शब[1] बनाई

कि शब में आराम कर सको तुम

1. रात

کہ لوگو میں نے
تمھاری خاطر
یہ سب بنایا
مگر نہ بھولو
کہ ایک دن میں
یہ ساری چیزیں سمیٹ لوں گا

خدا نے جو کچھ کہا ہے
سچ ہے
مگر نہ جانے
وہ دن کہاں ہے
وہ آخری دن
کہ جب خدا یہ تمام چیزیں سمیٹ لے گا
مجھے اسی دن کی جستجو ہے
کہ اب یہ چیزیں
بہت پرانی
بہت ہی فرسودہ ہو چکی ہیں

●

## خدا کہاں ہے

نہ مسجدوں میں نہ مندروں میں
خدا کہاں ہے، کدھر گیا ہے
چلو مرے ساتھ، میں بتاؤں
نگر سے اب گذر گیا ہے
جلائے ہیں ہم نے، اُن گھروں میں
خدا بھی جل بجھ کے مر گیا ہے

●●●

कि लोगो मैंने
तुम्हारी ख़ातिर
यह सब बनाया
मगर न भूलो
कि एक दिन मैं
यह सारी चीज़ें समेट लूंगा

ख़ुदा ने जो कुछ कहा है
सच है
मगर न जाने
वो दिन कहां है
वो आख़िरी दिन
कि जब ख़ुदा ये तमाम चीज़ें समेट लेगा
मुझे उसी दिन की जुस्तुजू है
कि अब ये चीज़ें
बहुत पुरानी
बहुत ही फ़र्सूदह्[1] हो चुकी हैं

●

## ख़ुदा कहां है

न मस्जिदों में न मन्दिरों में
ख़ुदा कहां है, किधर गया है
चलो मेरे साथ, मैं बताऊँ
मगर समय अब गुज़र गया है
जलाये हैं हमने, उन घरों में
ख़ुदा भी जल बुझ के मर गया है

●●●

1. घिसी पिटी, पुरानी

## قاضی سلیم

### وائرس

مسیحِ وقت تم بتاؤ کیا ہوا
زباں پہ یہ کسیلا پن کہاں سے آ گیا
ذرا سی دیر کے لئے پلک جھپک گئی
تو راکھ کس طرح جھڑی

سنا ہے دور دیس سے
کچھ ایسے وائرس ہمارے ساحلوں پہ آ گئے
جن کے تابکار سحر کے لئے
امرت اور زہر ایک ہیں
اب کسی کے درمیان کوئی رابطہ نہیں
کسی دوا کا درد سے کوئی واسطہ نہیں
ہم ہوا کی موج موج سے
درد کھینچتے ہیں، چھوڑتے ہیں سانس کی طرح
لہو کی ایک ایک بوند زخم بن گئی
رگوں میں جیسے بددعائیں تیرتی ہیں
پھانس کی طرح
مسیحِ وقت تم بتاؤ کیا ہوا
دیوِ علم کے چراغ کا
کیوں بھلا نکھر گیا
دھواں دھواں بکھر گیا

काज़ी सलीम

## वायरस

मसीहे वक़्त तुम बताओ क्या हुआ
ज़बां पे यह कसैलापन कहां से आ गया
ज़रा सी देर के लिए पलक झपक गई
तो राख किस तरह झड़ी

सुना है दूर देस से
कुछ ऐसे वायरस हमारे साहिलों पे आ गए
जिनके ताबकार सहर[1] के लिए
अमृत और ज़हर एक हैं
अब किसी के दरमियान कोई राबिता नहीं
किसी दवा का दर्द से कोई वासिता नहीं
हम हवा की मौज मौज से
दर्द खींचते हैं, छोड़ते हैं सांस की तरह
लहू की एक एक बूंद ज़ख़्म बन गई
रगों में जैसे बद्दुआएं तैरती हैं
फांस की तरह
मसीहे वक़्त तुम बताओ क्या हुआ
देव इल्म के चराग़ का
क्यूं भला बिफर गया
धुवां धुवां बिखर गया

1. ताक़तवर जादू

سنو کہ چیختا ہے ’’ کام --- کام
کوئی کام‘‘
کچھ نہیں
جاؤ ساحلوں کی سمت ہو سکے تو روک لو
اس نئے عذاب کو
ناخدا کی آخری شکست تک
سمندروں کی ریت چھانتے رہو
●

## ٹورسٹ

ہمارے پاس کچھ نہیں
جاؤ اب ہمارے پاس کچھ نہیں

بیتے ست جگوں کی سرد راکھ میں
اک شرار بھی نہیں
داغ داغ زندگی پہ سوچ کے لباس کا
——ایک تار بھی نہیں
دھڑک دھڑک، دھڑک دھڑک
جانے تھاپ کب پڑے
ننگے وحشیوں کے غول شہر کی
سڑک سڑک پہ ناچ اٹھیں
مولی گاجروں کی طرح سر کٹیں
برف پوش چوٹیوں پہ سیکڑوں برس
پرانے گدھ پَروں کو پھڑ پھڑا رہے ہیں

सुनो कि चीख़ता है "काम — काम
कोई काम"
कुछ नहीं
जाओ साहिलों की सम्त हो सके तो रोक लो
इस नये अज़ाब को
नाखुदा[1] की आख़िरी शिकस्त तक
समुन्दरों की रेत छानते रहो

●

## टूरिस्ट

हमारे पास कुछ नहीं
जाओ अब हमारे पास कुछ नहीं
बीते सत् जुगों की सर्द राख में

इक शरार[2] भी नहीं
दाग़ दाग़ ज़िन्दगी पे सोच के लिबास का
—एक तार भी नहीं
धड़क धड़क, धड़क धड़क
जाने थाप कब पड़े
नंगे वहशियों के ग़ोल शहर की
सड़क सड़क पे नाच उठें
मूली गाजरों की तरह सर कटें
बर्फ़ पोश[3] चोटियों पे सैकड़ों बरस
पुराने गिद्ध परों को फड़फड़ा रहे हैं

1. मल्लाह
2. चिंगारी
3. बर्फ़ से ढकी हुई

اب ہمارے پاس کچھ نہیں

کھنڈر کھنڈر تلاش کر چکے
سب خزانے ختم ہو گئے
تمہارے میوزیم میں سج گئے
اب ہمارے پاس کچھ نہیں
سپیرے راجے جادوگر
ایر انڈیا کا بٹلری نشان بن گئے
جاؤ اب ہمارے پاس کچھ نہیں
●

## رُستگاری

زخم پھر ہرے ہوئے
پھر لہو تڑپ اُٹھا
اندھے راستوں پہ بے تکان اڑان کے لئے
بند آنکھ کی بہشت میں
سب دریچے — سب کواڑ کھل گئے
اور پھر
اپنی خلق کی ہوئی بسیط کائنات میں
دھند بن کے پھیلتا سمٹتا جا رہا ہوں میں
خدائے لم یزل کے سانس کی طرح
میرے آگے اک ہجوم ہے
جس کو جو بھی نام دے دیا — وہ ہو گیا

अब हमारे पास कुछ नहीं

खंडर खंडर तलाश कर चुके
सब ख़ज़ाने ख़त्म हो गये
तुम्हारे म्युज़ियम में सज गये
अब हमारे पास कुछ नहीं
सपेरे राजे जादूगर
एयर इन्डिया का बटलरी निशान बन गये
जाओ अब हमारे पास कुछ नहीं

●

## रुस्तागरी[1]

ज़ख़्म फिर हरे हुए
फिर लहू तड़प तड़प उठा
अंधे रास्तों पे बेतकान[2] उड़ान के लिए
बन्द आंख की बहिश्त[3] में
सब दरीचे[4] — सब किवाड़ खुल गए
और फिर
अपनी ख़ल्क़[5] की हुई बसीत काइनात में
धुन्ध बन के फैलता सिमटता जा रहा हूं मैं
खुदाये लम् यज़ल[6] के सांस की तरह
मेरे आगे-आगे इक हुजूम है
जिसको जो भी नाम दे दिया — वो हो गया

1. मुक्ति
2. बिना थके हुए
3. स्वर्ग
4. खिड़कियां
5. पैदा
6. हमेशा रहने वाला

میرے واسطے سے سب کے سلسلے
بندھے ہوئے ہیں سب کی موت، زندگی
میرے واسطے سے ہے
زمین و آسماں کے بیچ
جس کو بھی پناہ نہ مل سکے
وہ آئے میرے ساتھ ساتھ
منتظر ہے آج بھی
فضا جو لفظ لفظ پر محیط ہے
عمیق اور بسیط ہے

(2)

مجھے بھی آج تک نہ مل سکا
تماشا گاہِ روز و شب کا بیج
—— اپنے طور پر
نئے سرے سے جس کو بو سکوں
کہاں کے سلسلے
—— کیسے واسطے
رگوں میں صرف اس قدر لہو بچا ہے
—— پنکھ پنکھ میں
کچھ ہوا سمیٹ کر
آخری اُڑان بھر سکوں
بے محابہ سوچ
—— آندھیوں سی سوچ میں
صرف ہو رہا ہوں میں

मेरे वास्ते से सबके सिलसिले
बंधे हुए है, सबकी मौत, ज़िन्दगी
मेरे वास्ते से है
ज़मीनों आसमां के बीच
जिसको भी पनाह न मिल सके
वो आये मेरे साथ साथ
मुंतज़िर है आज भी
फ़ज़ा जो लफ़्ज़ लफ़्ज़ पर मुहीत[1] है
अमीक़[2] और बसीत[3] है

(2)

मुझे भी आज तक न मिल सका
तमाशागाहे रोज़ो शब का बीज
——– अपने तौर पर
नये सिरे से जिसको बो सकूं
कहां के सिलसिले
—— कैसे वास्ते
रगों में सिर्फ़ इस क़दर लहू बचा है
—— पंख पंख में
कुछ हवा समेटकर
आख़िरी उड़ान भर सकूं
बेमहाबा[4] सोच
——आंधियों सी सोच में
सर्फ़ हो रहा हूं मैं

1. घेरने वाला
2. गहरा
3. फैला हुआ
4. बेख़ौफ़

ہر تھپیڑا مرے نقش چاٹ چاٹ کر

—— دھند بن رہا ہے

دھند گہری ہو رہی ہے

گزرتے وقت سے میں جڑ رہا ہوں

—— جڑ گیا ہوں

—— اپنا کام کر چکا ہوں

●●●

हर थपेड़ा मेरे नक्श चाट चाटकर

धुधं बन रहा है

———धुंध गहरी हो रही है

गुज़रते वक्त से मैं जुड़ रहा हूं

——— जुड़ गया हूं

——— अपना काम कर चुका हूं

●●●

## عمیق حنفی

# تشنّج

آج کس عالم میں ہیں احباب میرے
آنکھ میں تاب وتب ونم کچھ نہیں
دل؟ کسی ریفریجریٹر میں رکھے ہوں گے کہیں
جسم حاضر ہیں یہاں، غائب دماغ
مُسکراہٹ: اک لپ اسٹک: خندہ پیشانی نقاب!
روح: برقعہ پوش: آنکھیں بے حجاب!
کس لیے مجھ کو پریشاں کر رہے ہیں خواب میرے
نیند کے زخمی کفِ پا سے ٹپکتا ہے خود اپنا ہی لہو
خواب میں پھولوں سے آتی ہے خود اپنے خوں کی بو
بے عمل ہوں (خواب میں ہوں) پھر بھی جاری (ایک بے نام ونشاں سی) جستجو
درمیاں سے اس زمیں کو چیرتا جاتا ہے چاکِ ارتقا
موت آ کر کھٹ کھٹاتی رہتی ہے در آنکھ کا
کس لیے کھنچتے چلے جاتے ہیں یہ اعصاب میرے
عہدِ نو کے کس مغنی کا جنون
تار سپتک میں انہیں کرتا ہوں ٹیون
کون ان تاروں کو اتنا کس رہا ہے
ٹوٹ جائیں گے تو اس نغمے سے بھی محروم ہو جائے گا ساز
جس میں شامل ہے شکستِ ذات کی آواز

●

अमीक़ हन्फ़ी

## तशन्नुज[1]

आज किस आलम में हैं अह्‌बाब मेरे
आंख में ताबो तबो नम[2] कुछ नहीं
दिल? किसी रेफ़रिजरेटर में रखे होंगे कहीं
जिस्म हाज़िर हैं यहां, ग़ायब दिमाग़
मुस्कुराहट : इक लिपिस्टिक : ख़ंदह[3] पेशानी : नक़ाब!
रूह[4] : बुर्क़ापोश[5] : आंखें बेहिजाब!
किस लिए मुझको परेशां कर रहे हैं ख़्वाब मेरे
नींद के ज़ख़्मी कफ़े पा[6] से टपकता है ख़ुद अपना ही लहू
ख़्वाब में फूलों से आती है ख़ुद अपने ख़ूं की बू
बेअमल हूं (ख़्वाब में हूं), फिर भी जारी (एक बेनामो निशां सी) जुस्तजू[7]
दरमियां से इस ज़मीं को चीरता जाता है चाके इर्तिक़ा[8]
मौत आकर खटखटाती रहती है दर[9] आंख का
किस लिए खिंचते चले जाते हैं ये आसाब[10] मेरे
अह्‌दे नौ[11] के किस मुग़न्नी[12] का जुनून
तारसप्तक में उन्हें करता है ट्यून
कौन इन तारों को इतना कस रहा है
टूट जायेंगे तो इस नग़्मे से भी महरूम हो जाएगा साज़
जिसमें शामिल है शिकस्ते ज़ात[13] की आवाज़

●

1. ऐंठन
2. चमक दमक और नमी
3. हंसती हुई
4. आत्मा
5. बुर्क़ा पहने हुये
6. पांव का तलुवा
7. तलाश
8. विकास
9. दरवाज़ा
10. स्नायु, पुट्ठे
11. नये ज़माने
12. गवैया
13. व्यक्तित्व की पराजय

## معمول

شام چھت سے گھر میں اُتری
رات بن کر ایک اِک کمرے میں پھیلی
وقت کو اپنی کلائی سے اُتارا
اور ٹیبل پر سجا کر
میں نے آزادی کا لمبا سانس کھینچا
یاد اور خوابوں کی پتواریں سنبھالیں
کشتیِ احساس کو تاریک اور بدرنگ لہروں میں اُتارا

صبح تک اس کشتیِ احساس پر
کر کے لے آؤں گا سورج کو سوار
اور پھر میری کلائی
وقت کی پابند ہو کر
شام تک انجام دے گی
کارہائے ناگوار

●

## اُبال

یہ ہانڈی اُبلنے لگی ہے
یہ مٹی کی ہانڈی اُبلنے لگی ہے
یہ مٹی کی دیوانی ہانڈی اُبلنے لگی ہے

ہزاروں برس سے مری آتما اونگھ میں پھنس گئی تھی

## मामूल

शाम छत से घर में उतरी
रात बनकर एक इक कमरे में फैली
वक़्त को अपनी कलाई से उतारा
और टेबल पर सजाकर
मैंने आज़ादी का लम्बा सांस खींचा
याद और ख़्वाबों की पतवारें संभालीं
कश्तिये एहसास को तारीक और बदरंग लहरों में उतारा

सुब्ह तक इस कश्तिये एहसास पर
करके ले आऊंगा सूरज को सवार
और फिर मेरी कलाई
वक़्त की पाबन्द होकर
शाम तक अंजाम[1] देगी
कारहाय नागवार[2]

●

## उबाल

ये हांडी उबलने लगी है
ये मिट्टी की हांडी उबलने लगी है
ये मिट्टी की दीवानी हांडी उबलने लगी है

हज़ारों बरस से मेरी आत्मा ऊंघ में फंस गई थी

1. पूरा करना 2. बहुत से नागवार काम

جب انسان دو پتھروں کو رگڑ کر کہن سال سورج کی سرخ آتما کو بُلانے لگا تھا
مگر تیز آنچ اور بہت تیز بُو نے جھنجھوڑا تو اب آنکھ پھاڑے ہوئے دم بخود ہے
اُبلنے لگیں سبزیاں پھول پھل گوشت دالیں اناج
ابھی شوربے کے کھدکنے کی آواز چھائی ہوئی تھی
ابھی سانپ چھتری لگائے ہوئے بھاپ نیلے خلاؤں کی جانب رواں ہے
وہ جس کی ضیافت کی تیاریاں تھیں کہاں ہے
مری آتما جاگ کر چیختی ہے
یہ ہانڈی اُبلنے لگی ہے
یہ مٹی کی ہانڈی اُبلنے لگی ہے
یہ مٹی کی دیوانی ہانڈی اُبلنے لگی ہے

●

## اندھیرے میں سوچنے کی مشق

اندھیرا تھا
اندھیرا لال قلعہ جس میں اِک کالا ہیولیٰ تھا
ہزاروں قمقموں کی روشنی تھی دائرہ در دائرہ پھر بھی
اندھیرا تھا
نگل ڈالا تھا جس نے لال قلعے کو گھنا گاڑھا اندھیرا تھا
ہزاروں قمقموں کی روشنی میں پاس کی چیزیں ہی پس منظر
اندھیرا جن کا پس منظر
سڑک پر ہر سڑک پر روشنی کی دوڑ جاری تھی
اندھیرے میں غبار و گرد کے اڑتے ہوئے ذرّوں کو روشن کر رہے تھے

जब इंसान दो पत्थरों को रगड़कर कुहन[1] साल सूरज की सुर्ख़ आत्मा को बुलाने लगा था
मगर तेज़ आंच और बहुत तेज़ बू ने झिंझोड़ा तो अब आंख फाड़े हुये दमबखुद[2] है
उबलने लगीं सब्ज़ियां फूल फल गोश्त दालें अनाज
अभी शोरबे के खदकने की आवाज़ छाई हुई थी
अभी सांप छतरी लगाये हुये भाप नीले ख़लाओं[3] की जानिब रवां है
वो जिस की ज़ियाफ़त[4] की तैयारियां थीं कहां है
मेरी आत्मा जागकर चीख़ती है
यह हांडी उबलने लगी है
यह मिट्टी की हांडी उबलने लगी है
यह मिट्टी की दीवानी हांड़ी उबलने लगी है

●

## अंधेरे में सोचने की मश्क़[5]

अंधेरा था
अंधेरा लाल क़िला जिसमें इक काला हयूला था
हज़ारों क़ुमक़ुमों[6] की रौशनी थी दाइरा दर दाइरा[7] फिर भी
अंधेरा था
निगल डाला था जिसने लाल क़िले को घना गाढ़ा अंधेरा था
हज़ारों क़ुमक़ुमों की रौशनी में पास की चीज़ें ही पसमंज़र[8]
अंधेरा जिनका पसमंज़र
सड़क पर हर सड़क पर रौशनी की दौड़ जारी थी
अंधेरे में गुबारो गर्द के उड़ते हुए ज़र्रों को रौशन कर रहे थे

1. पुराना
2. आवाक
3. अंतरिक्ष
4. भोज, दावत
5. अभ्यास
6. बहुत से बल्ब
7. परिधि के अंदर परिधि
8. पृष्ठभूमि

بہم منقطع کرتے روشنی کے دائرے
اندھیرا کٹتی پھٹتی دوڑتی اڑتی بکھرتی روشنی کو پی رہا تھا
اندھیرے کا مگرمچھ
اندھیرے کے سمندر میں
اُجالے کی چمکتی مچھلیوں کو اپنے دانتوں میں دبائے تیرتا تھا
اندھیرے کا مگرمچھ لال قلعہ پر
بڑی زہریلی سانسیں چھوڑتا تھا
نظر آتا نہیں تھا لال قلعہ
کہ اس کے بُرج کنگورے درودیوار اِک کالا ہیولیٰ بن گئے تھے
ہیولیٰ بن گیا تھا لال قلعہ
مگر اس کے وہاں ہونے میں کوئی شک نہیں تھا
اندھیرا تھا
اندھیرے کے سمندر کی، گپھا میں لال قلعہ تھا

●

## جنگل: ایک ہشت پہلو تصویر

شہر کے آرے چلاتے، بے سرے، بدرنگ، شوروغل سے دور
پاک رنگوں کا صنم آباد
پاک آوازوں کا اک گندھرولوک
شہر والوں میں ہے جنگل جس کا نام
صبح جس کی ایک ارژنگ اور البم جس کی شام

وہ لچکتی فصل کے پہلو میں کہنی مار کر کلکاریاں بھرتی ہوا
جھن جھنا اُٹھتے ہیں موٹے، چم چماتے تار
ٹیپ پر جاتی ہے بل کھاتی ہوئی آواز

बहम[1] मुन्कि़ता[2] करते रौशनी के दाइरे

अंधेरा कटती फटती दौड़ती उड़ती बिखरती रौशनी को पी रहा था

अंधेरे का मगरमच्छ

अंधेरे के समुन्दर में

उजाले की चमकती मछलियों को अपने दांतों में दबाये तैरता था

अंधेरे का मगरमच्छ लाल कि़ले पर

बड़ी ज़हरीली सांसें छोड़ता था

नज़र आता नहीं था लाल कि़ला

कि इसके बुर्ज कन्गूरे दरो दीवार इक काला हयूला बन गए थे

हयूला बन गया था लाल कि़ला

मगर उसके वहां होने में कोई शक नहीं था

अंधेरा था

अंधेरे के समुन्दर की, गुफा में लाल कि़ला था

●

## जंगल : एक हश्त पहलू[3] तस्वीर

शहर के आरे चलाते, बेसिरे, बदरंग, शोरो गुल से दूर

पाक रंगों का सनम आबाद

पाक आवाज़ों का इक गंधर्व लोक

शह्र वालों में है जंगल जिसका नाम

सुब्ह जिसकी एक अर्ज़ंग[4] और अलबम जिसकी शाम

वो लचकती फ़सल के पहलू में कुहनी मारकर किलकारियां भरती हवा

झनझना उठते हैं मोटे, चमचमाते तार

टेप पर जाती है बल खाती हुई आवाज़

1. एक साथ, एक दूसरे को
2. काटते हुए
3. आठ कोने वाली
4. चीनी चित्रकार की बनाई हुई तस्वीर, तस्वीरों की किताब

چھڑ گئی ہو دور جیسے جل ترنگ
دوڑتی ہے سن سی ایسی اُمنگ
جیسے پانی میں ہزاروں مچھلیاں اک ساتھ کودیں اور چادر چیر جائیں
جیسے پکے کام والی ساڑیاں لہرائیں، سرسرائیں
کن کنائیں جیسے ہنسوں کے ہجوم
گن گنائیں سرمدی نغمے نجوم

وہ سنہری چولیوں میں کس مساتے، گول، اُبھرے، سانولے ٹیلے
گول، ابھرے، سانولے ٹیلے سنہری، تنگ، روشن چولیاں
کسمساتے، گول، ابھرے سانولے گدرائے بھاری سخت ٹیلے
وہ سنہرے پن کویاں واں پھاڑ کر خود پھٹ پڑا ہے شیام رنگ
بار سے ہے چاک چولی جھانکتا ہے سانولی دھرتی کا انگ
(یاد آتا ہے یہاں تشبیہہ کا سمراٹ کالی داس)

وہ کھجوروں کے درختوں کی قطار اندر قطار
ایک دم سیدھی، کھڑی، سمبندھ ریکھائیں زمین و آسماں کے درمیان
آسمانی شامیانہ ان ستونوں کے سروں کو چھوڑ کر
بے ستوں گنبد سا خود لٹکا ہوا

آم کی ڈالوں پہ چکنے سبز پتے
سبز پتوں پر لٹکتی کیریاں
سبز ننھی کیریاں
رنگ، رس اور سواد کے خوابوں کی تعبیروں کے انکھوے کھل گئے

سبز پیلا، سبز بھورا، سبز کالا، سبز زرّیں، سبز نیلا
سبز سبز —— سبز سبز

छिड़ गई हो दूर जैसे जल तरंग
दौड़ती है सनसनी ऐसी उमंग
जैसे पानी में हज़ारों मछलियां इक साथ कूदें और चादर चीर जाएं
जैसे पक्के काम वाली साड़ियां लहरायें, सरसरायें
कुनकुनायें जैसे हंसों के हुजूम
गुनगुनायें सरमदी[1] नग़्मे नुजूम[2]

वो सुनहरी चोलियों में कसमसाते, गोल, उभरे, सांवले टीले
गोल, उभरे, सांवले टीले सुनहरी, तंग, रौशन चोलियां
कसमसाते, गोल, उभरे सांवले गदराये भारी सख़्त टीले
वो सुनहरेपन को यां वां फाड़कर खुद फट पड़ा है श्याम रंग
बार[3] से है चाक चोली झांकता है सांवली धरती का अंग
(याद आता है यहां तश्बीह[4] का सम्राट कालीदास)

वो खजूरों के दरख़्तों की क़तार अंदर क़तार
एक दम सीधी, खड़ी, संबंध रेखायें ज़मीनो आसमां के दरमियान
आसमानी शामियाना उन सुतूनों[5] के सिरों को छोड़कर
बेसुतूं[6] गुंबद सा खुद लटका हुआ
आम की डालों पे चिकने सब्ज़[7] पत्ते
सब्ज़ पत्तों पर लटकती कैरियां
सब्ज़ नन्ही कैरियां
रंग, रस और स्वाद के ख़्वाबों की ताबीरों के अंखुवे खुल गये

सब्ज़ पीला, सब्ज़ भूरा, सब्ज़ काला, सब्ज़ ज़र्री, सब्ज़ नीला
सब्ज़ सब्ज़ — सब्ज़ सब्ज़

1. दाईमी, सदैव रहने वाले
2. तारे
3. बोझ
4. उपमा
5. खम्बों
6. बग़ैर खम्भे
7. धानी, हरे

سبز غالب رنگ کتنی جوڑیوں کے ساتھ ہے پھیلا ہوا
سبز غالب رنگ باقی رنگ گویا اس کے شیڈ
راس منڈل میں کنہیا سبز باقی رنگ اس کی گوپیاں

تیز بے حد تیز بے دم ہانپتی موجِ ہوا کی لے
تیز بے حد تیز لیکن نغمہ ریز
جھومتا گاتا تھرکتا ناچتا ماحول
ایک لے میں رقص کرتے ہیں فضا، دیہات، جنگل، کھیت
رقص میں ہے موجِ رنگ
موج میں آواز
اور پھر آواز میں خوشبو کا رقص
سب کے سب ہیں ایک لے کے دائرے میں ہم نوا ہم رقص باہم ایک

دور تک پھیلاؤ، آزادی، محبت اور چنچل شانتی
ایک جیتی جاگتی تابندہ زندہ شانتی
پھولنے پھلنے سنورنے کر گذرنے کا کھلا امکان

شہر والوں میں ہے جنگل اس کا نام

●●●

सब्ज़ ग़ालिब रंग कितनी जोड़ियों के साथ है फैला हुआ
सब्ज़ ग़ालिब रंग बाक़ी रंग गोया उसके शेड
रास मंडल में कन्हैया सब्ज़ बाक़ी रंग उसकी गोपियां

तेज़ बेहद तेज़ बेदम हांपती मौजे हवा की लय
तेज़ बेहद तेज़ लेकिन नग़्मारेज़[1]
झूमता गाता थिरकता नाचता माहौल
एक लय में रक़्स करते हैं फ़ज़ा, देहात, जंगल, खेत
रक़्स में है मौजे रंग
मौज में आवाज़
और फिर आवाज़ में ख़ुश्बू का रक़्स
सब के सब हैं एक लय के दाइरे में हमनवा हमरक़्स बाहम एक

दूर तक फैलाव, आज़ादी, मुहब्बत और चंचल शांति
एक जीती जागती ताबिंदा[2] ज़िंदा शांति
फूलने फलने संवरने कर गुज़रने का खुला इम्कान[3]

शहर वालों में है जंगल इसका नाम

●●●

1. गीत गाती हुई
2. रौशन
3. सम्भावना

## بلراج کومل

### یہ زرد بچّے

گھروں کی رونق
یہ زرد بچّے
پڑھیں لکھیں گے، جوان ہوں گے
معاش کی فکر، ان کی قسمت
تلاشِ فردا — حیات ان کی
یہ رہ گذاروں پہ اپنے موہوم خواب لے کر پھرا کریں گے
یہ گھر بنائیں گے، شادیانے بجائیں گے، آنے والے رنگیں دنوں کی خاطر
یہ چند لقموں کی زندگی کا مآل سمجھیں گے، حسبِ دستور
عمر بھر ان کو انگلیوں پر گنا کریں گے
یہ میرا حصہ
یہ تیرا حصہ
پھر ایک دن
یہ بھی زرد بچوں کے باپ ہوں گے
اور ان کی خاطر دُعا کریں گے
دراز ہو ان کی عمر، دیکھیں یہ سو بہاریں
●

### ڈرگ اسٹور

اگر میں جسم ہوں تو سر سے پاؤں تک میں جسم ہوں
اگر میں روح ہوں تو پھر تمام تر میں روح ہوں

**बलराज कोमल**

## ये ज़र्द बच्चे

घरों की रौनक़
ये ज़र्द बच्चे
पढ़ें लिखेंगे, जवान होंगे
मआश[1] की फ़िक्र, उनकी क़िस्मत
तलाशे फ़र्दा[2], हयात इनकी
ये रहगुज़ारों पे अपने मौहूम[3] ख़्वाब लेकर फिरा करेंगे
ये घर बनायेंगे, शादियाने बजायेंगे, आने वाले रंगीं दिनों की ख़ातिर
ये चन्द लुक़्मों की ज़िन्दगी का मआल समझेंगे, हस्बे दस्तूर
उम्र भर उनको उंगलियों पर गिना करेंगे
ये मेरा हिस्सा
ये तेरा हिस्सा
फिर एक दिन
ये भी ज़र्द बच्चों के बाप होंगे
और उनकी ख़ातिर दुआ करेंगे
दराज़ हो उनकी उम्र, देखें ये सौ बहारें

●

## ड्रग स्टोर

**अगर मैं जिस्म हूं तो सर से पांव तक मैं जिस्म हूं**
**अगर मैं रूह हूं तो फिर तमामतर मैं रूह हूं**

1. जीविका
2. आने वाले कल की तलाश
3. भ्रमात्मक

خدا سے میرا سلسلہ وہی ہے جو صبا سے ہے
اگر میں سبز پیڑ ہوں
تو روح اور جسم کی
وہ کون سی حدیں ہیں فاصلوں میں جو بدل گئیں؟
زمین میری کون ہے؟
چمکتا نیلگوں، حسین آسمان کون ہے؟
جو برگ و گل میں دھیرے دھیرے جذب ہو رہی ہے دھوپ
زرد دھوپ کیوں مجھے عزیز ہے
یہ سوچتا ہوں سب مگر میں طاقچوں میں بندیوں
میں نام کوئی ڈھونڈتا ہوں آج اپنے کرب کا
تلاش کر رہا ہوں ایک ایک پل
قطار در قطار شیشیوں کے اس ہجوم میں
وہ آسمان کیا ہوا؟ وہ سبز پیڑ کیا ہوا؟
جگر میں آگ تھی مگر جگر سفوف بن گیا
جو سرخ تھا کبھی مرا لہو، سپید ہو گیا
میں بوٹیوں میں کٹ گیا
میں دھجیوں میں بُٹ گیا
یہاں پہ میری روشنی، یہاں پہ میری زندگی
سپید، سرخ، زرد، نیلگوں، سیاہ، لیبلوں میں بٹ گئی
صبا کی رہگذر سے دور ہٹ گئی

●

## ایمبولنس

جو مجھ کو لائی تھی سکون گاہ میں
وہ ایک تھی

खुदा से मेरा सिलसिला वही है जो सबा से है
अगर मैं सब्ज़ पेड़ हूं
तो रूह और जिस्म की
वो कौन सी हदें हैं फ़ासलों में जो बदल गयीं?
ज़मीन मेरी कौन है?
चमकता नीलगूं, हसीन आसमान कौन है?
जो बर्गो गुल में धीरे धीरे जज़्ब हो रही है धूप
ज़र्द धूप क्यों मुझे अज़ीज़ है
ये सोचता हूं सब मगर मैं ताक़चों में बन्द यूं
मैं नाम कोई ढूंढता हूं आज अपने कर्ब का
तलाश कर रहा हूं एक एक पल
क़तार दर क़तार शीशियों के इस हुजूम में
वो आसमान क्या हुआ? वो सब्ज़ पेड़ क्या हुआ?
जिगर में आग थी मगर जिगर सुफ़ूफ़[1] बन गया
जो सुर्ख़ था कभी मेरा लहू, सपेद हो गया
मैं बोटियों में कट गया
मैं धज्जियों में नुच गया
यहां पे मेरी रौशनी, यहां पे मेरी ज़िन्दगी
सपेद, सुर्ख़, ज़र्द, नीलगूं, सियाह, लेबलों में बट गयी
सबा की रहगुज़र से दूर हट गयी

●

## एम्बुलेन्स

जो मुझको लायी थी सुकूनगाह में
वो एक थी

1. चूर्ण

سپید صرف ایک، اس کے پہلوؤں، جبین اور پشت پر
صلیب کے نشان تھے

میں چور چور ایک عظیم گھاؤ تھا
وہ مجھ کو دستِ مہرباں میں سونپ کر
چلی گئی تو میں غنودگی کی بے کراں مہیب دھند میں بھٹک گیا
ہر ایک رہ گذر پہ گاڑیوں، بسوں کا کارواں اُمڈ پڑا
عجیب انقلاب تھا، مری نظر کے سامنے
وہ ایک پل میں سب سپید ہو گئیں
سپید، سب سپید، ان کے پہلوؤں، جبین اور پشت پر
صلیب کے نشان دفعتاً اُبھر کے آ گئے

الم نصیب ان کے بے اماں مکیں
مرے ہی ہم نفس، وفا شعار وہ عزیز تھے
جو سادگی سے کوئی مشتہر فریب کھا گئے
کسی مہیب جنگ، قحط، یا وبا کی زد میں آ گئے

●●●

सपेद सिर्फ़ एक, उसके पहलुओं, जबीन[1] और पुश्त[2] पर
सलीब के निशान थे

मैं चूर चूर एक अज़ीम घाव था
वो मुझको दस्ते मेहरबां[3] में सौंपकर
चली गयी तो मैं गुनूदगी की बेकरां[4] महीब[5] धुंद में भटक गया
हर एक रहगुज़र पे गाड़ियों, बसों का कारवां उमड पड़ा
अजीब इनक़लाब था, मेरी नज़र के सामने
वो एक पल में सब सपेद हो गयीं
सपेद, सब सपेद, उनके पहलुओं, जबीन और पुश्त पर
सलीब के निशान दफ़अतन[6] उभर कर आ गये

अलम नसीब[7] उनके बेअमां मकीं[8]
मेरे ही हम नफ़स, वफ़ा शेआर वो अज़ीज़ थे
जो सादगी से कोई मुश्तहिर[9] फ़रेब खा गये
किसी महीब जंग, क़हत या वबा की ज़द में आ गये!!

●●●

1. माथा
2. पीठ
3. मेहरबान का हाथ
4. असीम, अपार
5. ख़ौफ़नाक
6. सहसा
7. जिनके भाग्य में दुख हो
8. बेपनाह निवासी
9. विज्ञापित, मश्हूर

## محمود ایاز

### نوحہ

سیہ رات میں ٹمٹماتے ستاروں کے نیچے
خروشاں سمندر کی موجیں تجھے ڈھونڈھتی ہیں
خروشاں ہوا کی صداؤں میں تیری صدا ہے

مرا دل تجھے ڈھونڈھتا ہے
سیہ رات اشکوں کی شبنم میں سوئی ہوئی ہے
ہر اک پل ہر اک لمحہ ماضی کا
زندہ ہے موجود میں جاگتا ہے
مگر تیرا پیکر
تہِ خاک اندھیروں کے دامن میں سویا ہوا ہے
مرا دل کہ ماتم گرِ رفتگاں ہے
تجھے ڈھونڈھتا ہے

میں آسودۂ ریگ خاموش
اس رات کی جلتی آنکھوں کو دیکھوں
سیہ رات میں ٹمٹماتے ہوئے
ان ستاروں سے پوچھوں
خروشاں سمندر میں ڈوبا ہوا چاند
کسی اجنبی سرزمیں پر تبسم کناں ہے
نقوشِ کفِ پا کی منزل کہاں ہے؟

## महमूद अयाज़

### नौहा

सियह रात में टिमटिमाते सितारों के नीचे
ख़रोशां[1] समुन्द्र की मौजें तुझे ढूंढ़ती हैं
ख़रोशां हवा की सदाओं में तेरी सदा है
मेरा दिल तुझे ढूंढता है

सियह रात अशकों की शबनम में सोई हुई है
हर इक पल, हर इक लम्हा माज़ी का
ज़िंदा है मौजूद में जागता है
मगर तेरा पैकर[2]
तहेख़ाक[3] अंधेरों के मामन[4] में सोया हुआ है
मेरा दिल कि मातमगरे रफ़्तगां[5] है
तुझे ढूंढता है

मैं आसूदए रेगे ख़ामोश
उस रात की जलती आंखों को देखूं
सियह रात में टिमटिमाते हुए
उन सितारों से पूछूं
ख़रोशां समुन्द्र में डूबा हुआ चाँद
किसी अजनबी सरज़मीं पर तबस्सुम कना[6] है
नुक़ूशे कफ़े पा[7] की मंज़िल कहां है?

1. शोर मचाता हुआ
2. शरीर, आकृति
3. मिट्टी के नीचे
4. पनाहगाह
5. मरे हुए लोगों का मातम करने वाला
6. मुस्कुराता हुआ
7. पांव के तलवे के निशान

یمِ زندگی سیل در سیل بہتا ہوا
ایک لمحے کو رک کر پلٹ کر نہ دیکھے
سیہ رات میں ٹمٹماتے ستاروں کے نیچے
فقط ایک شب، بے صدا جاگتی ہے
شب بے صدا پوچھتی ہے
بپھرتی ہوئی موجِ دریا کدھر سے چلی تھی؟
کدھر کو چلی ہے؟
مرا دل کہ ماتم گرِ رفتگاں ہے
کسے ڈھونڈھتا ہے —!!
●

## منجمد آنکھیں

کھلی آنکھوں کو کوئی بند کر دو
کھلی آنکھوں کی ویرانی سے ہول آتا ہے
کوئی ان کھلی آنکھوں کو بڑھ کر بند کر دو
یہ آنکھیں اک انوکھی یخ زدہ دنیا کی
ساکت روشنی میں کھو گئی ہیں
اب ان آنکھوں میں
کوئی رنگ پیدا ہے نہ کوئی رنگ پنہاں ہے
نہ کوئی عکسِ گلبن ہے
نہ کوئی داغِ حرماں ہے
نہ گنجِ شایگاں کی آرزوئے بے نہایت ہے

यमे ज़िन्दगी[1] सैल-दर-सैल[2] बहता हुआ
एक लम्हे को रुक कर पलट कर न देखे
सियह रात में टिमटिमाते सितारों के नीचे
फ़क़त एक शब, बेसदा[3] जागती है
शबे बेसदा पूछती है
बिफरती हुई मौजे दरिया किधर से चली थी?
किधर को चली है?
मेरा दिल कि मातमगरे रफ़तगां है
किसे ढूंढता है - !!

●

## मुंजमिद[4] आंखें

खुली आंखों को कोई बन्द कर दो
खुली आंखों की वीरानी से हौल आता है
कोई इन खुली आंखों को बढ़कर बन्द कर दो
यह आंखें इक अनोखी यख़्ज़दह्[5] दुनिया की
साकित रौशनी में खो गई हैं
अब इन आंखों में
कोई रंग पैदा है न कोई रंग पिन्हां[6] है
न कोई अक्से गुलबुन[7] है
न कोई दाग़े हिरमां[8] है
न गंजे शाएगां[9] की आरज़ूए बेनिहायत है

1. ज़िन्दगी का समुन्दर
2. मौज या लहर
3. बिना आवाज़ के
4. सर्दी से जमी हुई
5. ठंड की मारी हुई
6. छुपा हुआ
7. गुलाब की झाड़ी
8. बदनसीबी
9. बहुत बड़ा ख़ज़ाना या क़ीमती चीज़ें

نہ رنجِ رائیگاں کا عکسِ لرزاں ہے
اگر کچھ ہے تو بس
اک یخ زدہ دنیا کا نقشِ جاوداں ہے
یہ آنکھیں
اب شعاعِ آرزو کی ہر کرن سے یوں گریزاں ہیں
کہ پتھر بن گئی ہیں
یہ آنکھیں مر گئی ہیں!

●

## شب چراغ

بسوں کا شور، دھواں، گرد، دھوپ کی شدت
بلند و بالا عمارات، سرنگوں انساں
تلاشِ رزق میں نکلا ہوا یہ جمِ غفیر
لپکتی بھاگتی مخلوق کا یہ سیلِ رواں
ہر اک کے سینے میں یادوں کی منہدم قبریں
ہر ایک اپنی ہی آوازِ پا سے رُو گرداں
یہ وہ ہجوم ہے جس میں کوئی کسی کا نہیں
یہ وہ ہجوم ہے جس میں کوئی فلک پہ نہیں
اور اس ہجوم سرِ راہ سے گزرتے ہوئے
نہ جانے کیسے تمہاری وفا، کرم کا خیال
مری جبیں کو کسی دستِ آشنا کی طرح

न रंजे राइगां का अक्से लरज़ां है
अगर कुछ है तो बस
इक यख़-ज़दह दुनिया का नक़्शे जाविदां[1] है
ये आंखें अब
शुआए आरज़ू की हर किरन से यूं गुरेज़ां[2] हैं
कि पत्थर बन गई है
ये आंखें मर गई हैं!

●

## शब चराग़[3]

बसों का शोर, धुआं, गर्द, धूप की शिद्दत
बुलन्दो बाला इमारात, सिरनिगूं[4] इंसां
तलाशे रिज़्क़ में निकला हुआ यह जम्मे ग़फ़ीर[5]
लपकती भागती मख़लूक़ का यह सैले रवां
हर इक के सीने में यादों की मुन्हदिम[6] क़बरें
हर एक अपनी ही आवाज़े पा[7] से रुगर्दा[8]
यह वो हुजूम है जिसमें कोई किसी का नहीं
यह वो हुजूम है जिस में कोई फ़लक पे नहीं
और इस हुजूमे सरे राह से गुज़रते हुए
न जाने कैसे तुम्हारी वफ़ा, करम का ख़्याल
मेरी जबीं[9] को किसी दस्ते आशना की तरह

1. हमेशा रहने वाला
2. फ़रारी
3. जुगनू या एक क़ीमती मोती जो रात को चमकता है।
4. सिर न्यूढ़ाये हुए
5. बड़ी भारी भीड़
6. गिराई हुई
7. पांव की आवाज़
8. मुंह मोड़े हुए
9. माथे

جو چھو گیا ہے تو اشکوں کے سوتے پھوٹ پڑے
سموم و ریگ کے صحرا میں اک نفس کے لیے
چلی ہے بادِ تمنا تو عمر بھر کی تھکن
سرِ مژہ سمٹ آئی ہے ایک آنسو میں
یہ وہ گہر ہے جو ٹوٹے تو خاکِ پا میں ملے
یہ وہ گہر ہے جو چمکے تو شب چراغ بنے

●●●

जो छू गया है तो अशकों के सूते फूट पड़े
समूमो रेग[1] के सहरा में इक नफ़स[2] के लिए
चली है बादे तमन्ना तो उम्र भर की थकन
सरे मिज़ह[3] सिमट आई है एक आंसू में
यह वो गुहर[4] है जो टूटे तो ख़ाके पा[5] में मिले
यह वह गुहर है जो चमके तो शब चराग़ बने

●●●

1. गर्म हवा और रेत
2. सांस
3. पलकों पर
4. मोती
5. पगधूली

## ساجدہ زیدی

### کلیاں — نیلا آسمان — زنجیریں
(عورت کے نام)

مرے احساس کی وادی میں کلیاں مسکراتی ہیں
مگر میں چن نہیں سکتی
میں لمحوں میں سفر کرتی ہوں
تابندہ اُفق کے اُس کنارے تک
جہاں آکاش دھرتی کے لبوں کو چومتا ہے
سانس لیتا ہے
مرے ہاتھوں کی ریکھاؤں میں
جانے کیسی زنجیریں پڑی
روزِ اوّل سے
میں یہ زنجیرِ آہن توڑ کر
روزِ ابد تک جا نہیں سکتی
میں کلیاں چُن نہیں سکتی

مرے جذبوں کے نخلستاں میں سبزہ سر اُٹھاتا ہے
ہوا دھیمے سروں میں گنگناتی ہے
فضائیں رقص کرتی ہیں
خدا آواز دیتا ہے
میں سر نہوڑا کے سنتی ہوں
دیارِ روح میں اک ان سنا نغمہ مچلتا ہے
میں اس نغمے کو لب تک لا نہیں سکتی
مرے تپتے بدن پر
سبز شاخوں کی پھواریں سوکھ جاتی ہیں

साजिदा ज़ैदी

## कलियां – नीला आसमान – ज़ंजीरें

(औरत के नाम)

मेरे एहसास की वादी में कलियां मुस्कुराती हैं
मगर मैं चुन नहीं सकती
मैं लम्हों में सफ़र करती हूं
ताबिन्दा उफ़ुक़ के उस कनारे तक
जहां आकाश धरती के लबों को चूमता है
सांस लेता है
मेरे हाथों की रेखाओं में
जाने कैसी ज़ंजीरें पड़ीं
रोज़े अव्वल से
मैं ये ज़ंजीरे आहन[1] तोड़कर
रोज़े अबद तक जा नहीं सकती
मैं कलियां चुन नहीं सकती

मेरे जज़्बों के नख़्लिस्तां में सब्ज़ा सर उठाता है
हवा धीमे सुरों में गुनगुनाती है
फ़ज़ाएं रक़्स करती हैं
खुदा आवाज़ देता है
मैं सर निहुवड़ा के सुनती हूं
दयारे रूह में एक अनसुना नग़्मा मचलता है
मैं उस नग़्मे को लब तक ला नहीं सकती
मेरे तपते बदन पर
सब्ज़ शाख़ों की फुवारें सूख जाती हैं

1. लोहे की ज़ंजीर

مری آنکھوں کی جھیلوں میں
منور لاجوردی آسماں کا عکس ہوتا ہے
اُفق کے پار اک کھڑکی سی کھلتی ہے
سوادِ وقت کی ساری طنابیں ٹوٹ جاتی ہیں
مگر یخ بستہ دیواریں
مجھے ہر سمت سے یوں گھیر لیتی ہیں
میں پروازِ تمنا کر نہیں سکتی
مری آنکھوں کو نیلا آسماں حسرت سے تکتا ہے

کئی عمریں گذار آئی
کئی دنیائیں چھان آئی
کئی صحراؤں میں نقشِ قدم چھوڑے
کئی دریا لہو کے پار کر آئی
کئی آتش کدوں میں جذبِ دل کندن بنا آئی
مگر اب بھی مری زنجیرِ آہن کھڑکھڑاتی ہے

مجھے جب جب بھی نیلا آسماں حسرت سے تکتا ہے
میں اپنی آتشِ دل سے جلا دیتی ہوں
اُس زنجیر کی کڑیاں
ستاروں تک پہنچتی ہوں
مدارِ نور میں مہتاب کی ہم رقص ہوتی ہوں

●

## کب سے محوِ سفر ہو

ساجدہ! کن یگوں کی مسافت سمیٹے ہوئے
اس بیاباں میں یونہی بھٹکتی رہو گی

मेरी आंखों की झीलों में
मुनव्वर लाजवर्दी आसमां का अक्स होता है
उफ़ुक़ के पार एक खिड़की सी खुलती है
सवादे वक़्त की सारी तनाबें[1] टूट जाती हैं
मगर यख़बस्ता दीवारें
मुझे हर सम्त से यूं घेर लेती हैं
मैं परवाज़े तमन्ना[2] कर नहीं सकती
मेरी आंखों को नीला आसमां हस्रत से तकता है

कई उम्रें गुज़ार आयी
कई दुनियायें छान आयी
कई सहराओं में नक़्शे क़दम छोड़े
कई दरिया लहू के पार कर आयी
कई आतिशकदों में जज़्बे दिल कुन्दन बना आयी
मगर अब भी मेरी ज़ंजीरे आहन खड़खड़ाती है

मुझे जब जब भी नीला आस्माँ हसरत से तकता है
मैं अपनी आतिशे दिल से जला देती हूं
उस ज़ंजीर की कड़ियां
सितारों तक पहुंचती हूं
मदारे नूर[3] में महताब की हमरक़्स होती हूं

●

## कब से महवे सफ़र हो

साजिदा! किन युगों की मुसाफ़त समेटे हुये
इस बयाबां में यूंही भटकती रहोगी

1. ख़ेमे की डोरी
2. इच्छा की उड़ान
3. रोशनी के घेरे

ان بگولوں کے ہمراہ یوں رقص کرتی رہو گی

کتنے صحراؤں میں تم نے پھوڑے ہیں پاؤں کے چھالے
کتنی بیدار راتوں سے مانگا ہے تم نے خراجِ تمنا
ساجدہ! کچھ کہو
ہجر کے کن زمانوں میں اشکوں کی مالا پروئی
کن حسابوں چکایا قرضِ جنوں
کون سے مرحلوں سے گذر کر بنا روح کا پیرہن
کس طرح جاں سے گذرے ہیں طوفانِ غم

کس طرح تند آندھی کی یلغار میں
تم نے اپنی ردا کو سنبھالا
کیسے یخ بستہ تنہائیوں میں
جشنِ روح و دل و جاں منایا
شعلۂ آرزو میں
کیسے حرف و نوا کو تپایا
جاگتی رات کی تیرگی کو
کس طرح مطلعِ نورِ یزداں بنایا
کتنے سجدوں سے اپنی جبیں کو سجایا......

ساجدہ!

درد کے راستوں پر

کب سے محوِ سفر ہو
تم نے ان ریگزاروں کی بنجر زمیں میں
کتنے رفتار و گفتار کے گل کھلائے
اس عقوبت کدہ کی سیاہی میں
کتنے چراغِ تمنا جلائے

इन बगूलों के हमराह यूं रक़्स करती रहोगी

कितने सहराओं में तुमने फोड़े हैं पांव के छाले
कितनी बेदार रातों से मांगा है तुमने ख़राजे तमन्ना
साजिदा! कुछ कहो
हिज्र[1] के किन ज़मानों में अश्कों[2] की माला पिरोई
किन हिसाबों चुकाया क़र्ज़े जुनूं
कौन से मरहलों से गुज़रकर बुना रूह का पैरहन[3]
किस तरह जां से गुज़रे हैं तूफ़ाने ग़म

किस तरह तुन्द आंधी की यलग़ार में
तुमने अपनी रिदा को संभाला
कैसे यख़बस्ता तन्हाइयों में
जश्ने रूहो दिलो जां मनाया
शोलए आरज़ू में
कैसे हर्फ़े नवा को तपाया
जागती रात की तीरगी को
किस तरह मत्लए नूरे यज़्दां बनाया
कितने सज्दों से अपनी जबीं को सजाया ——
साजिदा!
दर्द के रास्तों पर
कब से मह्वे सफ़र हो
तुमने इन रेगज़ारों की बन्जर ज़मीं में
कितने रफ़्तारो गुफ़्तार के गुल [illegible]
इस उक़ूबत कदह[4] की सियाही में
कितने चराग़े तमन्ना जलाए

1. जुदाई
2. आंसूओं
3. लिबास
4. दुख का घर

ساجدہ!

اس تگ و دو سے تم نے

کیا کبھی چہرۂ زندگی کو سنوارا

کیا کسی دل میں کوئی ستارہ اُتارا

کیا زمانے کی رفتار بدلی

کیا کسی تپتے صحرا کے ذرّوں کو کندن بنایا

کتنے زخموں پہ انساں کے مرہم لگایا

ظلم کی داستاں کو کبھی حرفِ شیریں بنایا......

ساجدہ!

شام ہے زندگی کی

تھک کے سو جاؤ، سب ہاؤ ہو بھول جاؤ

کڑی دھوپ کے کوس در کوس

اگلے زمانوں کے نقشِ قدم ہیں

رنگِ موسم بدلنے لگا ہے

تم مسیحا نہیں

تھک کے سو جاؤ

رقصِ جنوں بھول جاؤ

●

## وہ پَل ــــ یہ گھڑی

(سلمان کے نام)

وہ پل......

جب تمھیں کوکھ سے جَن کے

امید و امکاں کا تارا سمجھ کر

میں نے آغوش میں بھر لیا تھا،

साजिदा!

इस तगो दौ से तुमने

क्या कभी चेह्‌रए ज़िन्दगी को संवारा

क्या किसी दिल में कोई सितारा उतारा

क्या ज़माने की रफ़्तार बदली

क्या किसी तपते सह्‌रा के ज़र्रों को कुन्दन बनाया

कितने ज़ख़्मों पे इन्सां के मरहम लगाया

ज़ुल्म की दास्तां को कभी हर्फ़े शीरीं बनाया —

साजिदा!

शाम है ज़िन्दगी की

थक के सो जाओ, सब हाओहू भूल जाओ

कड़ी धूप के कोस दर कोस

अगले ज़मानों के नक़्शे क़दम हैं

रंगे मौसम बदलने लगा है

तुम मसीहा नहीं

थक के सो जाओ

रक़्से जुनूं भूल जाओ

●

## वो पल – ये घड़ी

(सलमान के नाम)

वो पल ...........

जब तुम्हें कोख से जन के

उम्मीदो इम्कां[1] का तारा समझकर

मैंने आग़ोश[2] में भर लिया था,

1. आशा और संभावना 2. गोद

وہ پَل
سرخ کلیوں کو جب
اپنے سینے کی دھارا سے سینچا تھا
اور
اپنی ہی تشنگی کا مداوا کیا تھا،

ایک ننھے سے چہرے کے
نازک خدوخال میں ڈوب کر
جب مری روح پروان چڑھنے لگی تھی،

وہ پَل
جب مری شب گزاری کی
محنت کشی میں
تمھاری نمو کی گہربار آسودگی تھی

وہ پل
راحتِ بزمِ موجود وامکاں
جب مری گود میں سوگئی تھی

وہ پل
جب مری آتما
اور پرماتما
اک مدھر روپ میں ڈھل گئے تھے،
میرے آنگن میں
معصوم سی روشنی تھی

وہ پل
وقت کی رہ گزر میں

वो पल —
सुर्ख़ कलियों को जब
अपने सीने की धारा से सींचा था
और
अपनी ही तिश्नगी[1] का मुदावा[2] किया था,

एक नन्हे से चेहरे के
नाज़ुक ख़दोख़ाल में डूबकर
जब मेरी रूह परवान चढ़ने लगी थी,

वो पल
जब मेरी शबगुज़ारी की
मेहनत कशी में
तुम्हारी नुमू की गुहर बार आसूदगी थी,

वो पल
राहते बज़्मे मौजूदो इम्कां
जब मेरी गोद में सो गई थी,

वो पल
जब मेरी आत्मा
और परमात्मा
इक मधुर रूप में ढल गये थे
मेरे आंगन में
मासूम सी रौशन थी

वो पल
वक़्त की रहगुज़र में

1. प्यास 2. उपचार

بہت دور — پیچھے کہیں رہ گیا ہے
غبارِ سفر کے دھندلکوں میں
نظروں سے اوجھل ہوا ہے......

اور — اب
جب کہ تم آئے ہو
اپنے ہی گھر میں مہمان بن کے
تمھیں دور جانا ہے
مصروف ہو —
وقت تھوڑا ہے
آگے مری زندگی کی ڈگر پر
ساعتِ واپسیں منتظر ہے
اس گھڑی —
(گرچہ میری گھڑی اپنی رفتار سے چل رہی ہے)
مگر —
میری آنکھوں کی سوکھی نمی
پرانے کواڑوں کی چوکھٹ میں
نہ جانے کیوں
جذب ہونے لگی ہے
اور
اس گھر کے دیوار و در اپنی اپنی جگہ چپ کھڑے ہیں
●

## دورِ افتادگی

نغمگی — گیت — حرف و نوا
نالۂ شوق — صوت و صدا

बहुत दूर — पीछे कहीं रह गया है
गुबारे सफ़र के धुंदलकों में
नज़रों से ओझल हुआ है —
और —— अब
जबकि तुम आये हो
अपने ही घर में मेहमान बन के
तुम्हें दूर जाना है
मसरूफ़[1] हो —
वक़्त थोड़ा है
आगे मेरी ज़िन्दगी की डगर पर
साअते वापसीं मुंतज़िर है

उस घड़ी ——
(गरचे मेरी घड़ी अपनी रफ़्तार से चल रही है)
मगर —
मेरी आंखों की सूखी नमी
पुराने किवाड़ों की चौखट में
न जाने क्यों
जज़्ब होने लगी है
और
इस घर के दीवारो दर अपनी अपनी जगह चुप खड़े हैं

●

## दौरे उफ़्तादगी

नग़मगी — गीत — हर्फ़ो नवा[2]
नालए शौक़ — सौतो सदा

1. व्यस्त
2. बात और आवाज़

ایک بہری سیاست کے دربار میں
سرنگوں پابہ زنجیر لائے گئے

سارا سیمابِ نقد و نظر
سب طلسماتِ حرف و ہنر
پردۂ سحر و اسرار سے ٹوٹ کر
مقتلِ آرزو بن گئے

وہ طرب زارِ دل — قصرِ غم
رات بھر جاگتی آگہی — یعنی
اِقلیمِ جاں
مشینوں کے کھنڈرات میں کھو گئے
وہ جو آہنگ عالم تھا
خوابوں کا مسکن تھا — اور حرف و معنی کی تطہیر تھا
اپنی بیداریوں کی سزا کاٹنے کے لیے
سنگ و آہن میں ڈھالا گیا

سجدۂ حق......
تمنا کے آفاق تک — درد کے قافلے
کعبۂ نور تک — آبلہ پائی کے سلسلے
زرِ مغرب کی میزان میں تُل گئے

ہم — کہ اس دشت میں آبلہ پا تھے — صدیوں سے
اس راہ کے سنگِ میل
اپنے قدموں کے ہمراز تھے
ہم بھی اس دورِ افتادگی میں
بس
تماشائے اہلِ کرم دیکھتے رہ گئے
●

एक बहरी सियासत के दरबार में
सरनिगूं पा ब जंज़ीर लाये गये

सारा सीमाबे नक़्दोनज़र
सब तिलिस्माते हर्फ़ो हुनर
पर्दए सहरो असरार[1] से टूट कर
मक़्तले आरज़ू बन गये

वो तरबज़ारेदिल — क़सरे ग़म[2]
रात भर जागती आगही — यानी
इकलीमेजां[3]
मशीनों के खंडरात में खो गये
वो जो आहंगे आलम था
ख़्वाबों का मस्कन था — और हर्फ़ो मानी की तत्‌हीर[4] था
अपनी बेदारियों की सज़ा काटने के लिये
संगोआहन में ढाला गया

सज्दए हक़ ........
तमन्ना के आफ़ाक़ तक — दर्द के क़ाफ़िले
काबए नूर तक — आबला-पाई के सिल्‌सिले
ज़रे मग़रिब की मीज़ान में तुल गये

हम — कि उस दश्त में आबला-पा थे — सदियों से
उस राह के संगे मील
अपने क़दमों के हमराज़ थे
हम भी उस दौरे उफ़्तादगी में
बस
तमाशाए अहले करम देखते रह गये

●

1. जादू और रहस्य का पर्दा
2. दुख का महल
3. जान की सल्तनत
4. पवित्र करना

# مئی یوم الحساب

مجھے بے رحم ہستی کے زیاں خانے میں کیوں بھیجا گیا
کیوں حلقۂ زنجیر میں رکھ دی گئیں بے تابیاں میری
ہر اِک منظر مری نظروں کا دھویا تھا
فروزاں شاخساروں پر ہجومِ رنگ و بو
اڑتا ہوا ابرِ رواں
سیماب پا موجیں
صبا کا رقصِ بے پروا
شبِ مہتاب کا افسوں
مہ و انجم کے رقصاں دائرے
روئے شفق
تاباں افق
دریاؤں کی رفتار
شب کے جاگتے اسرار
صحرا کا منور سینۂ عریاں
طلسمِ بیکراں کے خواب گوں سائے
مری راتوں میں مثلِ برق لہرائے
ستاروں کی تجلی میں تھا حرفِ کُن کا افسانہ
بڑا فیاض تھا فطرت کا کاشانہ
کئی صحرا مرے گامِ تمنا کے شناسا تھے............
وہ حرف و صوت کی وادی
وہ ذوقِ شعر کا جادہ
وہ عرفاں کے گریزاں آستانوں پر جبیں سائی

# मई यौमुलहिसाब[1]

मुझे बेरहम हस्ती के ज़िंदा ख़ाने में क्यों भेजा गया
क्यों हल्क़ए ज़ंजीर में रख दी गयी बेताबियां मेरी
हर इक मंज़र मेरी नज़रों का जोया[2] था
फ़रोज़ां शाख़सारों पर हुजूमे रंगो बू
उड़ता हो अब्रे रवां
सीमाब पा मौजें
सबा का रक़्से बेपरवा
शबे महताब का अफ़सूं
महोअन्जुम के रक़्सां दाइरे
रूए शफ़क़
ताबां उफ़ुक़
दरियाओं की रफ़्तार
शब के जागते असरार
सहरा का मुनव्वर सीनए उर्यां
तिलिस्मे बेकरां के ख़्वाब गूँ साये
मेरी रातों में मिस्ले बर्क़ लहराये
सितारों की तजल्ली में था हर्फ़ कुन का अफ़साना
बड़ा फ़य्याज़[3] था फ़ित्रत का काशाना[4]
कई सहरा मेरे गामे तमन्ना के शनासा थे —
वो हर्फ़ोसौत की वादी
वो ज़ौक़े शेर का जादा
वो इरफ़ां के गुरेज़ां आस्तानों पर जबीं साई

1. हिसाब का दिन
2. ढूंढने वाला
3. उदार
4. मकान

وہ دانش کی پذیرائی
وہ معنی کی گھنیری چھاؤں میں
ذہنِ رسا کا کشف — وہ
اسرار کے پردے کے پیچھے
دل کی محشر خیز آوازیں
وہ غم ہائے نہانی سے فروزاں ذوقِ بینائی

وہ دامن کا ہر اک خارِ مغیلاں سے الجھنا
طول و عرضِ دشت و دریا پار کر جانا
وہ ہر ذرّے میں دھرتی کی صدا سننا
وہ ہر قطرے کے آئینے میں
نورِ حسنِ مطلق کا لرزنا
دل — نظر — حرف و ہنر کا ایک ہو جانا
تکلّم — جستجو — رفتارِ غم کا مدّعا پانا
کوئی عیسیٰ نفس دیتا تھا نامِ زیست نذرانہ
لرزتا التہابِ آگہی سے تھا مری نظروں کا پیمانہ
گریزاں ساعتوں کے کارواں کو کس نے پکڑا ہے
نظر محوِ مآلِ دوش و فردا ہے
کئی دیوار و سقف و سائباں کے منجمد چہرے
کئی اونچی فصیلیں راہ میں حائل
کئی بے فیض کاوش ہائے تنہائی
کئی بے مہریاں پیکارِ بے مفہوم پر مائل
کئی تیروں نے میری خیمہ گاہِ شوق کو چھیدا

वो दानिश की पज़ीराई
वो मानी की घनेरी छांव में
ज़ेहने रसा का कश्फ़[1] — वो
असरार के पर्दे के पीछे
दिल की मह्शरख़ेज़ आवाज़ें
वो ग़म हाये निहानी[2] से फ़रोज़ां[3] ज़ौके बीनाई

वो दामन का हर इक ख़ारे मुग़ीलां[4] से उलझना
तूलो अर्ज़े दश्तो दरिया पार कर जाना
वो हर ज़र्रे में धरती की सदा सुनना
वो हर क़तरे के आईने में
नूरे हुस्ने मुत्लक़ का लरज़ना
दिल — नज़र — हर्फ़ो हुनर का एक हो जाना
तकल्लुम — जुस्तजू — रफ़्तारो ग़म का मुद्दआ पाना
कोई ईसा-नफ़स[5] देता था नामे ज़ीस्त नज़राना
लरज़ता इल्तहाबे आगही[6] से था मेरी नज़रों का पैमाना
गुरेज़ां साअतों[7] के कारवां को किसने पकड़ा है
नज़र मह्वे मआले दोशोफ़र्दा है
कई दीवारो सक़फ़ोसायबां[8] के मुन्जमिद चेह्रे
कई ऊँची फ़सीलें राह में हाइल
कई बेफ़ैज़ काविश हाय तन्हाई
कई बेमेह्रियां पैकारे बेमफ़्हूम पर माइल
कई तीरों ने मेरी ख़ेमागाहे शौक़ को छेदा

1. पर्दा उठाना
2. छुपे हुये ग़मों
3. रौशन
4. बबूल का कांटा
5. बीमार को अच्छा करने वाला
6. ज्ञान का भड़काव
7. भागते हुये क्षणों
8. दीवार व छत

کئی ترکش ہوئے اس جسم پر خالی
ہوئی جاتی ہے رزمِ زندگانی مضمحل، گھائل

نشاط و درد کی وہ خوشہ چینی چھوڑ دی ہم نے
عنانِ حسنِ امکاں توڑ دی ہم نے
سکوتِ شام ہے.................
بجھنے لگے سارے ایاغِ گرم رفتاری
شکستہ تارِ ہستی کی طرح لرزاں ہیں
گرد و پیش کے شب تاب نظارے
وہ ساعت آن پہنچی ہے
نگاہِ واپسیں کے منتظر ہیں ٹوٹتے تارے

مجھے شاید ہمالہ کی فلک پیمائیاں آواز دیتی ہیں
میں اپنی موت سے
ان برف زاروں کی درخشندہ معیت میں ملوں گی
توڑ دوں گی حلقۂ زنجیرِ مجبوری

●●●

कई तरकश हुये इस जिस्म पर ख़ाली
हुई जाती है रुख़्मे ज़िन्दगानी मुज़्महिल, घायल

निशातोदर्द की वो ख़ोशाचीनी छोड़ दी हमने
इनाने हुस्ने[1] इम्कां तोड़ दी हमने

सकूते शाम है ——
बुझने लगे सारे अयागे गर्म रफ़्तारी
शिकस्ता तार हस्ती की तरह लरज़ां हैं
गिर्दोपेश के शब ताब नज़्ज़ारे
वो साअत आन पहुंची है
निगाहें वापसीं के मुंतज़िर हैं टूटते तारे

मुझे शायद हिमाला की फ़लक पैमाइयां आवाज़ देती हैं
मैं अपनी मौत से
उन बर्फ़ज़ारों की दरख़शन्दा मईयत[2] में मिलूंगी
तोड़ दूंगी हल्क़ए ज़ंजीरे महजूरी[3]

●●●

1. संभावना की सुन्दरता की लगाम
2. साथ-साथ
3. जुदाई की ज़ंजीर के छल्ले

عزیز قیسی

## رسولِ کاذب

رسولِ مصلوب کے دو ہزار برسوں کے بعد یہ واقعہ ہوا.....
یہ اُس زمانے کی بات ہے جب رسولِ خورشید راس الافلاک پر چمکتا تھا
وہ اک زمستاں کی نیم شب کا سماں تھا
(وہ نیم شب اک رقیق چادر نہ جانے کب سے زمیں کے مُردار کالبد پر
پڑی ہوئی ہے اور اس کے مسموم روزنوں سے گلے سڑے جسم کا تعفن اُبل رہا ہے)
شجر حجر دھند کے کفن میں چھپی ہوئی خامشی کے سینے میں چبھ رہے تھے
عناصرِ وقت منجمد تھے
تمام روحیں فشارِ مرقد میں مبتلا تھیں
اور ایسے ہنگام میں اک آوازِ نور افگن
ظہورِ خورشید کی بشارت سے دشت و در کو جلا رہی تھی
ہزار ہا شب گزیدگاں کے ہجوم سے میں نے اس کو دیکھا
وہ خونِ آدم میں اپنی زندہ خزاں زدہ انگلیاں ڈبوئے کھڑا تھا

ہجوم سے ایک اک گنہگار کو بلاتا اور اس کے ماتھے پہ کلمۂ صبح لکھ رہا تھا
تمام مُردے خزاں زدہ انگلیوں کے چھونے سے جاگتے تھے

## अज़ीज़ कैसी

# रसूले काज़िब[1]

रसूले मस्लूब[2] के दो हज़ार बरसों के बाद ये वाकि़आ हुआ.....
ये उस ज़माने की बात है जब रसूले ख़ुर्शीद[3] रासुल अफ़लाक[4] पर चमकता था
वो इक ज़मिस्ता[5] की नीम शब[6] का समां था
(वो नीम शब, इक रकी़क़[7] चादर न जाने कब से ज़मीं के मुरदार कालबुद[8] पर
पड़ी हुई है और उसके मस्मूम[9] रोज़नों[10] से गले सड़े जिस्म का तअफ़्फ़ुन[11] उबल रहा है)
शजर[12] हजर[13] धुंध के कफ़न में छुपी हुई ख़ामुशी के सीने में चुभ रहे थे
अनासिरे वक़्त[14] मुंजमिद[15] थे
तमाम रूहें फ़िशारे मर्क़द[16] में मुब्तिला थीं
और ऐसे हंगाम[17] में इक आवाज़ नूरअफ़ग़न[18]
ज़हूरे ख़ुर्शीद[19] की बशारत[20] से दश्तोदर[21] को जला रही थी
हज़ारहा शब गज़ीदगां[22] के हुजूम से मैंने उसको देखा
वो ख़ूने आदम में अपनी ज़िन्दा ख़ज़ांज़दा[23] उंगलियां डूबोये खड़ा था

हुजूम से एक इक गुनहगार को बुलाता और उसके माथे पे कलमए सुब्ह लिख रहा था
तमाम मुर्दे ख़ज़ांज़दा उंगलियों के छूने से जागते थे

1. झूठा रसूल
2. जिसे सूली पर चढ़ाया गया हो, ईसा मसीह
3. सूरज का रसूल या पैग़म्बर
4. आसमानों के बुर्ज
5. जाड़े का मौसम
6. आधी रात
7. पतली
8. जिस्म
9. ज़हरीले
10. सूराख़ों
11. बदबू
12. पेड़
13. पत्थर
14. समय के तत्वों
15. जमे हुए
16. क़ब्र का मुर्दे को भींचना
17. वक़्त
18. रौशनी डालने वाली आवाज़
19. सूरज का उदय
20. ख़ुशख़बरी
21. जंगल और मकान अर्थात बस्ती और वीराना
22. वह जिनको रात ने दुख दिया हो, काटा हो
23. पतझड़ की मारी हुई

گناہ گارِ نفس تھا میں بھی
اُمیدوارِ شفا تھا میں بھی
پھر اُس زمستاں کی نیم شب میں ہزار لمحات شاق گزرے
اور ایک لمحے نے میرے زخمِ جگر کو چھو کر کہا:
مداوائے غم کی ساعت قریب ہے
سجدہ ریز ہو جا
یہ اس زمانے کی بات ہے جب زمین کے بے شمار مردے لہو کا بپتسمہ لے رہے تھے
(لہو کا بپتسمہ لے رہے ہیں)
رسولِ خورشید کی صدا بھی تو مر گئی تھی، کُہر میں وہ کھو گیا، اور —
اُسی زمستان کی نیم شب میں خبر ملی ہے
کہ اک شبستانِ نور و نکہت میں بے کفن لاش پر وہ بیٹھا ہوا ہے
اپنے خزاں زدہ ہاتھ سے کسی کے لہو کی تقطیر کر رہا ہے
اور اپنے کاسے کو بھر رہا ہے
خبر ملی ہے،
لہو وہ خورشید کا لہو ہے

•

## ایک منظر، ایک عالَم

دن ڈھلے
مندروں کے کلس، مسجدوں کے مَنارے، گھروں کی چھتیں
سونے چاندی کے پانی سے دُھلنے لگے
قُلّۂ کوہ سے چشمِ نظارہ، لیکن بڑی دور تک

गुनाहगारे नफ़स[1] था मैं भी
उम्मीदवारे शिफ़ा था मैं भी
फिर उस ज़मिस्तां की नीम शब में हज़ार लम्हात शाक़ गुज़रे
और एक लम्हे ने मेरे जख़्मे जिगर को छूकर कहा:
मदावाये ग़म[2] की साअत[3] क़रीब है
सज्दारेज़[4] हो जा
ये उस ज़माने की बात है जब ज़मीन के बेशुमार मुर्दे लहू का बप्तिस्मा ले रहे थे
(लहू का बप्तिस्मा ले रहे हैं)
रसूले ख़ुर्शीद की सदा भी तो मर गई थी, कुहर में वो खो गया, और......
उसी ज़मिस्तां की नीम शब में ख़बर मिली है
कि इक शबिस्ताने नूरोनिक्हत[5] में बेकफ़न लाश पर वो बैठा हुआ है
अपने ख़ज़ां ज़दा हाथ से किसी के लहू की तक़्तीर[6] कर रहा है
और अपने कासे[7] को भर रहा है
ख़बर मिली है
लहू वो ख़ुर्शीद का लहू है

●

## एक मंज़र, एक आलम

दिन ढ़ले,
मंदिरों के कलस, मस्जिदों के मनारे, घरों की छतें
सोने चांदी के पानी से धुलने लगे
कुल्लए कोह[8] से चश्मे नज़्ज़ारा, लेकिन बड़ी दूर तक

1. सांस लेने का गुनहगार
2. ग़म का इलाज
3. घड़ी
4. सज्दे में गिर जा
5. प्रकाश और सुगन्ध का शयनगार
6. बूंद बूंद करके टपकना
7. प्याले
8. पहाड़ की चोटी

پگھلے سونے کی چادر کے نیچے تڑپتا ہوا
گہری ظلمت کا اک بحرِ ذخار بھی
دیکھتی رہ گئی—
کیسا منظر ہے یہ!
میں ابھی عمر کے ڈھلتے سورج کی دنیا نہیں
پھر بھی میرے سنہرے دوپہرے، تبسم کے نیچے کہیں
آنسوؤں کا سمندر نہ بے چین ہو
نیچے آؤ ذرا رفعتِ بام سے
اور دیکھو کبھی—
کیسا عالم ہے یہ!

●

## کاواک

سب آنکھیں ٹانگوں میں جڑی ہیں
ریڑھ کی ہڈی کے منکوں میں کان لگے ہیں
ناف کے اوپر روئیں روئیں میں ایک زباں ہے
پتلونیں ساری آوازیں سن لیتی ہیں
دو پتلونیں جھگڑ رہی ہیں
''اتنی قیمت کیوں لیتی ہو؟ تم میں ایسی کیا خوبی ہے''
''— کیسے گاہک ہو تم آخر، مول بدن کا دے سکتے ہو
پتی ورتا کا مول تمہارے پاس نہیں ہے''
چست نکیلا بریزیر یہ چیخ رہا ہے
''شرم نہیں آتی کتوں کو، چرچ کے آگے کھڑے ہوئے ہیں''
رستم ٹھرّہ پیئے کھڑا ہے بس اسٹاپ کی چھت کے نیچے

पिघले सोने की चादर के नीचे तड़पता हुआ
गहरी ज़ुल्मत[1] का इक बह्रे ज़ख़्ख़ार[2] भी
देखती रह गयी —
कैसा मंज़र है ये!
मैं अभी उम्र के ढलते सूरज की दुनिया नहीं
फिर भी मेरे सुनहरे दोपहरे, तबस्सुम के नीचे कहीं
आंसूओं का समन्दर न बेचैन हो
नीचे आओ ज़रा रफ़अते बाम[3] से
और देखो कभी —
कैसा आलम है ये —!

●

## कावाक

सब आंखें टांगों में जड़ी हैं
रीढ़ की हड्डी के मनकों में कान लगे हैं
नाफ़ के ऊपर रोयें रोयें में एक ज़बां है
पतलूनें सारी आवाज़ें सुन लेती हैं
दो पतलूनें झगड़ रही हैं
''इतनी क़ीमत क्यूं लेती हो? तुम में ऐसी क्या ख़ूबी है''
''—कैसे गाहक हो तुम आख़िर, मोल बदन का दे सकते हो
पतिवरता का मोल तुम्हारे पास नहीं है
चुस्त नुकीला ब्रेज़ियर ये चीख़ रहा है
''शर्म नहीं आती कुत्तों को, चर्च के आगे खड़े हुये हैं''
रुस्तम ठर्रा पिये खड़ा है बस स्टाप की छत के नीचे

1. घोर अंधेरा
2. उमड़ा हुआ समुन्द्र
3. कोठे की ऊँचाई

اور سہراب سے پوچھ رہا ہے،
''بیٹا مال کہاں ملتا ہے؟''
مندر کی چوکھٹ پر بیٹھی اندھی آنکھیں
آتے جاتے ''اوتاروں'' کی خفیہ جیبیں تاک رہی ہیں
ہسپتال کے اونچے نیچے زینوں پر اک مردے کو
گاندھی جی دونوں ہاتھوں سے انجکشن دیتے پھرتے ہیں
واشنگٹن، وِیتنام میں بیٹھا برہم پتر کے پانی کو وہسکی کے جام میں گھول رہا ہے
لندن، لنکا کی سڑکوں پہ سرینوڑ ھائے گھوم رہا ہے
کانگوں آوارہ پھرتا ہے پیرس کے گندے چکلوں میں
بُدھ کے ٹوٹے پھوٹے بُت کے سر پر، بوڑھا کرگس
مُردوں کی مجلس میں بیٹھا اپنی بپتا سُنا رہا ہے
مسجد کے سائے میں بیٹھا کم سِن گیدڑ
اُس کی گواہی میں کہتا ہے
''بے چارہ کم سِن ہے اس کی چونچ سے اب تک
دودھ کی خوشبو سی آتی ہے''
اوپر نیلے کھلے گگن میں
ایک کبوتر اپنی چونچ میں اک زیتون کی شاخ لیے اُڑتا پھرتا ہے
اور اس شاخ کے دونوں جانب
ایٹم بم کے پات لگے ہیں
انساں کا دایاں بازو اک برگِ خزاں کی طرح لرز کر ٹوٹ رہا ہے
اور اس کے بائیں بازو پر کوہِ ہمالیہ دھرا ہوا ہے

और सोहराब से पूछ रहा है,

"बेटा माल कहां मिलता है?"

मन्दिर की चौखट पर बैठी अंधी आंखें

आते जाते अवतारों की ख़ुफ़िया जेबें ताक रही हैं

हस्पताल[1] के ऊँचे नीचे ज़ीनों पर इक इक मुर्दे को

गांधी जी दोनों हाथों से इंजेक्शन देते फिरते हैं

वाशिंगटन, वितनाम[2] में बैठा ब्रह्मपुत्र के पानी को व्हिस्की के जाम में घोल रहा है

लंदन, लंका की सड़कों पे सर न्योढ़ाये घूम रहा है

कांगो आवारा फिरता है पेरिस के गंदे चकलों[3] में

बुद्ध के टूटे फूटे बुत के सर पर बूढ़ा करगस[4]

मुर्दों की मजलिस में बैठा अपनी बिपता सुना रहा है

मस्जिद के साये में बैठा कमसिन गीदड़

उसकी गवाही में कहता है

"बेचारा कमसिन है उसकी चोंच से अब तक

दूध की ख़ुश्बू सी आती है"

ऊपर नीले खुले गगन में

एक कबूतर अपनी चोंच में इक ज़ैतून की शाख़ लिये उड़ता फिरता है

और उस शाख़ के दोनों जानिब

ऐटम बम के पात लगे हैं

इंसां का दायां बाज़ू इक बर्गे ख़िज़ां[5] की तरह लरज़ कर टूट रहा है

और उसके बायें बाज़ू पर कोहे हिमालय धरा हुआ है

1. अस्पताल
2. वियतनाम
3. वैश्याओं के रहने की जगह
4. गिद्ध
5. पतझड़

جانے پھر بھی وہ تلوار کی دھار پہ کیسے چل سکتا ہے

میں اس بھیڑ میں چوراہے پر تنہا بیٹھا سوچ رہا ہوں

دنیا اسرافیل کے پہلے صور کے بعد یونہی لگتی ہے

''گیس کے کمرے'' میں شاید یونہی ہوتا ہے

پوپ پال کی ٹوپی میرے بھیجے میں دھنستی جاتی ہے!

●●●

जाने फिर भी वो तलवार की धार पे कैसे चल सकता है
मैं इस भीड़ में चौराहे पर तन्हा बैठा सोच रहा हूं
दुनिया इसराफ़ील[1] के पहले सूर के बाद यूं ही लगती है
''गैस के कमरे'' में शायद यूं ही होता है
पोप पॉल की टोपी मेरे भेजे में धंसती जाती है

●●●

1. उस फ़रिश्ते का नाम जिसके सूर फूंकने से क़यामत आ जायेगी

## شہاب جعفری

# سورج کا شہر

''نہیں! یہ سورج کے شہر کا آدمی نہیں ہے،
کہ یہ تو مرنے کے بعد فٹ پاتھ پر پڑا ہے،
یہ لاش ہم سب کی طرح سورج کے ساتھ گردش میں کیوں نہیں ہے!!
پڑھو تو اس ڈائری میں کیا ہے۔''

نُچے کُھچے اک ورق پہ کچھ یوں لکھا ہوا تھا:
''میں اپنی دنیائے فکر وفن تج کے آج بن باس میں پڑا ہوں
ضرورتوں میں گھرا ہوا ہوں۔
یہاں تو دو اور دو کا حاصل ہمیشہ ہی چار ہاتھ آیا...... کہ پانچ ناممکنات میں ہے۔
عظیم فنکار کا قلم ہو کہ کارخانے!...... کسی کو تخلیقِ حسن کی آرزو نہیں ہے۔
مقدس آگ اِن کے دل کی یوں پیٹ کے جہنم میں جل رہی ہے
کہ زندگی کی جو قوتیں ہیں، وہ صرف زندہ ہی رہنے میں صَرف ہو رہی ہیں۔
مشین کی طرح ذہن بھی کام کر رہے ہیں
رگوں میں جیتے لہو کے بدلے رقیق لوہا بھرا ہوا ہے۔
مشین کی طرح پانو چلتے ہیں
آدمی کا جلال گردش میں سرنگوں ہے۔
ارادہ واختیار اک اضطرابِ سنگیں ہے، جس سے بچ کر
کوئی نہیں دو گھڑی کسی سے جو بے غرض رُک کے بات کر لے
(کسے خبر — ؟ آدمی کے دو میٹھے بول کو میں ترس رہا ہوں)''

**शहाब जाफ़री**

# सूरज का शह्र

''नहीं! ये सूरज के शह्र का आदमी नहीं है,
कि ये तो मरने के बाद फुटपाथ पर पड़ा है,
ये लाश हम सबकी तरह सूरज के साथ गर्दिश में क्यों नहीं है!!
पढ़ो तो इस डायरी में क्या है।''

नुचे खुचे इक वरक़[1] पे कुछ यूं लिखा हुआ था :
''मैं अपनी दुनियाए फ़िक्रो फ़न[2] तज के आज बनबास में पड़ा हूं
ज़रूरतों में घिरा हुआ हूं।
यहां तो दो और दो का हासिल हमेशा ही चार हाथ आया—कि पांच नामुमकिनात[3] में है।
अज़ीम[4] फ़नकार का क़लम हो कि कारख़ाने!—किसी को तख़लीक़े हुस्न की आरज़ू नहीं है।
मुक़द्दस आग इनके दिल की यूं पेट के जहन्नम में जल रही है
कि ज़िंदगी की जो क़ुव्वतें हैं, वह सिर्फ़ ज़िंदा ही रहने में सर्फ़[5] हो रही हैं
मशीन की तरह ज़ेह्न भी काम कर रहे हैं
रगों में जीते लहू के बदले रक़ीक़[6] लोहा भरा हुआ है।
मशीन की तरह पांव चलते हैं
आदमी का जलाल[7] गर्दिश में सरनिगूं[8] है।
इरादओ अख़्तियार इक इज़्तिराबे संगीं है, जिससे बचकर
कोई नहीं दो घड़ी किसी से जो बेग़रज़ रुक के बात कर ले।
(किसे ख़बर—? आदमी के दो मीठे बोल को मैं तरस रहा हूं!)''

1. पन्ना
2. सोच और कला का संसार
3. असंभव
4. महान
5. ख़र्च
6. पतला, पिघला हुआ
7. प्रताप
8. सर झुकाए हुए

یہاں یہ تحریر آنسوؤں سے مٹی ہوئی تھی — اور اس سے آگے:

"یہ شہر، سورج کا شہر ہے، اِس کے روز و شب کا پتہ نہیں کچھ
نہ آج تک وقت اور تاریخ کا مجھے علم ہو سکا ہے
کہ میرے احساس میں کوئی آج ہے نہ کل!
اور یہ رات ہے یا سیاہ سورج!؟
غروب ہو کر بھی آسمان و زمیں سے پیہم گزر رہا ہے!!
بس اِس جہاں میں — سیاہ و روشن — ہمیشہ دن ہے
ہمیشہ سورج ہی اپنے سر پر کھڑا ہوا ہے
یہ کائنات اک شکستہ گاڑی ہے، ایک پہیئے پہ چل رہی ہے
(زمین کا چاند، کیا خبر، کس اندھیرے پاتال میں گرا ہو!)
ہر ایک شے بھاگتی ہوئی ایک دوسرے کی تلاش میں گم
بس اک تصادم!
ہر ایک شخص ایک دوڑتی لاش ہے — کہ اک دوسرے سے وحشت زدہ، گریزاں
سب اپنا سورج سے منہ چھپائے، تلاش میں وقت کی ہراساں
کسی کو اتنی بھی شام ملتی نہیں — کہ تھوڑا اُداس ہو لیں۔"

یہاں پہ جملے عجیب سے تھے — لہو کے دھبّوں سے مٹ گئے تھے!

●

## تسخیرِ فطرت کے بعد

ہوا اے ہوا —!
میں ترا ایک انگ ایک لہرا تھا

यहां यह तहरीर आंसूओं से मिटी हुई थी — और इससे आगे :

"यह शहर, सूरज का शह्र है, इस के रोज़ो शब[1] का पता नहीं कुछ
न आज तक वक़्त और तारीख़ का मुझे इल्म[2] हो सका है
कि मेरे एहसास में कोई आज है न कल!
और ये रात है या सियाह सूरज!?
ग़ुरूब[3] होकर भी आसमानो ज़मीं से पैहम[4] गुज़र रहा है!!
बस इस जहां में —सियाह रौशन — हमेशा दिन है
हमेशा सूरज ही अपने सर पर खड़ा हुआ है
ये काईनात[5] इक शिकस्ता[6] गाड़ी है, एक पहिये पे चल रही है
(ज़मीन का चांद, क्या ख़बर, किस अंधेरे पाताल में गिरा हो!)
हर एक शय[7] भागती हुई एक दूसरे की तलाश में गुम
बस इक तसादुम[8]!
हर एक शख़्स एक दौड़ती लाश है — कि इक दूसरे से वहशतज़दा[9], गुरेज़ां[10]
सब अपना सूरज से मुंह छुपाये, तलाश में वक़्त की हिरासां[11]
किसी को इतनी भी शाम मिलती नहीं — कि थोड़ा उदास हो लें।"

यहां पे जुमले अजीब से थे — लहू के धब्बों से मिट गये थे!

●

## तसख़ीरे फ़ित्रत[12] के बाद

हवा ऐ हवा — !
मैं तेरा एक अंग एक लहरा[13] था

1. रात-दिन
2. ज्ञान
3. डूबना
4. लगातार
5. ब्रह्माण्ड
6. टूटी हुई
7. चीज़
8. टकराव
9. ख़ौफ़ खाये हुये
10. भागता हुआ
11. मायूस, डरा हुआ
12. प्रकृति को वश में करना
13. हवा का झोंका

صدیوں ترے ساتھ دشت ودمن کوہ وصحرا میں
آزاد وسرشار پھرتا رہا ہوں
سمندر کی چھاتی پہ صدیوں ترے ساتھ
بے فکر وبدمست چلتا رہا ہوں
انوکھی زمینوں، طلسمی جزیروں کو دریافت کرتا رہا ہوں

مجھے تو نے فطرت کے معبد
صنم خانۂ کائنات، آذری کے طلسمات سے آکے باہر نکالا
مرے خوف سے کانپتے دل کو،
وہموں میں ڈوبے ہوئے سر کو
سجدے سے تو نے اُٹھا کر
انھیں آگہی وعمل کا نیا نور بخشا
مجھے خود سے اور خود سے باہر مظاہر سے
صدیوں ہم آہنگ ہونا سکھایا

سمندر کے دکھ کو سمجھنے کی خاطر
ابلتے ہوئے گرم، پُرشور طوفاں کو ناپا ہے میں نے
بیاباں کی تنہائی کو دور کرنے کی خاطر
میں تپتی ہوئی ریت پر صدیوں پیدل چلا ہوں
بدلتے ہوئے موسموں کا ہر اک راز لینے کو میں نے
بہار وخزاں میں، درختوں کے سایوں میں ٹھہرا تو پتوں کی سانسیں گنی ہیں

सदियों तेरे साथ दश्तो दमन[1] कोहो सहरा[2] में
आज़ादो सरशार[3] फिरता रहा हूं
समन्दर की छाती पे सदियों तेरे साथ
बेफ़िक्रो बदमस्त चलता रहा हूं
अनोखी ज़मीनों, तिलिस्मी जज़ीरों[4] को दरयाफ़्त करता रहा हूं

मुझे तूने फ़ित्रत[5] के माबद[6],
सनमख़ानए काइनात, आज़री[7] के तिलिस्मात[8] से आके बाहर निकाला
मेरे ख़ौफ़ से कांपते दिल को,
वहमों में डूबे हुए सर को
सज्दे से तूने उठाकर
उन्हें आगहीओअमल[9] का नया नूर[10] बख़्शा
मुझे ख़ुद से और ख़ुद से बाहर मज़ाहिर[11] से
सदियों हमआहंग[12] होना सिखाया

समन्दर के दुख को समझने की ख़ातिर
उबलते हुए गर्म, पुरशोर[13] तूफ़ानों को नापा है मैंने
बियाबां[14] की तंहाई को दूर करने की ख़ातिर
मैं तपती हुई रेत पर सदियों पैदल चला हूं
बदलते हुए मौसमों का हर इक राज़ लेने को मैंने
बहारो ख़ज़ां[15] में, दरख़्तों के सायों में ठहरा तो पत्तों की सांसें गिनी हैं

1. जंगल और चोटी
2. पहाड़ और रेगिस्तान
3. स्वतन्त्र और मस्त
4. जादुई द्वीपों
5. प्रकृति
6. उपासनागृह
7. आज़र की कला ( आज़र एक बुत तराश था)
8. जादू
9. ज्ञान और कार्य
10.प्रकाश
11.दृष्यों .
12.एक आवाज़ होना
13.शोर से भरे हुए या शोर वाले
14.जंगल
15.बसन्त और पतझड़

زمانے کا ہر سرد و گرم آزمانے کو صدیوں ہی تک میں
پہاڑوں کی برفیلی چوٹی سے
اور کوہِ آتش فشاں کے دہانے سے گزرا کیا ہوں
اور اس پر بھی جب ناتمامی کا احساس ڈستا رہا
اپنی تکمیل کرنے کی خاطر
بلندی کی پُرنور چوکھٹ کو
پستی کے تاریک غاروں کو چوما ہے میں نے
غرض زندگی کے ہر اک درد سے خود کو انگیز کر کے
ہوا اے ہوا——!
میں کہ تجھ سے بچھڑنے سے پہلے
تری طرح آزاد و سرشار تھا
اب یہ کس طرح کی منہمک، ٹوٹتی زندگی ہے؟
کہ تو شہر شہر آدمی کی تگ و تاز کی تاب لانے کے قابل نہیں
اور میں شہر شہر ایک پتھر سا رستوں میں بے حس پڑا ہوں
تری سست پیمائی اور اپنی بیچارگی کا گلہ کر رہا ہوں!

●

## شہرِ انا میں

یہ تیز دھوپ یہ کاندھوں پہ جاگتا سورج
زمیں بلند ہے اتنی کہ آسماں کی رقیب
وہ روشنی ہے، وہ بیداریاں کہ سائے نہ خواب
بس ایک ہوش بس اِک آگہی بس اک احساس

ज़माने का हर सर्दो-गर्म आज़माने को सदियों ही तक मैं ·
पहाड़ों की बर्फ़ीली चोटी से
और कोहे आतिशफ़िशां[1] के दहाने से गुज़रा किया हूं
और उस पर भी जब नातमामी[2] का एहसास डसता रहा
अपनी तक्मील[3] करने की ख़ातिर
बुलंदी की पुरनूर चौखट को
पस्ती के तारीक ग़ारों को चूमा है मैंने
ग़रज़ ज़िंदगी के हर इक दर्द से ख़ुद को अंगेज़[4] करके
हवा ऐ हवा — !
मैं कि तुझसे बिछड़ने से पहले
तेरी तरह आज़ादो सरशार था
अब ये किस तरह की मुन्हमिक[5], टूटती ज़िंदगी है?
कि तू शह्र शह्र आदमी की तगो ताज़[6] की ताब लाने के क़ाबिल नहीं
और मैं शह्र शह्र एक पत्थर सा रस्तों में बेहिस पड़ा हूं
तेरी सुस्त पैमाई[7] और अपनी बेचारगी का गिला कर रहा हूं!

●

## शह्रे अना[8] में

यह तेज़ धूप यह कांधों पे जागता सूरज
ज़मीं बुलंद है इतनी कि आसमां की रक़ीब[9]
वो रौशनी है, वो बेदारियां कि साये न ख़्वाब
बस एक होश बस इक आगही बस इक एहसास

1. ज्वालामुखी पहाड़
2. अधूरापन
3. पूर्ण होना
4. सहन
5. तल्लीन
6. भाग दौड़
7. चाल की सुस्ती, धीमी चाल
8. अहं का शहर
9. प्रतिद्वंद्वी

اور ان کے نور سے جلتے بدن، پگھلتے بدن
بدن ہیں کھولتے سیال آئینے ہر سو
ہر آن بہتے، سدا ہیئتیں بدلتے بدن
دماغ دور سے ان کا نظارہ کرتا ہے
اور ان کے کرب کے اظہار سے سنورتا ہے

وہ روشنی ہے کہ از فرد تا بہ فرد تمام
کسی کی شکل نہ صورت کسی کا رنگ نہ روپ
تمام اَنفس و آفاق گم ہیں آپس میں
ہیں فرد فرد کی پرچھائیاں بھی دھوپ ہی دھوپ
سب اپنے علم کا جادوئے سامری لے کر
ہزار آنکھوں سے اک دوسرے کو دیکھتے ہیں
رواں دواں ہیں سب اک دوسرے کی روحوں میں
اور اتنا جان چکے ہیں سب ایک دوسرے کو
کچھ اتنی دور نکل آئے ہیں سب اپنے سے
کہ دل کے رشتوں کو اب مانتا نہیں کوئی
کسی کو اپنے سِوا جانتا نہیں کوئی

●

## میں

کس قدر روشن ہیں اب ارض و سما
نور ہی نور آسماں تا آسماں

और इनके नूर से जलते बदन, पिघलते बदन
बदन हैं खौलते सैयाल[1] आईने हर सू[2]
हर आन बहते, सदा हैय्अतें[3] बदलते बदन
दिमाग़ दूर से उनका नज़ारा करता है
और उनके कर्ब[4] के इज़्हार से संवरता है

वो रौशनी है कि अज़ फ़र्द ता बा फ़र्द[5] तमाम
किसी की शक्ल न सूरत किसी का रंग न रूप
तमाम अनफ़सो आफ़ाक़[6] गुम हैं आपस में
हैं फ़र्द[7] फ़र्द की परछाईयां भी धूप ही धूप
सब अपने इल्म का जादूए सामरी[8] लेकर
हज़ार आंखों से इक दूसरे को देखते हैं
रवां दवां[9] हैं सब इक दूसरे की रूहों में
और इतना जान चुके हैं सब एक दूसरे को
कुछ इतनी दूर निकल आयें हैं सब अपने से
कि दिल के रिश्तों को अब मानता नहीं कोई
किसी को अपने सिवा जानता नहीं कोई

●

## मैं

किस क़दर रौशन हैं अब अर्ज़ो समा[10]
नूर[11] ही नूर आसमां-ता-आसमां[12]

1. द्रव
2. तरफ़
3. शक्लें
4. बेकली, बैचेनी
5. आदमी से आदमी तक
6. लोग और दुनिया
7. एक आदमी
8. सामरी जादूगर का जादू
9. भागते हुए
10. दुनिया और आसमां
11. रौशनी
12. आसमां से आसमां तक

میرے اندر ڈوبتے چڑھتے ہوئے سورج کئی
جسم میرا روشنی ہی روشنی
پاؤ میرے نور کے پاتال میں
ہاتھ میرے جگمگاتے آسمانوں کو سنبھالے
سرمرا — کاندھوں پہ اک سورج
کہ نادیدہ خلاؤں سے پرے اُبھرا ہوا
اور زمیں کے روز و شب سے چھوٹ کر
آگہی کی تیز رو کرنوں پہ میں اڑتا ہوا
چار جانب اک سہانی تیرگی کی کھوج میں نکلا ہوا!

●●●

मेरे अंदर डूबते चढ़ते हुए सूरज कई
जिस्म मेरा रौशनी ही रौशनी
पांव मेरे नूर के पाताल में
हाथ मेरे जगमगाते आसमानों को संभाले
सर मेरा — कांधों पे इक सूरज
कि नादीदा[1] ख़लाओं[2] से परे उभरा हुआ
और ज़मीं के रोज़ो शब[3] से छूटकर
आगही[4] की तेज़रौ[5] किरनों पे मैं उड़ता हुआ
चार जानिब इक सुहानी तीरगी की खोज में निकला हुआ!

●●●

1. अनदेखा
2. अंतरिक्षों
3. दिन और रात
4. ज्ञान
5. तेज चलती हुई

مظہر امام

## آنگن میں ایک شام

شام کی
لمحہ لمحہ
اُترتی ہوئی
دھند میں
سر جھکائے ہوئے گھر کے
خاموش آنگن میں بیٹھے ہوئے
میری واماندہ آنکھوں کی جلتی ہوئی ریت سے
اِک بپھرتے سمندر کی آوارہ لہریں اچانک اُبلنے لگیں!

شام کی
رستہ رستہ
اُترتی ہوئی دُھند میں
اس بپھرتے سمندر کی آوارہ لہروں کو
چوری چھپے
دفن کرنا پڑا
اُس کھنڈر میں
جہاں مردہ صدیوں کے بھٹکے ہوئے راہ رَو
چیختے پھرتے ہیں
اپنی ہی کھوج میں!

## خوف کا سانپ

## मज़हर इमाम

### आंगन में एक शाम

शाम की
लम्हा[1] लम्हा
उतरती हुई
धुंद में
सर झुकाए हुए घर के
ख़ामोश आंगन में बैठे हुए
मेरी वामांदह[2] आंखों की जलती हुई रेत से
इक बिफरते समुन्दर की आवारा लहरें अचानक उलझने लगीं!

शाम की
रस्ता रस्ता
उतरती हुई धुंद में
उस बिफरते समुन्दर की आवारा लहरों को
चोरी छुपे
दफ़न करना पड़ा
उस खंडर में
जहां मुर्दा सदियों के भटके हुए राहरौ[3]
चीख़ते फिरते हैं
अपनी ही खोज में!

ख़ौफ़ का सांप

1. क्षण
2. थकी मांदी
3. राही

رگ رگ میں خوں کی طرح سرسراتا رہا:
رات کے چند بے کار لمحات کی رازداں
دیکھ پائے نہ بپھرے سمندر کی آوارہ لہروں کا چہرہ کہیں
اور پوچھے محبت سے، اصرار سے
"یہ بیٹھے بٹھائے تمہیں کیا ہوا
کچھ مجھے بھی کہو —!"

●

## رشتہ گونگے سفر کا

یہ کس جنم میں
ہم
دوبارہ ملے ہیں
یہ خط
رنگ
قَد
سب مجھے جانتے ہیں
مرے لَمس سے آشنا ہیں
میں بھٹکا ہوں
کتنے سرابوں میں، صحراؤں میں
کئی کارواں مجھ سے آگے گئے
اُن کے نقشِ کفِ پا ابھی مشتعل ہیں
ابھی دھول نے اُن پہ چادر بچھائی نہیں ہے

रग रग में ख़ूं की तरह सरसराता रहा:
रात के चंद बेकार लम्हात की राज़दां
देख पाए न बिफरे समुन्दर की आवारा लहरों का चेहरा कहीं
और पूछे मुहब्बत से, इसरार से:
"यह बैठे बिठाए तुम्हें क्या हुआ
कुछ मुझे भी कहो —!"

●

## रिश्ता गूंगे सफ़र का

यह किस जन्म में
हम
दोबारा मिले हैं
यह ख़त
    रंग
    क़द
सब मुझे जानते हैं
मेरे लम्स से आशना हैं
मैं भटका हूं
कितने सराबों[1] में, सहराओं में
कई कारवां मुझसे आगे गए
उनके नक़्शे कफ़ेपा[2] अभी मुश्तइल[3] हैं
अभी धूल ने उन पे चादर बिछाई नहीं है

1. मरीचिकाओं
2. पैरों के निशान
3. उत्तेजित

مجھ سے پیچھے
نئے کاروانوں کی گرد اُڑ رہی ہے
کچھ جیالے جواں
تازہ دَم تیز رَو ——
اور میں
وقت کی رہ گذر کا وہ تنہا مسافر
جو ہر قافلے سے الگ
رَہ رَووں سے الگ
اجنبی سمت
یوں چل رہا ہے
کہ اس کے سوا کوئی صورت نہیں ہے!
تحیّر سے پیدا مسرّت کے آنسو لئے
اس طرح ہم ملے، جیسے پہلے کبھی مل چکے تھے
کون سے کارواں سے بھٹکتی ہوئی
تم دوبارہ اِدھر آ گئی ہو؟
تمہیں کون سی منزلِ زندگی کی طلب ہے؟

تمہاری رگوں میں بھی
میری رگوں کی طرح
کتنی صدیوں کا خوں
کتنی نسلوں کا خوں
موج زَن ہے
اور یہ ساری نسلیں
شکستہ، مگر اونچی دیوار کی طرح اِستادہ ہیں

मुझ से पीछे
नए कारवानों की गर्द उड़ा रही है
कुछ जियाले जवां[1]
ताज़ा दम, तेज़रौ[2]—
और मैं
वक़्त की रहगुज़र[3] का वो तन्हा मुसाफ़िर
जो हर क़ाफ़िले से अलग
रह्‌रवों से अलग
अजनबी सिम्त
यूं चल रहा है
कि इसके सिवा कोई सूरत नहीं है!
तहय्युर[4] से पैदा मसर्रत[5] के आंसू लिये
इस तरह हम मिले, जैसे पहले कभी मिल चुके थे

कौन से कारवां से भटकती हुई
तुम दोबारा इधर आ गई हो?
तुम्हें कौन सी मंज़िले ज़िंदगी की तलब है?

तुम्हारी रगों में भी
मेरी रगों की तरह
कितनी सदियों का ख़ूं
कितनी नस्लों का ख़ूं
मोजज़न है
और यह सारी नस्लें
शिकस्ता, मगर ऊंची दीवार की तरह इस्तादा[6] हैं

1. बहादुर जवान
2. तेज़ चलने वाले
3. रास्ते
4. आश्चर्य
5. ख़ुशी
6. खड़ा होना

یونہی کب تلک فون پر بات کرتے رہیں گے!
یونہی فاصلہ جسم کا، لمس کا
ایک رشتہ فقط صوت و آواز کا
یہ رشتہ بھی حصہ ہے گونگے سفر کا
جو کب ٹوٹ جائے
کسے یہ پتہ ہے!

کاش یہ رشتۂ صوت و آواز ہی دائمی ہو
کہ گونگے سفر کے سبھی سلسلے عارضی ہیں!

●

## اکھڑتے خیموں کا درد

کہیں بھی جائے اماں نہیں ہے
نہ روشنی میں، نہ تیرگی میں
نہ زندگی میں، نہ خودکشی میں

عقیدے نیزوں کے زخم کھا کر سسک رہے ہیں
یقین کی سانس اُکھڑ چلی ہے
نڈھال خوابوں کے ہونٹ سے خاک و خوں کے شعلے اُبل رہے ہیں
عزیز قدروں پہ جانکنی کی گرفت مضبوط ہو گئی ہے
پتنگ کی طرح کٹ چکے ہیں تمام رشتے
جو آدمی کو قریب کرتے تھے آدمی سے
دلوں میں جن سے شعاعیں قوس قزح کے آنچل کی پھوٹتی تھیں
نہ فرد کا سائباں سلامت
نہ انجمن کا مکاں سلامت
کوئی خدا ہے تو وہ کہاں ہے؟

यूं ही कब तलक फोन पर बात करते रहेंगे!
यूं ही फ़ासला जिस्म का, लम्स का
एक रिश्ता फ़क्त सौतो आवाज़ का
यह रिश्ता भी हिस्सा है गूंगे सफ़र का
जो कब टूट जाए
किसे यह पता है!

काश यह रिश्तए सौतो आवाज़ ही दाइमी हो
कि गूंगे सफ़र के सभी सिलसिले आरज़ी हैं!

●

## उखड़ते ख़ैमों का दर्द

कहीं भी जाए अमां नहीं है
न रौशनी में, न तीरगी[1] में
न ज़िंदगी में, न ख़ुदकुशी में

अक़ीदे नेज़ों के ज़ख़्म खाकर सिसक रहे हैं
यक़ीन की सांस उखड़ चली है
निढाल ख़्वाबों के होंट से ख़ाको ख़ूं के शोले उबल रहे हैं
अज़ीज़ क़दरों पे जांकनी की गिरफ़्त मज़बूत हो गई है
पतंग की तरह कट चुके हैं तमाम रिश्ते
जो आदमी को क़रीब करते थे आदमी से
दिलों में जिनसे शुआयें[2] क़ौसे क़ुज़ह्[3] के आंचल की फूटती थीं
न फ़र्द का साइबां सलामत
न अन्जुमन का मकां सलामत
कोई ख़ुदा है तो वो कहां है?

1. अंधकार
2. किरणें
3. इन्द्रधनुष

کوئی خدا تھا تو وہ کہاں ہے؟

مہیب طوفاں مہیب تر ہے
پہاڑ تک ریت کی طرح اُڑ رہے ہیں
بس ایک آواز گونجتی ہے
''مجھے بچاؤ! مجھے بچاؤ!!''
(مگر کہیں بھی اماں نہیں ہے)

جو اپنی کشتی پہ بچ رہے گا
وہی علیہ السلام ہوگا!

●

## اشتراک

خیر، اچھا ہوا، تم بھی میرے قبیلے میں آ ہی گئے
اس قبیلے میں کوئی کسی کا نہیں
ایک غم کے سوا
چہرہ اُترا ہوا
بال بکھرے ہوئے
نیند اُچٹی ہوئی
خیر، اچھا ہوا، تم بھی میرے قبیلے میں آ ہی گئے
آؤ ہم لوگ جینے کی کوشش کریں!

●

कोई ख़ुदा था तो वो कहां है?

मुहीब तूफ़ां मुहीबतर है
पहाड़ तक रेत की तरह उड़ रहे
बस एक आवाज़ गूंजती है
"मुझे बचाओ! मुझे बचाओ!!"
(मगर कहीं भी अमां नहीं है)

जो अपनी कश्ती पे बच रहेगा
वही अलैहिस्सलाम[1] होगा!

●

## इश्तराक[2]

ख़ैर, अच्छा हुआ, तुम भी मेरे क़बीले में आ ही गए
इस क़बीले में कोई किसी का नहीं
एक ग़म के सिवा
चेहरा उतरा हुआ
बाल बिखरे हुए
नींद उचटी हुई
ख़ैर, अच्छा हुआ, तुम भी मेरे क़बीले में आ ही गए
आओ, हम लोग जीने की कोशिश करें?

●

1. तुम पर सलामती हो (यह आदर सूचक शब्द पैग़म्बर के लिए प्रयोग होता है)
2. सहयोग

## بے ادب ستاروں نے

بے ادب ستاروں نے
نیند میں مخل ہو کر
تم سے کچھ کہا ہوگا
لیکن ان کی باتوں کا
تم یقین مت کرنا

آؤ آکے خود دیکھو
مضطرب کہاں ہوں میں

●●●

## बे अदब सितारों ने

बे अबद सितारों ने
नींद में मुख़िल[1] होकर
तुम से कुछ कहा होगा
लेकिन उनकी बातों का
तुम यक़ीन मत करना

आओ आके ख़ुद देखो
मुज़तरिब[2] कहां हूं मैं

●●●

1. बाधक 2. व्याकुल

وہاب دانش

## ابہام دیدہ

مخاطب
آسماں ہے یا زمیں
معلوم کر لینا
کہ دونوں کے لئے تشبیب کے
مصرعے الگ سے ہیں
کہیں ایسا نہ ہو
کہ آسماں بدظن
زمیں ناراض ہو جائے
قصیدے میں گریزِ ناروا کا
موڑ آ جائے
ترے سر پہ کوئی الزام عائد ہو
کہ تو بھی عندلیبِ گلشنِ نا آفریدہ ہے
سخن فہمی تری گنجلک
بیاں ابہام دیدہ ہے
یہ مشورہ اس لئے دیتا ہوں
جانِ من

**वहाब दानिश**

## इब्हाम दीदा[1]

मुख़ातब[2]
आसमां है या ज़मीं
मालूम कर लेना
कि दोनों के लिए तशबीब[3] के
मिस्रे अलग से हैं
कहीं ऐसा न हो
कि आसमां बद्ज़न[4]
ज़मीं नाराज़ हो जाए
क़सीदे[5] में गुरेज़[6] नारवा का
मोड़ आ जाए
तेरे सर पे कोई इल्ज़ाम आयद हो
कि तू भी अंदलीबे गुलशन नाआफ़रीदा[7] है
सुख़नफ़हमी तेरी गुंजलक[8]
बयां इब्हाम दीदा है
यह मशिवरा इसलिए देता हूं
जाने मन

1. स्पष्ट रूप से न देखा हुआ 2. जिसको सम्बोधित किया जाए
3. क़सीदे का पहला हिस्सा जिससे आशिक़ाना मज़ामीन शुरू होते हैं
4. बद्गुमान
5. कविता जिसमें किसी की अच्छाई या बुराई हो
6. क़सीदे का वह हिस्सा जहां से शाइर अस्ल मक़सद की तरफ़ मुड़ता है
7. ऐसे चमन का बुलबुल जो मौजूद नहीं है
8. उलझी हुई

کہ گردش میں گھرا ہے آسماں
برہم طبق سارے
زمیں بھی اپنے محور سے الگ چکر لگاتی ہے
قصیدہ سوچ کے لکھنا
کہیں انعام و خلعت کی جگہ
کاسہ نہ بھر جائے
ملامت سے
خجالت سے
ندامت سے

●

## پسپائی

پانچ دس کا
چھوٹا کمرہ
دو
دروازے
ایک میں گندہ پردہ
دوجے میں وہ بھی نہیں
بند کھڑکی
پیوند زدہ مچھر دانی
ڈولتا پلنگ
بیٹھو تو تحت الثریٰ ہل جائے
ایک عورت
عالمِ سپردگی میں

कि गर्दिश में घिरा है आसमां

बरहम तबक़ सारे

ज़मीं भी अपने मह्वर[1] से अलग चक्कर लगाती है

क़सीदा सोच के लिखना

कहीं इनामो ख़िलअत की जगह

कासा न भर जाए

मलामत से

ख़िजालत से

नदामत से

●

## पसपाई

पांच दस का

छोटा कमरा

दो

दरवाज़े

एक में गंदा परदा

दूजे में वो भी नहीं

बन्द खिड़की

पेवंदज़दा[2] मच्छरदानी

डोलता पलंग

बैठो तो तहतुस्सरा[3] हिल जाए

एक औरत

आलमे सपुर्दगी[4] में

1. धुरी
2. पेवंद लगी हुई
3. पाताल
4. खुद को सौंप देने की स्थिति

پانچ دس کے نوٹ
کھونٹی پہ ٹنگا اوورکوٹ
لام سے بے نیل و مرام واپس
پسپائی
معرکہ آرائی
جنگ سے ہاتا پائی
سوچو تو سدرۃ المنتہیٰ مل جائے

●●●

पांच दस के नोट

खूंटी पे टंगा ओवर कोट

लाम से बे नीलो मराम वापस

पसपाई

मारका आराई

जंग से हातापाई

सोचो तो सिदरतुल-मुंतहा[1] हिल जाए

●●●

زاہدہ زیدی

## وہ حرف وصوت وصدا

وہ حرف جو فضائے نیلگوں کی وسعتوں میں قید تھا
وہ صوت جو حصارِ خامشی میں جلوہ ریز تھی
صدا جو کوہسار کی بلندیوں پہ محوِ خواب تھی
ردائے برف سے ڈھکی......
وہ لفظ جو فضا کے نیلے آنچلوں سے چھن کے
جذب ہو رہا تھا
ریگ زارِ وقت میں
جو ذرّہ ذرّہ منتشر تھا
دھندلی، دھندلی ساعتوں کی گرد میں
وہ معنیِ گریز پا
لرز رہا تھا جو رگِ حیات میں
وہ رمز منتظر کہ جو ابھی نہاں تھا
بطنِ کائنات میں

........................

وہ حرف وصوت وصدا
وہ لفظ منتشر......
وہ رمز منتشر......
وہ معنیِ گریز پا......
بس ایک جست میں

ज़ाहिदा ज़ैदी

# वो हर्फ़ो सौतोसदा[1]

वो हर्फ़ जो फ़ज़ाए नीलगूं की वुस्अतों में क़ैद था
वो सौत जो हिसारे ख़ामुशी में जलवारेज़ थी
सदा जो कोहसार की बलन्दियों पे महवे ख़्वाब थी
रिदाए बर्फ़ से ढ़की ......
वो लफ़्ज़ जो फ़ज़ा के नीले आंचलों से छन के
जज़्ब हो रहा था
रेगज़ारे वक़्त में
जो ज़र्रा ज़र्रा मुन्तशिर[2] था
धुंदली, धुंदली साअतों की गर्द में
वो मानीए गुरेज़ पा
लरज़ रहा था जो रगे हयात में
वो रम्ज़े मुन्तज़िर कि जो अभी निहां[3] था
बत्ने काइनात में

........................

वो हर्फ़ो सौतोसदा
वो लफ़्ज़े मुन्तशिर ......
वो रम्ज़े मुन्तशिर ......
वो मानीए गुरेज़ पा
बस एक जस्त में

1. अक्षर और आवाज़ 2. बिखरा हुआ
3. छुपा हुआ

حصارِ خامُشی کو توڑ کر
پگھل کے میرے درد و آرزو کی آنچ میں
نوا و نطق کی صباحتوں میں ڈھل گیا

.....................

وہ آبشارِ نغمہ و نوا
کہ کوہسارِ سرد سے گرا
کہ گونجتی گپھاؤں سے اُبل پڑا
وہ جوئے ذات
نغمۂ حیات
جو رواں دواں ہے بحرِ بیکراں کی کھوج میں

●

## سنگِ جاں

آبِ خفتہ میں
اک سنگ پھینکا تو ہے
—دائرے
سطحِ ساکت پہ اُبھرے ہیں
پھیلیں گے—
مٹ جائیں گے

............

اور وہ سنگِ جاں
اپنی یہ داستاں
زیرِ بارِ جمودِ گراں
ایک سنگِ ملامت کی مانند
دُہرائے گا............

●

हिसारे ख़ामुशी को तोड़कर
पिघल के मेरे दर्दो आरज़ू की आंच में
नवाओ नुत्क़[1] की सबाहतों में ढ़ल गया
........................
वो आबशारे नग़्मओ नवा
कि कोहसारे सर्द से गिरा
कि गूंजती गुफाओं से उबल पड़ा
वो जुए ज़ात
नग़्मए हयात
जो रवां दवां है बह्‌रे बेकरां की खोज में ......

●

## संगे जां

आबे खुफ़्ता[2] में
इक संग फेंका तो है
— दाइरे
सतहे साकित पे उभरे हैं
फैलेंगे —
मिट जायेंगे
............
और वो संगे जां
अपनी ये दास्तां
ज़ेरबार जुमूदे गिरां
एक संगे मलामत की मानिन्द
दुहराएगा ............

●

1. आवाज़ और बात    2. सोये पानी

## وہ جس کا انتظار تھا

وہ جس کا انتظار تھا
شفق کو
بادلوں کو
رہگزر کو......آبشار کو
خزاں کی پتیوں کو
چاندنی کو
دھوپ کو......بہار کو
وہ جس کی آرزو تھی
ساعتوں کو
خامشی کو
ذہن کو......خیال کو
تصورِ محال کو
کھنکتی پیالیوں کو
کرسیوں کو
جامِ مے کو......شمعِ ناتمام کو
دوپہر کو......شام کو

..................

وہ جس کی آہٹیں
سماعتوں کے کنج میں نہاں تھیں
جس کا عکس......
جلوہ ریز تھا......
بصارتوں کی جھیل میں

............

# वो जिसका इन्तिज़ार था

वो जिसका इंतिज़ार था
शफ़क़ को
बादलों को
रहगुज़र को ...... आबशार[1] को
ख़ज़ां की पत्तियों को
चांदनी को
धूप को ...... बहार को
वो जिसकी आरज़ू थी
साअतों को
ख़ामुशी को
ज़ेह्न को ...... ख़्याल को
तसव्वुरे मुहाल को
खनकती प्यालियों को
कुर्सियों को
जामे मय को ...... शमए ना तमाम को
दोपहर को ...... शाम को
........................

वो जिसकी आहटें
समाअतों के कुन्ज में निहां थी
जिसका अक्स ......
जलवारेज़ था ............
बसारतों[2] की झील में
................................

1. झरना    2. नज़रों (दृष्टियों)

وہ کیا فقط صبا کا سرمگیں خرام تھا
کہ شاخِ گل کا سایۂ خفیف تھا
کہ موجِ آب پر کرن کا ارتعاش تھا
جو ایک پل میں سامنے سے یوں گزر گیا
کہ وہ بھی جو منتظر تھے
آنکھ ملتے رہ گئے......

............

مگر وہ اس طرح گزر گیا
کہ یک بیک
وہ انتظار کی بساط ہی اُلٹ گئی
وہ کھیل ختم ہو گیا
اور اس کے بعد
آسمان سے زمیں
زمیں سے آسماں تک
خلا......خلا......خلا......خلا............

●

## جذبۂ بیکرانہ

لُٹا دو.....لُٹا دو
یہ افکار و انوار کا
نیم خفتہ خزانہ
اُمڈتے، سمٹتے
تلاطم سے ڈھالو

वो क्या फ़क़त सबा[1] का सुर्मगीं[2] ख़िराम था
कि शाख़े गुल का सायए ख़फ़ीफ़[3] था
कि मौजे आब[4] पर किरन का इर्तिआश[5] था
जो एक पल में सामने से यूं गुज़र गया
कि वो सभी जो मुन्तज़िर थे
...... आंख मलते रह गये

..........................

मगर वो इस तरह गुज़र गया
कि यक बयक
वो इंतिज़ार की बिसात ही उलट गयी
वो खेल ख़त्म हो गया
और इसके बाद
आसमान से ज़मीं
ज़मीं से आसमान तक
ख़ला ...... ख़ला ...... ख़ला ...... ख़ला ......

●

## जज़्बए बेकराना

लुटा दो ...... लुटा दो
ये अफ़कारो अनवार[6] का
नीम ख़ुफ़्ता[7] ख़ज़ाना
उमड़ते, सिमटते
तलातुम से क़ालो

1. पूर्वी हवा
2. सुर्मांवाली
3. हल्का साया
4. पानी की मौज
5. कपकपाहट
6. सोच और रोशनी
7. आधा छुपा हुआ

کوئی درد آگیں فسانہ

..................

مکاں..........لامکاں ہے

زماں..........بیکراں ہے

نہاں ہے..........

اسی محورِ آرزو میں

تمھارے خدو خال کا

عکسِ موہوم

پرواز کا جذبۂ بیکرانہ

گھنی اور بے نور راہوں میں

سوچو......

بناؤ گی کیا آشیانہ

..................

لُٹادو..........لنڈھادو

بچی ہے جو اب جام میں

یہ شرابِ شبانہ

کہ انجامِ ہستی

فنا کے سمندر میں ہے

ڈوب جانا ——

●●●

कोई दर्द आगीं फ़साना

...................... ..

मकां ........... ला मकां है

ज़मां ........... बेकरां है

निहां है ...........

इसी मह्वरे आरज़ू[1] में

तुम्हारे ख़दो ख़ाल का

अक्से मौहूम[2]

परवाज़ का जज़्बए बेकराना

घनी और बेनूर राहों में

...... सोचो ......

बनाओगी क्या आशियाना

.............. ...

लुटा दो ...... लुंढा दो

बची है जो अब जाम में

यह शराबे शबाना[3]

कि अन्जामे हस्ती

फ़ना के समुन्दर में है

——डूब जाना

●●●

1. इच्छा की धुरी
2. भ्रमात्मक अक्स
3. रात की शराब

مغنی تبسم

## رشتے

میں کیا جانوں، کون ہے سورج
کس نگری کا باسی ہے
کیسا سرچشمہ ہے جس سے
جیون دھارا بہتی ہے
میں کیا جانوں کون ہے بادل
کیوں آوارہ پھرتا ہے
کتنے پیڑ ہرے ہوتے ہیں
کتنی کلیاں مرجھاتی ہیں
ایک نگاہِ لطف سے اس کی
اس کے ایک تغافل سے

میں کیا جانوں
شب کے گہرے سناٹوں میں
کتنے تارے ٹوٹ گئے ہیں
کتنی پلکیں بھیگ چکی ہیں
کتنے آنسو خشک ہوئے ہیں
صدیوں کے ملبے کو ہٹا کر دیکھو
کتنی روحیں
اپنے اپنے پنجر ڈھونڈ ھ رہی ہیں

मुग़नी तबस्सुम

# रिश्ते

मैं क्या जानूं, कौन है सूरज
किस नगरी का बासी है
कैसा सरचश्मा[1] है जिससे
जीवन-धारा बहती है
मैं क्या जानूं कौन है बादल
क्यों आवारा फिरता है
कितने पेड़ हरे होते हैं
कितनी कलियां मुरझाती हैं
एक निगाहे लुत्फ़[2] से उसकी
उसके एक तग़ाफ़ुल[3] से

मैं क्या जानूं
शब के गहरे सन्नाटों में
कितने तारे टूट गये हैं
कितनी पलकें भीग चुकी हैं
कितने आंसू ख़ुश्क हुए हैं
सदियों के मलबे को हटाकर देखो
कितनी रूहें
अपने अपने पिंजर ढूंढ रही हैं

1. स्रोत
2. दया दृष्टि
3. उपेक्षा, बेपरवाई

میں کیا جانوں کیا ہے دنیا
انسانوں کی بستی ہے یا ایک سرائے فانی ہے؟

میں تو ابھی بستر سے اٹھا ہوں
اور مری آنکھوں میں اب تک
خواب کا سارا منظر ہے
میرا پوتا چاند میں بیٹھا
اپنے بیٹے سے کہتا ہے
''دیکھو وہ دھرتی ہے
اس میں دادا ابا رہتے تھے''

●

## نارسی سس

تصوّر کرو
دن کے خوابوں کے برباد لمحوں کا
جب رات سولی چڑھی
اس کا سر آسماں پر تھا
قدموں میں ساری زمیں
ہاتھ پھیلے ہوئے — منھ کھلا
جیب باہر لٹکتی ہوئی
مجھے کیا خبر تھی کہ یوں چاند تھک جائے گا
تصور کرو — اس گھڑی
میں جہاں تھا وہاں میرا سایہ نہ تھا
میں اُسے ڈھونڈتا

मैं क्या जानूं क्या है दुनिया
इंसानों की बस्ती है या एक सराए फ़ानी[1] है

मैं तो अभी बिस्तर से उठा हूं
और मेरी आंखों में अब तक
ख़्वाब का सारा मंज़र है
मेरा पोता चांद में बैठा
अपने बेटे से कहता है
"देखो वो धरती है
उसमें दादा अब्बा रहते थे"

●

## नारसी सस

तसव्वुर[2] करो
दिन के ख़्वाबों के बरबाद लम्हों का
जब रात सूली चढ़ी
उसका सर आसमां पर था
क़दमों में सारी ज़मीं
हाथ फैले हुए — मुंह खुला
जेब बाहर लटकती हुई
मुझे क्या ख़बर थी कि यूं चांद थक जाएगा
तसव्वुर करो — उस घड़ी
मैं जहां था वहां मेरा साया न था
मैं उसे ढूंढता

1. नश्वर स्थान
2. कल्पना

سات رنگوں کے دریا کی جانب چلا
مجھے کیا خبر تھی کہ پاتال میں وہ نہ تھا
ہر طرف ناگ تھے
عفریت کے ہاتھ میں ایک تلوار تھی
پھر وہ تلوار کی دھار تھی
اور میرا گلا
تصور کرو

پھر وہاں میرا سایہ تھا اور میں نہ تھا
●

## پہلی کرن کا بوجھ

سگریٹ کا ایک لمبا کش اور کھانسی
گھونٹ گھونٹ چائے
پگھلتے خوابوں کے موم
گدلے کاغذ پر دنیا کے اعمال کا پیلا زہر
ہم کتنے اچھے تھے
جب ہماری پیٹھ کے نیچے بستر تھا
آؤ چلو، آئینے سے پوچھیں
ابھی کتنا سفر باقی ہے؟
اس کا تو ایک ہی جواب ہے
اپنے چہروں کو برداشت کرو
باہر نکلو
تو ماسک لگانا مت بھولو
●●●

सात रंगों के दरिया की जानिब चला

मुझे क्या ख़बर थी कि पाताल में वो न था

हर तरफ़ नाग थे

इफ़रीत[1] के हाथ में एक तलवार थी

फिर वो तलवार की धार थी

और मेरा गला

तसव्वुर करो

फिर वहां मेरा साया था और मैं न था

●

## पहली किरन का बोझ

सिगरेट का एक लम्बा कश और खांसी

घूंट-घूंट चाय

पिघलते ख़्वाबों के मोम

गदले[2] काग़ज़ पर दुनिया के आमाल का पीला ज़हर

हम कितने अच्छे थे

जब हमारी पीठ के नीचे बिस्तर था

आओ, चलो आईने से पूछें

अभी कितना सफ़र बाक़ी है?

इसका तो एक ही जवाब है

अपने चेहरों को बर्दाश्त करो

बाहर निकलो

तो मास्क लगाना मत भूलो

●●●

1. राक्षस 2. गंदे

راشد آزر

## رات کے سائے

میزوں کے شیشوں پر بکھرے خالی جام کے گیلے حلقے
سگریٹوں کے دھویں کے چھلّے دیواروں پر ٹوٹ چلے ہیں
سارا کمرہ دھواں دھواں ہے ساری فضا ہے مہکی مہکی
دو اک دھندلے دھندلے سر ہیں جھکے ہوئے بے سدھ ہاتھوں پر
رات کا نشّہ ٹوٹ رہا ہے

جب آئے تھے اس محفل میں نئے پرانے سب ساتھی تھے
کون کسے پہچانے گا جب ایک اک کر کے اُٹھ جائیں گے
یہ محفل ہے رات کے دم تک دن نکلے تو آنکھ کھلے گی
سب اپنے اپنے دامن پر لگے ہوئے دھبّے دھو لیں گے
اپنی اپنی نادانی پر یا ہنس لیں گے یا رو لیں گے

●

## خوابوں کے رشتے

وہ خواب جو میری زندگی تھے
وہ کب کے ردّی کی ٹوکری میں
پڑے ہوئے ماندگی کے وقفے کے منتظر ہیں
کہ میں کبھی کارزارِ ہستی کے شور و غل سے
تھکوں تو بس ایک لمحہ رُک کر
انہیں اُٹھا لوں

●●●

राशिद आज़र

## रात के साये

मेज़ों के शीशों पर बिखरे ख़ाली जाम के गीले हल्के
सिगरेटों के धुंए के छल्ले दीवारों पर टूट चले हैं
सारा कमरा धुंआ धुंआ है सारी फ़ज़ा है महकी महकी
दो इक धुंधले धुंधले सर हैं झुके हुये बेसुध हाथों पर
रात का नश्शा टूट रहा है

जब आये थे इस महफ़िल में नये पुराने सब साथी थे
कौन किसे पहचानेगा जब एक इक करके उठ जायेंगे
ये महफ़िल है रात के दम तक दिन निकले तो आंख खुलेगी
सब अपने अपने दामन पर लगे हुये धब्बे धो लेंगे
अपनी अपनी नादानी पर हंस लेंगे या रो लेंगे

●

## ख़्वाबों के रिश्ते

वो ख़्वाब जो मेरी ज़िन्दगी थे
वो कब के रद्दी की टोकरी में
पड़े हुये मांदगी के वक़्फ़े के मुन्तज़िर हैं
कि मैं कभी कारज़ारे हस्ती के शोरो गुल से
थकूं तो बस एक लम्हा रुक कर
उन्हें उठा लूं

●●●

ستیہ پال آنند

## وِش کنیا

(کس جٹادھاری شو سے سیکھا تھا
اور کب، اب یہ بات یاد نہیں!)
ناگ وِدیا کا گیان، سانپوں کو
بس میں کرنے کا فن ہمارا تھا!
ناگ سوامی تھے، زہر کو تریاق
میں بدلنے کا علم رکھتے تھے
ڈر سے نیوڑھائے اپنے ناگ پھنی
سانپ خود مانگتے تھے ہم سے پناہ

ناگ وِدیا کا سارا گیان لیے
ہم کمالِ ہنر کے مالک تھے
لیکن اک دن عجیب بات ہوئی
ایک وِش کنیا پیار سے آ کر
یوں گلے لگ گئی کہ سارا گیان
بِس کو امرت میں، زہر کو تریاق
میں بدلنے کا علم، سب منتر
بھول بیٹھے کہ اس کے ہونٹوں کا
زہر آبِ حیات تھا، اور ہم
لاکھ جنموں کی پیاس رکھتے تھے!

●

**सत्यपाल आनन्द**

## विष कन्या[1]

(किस जटाधारी शिव से सीखा था
और कब, अब ये बात याद नहीं!)
नाग विद्या का ज्ञान, सांपों को
बस में करने का फ़न हमारा था!
नाग स्वामी थे, ज़ह्र को तिरयाक़[2]
में बदलने का इल्म रखते थे
डर से न्योढ़ाये अपने नागफ़नी
सांप ख़ुद मांगते थे हम से पनाह

नाग विद्या का सारा ज्ञान लिये
हम कमाले हुनर के मालिक थे
लेकिन इक दिन अजीब बात हुई
एक विष कन्या प्यार से आकर
यूं गले लग गयी कि सारा ज्ञान
बिस को अमृत में, ज़ह्र को तिरयाक़
में बदलने का इल्म, सब मन्त्र
भूल बैठे कि उसके होंटों का
ज़ह्र आबेहयात[3] था, और हम
लाख जन्मों की प्यास रखते थे!

●

1. ज़हरीली लड़की
2. ज़हर की दवा
3. अमृत

## لہو بولتا ہے

مرے لڑکپن کا شہد
جو قطرہ قطرہ بنتا رہا تھا خلیوں کی پوٹلی میں
نمودِ عہدِ شباب کی صبح کا ستارہ
وہ رزق سورج کا
سون رنگی، چمکتی چڑیا کے آشیانے کا کُل اثاثہ
جسے سنبھالا
بچا کے رکھا
مگر اُٹھایا تو لُٹ گیا
فصل چُگ گئیں پنچھیوں کی ڈاریں
حسیں قطاریں
دھواں دھواں کھیت
اُجڑے اُجڑے بُریدہ ڈنٹھل ہی رہ گئے
شہد قطرہ قطرہ ٹپک گیا پوٹلی سے
سورج کا رزق
دن کے غروب ہونے سے قبل ہی صرف ہو گیا
اب دھواں دھواں ہے
جو بچ گیا ہے
وہ ایک کارِ زیاں ہے
بے رزق خالی کاسہ ہے
رائیگاں ہے!

# लहू बोलता है

मेरे लड़कपन का शहद
जो क़तरा क़तरा बनता रहा था ख़लियों[1] की पोटली में
नमूदे अहदे शबाब[2] की सुब्ह का सितारा
वो रिज़्क़[3] सूरज का
सोन रंगी, चमकती चिड़िया के आशियाने का कुल असासा[4]
जिसे संभाला
बचा के रख्खा
मगर लुटाया तो लुट गया
फ़सल चुग गयीं पक्षियों की डारें
हसीं क़तारें
धुंआ धुंआ खेत
उजड़े उजड़े बुरीदा[5] डंठल ही रह गये
शहद क़तरा क़तरा टपक गया पोटली से
सूरज का रिज़्क़
दिन के ग़ुरूब[6] होने से क़ब्ल ही सर्फ़[7] हो गया
अब धुंआ धुंआ है
जो बच गया है
वो एक कारे ज़ियां[8] है
बेरिज़्क़ ख़ाली कासा[9] है
राइगां[10] है!

1. कोशिकाएं
2. युवावस्था
3. जीविका
4. पूंजी
5. काटा हुआ
6. डूबने
7. ख़र्च
8. नुक़सान का काम
9. प्याला, भिक्षापात्र
10. बेकार

(2)

مرا لہو مجھ سے پوچھتا ہے
تمھارے تن کا یہ نچلا حصہ تو ایک حیواں تھا
دلدلوں میں پھنسا ہوا ایک ایسا وحشی تھا
جو ودیعت ہوا تھا تم کو
ہزاروں صدیوں کے ارتقا میں جمود کے ایک خاص لمحے سے
حادثہ بشریات کی لمحہ لمحہ بنتی بگڑتی تاریخ کے کسی ایک دور میں رونما ہوا تھا
کہیں تواتر میں منجمد ایک گانٹھ سی تھی
اک ایسا وحشی
تمھارے تن کے جو نچلے حصے میں سو رہا تھا
مرا لہو مجھ سے پوچھتا ہے
اسے جگانے کی کیا ضرورت تھی؟ سونے دیتے!

(3)

میں سوچتا ہوں
کہ میرے تن کا یہ نچلا حصہ
جو معصیت کے مہیب غاروں میں گر گیا تھا
جسے کوئی دیو عین عہدِ شباب میں
اپنے غار کی تیرگی میں محبوس کر گیا تھا
جسے گنہ کا گھنا اندھیرا
خود اپنے خوں میں اُڑتی آتش کا رقص
گردش کا شور و غوغا
وہ عشق پیچاں کی بیل جیسے گتھے ہوئے خواب

(2)

मेरा लहू मुझसे पूछता है
तुम्हारे तन का वो निचला हिस्सा तो एक हैवां था
दलदलों में फंसा हुआ एक ऐसा वहशी था
जो वदिअत[1] हुआ था तुमको
हज़ारों सदियों के इर्तिक़ा[2] में जुमूद के एक ख़ास लम्हे से
हादसए बशरियात[3] की लम्हा लम्हा बनती बिगड़ती तारीख़ के
किसी एक दौर में रूनुमा हुआ था
कहीं तवातुर[4] में मुन्जमिद एक गांठ सी थी
इक ऐसा वहशी
तुम्हारे तन के जो निचले हिस्से में सो रहा था
मेरा लहू मुझसे पूछता है
उसे जगाने की क्या ज़रूरत थी? सोने देते!

(3)

मैं सोचता हूं
कि मेरे तन का यह निचला हिस्सा
जो मअसियत[5] के महीब ग़ारों[6] में गिर गया था
जिसे कोई देवऐन अहदे शबाब में
अपने ग़ार की तीरगी[7] में महबूस[8] कर गया था
जिसे गुनह का घना अंधेरा
खुद अपने खूं में उमड़ती आतिश[9] का रक़्स[10]
गर्दिश का शोरो ग़ोग़ा
वो इश्क़ पेचां की बेल जैसे गुथे हुये ख़्वाब

1. धरोहर
2. विकास
3. आदमीपन की दुर्घटना
4. लगातार, एक के बाद एक
5. पाप
6. डरावनी गुफाओं
7. अंधेरा
8. क़ैद
9. आग
10. नृत्य

قہوہ رنگت گداز کولہوں کے
لمس ابریشمی ملائم بھرے بھرے سے گلابی ہونٹوں کا
لذتیں لہر لہر بن کر اُبھرتی جھاگوں کی
اندھی کھائیوں میں ڈوب جانے کی خواہشیں
عکس جھالروں کے
ہوس کی بارش کے گرم چھینٹے
وسیلے جسموں کے قرب کے، انبساطِ تن کے
بہت ستاتے تھے — اچھے لگتے تھے

(4)

میں اپنے خوں کو جواب دیتا ہوں
نچلا حصہ مرے بدن کا
جو ذات بھی، کائنات بھی تھا
مرا ہی اپنا اٹوٹ حصہ تھا، میں ہی تھا، میرا اپنا 'میں' تھا
اگر میں حیواں کی پہلی منزل سے
ارتقا کے ہزار زینوں پہ چڑھتا چڑھتا
وجود کی ایک ایک منزل پھلانگ کر
عہدِ منصبی کے کسی بھی آئندہ کل کی جانب رواں دواں ہوں
تو مجھ کو حیواں سے بغض کیا ہے
کہ ارتقا کی یہ پہلی منزل
مری رگ و پے میں
جسم کے ریشہ ہائے مُو میں
رچی ہوئی ہے
بسی ہوئی ہے
یہ میرا 'کل' ہے جو میرے حاضر کا 'آج' بھی ہے

क़हवा रंगत गुदाज़ कूल्हों के
लम्स अब्रेशमी मुलायम भरे भरे से गुलाबी होंटों का
लज़्ज़तें लहर लहर बनकर उभरती झागों की
अंधी खाईयों में डूब जाने की ख़्वाहिशें
अक्स झालरों के
हवस की बारिश के गर्म छींटे
वसीले[1] जिस्मों के कुर्ब के, इम्बिसातेतन[2] के
बहुत सताते थे — अच्छे लगते थे

(4)

मैं अपने ख़ूं को जवाब देता हूं
निचला हिस्सा मेरे बदन का
जो ज़ात भी, काइनात भी था
मेरा ही अपना अटूट हिस्सा था, मैं ही था, मेरा अपना 'मैं' था
अगर मैं हैवां की पहली मंज़िल से
इर्तिक़ा के हज़ार ज़ीनों पे चढ़ता चढ़ता
वुजूद की एक एक मंज़िल फलांग कर
अह्दे मन्सबी के किसी भी आइन्दा कल की जानिब रवां दवां हूं
तो मुझको हैवां से बुग़्ज़ क्या है
कि इर्तिक़ा की ये पहली मंज़िल
मेरी रगोपै में
जिस्म के रेशाहाए मू में
रची हुयी है
बसी हुयी है
यह मेरा 'कल' है जो मेरे हाज़िर का 'आज' भी है

1. माधयम 2. शरीर से हासिल होने वाली खुशी

مرے گذشتہ سے آج پیوستہ میرا ماضی ہی
میرے تن کا وہ نچلا حصہ ہے
جس کو جھٹلا کے
جس سے ڈر کر
جسے کہیں کانٹ چھانٹ کرنے کے بعد—
ردّ و نفی کے تاریک چاہ میں پھینک کر
میں آدھے ادھورے تن کو لئے ہوئے کیسے جی سکوں گا؟

(5)

میں اپنے خوں کو جواب دیتا ہوں
نچلا دھڑ میرے ساتھ رہنے دو
میرا حصہ ہے، میرا ''میں'' ہے
کہ اپنے ''حیواں'' کی پہلی منزل سے چلنے والا
کہ اپنے ''انساں'' کی سیڑھیوں تک پہنچنے والا
مرا ہی جوہر تھا
شہد کا قطرہ قطرہ حیواں تھا
اپنے ''انساں'' کی سیڑھیوں سے بھی اور اونچا
وہ منصبِ نسل جو فرشتوں سے بالاتر ہے
جو میری آمد کا منتظر ہے
مرے ہی جوہر کے تیسرے، آخری قدم کا امین ہوگا
مجھے خبر ہے
کہ آنے والوں کو
دشتِ امکاں میں اک نئے نقشِ پا کے ابدی وجود کا بھی یقین ہوگا!

●●●

मेरे गुज़िश्ता से आज पेवस्ता मेरा माज़ी ही
मेरे तन का वो निचला हिस्सा है
जिसको झुठला के
जिससे डर कर
जिसे कहीं कांट छांट करने के बाद —
रद्दोनफ़ी के तारीक चाह[1] में फेंक कर
मैं आधे अधूरे तन को लिये हुये कैसे जी सकूंगा?

(5)

मैं अपने ख़ूं को जवाब देता हूं
निचला धड़ मेरे साथ रहने दो
मेरा हिस्सा है, मेरा 'मैं' है
कि अपने 'हैवां' की पहली मंज़िल से चलने वाला
कि अपने 'इन्सां' की सीढ़ियों तक पहुंचने वाला
मेरा ही जौहर था
शहद का क़तरा क़तरा हैवां था
अपने 'इन्सां' की सीढ़ियों से भी और ऊँचा
वो मन्सबे नस्ल जो फ़रिश्तों से बालातर[2] है
जो मेरी आमद का मुन्तज़िर है
मेरे ही जौहर के तीसरे, आख़िरी क़दम का अमीन[3] होगा
मुझे ख़बर है
कि आने वालों को
दश्ते इमकां[4] में इक नये नक़्शे पा के अबदी वुजूद[5] का भी यक़ीन होगा!

●●●

1. अंधेरा कुँआ
2. श्रेष्ठ
3. अमानत रखने वाला
4. संभावाना के जंगल
5. स्थायी अस्तित्व

شاذ تمکنت

## تماشہ

رات جگمگاتی ہے
بھیڑ، شور، ہنگامے
زرق برق، پہناوے
سرخ، سیم گوں، دھانی
روشنی کے فوّارے
مرد، عورتیں، بچے
آڑی ترِچھی، صف باندھے
ایک خطِ نوریں کے
نقطۂ عمودی کو
سَر اُٹھائے تکتے ہیں
لَو کا جاگ اٹھتا ہے
ایک لاش گرتی ہے
مرد، عورتیں، بچے
تالیاں بجاتے ہیں
صرف ایک ہی عورت
چیخ روک لیتی ہے
صرف ایک ہی بچہّ
تلملا کے روتا ہے

●

**शाज़ तमकनत**

## तमाशा

रात जगमगाती है
भीड़, शोर, हंगामे
ज़र्क़ बर्क़[1], पहनावे
सुर्ख़[2], सीमगूं[3], धानी
रौशनी के फव्वारे
मर्द, औरतें, बच्चे
आड़ी तिरछी, सफ़[4] बांधे
एक ख़ात्ते नूरीं के
नुक्तए उमूदी को
सर उठाए तकते हैं
लू का जाग उठता है
एक लाट गिरती है
मर्द, औरतें, बच्चे
तालियां बजाते हैं
सिर्फ़ एक ही औरत
चीख़ रोक लेती है
सिर्फ़ एक ही बच्चा
तिलमिला के रोता है

●

1. भड़कीले और रंगबिरंगे
2. लाल
3. चांदी के रंग के अर्थात सफ़ेद
4. लाइन

## پتھراؤ کی چومکھ برکھا میں!

میں زخمی زخمی لہو لہو
ہر جنگل ہر آبادی میں
کانٹوں کے نکیلے رستوں پر
پھولوں کی روپہلی وادی میں
ہر شہر میں ہر ویرانے میں
ہر شور میں ہر سناٹے میں
آواز لگاتا پھرتا ہوں
کوئی تو خریدار آئے گا
مقتل کی سنہری چوکھٹ تک
بسمل کا طرفدار آئے گا
اِک آس لیے امید لیے
دامن میں مہَ و خورشید لیے
پتھراؤ کی چومکھ برکھا میں
خوابوں کو بچاتا پھرتا ہوں
بے رحم حقیقت ملتی ہے
میں آنکھ چراتا پھرتا ہوں

○

اکثر یہ تمنا جاگی ہے
(گویا میں چہکتا بالک ہوں)
تتلی کے رنگیں پنکھوں پر
للچائے ہوئے بَن بَن گھوموں
ہر کنج میں خوشبو پی پی کر
گنجار میں بھونروں کی جھوموں

## पथराव की चौमुख बरखा में!

मैं ज़ख़्मी ज़ख़्मी लहू लहू
हर जंगल हर आबादी में
कांटों के नुकीले रस्तों पर
फूलों की रूपहली वादी में
हर शह्र में, हर वीराने में
हर शोर में, हर सन्नाटे में
आवाज़ लगाता फिरता हूं
कोई तो ख़रीदार आयेगा
मक़्तल[1] की सुनहरी चौखट तक
बिस्मिल[2] का तरफ़दार आयेगा
इक आस लिये उम्मीद लिये
दामन में महोख़ुर्शीद[3] लिये
पथराव की चौमुख बरखा में
ख़्वाबों को बचाता फिरता हूं
बेरहम हक़ीक़त मिलती है
मैं आंख चुराता फिरता हूं

O

अक्सर यह तमन्ना जागी है
(गोया[4] मैं चहकता बालक हूं)
तितली के रंगीं पंखों पर
ललचाये हुये बन बन घूमूं
हर कुंज में ख़ुश्बू पी पी कर
गुंजार में भंवरों की झूमूं

1. क़त्ल की जगह
2. ज़ख़्मी
3. चांद और सूरज
4. अर्थात

ہر بھور بھئے ہر سانجھ بھئے
چہکار میں چڑیوں کی ڈولوں
فطرت سا سخی تو کوئی نہیں
نظروں سا دھنی تو کوئی نہیں
یہ پیڑ یہ پربت یہ ساگر
دھرتی پہ کھلونے رکھے ہیں
یہ دریا، پرتیں چاندی کی
امرت کے دونے رکھے ہیں
میں امرت پینے رکتا ہوں
دریا کے تٹ پر جھکتا ہوں
پانی میں کوئی پرچھائیں
پھنکارتی ہے ڈس جاتی ہے
خوابوں سے مجھے چونکاتی ہے

○

اکثر یہ گماں ہوتا ہے مجھے
میں ایک چمکتا جگنو ہوں
شبنم کی ننھی بوندوں کو
پھولوں کا گھر دکھلاتا ہوں
میں شب کے اندھیرے سینے میں
نیکی کی کرن بن جاتا ہوں
جب پو کی روشنی آتی ہے
پھنکارتی ہے ڈس جاتی ہے
خوابوں سے مجھے چونکاتی ہے

○

اکثر یہ گماں ہوتا ہے مجھے
بُت ساز ہوں میں ہر پتھر سے

हर भोर भये हर सांझ भये
चहकार में चिड़ियों की डोलूं
फ़ितरत[1] सा सख़ी[2] तो कोई नहीं
नज़रों सा धनी तो कोई नहीं
ये पेड़, ये परबत, ये सागर
धरती पे खिलौने रख्खे हैं
ये दरिया, परतें चांदी की
अमृत के दौने रखे हैं
मैं अमृत पीने रुकता हूं
दरिया के तट पर झुकता हूं
पानी में कोई परछाईं
फुंकारती है डस जाती है
ख़्वाबों से मुझे चौंकाती है

O

अक्सर ये गुमां होता है मुझे
मैं एक चमकता जुगनू हूं
शबनम की नन्ही बूंदों को
फूलों का घर दिखलाता हूं
मैं शब के अंधेरे सीने में
नेकी की किरन बन जाता हूं
जब पौ की रौशनी आती है
फुंकारती है डस जाती है
ख़्वाबों से मुझे चौंकाती है

O

अक्सर ये गुमां होता है मुझे
बुतसाज़[3] हूं मैं हर पत्थर से

1. प्रकृति
2. दानी
3. मूर्ति बनाने वाले

دیرینہ شناسائی ہے مری
چلّاتا ہے کوئی اندر سے
ہر سنگ میں اک بُت خانہ ہے
جس شئے کو پتھر کہتے ہو
وہ صورت کا بیعانہ ہے
ہر سنگ سے پھر بُت ڈھلتے ہیں
ہر بُت کو زباں مِل جاتی ہے
میں پہروں اُن کی سنتا ہوں
خوش ہوتا ہوں سر دھنتا ہوں
دنیا کو مگر فرصت ہی کہاں
آواز مری گھُٹ جاتی ہے
خوابوں سے مجھے چونکاتی ہے

O

داناؤں کی اِس نگری میں
یہ بہکی بہکی کون سنے
سُر چیخ کی پھانسی پر ہو جہاں
سر خاموشی پر کون دھنے
میں کس بستی کا باسی ہوں
کیا کہتا ہوں کیا سنتا ہوں
ان گیتوں کے کھلیانوں سے
کیوں موتی موتی چنتا ہوں
پتھراؤ کی چوکھ برکھا میں
ہر موتی ٹوٹا جاتا ہے
خوابوں سے مجھے چونکاتا ہے

●

देरीना शनासाई[1] है मेरी
चिल्लाता है कोई अंदर से
हर संग में इक बुतख़ाना है
जिस शय[2] को पत्थर कहते हो
वो सूरत का बेआना है
हर संग से फिर बुत ढलते हैं
हर बुत को ज़बां मिल जाती है
मैं पहरों उनकी सुनता हूं
ख़ुश होता हूं सर धुनता हूं
दुनिया को मगर फ़ुर्सत ही कहां
आवाज़ मेरी घुट जाती है
ख़्वाबों से मुझे चौंकाती है

○

दानाओं[3] की इस नगरी में
यह बहकी बहकी कौन सुने
सुर चीख़ की फांसी पर हो जहां
सर ख़ामोशी पर कौन धुने
मैं किस बस्ती का बासी हूं
क्या कहता हूं क्या सुनता हूं
इन गीतों के खलियानों से
क्यों मोती मोती चुनता हूं
पत्थराव की चौमुख बरखा में
हर मोती टूटता जाता है
ख़्वाबों से मुझे चौंकाता है

●

1. पुरानी जान पहचान
2. वस्तु
3. बुद्धिमानों

# لذّتِ سنگ

رات سنساں ہو زرد رُو چاندنی
سبز شیشوں سے چھن چھن کے آتی رہے
اوس کی آنچ سے پتّیاں جل اُٹھیں
نرم سُبزے کی ضو جھلملاتی رہے
ایک چپ کا سماں ہو زمیں تا فلک
خامشی لوریاں سی سناتی رہے
ایسی ہی رات ہو، اَن کہی بات ہو
چاند ہو زرد کرنوں کی برسات ہو
میں بچھڑ جاؤں تم سے بہ عُذرِ سفر
طاق پر شمع آنسو بہاتی رہے

○

اور میں اجنبی دشت و در میں پھروں
کوئی مجھ سے نہ پُوچھے کہ میں کون ہوں
پاؤں کی گرد کہہ دے مسافر ہوں میں
ایک تصویر ہوں ایک پتھر ہوں میں
راہ چلتے سفر میں اگر شب پڑے
آسماں نیلگوں سائباں تان دے
صبح سورج جگا دے کرن بھیج کر
لکّۂ ابرِ آوارہ سایہ کرے
جھیل کا جھل جھلاتا ہوا آئینہ
مجھ کو یاد اپنا چہرہ دلاتا رہے

# लज़्ज़ते संग

रात सुनसान हो ज़र्द-रू[1] चांदनी
सब्ज़[2] शीशों से छन छन के आती रहे
ओस की आंच से पत्तियां जल उठें
नर्म कुहरे की ज़ौ[3] झिलमिलाती रहे
एक चुप का समां[4] हो ज़मीं ता फ़लक[5]
ख़ामुशी लोरियां सी सुनाती रहे
ऐसी ही रात हो, अनकही बात हो
चांद हो ज़र्द किरनों की बरसात हो
मैं बिछड़ जाऊं तुमसे ब उज़्रे सफ़र[6]
ताक़ पर शमा आंसू बहाती रहे

○

और मैं अजनबी दश्तोदर[7] में फिरूं
कोई मुझसे न पूछे कि मैं कौन हूं
पांव की गर्द कह दे मुसाफ़िर हूं मैं
एक तस्वीर हूं, एक पत्थर हूं मैं
राह चलते सफ़र में अगर शब[8] पड़े
आसमां नीलगूं[9] सायबां तान दे
सुब्ह सूरज जगा दे किरन भेज कर
लुक्कए अब्र[10] आवारा साया करे
झील का झल-झलाता हुआ आईना
मुझको याद अपना चेहरा दिलाता रहे

1. पीले चेहरे वाली
2. हरे
3. रौशनी
4. कैफ़ियत
5. ज़मीन से आसमान तक
6. सफ़र के बहाने से
7. जंगल और आबादी
8. रात
9. नीले रंग का
10. डोलते हुए बादल का टुकड़ा

میں وہی ہوں جسے راس آتی نہیں
قرب پایندگی، وصل آسودگی
جو تمھیں چھوڑ کر چل پڑا ہو کہیں
جس نے سوچا نہیں تنگ ہے یہ زمیں

○

دن مہینوں میں تبدیل ہو جائیں گی
جب کڑی دھوپ کے تشنہ لمحات میں
سائے چھتنار پیڑوں کے کھو جائیں گے
رفتہ رفتہ مجھے یاد آؤ گی تم!

○

سوزنِ خار سے پاؤں کے آبلے
پھوٹ کر خونِ تازہ میں نہلائیں گے
آ پڑیں گے جراحت کے جب مرحلے
رفتہ رفتہ مجھے یاد آؤ گی تم!
جب سرِشام میداں سلگنے لگے
اُڑ کے طائر چلیں آشیاں کی طرف
چہچہاتے ہوئے پَر بہ پَر صف بہ صف
گونجتی گنگناتی ہوئی ڈار سے
پیچھے رہ جائے تھک کر پرندہ کوئی
دور چمکے اکیلا ستارہ کوئی
رفتہ رفتہ مجھے یاد آؤ گی تم!

○

دن مہینوں میں تبدیل ہو جائیں گے
جانے میں کس طرح یاد آؤں تمھیں

मैं वही हूं जिसे रास आती नहीं
कुर्ब पायंदगी[1], वस्ले आसूदगी[2]
जो तुम्हें छोड़कर चल पड़ा हो कहीं
जिसने सोचा नहीं तंग है यह ज़मीं

○

दिन महीनों में तब्दील हो जायेंगे
जब कड़ी धूप के तिश्ना[3] लम्हात में
साये छतनार पेड़ों के खो जायेंगे
रफ़्ता रफ़्ता मुझे याद आओगी तुम!

○

सोज़ने ख़ार[4] से पांव के आबले[5]
फूटकर ख़ूने ताज़ा में नहलायेंगे
आ पड़ेंगे जराहत[6] के जब मरहले
रफ़्ता रफ़्ता मुझे याद आओगी तुम!
जब सरेशाम[7] मैदां सुलगने लगे
उड़ के ताइर[8] चलें आशियां[9] की तरफ़
चहचहाते हुए पर ब पर सफ़ ब सफ़
गूंजती गुनगुनाती हुई डार से
पीछे रह जाये थककर परिंदा कोई
दूर चमके अकेला सितारा कोई
रफ़्ता रफ़्ता मुझे याद आओगी तुम!

○

दिन महीनों में तब्दील हो जायेंगे
जाने मैं किस तरह याद आऊं तुम्हें

1. [illegible] का समीप होना
2. सुकून का मिलाप
3. प्यासे
4. कांटो की सुई
5. फफोले
6. शल्यक्रिया
7. शाम होते ही
8. पक्षी
9. घोंसला

یہ نہ ہو کونے کونے رُلاؤں تمھیں
جب بھی بالوں میں کنگھی اُلجھ جائے گی
جب بھی آنکھوں کو کاجل سے خوف آئے گا
بات ہم جولیوں کی بھی بَرمائے گی
میں تسلّی کے مانند یاد آؤں گا

○

کوئی ہمراز چنچل حسینہ تمھیں
دے گی آواز جب نام کو توڑ کر
تم کسی شمعِ طوفاں زدہ کی طرح
اپنے آنسو چھپا لوگی منہ موڑ کر
میں گھٹا بن کے آنکھوں پہ چھا جاؤں گا

○

یوں بھی ہوگا کہ بوندوں کی رُت میں کبھی
مینہہ برسنے سے پہلے کی آندھی چلے
گِھر کے رہ جاؤ تم گوشۂ کنج میں
کنکری سی کوئی آنکھ میں جا پڑے
اور میں بے سبب یاد آؤں تمھیں
ریزۂ خاک بن کر رُلاؤں تمھیں

○

اَدھ پکے پھل ٹپک جائیں گے پیڑ سے
بور جھڑ جائے گا اکھوے کمھلائیں گے
شاخ جھولے گی از خود چٹخ جائے گی
بیج رتی کے برکھا میں جل جائیں گے
اَبر کے صفحۂ سُرمگیں پر تمھیں
میرے لکھے ہوئے گیت یاد آئیں گے

○

यह न हो कोने कोने रुलाऊं तुम्हें
जब भी बालों में कन्घी उलझ जायेगी
जब भी आंखों को काजल से ख़ौफ़ आयेगा
बात हमजोलियों की भी बरमायेगी[1]
मैं तसल्ली के मानिंद याद आऊंगा

O

कोई हमराज़[2] चंचल हसीना तुम्हें
देगी आवाज़ जब नाम को तोड़कर
तुम किसी शम्मे तूफ़ां ज़दा[3] की तरह
अपने आंसू छुपा लोगी मुंह मोड़ कर
मैं घटा बन के आंखों पे छा जाऊंगा

O

यूं भी होगा कि बूंदों की रुत[4] में कभी
मेंह बरसने से पहले की आंधी चले
घिर के रह जाओ तुम गोशए कुंज में
कंकरी सी कोई आंख में जा पडे
और मैं बेसबब याद आऊं तुम्हें
रेज़ए ख़ाक[5] बनकर रुलाऊं तुम्हें

O

अध पके फल टपक जायेंगे पेड़ से
बोर झड़ जायेगा अखुए कुम्हलायेंगे
शाख़ झूलेगी अज़ख़ुद[6] चटख़ जायेगी
पेच रस्सी के बरखा में जल जायेंगे
अब्र[7] के सफ़हए सुरमगीं[8] पर तुम्हें
मेरे लिक्खे हुये गीत याद आयेंगे

O

1. परेशान करेगी
2. राज़ जानने वाली
3. तूफ़ान की मारी हुई शमां
4. मौसम
5. मिट्टी के कण
6. स्वयं से
7. बादल
8. सुरमई पन्ने पर

یوں بھی محسوس ہوگا تمہیں پچھلی شب
میرے نقشِ قدم چل رہے ہیں کہیں
کوئی پرچھائیں سی سنگِ دہلیز پر
کانپتا ہاتھ زنجیرِ دَر کے قریں
دن مہینوں میں تبدیل ہوجائیں گے

○

اور آئے گی پھر وہ سہانی سحر
میں تمھاری طرف یوں پلٹ آؤں گا
چار سُو جیسے اعجاز آرائی ہے
گیند اچھالی ہوئی عرصۂ خواب کی
بن کے تعبیرِ بیدار لوٹ آئی ہے

○

میں تمھاری طرف یوں پلٹ آؤں گا
جیسے گونجی ہوئی کوئی آواز تھا
لَب سے نکلا مگر راز ہی راز تھا

○

میں تمھاری طرف یوں پلٹ آؤں گا
جیسے بادل کا دَل سوئے دریا چلے
جیسے گوکل میں بنسی کا لہرا چلے
دُھن میں قامت کی جس طرح سایا چلے
موج آواز دے اور کنارا چلے
میں تمھاری طرف یوں پلٹ آؤں گا

○

جانِ شاعر، تصوّر کا یہ شہر بھی
سربسر لُطف ہے سر بسر قہر بھی

यूं भी महसूस होगा तुम्हें पिछली शब
मेरे नक़्शे क़दम चल रहे हैं कहीं
कोई परछाईं सी संगे दह्लीज़[1] पर
कांपता हाथ ज़ंजीरे दर[2] के क़रीं
दिन महीनों में तब्दील हो जायेंगे

○

और आयेगी फिर वो सुहानी सहर[3]
मैं तुम्हारी तरफ़ यूं पलट आऊंगा
चार सू जैसे एजाज़[4] आराई है
गेंद उछाली हुई अर्सये ख़्वाब[5] की
बन के ताबीरे बेदार[6] लौट आई है

○

मैं तुम्हारी तरफ़ यूं पलट आऊंगा
जैसी गूंजी हुई कोई आवाज़ था
लब से निकला मगर राज़ ही राज़ था

○

मैं तुम्हारी तरफ़ यूं पलट आऊंगा
जैसे बादल का दल सूए दरया[7] चले
जैसे गोकुल में बंसी का लहरा चले
धुन में क़ामत[8] की जिस तरह साया चले
मौज आवाज़ दे और किनारा चले
मैं तुम्हारी तरफ़ यूं पलट आऊंगा

○

जाने शाइर, तसव्वुर का यह शह्र भी
सर-बसर[9] लुत्फ़ है सर-बसर क़हर भी

1. चौखट के पत्थर
2. दरवाज़े की ज़ंजीर
3. सुबह
4. चमत्कार किया हुआ
5. ख़्वाब का वक्फ़ा
6. जागा हुआ स्वप्नफल
7. दरया की तरफ़
8. क़द, काठी
9. तमाम

کچھ خبر ہے تمھیں اے بہشتِ نظر
یہ محبت بھی عادت سی کیوں بن گئی
یہ وفا کا چلن جیسے بیگار ہے
دلبری بھی مروّت سی کیوں بن گئی
لذّتِ قرب و دیدار و گفتار بھی
ایک بے کیف راحت سی کیوں بن گئی
کوئی پرخاش تک روز و شب سے نہیں
زندگانی اِطاعت سی کیوں بن گئی
سوچتا ہوں یہی بنتِ شمس و قمر
میں بچھڑ جاؤں تم سے بہ عُذرِ سفر
نرم کُہرے کی ضو جھلملاتی رہے!
طاق پر شمع آنسو بہاتی رہے!

●

## رتجگا

اندھیری رات، ہوا تیز، برشگال کا شور
کروں تو کیسے کروں شمع کی نگہبانی
اِن آندھیوں میں کفِ دست کا سہارا کیا
کہاں چلے گئے تم سونپ کر یہ دولتِ نور
مری حیات تو جگنو کی روشنی میں کٹی
نہ آفتاب سے نسبت نہ ماہتاب رفیق

कुछ ख़बर है तुम्हें ऐ बहिश्ते नज़र
ये मुहब्बत भी आदत सी क्यों बन गई
ये वफ़ा का चलन जैसे बेगार है
दिलबरी भी मुरव्वत सी क्यों बन गई
लज़्ज़ते कुर्बो दीदारो गुफ़्तार[1] भी
एक बेकैफ़ राहत सी क्यूं बन गई
कोई पर्ख़ाश[2] तक रोज़ो शब से नहीं
ज़िंदगानी इताअत[3] सी क्यूं बन गई
सोचता हूं यही बिंते शम्सो क़मर[4]
मैं बिछड़ जाऊँ तुमसे ब-उज़्रे सफ़र
नर्म कुहरे की ज़ौ झिलमिलाती रहे
ताक़ पर शमा आंसू बहाती रहे!

●

## रतजगा[5]

अंधेरी रात, हवा तेज़, बर्शगाल[6] का शोर
करूं तो कैसे करूं शमा की निगहबानी[7]
इन आंधियों में कफ़ेदस्त[8] का सहारा क्या
कहां चले गये तुम सौंप कर ये दौलते नूर
मेरी हयात[9] तो जुगनू की रौशनी में कटी
न आफ़ताब से निस्बत न माहताब रफ़ीक़

1. पास से देखने और बात करने की लज़्ज़त
2. लड़ाई
3. आज्ञापालन
4. सूरज और चांद की बेटी
5. रात को जागना
6. वर्षा
7. देखभाल
8. हाथ की हथेली
9. ज़िंदगी

جنم جنم کی سیاہی، برس برس کی یہ رات
قدم قدم کا اندھیرا، نفس نفس کی یہ رات
تمہاری نکہتِ برباد کو ترستی ہے
اب آؤ آکے امانت سنبھال لو اپنی
تمام عمر کا یہ رتجگا تمام ہوا
میں تھک گیا ہوں مجھے نیند آئی جاتی ہے

●●●

जन्म जन्म की सियाही, बरस बरस की ये रात
क़दम क़दम का अंधेरा, नफ़स नफ़स की यह रात
तुम्हारी नकहतें[1] बर्बाद को तरसती है
अब आओ आके अमानत संभाल लो अपनी
तमाम उम्र का यह रतजगा तमाम[2] हुआ
मैं थक गया हूं मुझे नींद आई जाती है

●●●

1. ख़ुश्बू 2. ख़त्म

فضل تابش

# ایک نظم

سنو، ہم درختوں سے پھل توڑتے وقت
ان کے لیے ماتمی دھن بجاتے نہیں
سنو! پیار کے قہقہوں
اور بوسوں کے معصوم لمحوں میں ہم
آنسوؤں کے دیوں کو جلاتے نہیں
اور تم لمس، بوسوں
سلگتی ہوئی گرم سانسوں میں
آنسو ملانے پہ کیوں تل گئی ہو

سنو! آنسوؤں کا مقدر
تمہارا مقدر نہیں
تم ابھی موسموں سے پرے
اپنی روداد کے سلسلوں سے پرے
دور تک جاؤ گی
کامراں جاؤ گی
تم نہ جانے کہاں میری پرواز سے
میری رفتار سے میری ہر بات سے
اور بھی دور تک جاؤ گی
میں کہیں راہ میں خاک ہو جاؤں گا
آنسوؤں کو بچا کر رکھو
ان کا بھی ایک سے آئے گا

●

**फ़ज़्ल ताबिश**

## एक नज़्म

सुनो, हम दरख़्तों से फल तोड़ते वक़्त
उनके लिए मातमी धुन बजाते नहीं
सुनो! प्यार के क़हक़हों
और बोसों के मासूम लम्हों में हम
आंसूओं के दियों को जलाते नहीं
और तुम लम्स, बोसों
सुलगती हुई गर्म सांसों में
आंसू मिलाने पे क्यों तुल गई हो

सुनो! आंसूओं का मुक़द्दर
तुम्हारा मुक़द्दर नहीं
तुम अभी मौसमों से परे
अपनी रूदाद के सिलसिलों से परे
दूर तक जाओगी
कामरां जाओगी
तुम न जाने कहां मेरी परवाज़ से
मेरी रफ़्तार से, मेरी हर बात से
और भी दूर तक जाओगी
मैं कहीं राह में ख़ाक हो जाऊँगा
आंसूओं को बचा कर रखो
उनका भी इक समय आयेगा।

## سفر

رات جب ہر چیز کو چادر اُڑھا دے
ڈھانپ لے کالے پروں میں
آگ لپٹوں سی زبانیں
اژدھے جب اپنے اندر بند کر لیں
تب اُسی کالے سمے میں
تم گھروں کی قبر سے باہر نکلنا
اور بستی کے کنارے
خواب میں خاموش بہتے آدمی سے
آ کے مجھ کو ڈھونڈھنا
میں وہیں تم سب سے کچھ آگے ملوں گا
اور اندھیرا سا تمہارے آگے آگے میں چلوں گا

روشنی لے کر چلوں گا تو مجھے
تم سے بھی پہلے اور کوئی ڈھونڈھ لے گا

●

## آ کے ہو جا بے لباس

دن جو کہتا ہے مت سن
دھوپ کاندھوں پر اٹھانے سے بھی نٹ جا
ڈھیر سے غصے کو اپنی مٹھیوں میں بھر کے لے آ
شہر بھر کے منہ پہ مل دے
ہر طرف کالک ہی کالک پوت دے دیوار و در پر
دن کے سب آثار ڈھا دے
نوچ لے آکاش سے چلتے ہوئے خورشید کو

## सफ़र

रात जब हर चीज़ को चादर उढ़ा दे
ढांप ले काले परों में
आग लपटों सी ज़बानें
अज़दहे जब अपने अंदर बंद कर लें
तब उसी काले समय में
तुम घरों की क़ब्र से बाहर निकलना
और बस्ती के किनारे
ख़्वाब में ख़ामोश बहते आदमी से
आ के मुझको ढूंढना
मैं वहीं तुम सबसे कुछ आगे मिलूंगा
और अंधेरा सा तुम्हारे आगे आगे मैं चलूंगा

रौशनी लेकर चलूंगा तो मुझे
तुमसे भी पहले और कोई ढूंढ लेगा

●

## आ के हो जा बेलिबास

दिन जो कहता है मत सुन
धूप कांधों पर उठाने से भी नट जा
ढेर से गुस्से को अपनी मुट्ठियों में भर के ले आ
शहर भर के मुंह पे मल दे
हर तरफ़ कालिक ही कालिक पोत दे दीवारो दर पर
दिन के सब आसार ढा दे
नोच ले आकाश से जलते हुए ख़ुर्शीद को

دھوپ کی چادر کو کردے تار تار
اور پھر گھر آ کے ہو جا بے لباس
بند ہو جا گھر کی اندھی کوٹھری میں
بند رہ لمبے سمے تک
جب تلک سورج ترے اپنے ہی کالے غار سے
باہر نہ جھانکے بند رہ
دھوپ جب تک کوڑھ کی صورت ترے کالے بدن کو
چھوڑ کر باہر نہ نکلے — بند رہ
جب تلک غصے کا کالا جھاگ تجھ میں کھو نہ جائے
بند رہ، بند رہ لمبے سمے تک
یہ غلط فہمی کہ تیرے بند رہنے سے
یہاں کچھ کم ہوا ہے بھول جا
بھیڑ کے اتنے بڑے جنگل میں
کب کچھ کم ہوا ہے

●●●

धूप की चादर को कर दे तार तार
और फिर घर आ के हो जा बेलिबास
बंद हो जा घर की अंधी कोठरी में
बंद रह लम्बे समय तक
जब तलक सूरज तेरे अपने ही काले ग़ार से
बाहर न झांके, बंद रह
धूप जब तक कोढ़ की सूरत तेरे काले बदन को
फोड़ कर बाहर न निकले — बंद रह
जब तलक गुस्से का काला झाग तुझमें खो न जाये
बंद रह, बंद रह, लम्बे समय तक
यह ग़लतफ़हमी कि तेरे बंद रहने से
यहां कुछ कम हुआ है भूल जा
भीड़ के इतने बड़े जंगल में
कब कुछ कम हुआ है

●●●

مخمور سعیدی

# لفظوں کا المیہ

نئے نئے لفظ، شور کرتے
بڑھے چلے آ رہے ہیں
فکر و خیال کی رہگذار آباد ہو رہی ہے
زباں بہت سی پرانی حد بندیوں سے آزاد ہو رہی ہے
کئی فسانے جو ان کہے تھے، کئی تصور جو بے زباں تھے
ہزار عالم نشاط و غم کے جو پہلے نا قابلِ بیاں تھے
وہ دھڑکنیں، خامشی ہی جن کے خروشِ پنہاں کی ترجماں تھی
وہ نغمگی جو خموشیوں کے سیاہ زنداں میں پرفشاں تھی
اسے اب آخر کھلی فضاؤں میں اذنِ پرواز مل گیا ہے
کہ اک نیا رشتہ درمیانِ خیال و آواز مل گیا ہے!
مگر مجھے چپ سی لگ گئی ہے
نئے نئے لفظ شور کرتے بڑھے چلے آ رہے ہیں
— اور میں

ہجومِ پرشور میں، اکیلا
پرانے لفظوں کو ڈھونڈتا ہوں
یہ دیکھتا ہوں
جہاں جہاں کل پرانے لفظوں نے ڈال رکھے تھے اپنے ڈیرے
وہاں نئے لفظ آ کے آباد ہو گئے ہیں

**मख़मूर सईदी**

# लफ़्ज़ों का अलमिया

नए नए लफ़्ज़ शोर करते
बढ़े चले आ रहे हैं
फ़िक्रो ख़याल[1] की रहगुज़ार[2] आबाद हो रही है
ज़बां बहुत सी पुरानी हद बन्दियों से आज़ाद हो रही है
कई फ़साने जो अन कहे थे, कई तसव्वुर जो बेज़बां थे
हज़ार आलम निशातो ग़म के जो पहले नाक़ाबिले बयां थे
वो धड़कनें, ख़ामुशी ही जिनके ख़रोशे पिन्हां[3] की तर्जुमां थी
वो नग़्मगी जो ख़मुशियों के सियाह ज़िंदां में परफ़िशां[4] थी
उसे अब आख़िर खुली फ़ज़ाओं में इज़्ने परवाज़[5] मिल गया है
कि इक नया रिश्ता दरमियाने ख़यालो आवाज़ मिल गया है!
मगर मुझे चुप सी लग गई है
नए नए लफ़्ज़ शोर करते बढ़े चले आ रहे हैं
— और मैं
हुजूमे पुरशोर[6] में, अकेला
पुराने लफ़्ज़ों को ढूंढता हूं
यह देखता हूं
जहां जहां कल पुराने लफ़्ज़ों ने डाल रक्खे थे अपने डेरे
वहां नये लफ़्ज़ आके आबाद हो गये हैं

1. सोच विचार
2. आम रास्ता
3. छुपे हुए शोरो गुल
4. पर फैलाये हुए
5. उड़ने की इजाज़त
6. शोरो गुल भरी भीड़

مکاں اگرچہ اُجڑنہ پائے، مکین برباد ہو گئے ہیں

نئے نئے لفظ شور کرتے بڑھے چلے آرہے ہیں
— لیکن
پرانے لفظوں کی پائمالی نے دم بخود کر دیا ہے مجھ کو
کسی نے سوچا نہیں ہے شاید مگر میں اکثر یہ سوچتا ہوں
پرانے لفظوں کے ساتھ ہی اک پرانی دنیا بھی کھو گئی ہے
خموشیوں کے سیاہ زنداں میں جا کے روپوش ہو گئی ہے

●

## ایک پرانا شہر

مہر بہ لب ویران دریچے، دروازے سنسان
دور پہاڑوں کی چوٹی پر شاہی گورستان
نیم کی شاخوں میں الجھی ہے کنکوے کی کانپ
دیواروں پر رینگ رہا ہے شکستگی کا سانپ
سڑکیں رہگیروں پر ڈالیں ٹھنڈی سرد نگاہ
شرمِ عریانی سے چپ ہے بوڑھی شہر پناہ

وقت کے قدموں کی آہٹ دیتی ہے سنائی ایسے
سناٹے میں بھٹک رہی ہوں بیتی صدیاں جیسے
اک اک لمحہ ڈھونڈ رہا ہے کھوئی ہوئی رعنائی
دوڑ رہا ہے پیچھے کو با وصفِ شکستہ پائی

मकां अगरचे उजड़ न पाये, मकीन बर्बाद हो गए हैं

नए नए लफ़्ज़ शोर करते बढ़े चले आ रहे हैं
—लेकिन

पुराने लफ़्ज़ों की पायमाली ने दम बख़ुद[1] कर दिया है मुझको
किसी ने सोचा नहीं है शायद मगर मैं अक्सर यह सोचता हूं
पुराने लफ़्ज़ों के साथ ही इक़ पुरानी दुनिया भी खो गई है
ख़मोशियों के सियाह ज़िंदां में जाके रूपोश हो गई है

●

## एक पुराना शहर

मोह्‌र-ब-लब[2] वीरान दरीचे, दरवाज़े सुनसान
दूर पहाड़ों की चोटी पर शाही गोरिस्तान[3]
नीम की शाख़ों में उलझी है कनकव्वे[4] की कांप
दीवारों पर रेंग रहा है शिकस्तगी का सांप
सड़कें रहगीरों[5] पर डालें ठंडी सर्द निगाह
शर्मे उरयानी[6] से चुप है बूढ़ी शहर पनाह

वक़्त के क़दमों की आहट देती है सुनाई ऐसे
सन्नाटे में भटक रही हूं बीती सदियां जैसे
इक इक लम्हा[7] ढूंढ रहा है खोई हुई रानाई[8]
दौड़ रहा है पीछे को बावस्फ़े शिकस्ता[9] पाई

1. अवाक
2. होंटों पर मोहर लगी हुई यानी बन्द होंट
3. कब्रिस्तान
4. पतंग
5. राह चलने वालों
6. नंगे होने की लज्जा
7. क्षण
8. सुंदरता
9. टूटने की विशेषता रखने वाला

راہ میں لیکن کچھ دیواریں آن کھڑی ہوئی ہیں
دیواریں جن پر ننگی سنگینیں گڑی ہوئی ہیں
ان سے سر ٹکراتے لمحوں کے یہ پگلے سائے
مملکتِ فردا کا رستہ کون انھیں دکھلائے؟

●

## بُلاوا

ذرا ٹھہرو! کدھر ہم جا رہے ہیں؟
اُدھر، اُس چار دیواری کے پیچھے
وہ بوڑھا گور کن چلّا رہا ہے:

''اِدھر آؤ، قدم جلدی بڑھاؤ
یہاں، اس چار دیواری کے اندر
جنم دن سے تمھاری منتظر ہیں
وہ قبریں، جن کی پیشانی پہ اب تک
کسی کے نام کا کتبہ نہیں ہے''

●●●

राह में लेकिन कुछ दीवारें आन खड़ी हुई हैं
दीवारें जिन पर नंगी संगीनें गड़ी हुई हैं
उनसे सर टकराते लम्हों के ये पगले साये
मम्लिकते फ़रदा[1] का रस्ता कौन उन्हें दिखलाये?

●

## बुलावा

ज़रा ठहरो! किधर हम जा रहे हैं?
उधर, उस चार दीवारी के पीछे
वो बूढ़ा गोरकन[2] चिल्ला रहा है:

"इधर आओ, क़दम जल्दी बढ़ाओ
यहां, इस चार दीवारी के अन्दर
जन्म दिन से तुम्हारी मुंतज़िर[3] हैं
वो क़ब्रें, जिनकी पेशानी[4] पे अब तक
किसी के नाम का कत्बा[5] नहीं है"

●●●

1. आने वाले कल की सल्तनत
2. क़ब्र खोदने वाला
3. इंतिज़ार करने वाला
4. माथा
5. क़ब्र का शिलालेख

## کمار پاشی

# خواب تماشا

'یہ تانبے کا آکاش اُجالے سے خالی
اور یہ لوہے کے شہر — دھوئیں میں ڈوبے ہوئے
یہ نیون سائن کی روشنیوں میں گھری ہوئی تاریک صفیں
یہ شور شرابہ آنے والی لمبی رات کی ہیبت کا

سچ پوچھو تو اب میرا دُکھ تنہائی نہیں
کچھ اور ہی بات ہے، جس سے دل گھبرایا ہے
میں چاہوں تو:
مجھ کو بھی کوئی بیکار بہانہ جینے کا مل سکتا ہے
میں چاہوں تو:
اس شور شرابے میں خود کو کھو سکتا ہوں
میں چاہوں تو:
پر میرا دُکھ تنہائی نہیں
کچھ اور ہی بات ہے، جس سے دل گھبراتا ہے

(2)

تم بتلاؤ: کیا جانتے ہو
کیا سوچتے ہو
اور اس بیکار تماشے میں کیوں زندہ ہو
اوپر نیچے، دائیں بائیں، آگے پیچھے
ہے ایک رنگ —

1- پال ورلن

## कुमार पाशी

# ख़्वाब तमाशा

'ये तांबे का आकाश'[1] उजाले से ख़ाली
और ये लोहे के शहर — धुएं में डूबे हुए
ये नीओन साइन[2] की रौशनियों से घिरी हुइ तारीक सफ़ें
ये शोर शराबा आने वाली लम्बी रात की हैबत का

सच पूछो तो अब मेरा दुख तन्हाई नहीं
कुछ और ही बात है, जिससे दिल घबराया है
मैं चाहूं तो :
मुझको भी कोइ बेकार बहाना जीने को मिल सकता है
मैं चाहूं तो :
इस शोर शराबे में खुद को खो सकता हूं
मैं चाहूं तो :
पर मेरा दुख तन्हाई नहीं
कुछ और ही बात है, जिससे दिल घबराया है
(2)
तुम बतलाओ : क्या जानते हो
क्या सोचते हो
और इस बेकार तमाशे में क्यूं ज़िन्दा हो
ऊपर नीचे, दायें बायें, आगे पीछे
है, एक रंग

1. पॉल वर्लिन
2. एक कुदरती गैस जो रौशनी के काम आती है

جو کچھ بھی تھا
وہ سب کالک میں ڈوب گیا
جو کچھ بھی ہے
وہ رفتہ رفتہ رنگ بدلتا جاتا ہے
یہ چاند، یہ سورج، سیّارے
یہ منظر منظر نظّارے
اک خواب ہے سوئے آدمی کا
جو سویا ہے
شاید تنویم کے زیرِ اثر
جانے کتنے اندھے، کالے، انجان برس

جو جاگے گا تو
ایک رنگ
بس ایک رنگ
دائیں بائیں، آگے پیچھے، اوپر نیچے
اک کالا بدبودار سمندر — دائیں طرف
اک کالا بدبودار سمندر — بائیں طرف
آگے پیچھے
اوپر نیچے
تم بتلاؤ کیا جانتے ہو
کیا سوچتے ہو
اور اس بیکار تماشے میں
کیوں زندہ ہو

जो कुछ भी था
वह सब कालिक में डूब गया
जो कुछ भी है
वो रफ़्ता रफ़्ता रंग बदलता जाता है
ये चांद, ये सूरज, सैयारे
ये मंज़र मंज़र नज़्ज़ारे
इक ख़्वाब है सोये आदमी का
जो सोया है
शायद तनवीम[1] के ज़ेरे असर
जाने कितने अंधे, काले, अंजान बरस

जो जागेगा तो
एक रंग
बस एक रंग
दायें बायें, आगे पीछे, ऊपर नीचे
इक काला बदबूदार समुन्दर — दायें तरफ़
इक काला बदबूदार समुन्दर — बायें तरफ़
आगे पीछे
ऊपर नीचे
तुम बतलाओ क्या जानते हो
क्या सोचते हो
और इस बेकार तमाशे में
क्यों ज़िन्दा हो

1. सुलाना

(۴)

بچے بولے:
اُتر دکھشن، پورب پچھم
اب کوئی بھی منظر صاف نہیں
نقطے ہیں کئی پیلے، نیلے
دو سیارے، اوپر، نیچے
اک سورج سے ٹکرا ہی گیا —
ہر سمت وہی پیلی آندھی
اور اندھے جھکّڑ شعلوں کے
تم کس نقطے کی پوچھتے ہو —
اب کوئی بھی منظر صاف نہیں
اب کوئی نہیں
ہاں — وہ بھی نہیں

یہ کس کا خواب تماشا ہے
میں جس میں اکیلا گھومتا ہوں
ہر سمت وہی پیلی آندھی
اور اندھے جھکّڑ شعلوں کے
پل پل میں اُبھرتی اور چیخ کر ٹوٹتی گرتی چٹانیں ہیں
اب کوئی نہیں
بس میری آنکھیں دیکھتی ہیں
بس میری آنکھیں دیکھتی ہیں
●

(3)

संजय बोले :

उत्तर दक्खिन, पूरब पश्चिम

अब कोई भी मंज़र साफ़ नहीं

नुक़ते हैं कई पीले, नीले

दो सैयारे[1] ऊपर, नीचे

इक सूरज से टकरा ही गया —

हर सम्त वही पीली आंधी

और अंधे झक्कड़ शोलों के

तुम किस नुक़्ते की पूछते हो —

अब कोई भी मन्ज़र साफ़ नहीं

अब कोई नहीं

हां — वो भी नहीं

ये किसका ख़्वाब तमाशा है

मैं जिसमें अकेला घूमता हूं

हर सम्त वही पीली आंधी

और अंधे झक्कड़ शोलों के

पल पल में उभरती और चटख़कर टूटती गिरती चट्टानें हैं

अब कोई नहीं

बस मेरी आंखें देखती हैं

बस मेरी आंखें देखती हैं

●

1. ग्रहों

## پت جھڑ کی ایک صبح

سوکھی دھرتی پہ چُپ چپ برسنے لگیں
نیم کی پتّیاں
نیچے جھکنے لگا: نیلگوں آسماں
نام لے کر مرا
دور سے جیسے کوئی بُلانے لگا
یاد آنے لگا
ایک گذرا ہوا دن: امیدوں بھرا
ہلکے ہلکے سے رنگوں میں چلنے لگی
دور کے شہر کی:
ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا —

●

## یہ گرتا ہوا شہر میرا نہیں

یہ آگ اور خوں کے سمندر میں گرتا ہوا شہر میرا نہیں
ہوا سے اُلجھتا ہوا میں چلا جا رہا ہوں، اندھیرا ہے گہرا، گھنا بے اماں
رات کے دشت میں تیرے، میرے مکاں
دور ہوتے چلے جا رہے ہیں
لہو کے اُجالے بھی معدوم ہیں
اور تاریک گنبد میں معصوم روحوں کے کہرام میں
بے صدا آسماں کی طرف
خوں میں لتھڑے ہوئے ہاتھ اُٹھتے ہیں، تحلیل ہو جاتے ہیں

## पतझड़ की एक सुब्ह

सूखी धरती पे चुप चुप बरसने लगीं
नीम की पत्तियां
नीचे झुकने लगा : नीलगूं आसमां
नाम लेकर मेरा
दूर से जैसे कोई बुलाने लगा
याद आने लगा
एक गुज़रा हुआ दिन : उम्मीदों भरा
हल्के हल्के से रंगों में चलने लगी
दूर से शहर की :
ठंडी ठंडी हवा —

●

## ये गिरता हुआ शहर मेरा नहीं

ये आग और ख़ूं के समुन्दर में गिरता हुआ शहर मेरा नहीं है
हवा से उलझता हवा में चला जा रहा हूं, अंधेरा है गहरा, घना, बेअमां
रात के दश्त में तेरे मेरे मकां
दूर होते चले जा रहे हैं
लहू के उजाले भी मादूम हैं
और तारीक गुम्बद में मासूम रूहों के कुहराम में
बेसदा आसमां की तरफ़
ख़ूं में लिथड़े हुए हाथ उठते हैं, तहलील[1] हो जाते हैं

1. विलयन

اور کہیں دور اپنی فصیلوں کے اندر بکھرتی ہوئی
نامرادوں کی بستی کے اوپر

ہوا سے اُلجھتا ہوا میں اُڑا جا رہا ہوں اندھیرا ہے گہرا، گھنا، بے اماں
میں بُلاتا ہوں، آواز دیتا ہوں اب اُس حسیں شہر کو
جو پرانی زمینوں کے نیچے کہیں دفن ہے
کوئی آواز کانوں میں آتی نہیں ہے
میں شاید پرانی زمینوں کے نیچے بہت دور نیچے کہیں دفن ہوں
خوں میں لتھڑے ہوئے ہاتھ
تاریک گنبد
یہ اندھی ہوا
پھڑ پھڑاتا ہوا ایک زخمی پرندہ
کہیں دور — اپنی فصیلوں کے اندر بکھرتی ہوئی
نامرادوں کی بستی کے اوپر
میں جلتے پروں سے اُڑا جا رہا ہوں
یہ آگ اور خوں کے سمندر میں گرتا ہوا شہر میرا نہیں ہے

●●●

और कहीं दूर अपनी फ़सीलों के अन्दर बिखरती हुई
नामुरादों की बस्ती के ऊपर

हवा से उलझता, हवा मे उड़ा जा रहा हूं, अंधेरा है गहरा, घना, बेअमां
मैं बुलाता हूं, आवाज़ देता हूं अब उस हसीं शहर को
जो पुरानी ज़मीनों के नीचे कहीं दफ़्न है
कोई आवाज़ कानों में आती नहीं है
मैं शायद पुरानी ज़मीनों के नीचे बहुत दूर नीचे कहीं दफ़्न हूं
ख़ूं में लिथड़े हुए हाथ
तारीक गुम्बद
ये अंधी हवा
फड़फड़ाता हुआ एक ज़ख़्मी परिन्दा
कहीं दूर — अपनी फ़सीलों के अन्दर बिखरती हुई
नामुरादों की बस्ती के ऊपर
मैं जलते परों से उड़ा जा रहा हूं
ये आग और ख़ूं के समुन्दर में गिरता हुआ शहर मेरा नहीं है

●●●

## حمید الماس

### نہ ستائش کی تمنّا

ندا آئی
انبوہ شیدائیاں
نازنینانِ شہر تخیل
غزالانِ فکر و نظر
غمگسارانِ دار و صلیب و رسن
دیر سے عقیدت کی نایاب سوغات لے کر
درِ گنبدِ فن پہ سجدہ کناں ہیں

پے دیدنِ منظرِ شادکاماں
بڑی تمکنت سے اُٹھا
اُٹھ کے میں نے
جو دیکھا تو حدِ نظر تک فروکش
لہو کی لکیروں کا اک کارواں تھا
کبھی جو رگ و پے میں میری رواں تھا
●

### شہرِ آرزو

کوئی بتائے کہاں شہرِ آرزو ہوگا
کہ جس مقام پہ دامن کے چاک سلتے ہیں
نئی حیات نئی صبح و شام ملتے ہیں
اُداس اُداس ہیں راتیں اُداس اُداس ہیں دن
کٹے گی راہ کوئی داستاں سناتے چلو
حکایتِ بُتِ لالہ و شاں سناتے چلو

# हमीद अल्मास

## न सताइश की तमन्ना

निदा आई
अंबोहे शेदाईयां
नाज़नीनाने शहरे तख़य्युल
ग़ज़ालाने फ़िक्रो नज़र
ग़मगुसाराने दारो सलीबो रसन
देर से अक़ीदत की नायाब सौग़ात लेकर
दरे गुंबदे फ़न पे सज्दा कुनां हैं

पए दीदने मंज़रे शाद कामां
बड़ी तमकनत से उठा
उठ के मैंने
जो देखा तो हद्दे नज़र तक फ़रोकश
लहू की लकीरों का इक कारवां था
कभी जो रगो पै में मेरी रवां था

●

## शहरे आरज़ू

कोई बताए कहां शहरे आरज़ू होगा
कि जिस मक़ाम पे दामन के चाक सिलते हैं
नई हयात नई सुब्होशाम मिलते हैं
उदास उदास हैं रातें, उदास उदास हैं दिन
कटेगी राह कोई दास्तां सुनाते चलो
हिकायतें बुतें लालओ शां सुनाते चलो

کسی کی زود پشیماں نگاہیوں کا طلسم
کسی خرابِ نگاہِ کرم کا ذکر کرو
وفائے وعدہ و قول و قسم کا ذکر کرو

ہر ایک آبلہ پا اور سرِ جنوں پیشہ
دلوں کے کعبے میں پتھر سجائے پھرتا ہے
اُفق اُفق پہ نگاہیں جمائے پھرتا ہے
اُداس ہم سفر سوئے دل بھی ایک نظر
اُچھل رہا ہے بڑی دیر سے لہو اپنا
یہیں کہیں نہ ملے شہرِ آرزو اپنا

●

## برف کی وادی

برف آلودہ ہیں آنکھیں
سمت کی پہچان مشکل ہوگئی
کس طرف ہیں راحتوں کے آبشار
کن علاقوں میں شجر آباد ہیں
کون سارستہ ہیں لرزاں
آندھیوں کے شور سے
ہیں کہاں حسنِ صداقت کی سہانی وادیاں
سلسلہ در سلسلہ کذب وریا کی گھاٹیاں
کس طرف ہے آنے والی ساعتوں کا کوہ سار
کتنے لمبے ہیں یہاں مارِ نشیب
کس قدر اونچی ہے دیوارِ فراز
میں کنارِ عمر سے پھسلوں تو شاید ہی بچوں
آرہی ہے
لحہ لحہ
بوئے برف

●●●

किसी की ज़ूद पशेमां निगाहियों का तिलिस्म
किसी ख़राबे निगाहे करम का ज़िक्र करो
वफ़ाए वादओ क़ौलो-क़सम का ज़िक्र करो
हर एक आबला पा और सरे जुनूं पेशा
दिलों के काबे में पत्थर सजाए फिरता है
उफ़ुक़ उफ़ुक़ पे निगाहें जमाए फिरता है

उदास हम सफ़र सूए दिल भी एक नज़र
उछल रहा है बड़ी देर से लहू अपना
यहीं कहीं न मिले शह्रे आरज़ू अपना

●

## बर्फ़ की वादी

बर्फ़ आलूदा हैं आंखें
सिम्त की पहचान मुश्किल हो गई
किस तरफ़ हैं राहतों के आबशार
किन इलाक़ों में शजर आबाद हैं
कौन सा रस्ता है लरज़ां
आंधियों के शोर से
हैं कहां हुस्ने सदाक़त की सुहानी वादियां
सिलसिला दर सिलसिला किज़्बो रिया की घाटियां
किस तरफ़ है आने वाली साअतों का कोहसार
कितने लम्बे हैं यहां मारे नशेब
किस क़दर ऊँची है दीवारे फ़राज़
मैं कनारे उम्र से फिसलूं तो शायद ही बचूं
आ रही है
लम्हा लम्हा
बूए बर्फ़

●●●

## بشر نواز

### پتہ نہیں وہ کون تھا

پتہ نہیں وہ کون تھا
جو میرے ہاتھ
موگرے کی ڈال پنکھ مور کا تھما کے چل دیا
پتہ نہیں وہ کون تھا
ہوا کے جھونکے کی طرح جو آیا اور گذر گیا
نظر کو رنگ، دل کو نکہتوں کے دکھ سے بھر گیا
میں کون ہوں
گذرنے والا کون تھا
یہ پھول پنکھ کیا ہیں کیوں ملے
یہ سوچتے ہی سوچتے، تمام رنگ ایک رنگ میں اُترتے گئے
..............سیاہ رنگ
تمام نکہتیں اِدھر اُدھر بکھر گئیں
..............خلاؤں میں
یقین ہے..........نہیں نہیں گمان ہے
وہ کوئی میرا دشمنِ قدیم تھا
دِکھا کے جو سَراب میری پیاس اور بڑھا گیا
میں بے حساب آرزوؤں کا شکار
انتہائے شوق میں فریب اُس کا کھا گیا
گمان ہے..........نہیں نہیں یقین ہے
وہ کوئی میرا دوست تھا
جو دو گھڑی کے واسطے ہی کیوں نہ ہو

**बशर नवाज़**

# पता नहीं वो कौन था

पता नहीं वो कौन था
जो मेरे हाथ
मोगरे की डाल पंखमोर का थमा के चल दिया
पता नहीं वो कौन था
हवा के झोंके की तरह जो आया और गुज़र गया
नज़र को रंग, दिल को नक्हतों[1] के दुख से भर गया
मैं कौन हूं
गुज़रने वाला कौन था
ये फूल पंख क्या हैं क्यों मिले
ये सोचते ही सोचते, तमाम रंग एक रंग में उतर गये
........................ सियाह रंग
तमाम नक्हतें इधर उधर बिखर गयीं
........................ ख़लाओं में
यक़ीन है ...... नहीं नहीं गुमान है
वो कोई मेरा दुश्मने क़दीम था
दिखा के जो सराब मेरी प्यास और बढ़ा गया
मैं बेहिसाब आरज़ूओं का शिकार
इंतिहाए शौक़ में फ़रेब उसका खा गया
गुमान है ...... नहीं नहीं यक़ीन है
वो कोई मेरा दोस्त था
जो दो घड़ी के वास्ते ही क्यों न हो

1. नकहत (खुश्बू) का बहुवचन

نظر کو رنگ، دل کو نکہتوں سے بھر گیا
پتہ نہیں کدھر گیا
میں اس کو ڈھونڈتا ہوا
تمام کائنات میں
اِدھر اُدھر بکھر گیا

●

## نارسا

مجھے خواب اپنا عزیز تھا
سو میں نیند سے نہ جگا کبھی
مجھے نیند اپنی عزیز ہے
کہ میں سرزمین پہ خواب کی
کوئی پھول ایسا کھلا سکوں
کہ جو مُشک بن کے مہک سکے
کوئی دیپ ایسا جلا سکوں
جو ستارہ بن کے دمک سکے

مرا خواب اب بھی ہے نیند میں
مری نیند اب بھی ہے منتظر
کہ میں وہ کرشمہ دکھا سکوں
کہیں پھول کوئی کھلا سکوں
کہیں دیپ کوئی جلا سکوں

●

नज़र को रंग, दिल को नक्हतों से भर गया
पता नहीं किधर गया
मैं उसको ढूंढता हुआ
तमाम काइनात में
इधर उधर बिखर गया

●

## नारसा

मुझे ख़्वाब अपना अज़ीज़[1] था
सो मैं नींद से न जगा कभी
मुझे नींद अपनी अज़ीज़ है
कि मैं सर ज़मीन पे ख़्वाब की
कोई फूल ऐसा खिला सकूं
कि जो मुश्क[2] बनके महक सके
कोई दीप ऐसा जला सकूं
जो सितारा बनके दमक सके

मेरा ख़्वाब अब भी है नींद में
मेरी नींद अब भी है मुन्तज़िर
कि मैं वो करिश्मा दिखा सकूं
कहीं फूल कोई खिला सकूं
कहीं दीप कोई जला सकूं

●

1. प्रिय
2. कस्तूरी

## وقت کے کٹہرے میں

سنو، تمھارا جرم، تمھاری کمزوری ہے

اپنے جرم پہ
رنگ برنگے لفظوں کی بے جان رِدائیں مت ڈالو
سنو، تمھارے خواب تمھارا جرم نہیں ہیں
تم خوابوں کی تعبیر سے ڈر کر
لفظوں کی تاریک گپھا میں چھپ رہنے کے مجرم ہو
تم نے ہواؤں کے زینے پر
پاؤں رکھ کر
قوسِ قزح کے رنگ سمیٹے
اور خلاؤں میں اُڑتے
فرضی تاروں، سیاروں کی باتیں کیں
تم مجرم ہو، اس ننھی کونپل کے جس نے
صبح کی پہلی شوخ کرن سے سرگوشی کی
تم مجرم ہو اس آنگن کے جس میں شائد
اب بھی تمھارے بچپن کی معصوم شرارت زندہ ہے
تم مجرم ہو، تم نے اپنے پاؤں سے لپٹی مٹی کو
ایک اضافی چیز سمجھ کر جھاڑ دیا

●

# वक़्त के कटहरे में

सुनो, तुम्हारा जुर्म, तुम्हारी कमज़ोरी है
अपने जुर्म में
रंग बिरंगे लफ़्ज़ों की बेजान रिदायें[1] मत डालो
सुनो, तुम्हारे ख़्वाब तुम्हारा जुर्म नहीं हैं
तुम ख़्वाबों की ताबीर[2] से डर कर
लफ़्ज़ों की तारीक[3] गुफा में छुप रहने के मुजरिम हो
तुमने हवाओं के ज़ीने[4] पर
पांव रख कर
क़ौसे कुज़ह के रंग समेटे
और ख़लाओं[5] में उड़ते
फ़र्ज़ी तारों, सय्यारों[6] की बातें कीं
तुम मुजरिम हो, उस नन्ही कोंपल के जिसने
सुब्ह की पहली शोख़ किरन से सरगोशी की
तुम मुजरिम हो उस आंगन के जिसमें शायद
अब भी तुम्हारे बचपन की मासूम शरारत ज़िन्दा है
तुम मुजरिम हो, तुमने अपने पांव से लिपटी मिट्टी को
एक इज़ाफ़ी[7] चीज़ समझ कर झाड़ दिया

●

1. चादरें
2. स्वपनफल
3. अंधेरा
4. सीढ़ियां
5. अंतरिक्षों
6. ग्रहों
7. अतिरिक्त

# مجھے جینا نہیں آتا

میں جیسے درد کا موسم
گھٹا بن کر جو بس جاتا ہے آنکھوں میں
دھنک کے رنگ خوشبو نذر کرنے کی تمنا لے کے جس منظر تلک جاؤں
اسے اشکوں کے گہرے کہر میں ڈوبا ہوا پاؤں
میں اپنے دل کا سونا
پیار کے موتی
ترستی آرزو کے پھول جس دَر پر سجاتا ہوں
وہاں جیسے مکیں ہوتا نہیں کوئی
بنا ہوں ایک مدّت سے صدائے بازگشت ایسی
جو دیواروں سے ٹکرائے
ہراساں ہو کے لوٹ آئے
دھڑکتے دل کے سونے پن کو سونا اور کر جائے
میں اپنے آپ کو سنتا ہوں
اپنے آپ کو چھوتا ہوں
اپنے آپ سے ملتا ہوں خوابوں کے سہانے آئینہ گھر میں
تو میرا عکس مجھ پر مسکراتا ہے
یہ کہتا ہے
سلیقہ تجھ کو جینے کا نہ آنا تھا نہیں آیا
صدائیں پتھروں کی طرح مجھ پر
میرے خوابوں کے بکھرتے آئینہ گھر پر برستی ہیں
اِدھر تارا، اُدھر جگنو
کہیں اک پھول کی پتّی، کہیں شبنم کا اک آنسو

# मुझे जीना नहीं आता

मैं जैसे दर्द का मौसम
घटा बनकर जो बस जाता है आंखों में
धनक के रंग ख़ुश्बू नज़्र[1] करने की तमन्ना ले के जिस मन्ज़र तलक जाऊँ
उसे अश्कों के गहरे कुहर में डूबा हुआ पाऊँ
मैं अपने दिल का सोना
प्यार के मोती
तरसती आरज़ू के फूल जिस दर पर सजाता हूं
वहां जैसे मकीं[2] होता नहीं कोई
बना हूं एक मुद्दत से सदाये बाज़गश्त[3] ऐसी
जो दीवारों से टकराये
हरासां हो के लौट आये
धड़कते दिल के सूनेपन को सूना और कर जाये
मैं अपने आप को सुनता हूं
अपने आप को छूता हूं
अपने आप से मिलता हूं ख़्वाबों के सुहाने आईनाघर में
तो मेरा अक्स[4] मुझ पर मुस्कराता है
ये कहता है
सलीक़ा तुझको जीने का न आना था नहीं आया
सदायें पत्थरों की तरह मुझ पर
मेरे ख़्वाबों के बिखरते आईनाघर पर बरसती हैं
इधर तारा, उधर जुगनू
कहीं इक फूल की पत्ती, कहीं शबनम का इक आंसू

1. भेंट
2. निवासी
3. प्रतिध्वनि
4. प्रतिबिम्ब

بکھر جاتا ہے سب کچھ روح کے سنسان صحرا میں
میں پھر سے زندگی کرنے کے ارماں میں
اک اک ریزے کو چُنتا ہوں، سجاتا ہوں، نئی مورت بناتا ہوں
دھنک کے رنگ، خوشبو نذر کرنے کی تمنا میں قدم آگے بڑھاتا ہوں
تو اک بے نام گہری دھند میں سب ڈوب جاتا ہے
کسی سے کچھ شکایت ہے نہ شکوہ ہے
کہ میں تو درد کا موسم ہوں
اپنے آپ میں پلتا ہوں، اپنے آپ میں جیتا ہوں
اپنے آنسوؤں میں بھیگتا ہوں مسکراتا ہوں
مگر سب لوگ کہتے ہیں
تجھے جینا نہیں آتا

●●●

बिखर जाता है सब कुछ रूह के सुनसान सहरा में
मैं फिर से ज़िन्दगी करने के अरमां में
इक इक रेज़े को चुनता हूं, सजाता हूं, नयी मूरत बनाता हूं
धनक के रंग, खुश्बू नज़्र करने की तमन्ना में क़दम आगे बढ़ाता हूं
तो इक बेनाम गहरी धुंद में सब डूब जाता है
किसी से कुछ शिकायत है न शिकवा है
कि मैं तो दर्द का मौसम हूं
अपने आप में पलता हूं, अपने आप में जीता हूं
अपने आंसुओं में भीगता हूं मुस्कराता हूं
मगर सब लोग कहते हैं
तुझे जीना नहीं आता

●●●

شمس الرحمٰن فاروقی

## بیت عنکبوت

یہ عورت اس لیے پیدا ہوئی ہے
کہ اس کو ٹکڑے ٹکڑے کرکے پھانسی پر چڑھایا جائے
اسے یونان کے اک مشہور ڈاکو کے بستر کی ضرورت ہے
[وہ اپنے سب شکاروں کا قد و قامت اسی بستر کے پیمانے کی نسبت سے گھٹاتا، کاٹتا یا
کھینچ کا جبراً بڑھاتا تھا]

خطوطِ لب تو دیکھو!
کس طرح سمٹے ہوئے ہیں، سنگ دل
عامیانہ پن تراوش کر رہا ہے

یہ کنبہ توز آنکھیں!
ان کی گہرائی کے کیچڑ میں
سنہری مچھلیاں غوطے لگاتی ہیں
روپہلی شاخ طوبیٰ ہے کہ کھلتی بانہہ ہے، لیکن
کوئی سایہ نہیں پڑتا!

میں اپنے خول کے اندر سمٹ کر بیٹھ رہنا چاہتا ہوں
مجھے مینار کی کھڑکی سے جھک کر جھانکنے کی بھی ضرورت کچھ نہیں ہے۔

مگر وہ فاحشہ زنجیر در کی نیند اُڑائے جا رہی ہے۔
وہ آنکھیں خوبصورت بن گئی ہیں!

مجھے
خم دار زینوں سے اُتر کر
نیچے آنا ہی پڑے گا......

●●●

शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी

# बैते अन्कबूत

ये औरत इस लिए पैदा हुई है
कि इस को टूकड़े टुकड़े करके फांसी पर चढ़ाया जाए
इसे यूनान के इस मशहूर डाकू के बिस्तर की ज़रूरत है
(वो अपने सब शिकारों का क़दोक़ामत इसी बिस्तर के पैमाने की निस्बत से घटाता, काटता या खींच कर जबरन बढ़ाता था)

ख़तूते लब तो देखो!
किस तरह सिमटे हुए हैं, संगदिल
आमियानापन तराविश कर रहा है

ये कीना तोज़ आंखें!
इन की गहराई के कीचड में
सुनहरी मछलियां ग़ोते लगाती हैं
रूपहली शाख़ तूबा है कि खिलती बांह है, लेकिन
कोई साया नहीं पड़ता!

मैंने अपने ख़ोल के अन्दर सिमट कर बैठ रहना चाहता हूं
मुझे मीनार की खिड़की से झुक कर झांकने की भी ज़रूरत कुछ नहीं है

मगर वो फ़ाहशा ज़ंजीर दर की नींद उड़ाए जा रही है
वो आंखें खूबसूरत बन गई हैं!

मुझे
ख़मदार ज़ीनों से उतरकर
नीचे आना ही पडेगा...

●●●

# دریاے اجل

گھر میں کچھ بھی نہیں تاریک سی خوشبو کے سوا

کچھ چمکتا نہیں اب خوف کے جگنو کے سوا
دمِ کہسار میں ڈھونڈھا تو نہ نکلا کچھ بھی
برف پر چھڑکی ہوئی خون کی خوشبو کے سوا
اس کا چھپنا تھا کہ آنکھوں میں مری کچھ نہ رہا
سرمئی، سبز منور رمِ آہو کے سوا

●●●

(۳)

اٹھو کہ وقت ختم ہو گیا
تماش بینوں میں تم آخری رہ گئے ہو
اب چلو
یہاں سے آسماں تک تمام شہر چادریں لپیٹ لی گئیں
زمین سنگریزہ سخت
دانت سی سفید ملگجی دکھائی دے رہی ہے ہر طرف
تمہیں جہاں گمانِ سبزہ تھا
وہاں جھلک رہی ہے کہنہ کاغذوں کی برف
وہ جو چلے گئے انہیں تو اختتامیے کے سب سیاہ منظروں کا علم تھا
وہ پہلے آئے تھے اسی لیے وہ عقل مند تھے، تمھیں
تو صبح کا پتہ نہ شام کی خبر، تمھیں تو
اتنا بھی پتہ نہیں کہ کھیل ختم ہو تو اس کو شام
کہتے ہیں۔ اے ننھے شائقان رقص!
اب گھر کو جاؤ

●●●

## दरपाये अजल

घर में कुछ भी नहीं तारीक सी ख़ुश्बू के सिवा
कुछ झमकता नहीं अब ख़ौफ़ के जुगनू के सिवा
दमे कोहसार में ढूंढा तो न निकला कुछ भी
बर्फ़ पर छिड़की हुई ख़ून की ख़ुश्बू के सिवा
इस का छिपना था कि आंखों में मेरी कुछ न रहा
सुरमई, सब्ज़े मनव्वर रमे आहू के सिवा

●●●

## आख़िरी तमाशाई

उठो कि वक़्त ख़त्म हो गया
तमाशबीनों में तुम आख़िरी ही रह गए हो
अब चलो
यहां से आसमान तक तमाम शहर चादरें लपेट ली गईं
ज़मीन संगरेज़ा सख़्त
दांत सी सफ़ेद मलगजी दिखाई दे रही है हर तरफ़
तुम्हें जहां गुमाने सब्ज़ा था
वहां झलक रही है कोहना काग़ज़ों की बर्फ़
वो जो चले गए उन्हें तो इख़्तितामिये के सब सियाह मंज़रों का इल्म था
वो पहले आए थे इसी लिए वो अक़्लमन्द थे, तुम्हें
तो सुब्ह का पता न शाम की ख़बर, तुम्हें तो
इतना भी पता नहीं कि खेल ख़त्म हो तो उस को शाम
कहते हैं, ए नन्हें शाएक़ाने रक़्स!
अब घर को जाओ

●●●

زبیر رضوی

## شریف زادہ

سنو کل تمھیں ہم نے مدراس کیفے میں
اوباش لوگوں کے ہمراہ دیکھا
وہ سب لڑکیاں بدچلن تھیں جنھیں تم
سلیقے سے کافی کے کپ دے رہے تھے
بہت فحش اور مبتذل ناچ تھا وہ
کہ جن کے ریکارڈوں کی گھٹیا دھنوں پر
تھرکتی مچلتی ہوئی لڑکیوں نے
تمھیں اپنی بانہوں کی جنت میں رکھا
بہت دکھ ہوا
تم نے ہوٹل میں کمرہ کرایے پہ لے کر
ان اوباش لوگوں اور ان لڑکیوں کے ہجومِ طرب میں
گئی رات تک جشنِ صہبا منایا
بہت دکھ ہوا خاندانی شرافت
بزرگوں کی بانکی سجیلی وجاہت کو
تم نے سرِ عام یوں روند ڈالا
سلیقہ جو ہوتا تمھیں لغزشوں کا
تو اپنے بزرگوں کی مانند تم بھی
گھروں میں کنیزوں سے پہلو سجاتے
پئے عشرتِ دل حویلی میں ہر شب
کبھی رقص ہوتا کبھی جام چلتے

## ज़ुबैर रिज़्वी

### शरीफ़ ज़ादा

सुनो कल तुम्हें हमने मद्रास कैफ़े में
औबाश[1] लोगों के हमराह देखा
वो सब लड़कियां बदचलन थीं जिन्हें तुम
सलीक़े से कॉफ़ी के कप दे रहे थे
बहुत फ़ह्श[2] और मुब्तज़िल[3] नाच था वह
कि जिनके रेकार्डों की घटिया धुनों पर
थिरकती मचलती हुई लड़कियों ने
तुम्हें अपनी बांहों की जन्नत में रक्खा
बहुत दुख हुआ
तुमने होटल में कमरा किराये पे लेकर
उन औबाश लोगों और उन लड़कियों के हुजूमे तरब[4] में
गयी रात तक जश्ने सहबा[5] मनाया
बहुत दुख हुआ ख़ानदानी शराफ़त
बज़ुर्गों की बांकी सजीली वजाहत को
तुमने सरे आम यूँ रौंद डाला
सलीक़ा जो होता तुम्हें लग़िज़शों का
तो अपने बुज़ुर्गों की मानिन्द तुम भी
घरों में कनीज़ों से पहलू सजाते
पये इश्रते दिल हवेली में हर शब
कभी रक़्स होता कभी जाम चलते

1. दुराचारी
2. अश्लील
3. अश्लील
4. ख़ुशी की भीड़
5. शराब का जश्न

سلیقہ جو ہوتا تمھیں لغزشوں کا
تو یوں خاندانی شرافت، وجاہت
نہ مٹی میں ملتی نہ بدنام ہوتی!

●

## تبدیلی

صبح دم جب بھی دیکھا ہے میں نے کبھی
ننھے بچوں کو اسکول جاتے ہوئے
رقص کرتے ہوئے گنگناتے ہوئے
اپنے بستوں کو گردن میں ڈالے ہوئے
اُنگلیاں ایک کی ایک پکڑے ہوئے
صبح دم جب بھی دیکھا ہے میں نے انھیں
مامتا اُن کی راہوں میں سایہ کرے
ان کے قدموں میں خوشبو بچھایا کرے
دیوتا ان کے ہاتھوں کو چوما کریں
من ہی من ان کی باتوں پہ جھوما کریں
صبح دم جب بھی دیکھا ہے میں نے انھیں
میرا جی چاہتا ہے کہ میں دوڑ کر
ایک ننھے کی اُنگلی پکڑ کر کہوں
مجھ کو بھی اپنے اسکول لیتے چلو
تا کہ یہ تشنۂ آرزو زندگی
پھر سے آغازِ شوقِ سفر کر سکے

●

सलीक़ा जो होता तुम्हें लग़ज़िशों का
तो यूं ख़ानदानी शराफ़त, वजाहत[1]
न मिट्टी में मिलती न बदनाम होती

●

## तब्दीली

सुब्ह दम जब भी देखा है मैंने कभी
नन्हे बच्चों को स्कूल जाते हुये
[illegible] गुनगुनाते हुये
अपने बस्तों को गर्दन में डाले हुये
उंगलियां एक की एक पकड़े हुये
सुब्हदम जब भी देखा है मैंने उन्हें
मामता उनकी राहों में साया करे
उनके क़दमों में ख़ुश्बू बिछाया करे
देवता उनके हाथों को चूमा करें
मन ही मन उनकी बातों पे झूमा करें
सुब्ह दम जब भी देखा है मैंने उन्हें
मेरा जी चाहता है कि मैं दौड़ कर
एक नन्हे की उंगली पकड़ कर कहूं
मुझको भी अपने स्कूल लेते चलो
ताकि ये तिश्नए आरज़ू ज़िन्दगी
फिर से आग़ाज़े शौक़े सफ़र कर सके

●

1. प्रतिष्ठा

# علی بن متقی رویا

پرانی بات ہے
لیکن یہ انہونی سی لگتی ہے
علی بن متقی مسجد کے منبر پر کھڑا
کچھ آیتوں کا وِرد کرتا تھا
جمعہ کا دن تھا
مسجد کا صحن
اللہ کے بندوں سے خالی تھا
یہ پہلا دن تھا مسجد میں کوئی عابد نہیں آیا
علی بن متقی رویا
مقدس آیتوں کو مخملیں جز دان میں رکھا
امام دل گرفتہ
نیچے منبر سے اُتر آیا
خلاء میں دور تک دیکھا
فضا میں ہر طرف پھیلی ہوئی تھی
دھند کی کائی
ہوا پھر یوں
منڈیروں، گنبدوں پر ان گنت پر پھڑ پھڑائے
کاسنی، کالے کبوتر
صحن میں نیچے اُتر آئے
وضو کے واسطے رکھے ہوئے لوٹوں پر
اک اک کر کے آبیٹھے
امامِ دل گرفتہ
پھر سے منبر پر چڑھا

# अली बिन मुत्तक़ी रोया

पुरानी बात है
लेकिन ये अनहोनी सी लगती है
अली बिन मुत्तक़ी मस्जिद के मिम्बर पर खड़ा
कुछ आयतों का विर्द[1] करता था
जुमा का दिन था
मस्जिद का सहन
अल्लाह के बन्दों से ख़ाली था
ये पहला दिन था मस्जिद में कोई आबिद[2] नहीं आया
अली बिन मुत्तक़ी रोया
मुक़द्दस आयतों को मख़मली जुज़्दान में रक्खा
इमामे दिल गिरफ़्ता
नीचे मिम्बर से उतर आया
ख़ला में दूर तक देखा
फ़ज़ा में हर तरफ़ फैली हुयी थी
धुंद की काई
मुंडेरों, गुम्बदों पर अनगिनत पर फड़फ़डाये
कास्नी, काले कबूतर
सहन में नीचे उतर आये
वज़ू के वास्ते रख्खे हुये लोटों पर
इक इक करके आ बैठे
इमामे दिल गिरफ़्ता
फिर से मिम्बर पर चढ़ा

1. जाप
2. इबादत करने वाला

جزدان کو کھولا
صفوں پر اک نظر ڈالی
یہ پہلا دن تھا مسجد میں
وضو کا حوض خالی تھا
صفیں معمور تھیں ساری!

●

## بشارت پانی کی

پرانی بات ہے
لیکن یہ انہونی سی لگتی ہے
وہ سب پیاسے تھے
میلوں کی مسافت سے بدن بے حال تھا اُن کا
جہاں بھی جاتے وہ دریاؤں کو سوکھا ہوا پاتے
عجب بنجر زمینوں کا سفر در پیش تھا اُن کو
کہیں پانی نہ ملتا تھا
کھجوروں کے درختوں سے انھوں نے اونٹ باندھے
اور تھک کر سو گئے سارے
انھوں نے خواب میں دیکھا
کھجوروں کے درختوں کی قطاریں ختم ہوتی ہیں جہاں
پانی چمکتا ہے
وہ سب جاگے
ہر اک جانب تحیّر سے نظر ڈالی
مہاریں تھام کر ہاتھوں میں اونٹوں کی
کھجوروں کے درختوں کی قطاریں ختم ہونے میں نہ آتی تھیں
زبانیں سوکھ کر کانٹا ہوئی تھیں

जुज़्दान को खोला
सफ़ों पर इक नज़र डाली
ये पहला दिन था मस्जिद में
वज़ू का हौज़ ख़ाली था
सफ़ें मामूर थीं सारी

●

## बशारत[1] पानी की

पुरानी बात है
लेकिन ये अनहोनी सी लगती है
वो सब प्यासे थे
मीलों की मुसाफ़त से बदन बेहाल था उनका
जहां भी जाते वो दरियाओं को सूखा हुआ पाते
अजब बन्जर ज़मीनों का सफ़र दरपेश था उनको
कहीं पानी न मिलता था
खजूरों के दरख़्तों से उन्होंने ऊँट बांधे
और थक कर सो गये सारे
उन्होंने ख़्वाब में देखा
खजूरों के दरख़्तों की क़तारें ख़त्म होती हैं जहां
पानी चमकता है
वो सब जागे
हर इक जानिब तहय्युर से नज़र डाली
महारें थाम कर हाथों में ऊँटों की
खजूरों के दरख़्तों की क़तारें ख़त्म होने में न आती थीं

1. शुभ समाचार

اور اونٹوں کے قدم آگے نہ اُٹھتے تھے
وہ سب چیخے
بشارت دینے والے کو صدا دی
اور زمیں کو پیر سے رگڑا
ہر اک جانب تحیر سے نظر ڈالی
کھجوروں کے درختوں کی قطاریں ختم تھیں
پانی چمکتا تھا!!!

●

## امیرِ شہر کی نیکی

پرانی بات ہے
لیکن یہ انہونی سی لگتی ہے
امیرِ شہر راتوں کو
بدل کر بھیس
گلیوں میں پھرا کرتا
وہ دیواروں پہ لکھی
ہر نئی تحریر کو پڑھتا
سرائے میں ہر اک نووارِدِ شب سے
سفر کا ماجرا سنتا
گھروں کی چمنیوں کو دیکھ کر
اندازۂ نانِ جویں کرتا
پریشاں حالیوں سے باخبر رہتا
مزاروں، مقبروں کی چوکھٹوں کو چومتا

ज़बानें सूख कर कांटा हुयी थीं
और ऊँटों के क़दम आगे न उठते थे
वो सब चीखे़
बशारत देने वाले को सदा दी
और ज़मीं को पैर से रगड़ा
हर इक जानिब तहय्युर[1] से नज़र डाली
खजूरों के दरख़्तों की क़तारें ख़त्म थीं
पानी चमकता था!!

●

## अमीरे शह्र की नेकी

पुरानी बात है
लेकिन ये अनहोनी सी लगती है
अमीरे शह्र रातों को
बदल कर भेस
गलियों में फिरा करता
वो दीवारों पे लिक्खी
हर नई तहरीर को पढ़ता
सराय में हर इक नौ वारिदे शब से
सफ़र का माजरा सुनता
घरों की चिमनियों को देख कर
अन्दाज़ए नानेजवीं[2] करता
परेशां हालियों से बाख़बर रहता
मज़ारों, मक़बरों की चौखटों को चूमता

1. हैरत

2. जौ की रोटी का अंदाज़ा

اور شب گئے مسجد میں آتا
صبح تک
یادِ الٰہی میں بسر کرتا
ہوا اک رات یوں
چاروں طرف دریا اُمڈ آیا
کوئی جاگا نہیں
تنہا
امیرِ شہر کے بازو
فصیلِ شہر کی بنیاد کو تھامے رہے شب بھر
بدن کی ڈھال سے
سیلاب کو روکے رہے شب بھر
سنا ہے پھر کبھی
دریا کی طغیانی
فصیلِ شہر کو ڈھانے نہیں آئی
امیرِ شہر کی نیکی
زمانے تک
خطا کاروں کے کام آئی!

●●●

और शब गये मस्जिद में आता
सुब्ह तक
यादे ईलाही में बसर करता
हुआ इक रात यूं
चारों तरफ़ दरिया उमड आया
कोई जागा नहीं
तन्हा
अमीरे शह्र के बाज़ू
फ़सीले शह्र की बुनियाद को थामे रहे शब भर
बदन की ढ़ाल से
सैलाब को रोके रहे शब भर
सुना है फिर कभी
दरिया की तुग़यानी
फ़सीले शह्र को ढाने नहीं आई
अमीरे शह्र की नेकी
ज़माने तक
ख़ताकारों के काम आई

●●●

وحید اختر

## پتھروں کا مغنّی

مطربِ خوشنوا زندگی کے حسین گیت گاتا رہا
اس کی آواز پر انجمن جھوم اٹھی
اس نے جب زخمِ دل کو زباں بخش دی
سننے والوں نے بے ساختہ آہ کی
عشق کے ساز پر جب ہوا زخمہ زن
شورِ تحسین میں خود اس کی آواز دب سی گئی
مطربِ خوشنوا پھر بھی تنہا رہا
تشنگیِ مشام اس کو بادِ صبا کی طرف گل بہ گل لے گئی
کاسۂ چشم نے پرتوِ گل بھی پایا نہیں
درد اس کا کسی محرمِ درد کے واسطے
دَر بہ دَر، شہر در شہر پھرتا رہا
داد و تحسین کے ہنگامۂ ذوق کش میں اُسے
ہر طرف سے ملامت کے پتھر ملے
مطربِ خوشنوا پتھروں سے پٹکتا رہا اپنا سر
پتھروں کو زباں تو ملی، پر تکلم نہیں
پتھروں کو ملے ہونٹ، لیکن تبسم نہیں
پتھروں کو ملی آنکھ، لیکن نظر کون دیتا انہیں
پتھروں کو ملے کان، پر ذوقِ نغمہ نہیں

**वहीद अख़्तर**

# पत्थरों का मुग़न्नी[1]

मुत्रिबे ख़ुशनवा[2] ज़िंदगी के हसीन गीत गाता रहा
उसकी आवाज़ पर अंजुमन झूम उठी
उसने जब ज़ख़्मे दिल को ज़बां बख़्श दी
सुनने वालों ने बेसाख़्ता[3] आह की
इश्क़ के साज़ पर जब हुआ ज़ख़्माज़न[4]
शोरे तहसीन में ख़ुद उसकी आवाज़ दब सी गई
मुत्रिबे ख़ुशनवा फिर भी तन्हा रहा
तश्नगिये मशाम[5] उसको बादे सबा[6] की तरफ़ गुल-ब-गुल ले गई
कासये चश्म[7] ने परतवेगुल[8] भी पाया नहीं
दर्द उसका किसी महरमे दर्द के वास्ते
दर-ब-दर, शह्र-दर-शह्र फिरता रहा
दादो तहसीं के हंगामये ज़ौक़कुश[9] में उसे
हर तरफ़ से मलामत के पत्थर मिले
मुत्रिबे ख़ुशनवा पत्थरों से पटकता रहा अपना सर
पत्थरों को ज़बां तो मिली, पर तकल्लुम[10] नहीं
पत्थरों को मिले होंट, लेकिन तबस्सुम नहीं
पत्थरों को मिली आंख, लेकिन नज़र कौन देता उन्हें
पत्थरों को मिले कान, पर ज़ौक़े नग़्मा नहीं

1. रागी
2. मधुर आवाज़ वाला गायक
3. सहसा
4. मिज़्राब से साज़ बजाने लगा
5. सूंघने की प्यास
6. सुबह की हवा
7. आंख का प्याला
8. फूल का अक्स
9. शौक़ और लज़्ज़त को मारने वाला
10. वार्तालाप

پتھروں کو خد و خالِ انساں ملے، دولت درد و غم کب ملی
پتھروں کو حسیں صورتیں تو ملیں، دل نہیں مل سکا
پتھروں کو ملے پاؤں، پر اعتمادِ سفر کون دے
پتھروں کو ملے ہاتھ پر عزمِ تیشہ زنی کون دے
سنگ سنتے ہیں لیکن سمجھتے نہیں
دیکھتے ہیں پر فرق کرتے نہیں
بات کرتے ہیں، محسوس کرتے نہیں
ٹوٹ سکتے ہیں، لیکن پگھلتے نہیں
گرد بن کر یہ اڑ جائیں، سانچوں میں ڈھلتے نہیں
مطربِ خوشنوا پتھروں سے پٹکتا رہا اپنا سر
مطربِ خوشنوا پتھروں کو سناتا رہا دردِ دل
اپنا غم، ان کا غم، سب کا غم
پتھروں نے سنا اور چپ چاپ ہنستے رہے
پتھروں کی اسی انجمن کا مغنّی ہوں میں
اور بے درد، بے حس، ستم گار پتھر سنیں گے کبھی
ان کا وہ مطربِ خوشنوا شکوہ سنجِ زماں
اپنے نغمات کی آگ میں جل گیا
یا پھر اُن ہی کے مانند پتھر کا بُت بن گیا

●

## پرومیتھیس

اگر میں کہتا ہوں جینا ہے قید تنہائی
تو زندگانی کی قیمت پہ حرف کیوں آئے

पत्थरों को ख़ुदोख़ालेइंसा[1] मिले, दौलते दर्दो ग़म कब मिली
पत्थरों को हसीं सूरतें तो मिलीं, दिल नहीं मिल सका
पत्थरों को मिले पांव, पर ऐतेमादे[2] सफ़र कौन दे
पत्थरों को मिले हाथ, पर अज़्मे तेशाज़नी[3] कौन दे
संग सुनते हैं, लेकिन समझते नहीं
देखते हैं पर फ़र्क़ करते नहीं
बात करते हैं, महसूस करते नहीं
टूट सकते हैं, लेकिन पिघलते नहीं
गर्द बनकर यह उड़ जाएं, सांचों में ढलते नहीं
मुत्रिबे ख़ुशनवा पत्थरों से पटकता रहा अपना सर
मुत्रिबे ख़ुशनवा पत्थरों को सुनाता रहा दर्दे दिल
अपना ग़म, उनका ग़म, सबका ग़म
पत्थरों ने सुना और चुपचाप हंसते रहे
पत्थरों की उसी अंजुमन का मुग़न्नी हूं मैं
और बेदर्द, बेहिस, सितमगार[4] पत्थर सुनेंगे कभी
उनका वो मुत्रिबे ख़ुशनवा शिकवा संजे ज़मा[5]
अपने नग़मात की आग में जल गया
या फिर उन्हीं के मानिंद पत्थर का बुत बन गया

●

## परोमीथीस

अगर मैं कहता हूं जीना है क़ैदे तंहाई
तो ज़िंदगानी की क़ीमत पे हर्फ़ क्यों आये

1. इंसान की शक्ल और सूरत
2. भरोसा
3. कुदाल चलाने का संकल्प
4. सताने वाला
5. ज़माने का शिकवा करने वाला

اگر نہ آیا مجھے سازگار وصلِ حبیب
تو اعتمادِ محبت پہ حرف کیوں آئے
اگر ملے مجھے ورثے میں کچھ شکستہ کھنڈر
تو کائنات کی وسعت پہ حرف کیوں آئے
اگر دکھائی دیے مجھ کو آدمی آسیب
تو عصرِ نو کی بصیرت پہ حرف کیوں آئے
اگر نہ راہِ یقیں پا سکی مری تشکیک
تو فکر وفن کی شرافت پہ حرف کیوں آئے
اگر خزاں ہی ملی مجھ کو آنکھ کھلنے پر
تو فصلِ گل کی امانت پہ حرف کیوں آئے
اگر مرے غمِ بے نام کو ملی وحشت
تو بزمِ جشنِ مسرت پہ حرف کیوں آئے
میں اپنے عہد کا ہوں نوحہ خواں نہ دیجیے داد
قصیدہ خواں کی روایت پہ حرف کیوں آئے
اگر ہنر ہے مرا جنسِ کم عیار تو ہو
ضمیرودل کی تجارت پہ حرف کیوں آئے
میں اپنے خوابوں کا بھٹکا ہوا مسافر ہوں
اگر مجھے نہ ملی منزلِ نجات تو کیا
میں اپنی روح کی تنہائیوں کا شعلہ ہوں
ہوائے دہر میں حاصل نہیں ثبات تو کیا
میں اپنی طرفگیِ طبع کا تو پی لوں زہر
جو دسترس میں نہیں چشمۂ حیات تو کیا

अगर न आया मुझे साज़गार वस्ले हबीब[1]
तो ऐतेमादे मुहब्बत पे हर्फ़ क्यों आए
अगर मिले मुझे वरसे में कुछ शिकस्ता खंडर
तो काईनात की वुस्अत पे हर्फ़ क्यों आए
अगर दिखाई दिए मुझको आदमी आसेब
तो असरे नौ[2] की बसीरत[3] पे हर्फ़ क्यों आए
अगर न राहे यक़ीं पा सकी मेरी तश्कीक[4]
तो फ़िक्रो फ़न की शराफ़त पे हर्फ़ क्यों आए
अगर ख़ज़ां ही मिली मुझको आंख खुलने पर
तो फ़सले गुल की अमानत पे हर्फ़ क्यों आए
अगर मेरे ग़मे बेनाम को मिली वहशत
तो बज़्मे जश्ने मसर्रत[5] पे हर्फ़ क्यों आए
मैं अपने अहद का हूं नौहाख़्वां[6] न दीजिए दाद
क़सीदाख़्वां[7] की रिवायत पे हर्फ़ क्यों आए
अगर हुनर है मेरा जिंसे कम अयार तो हो
ज़मीरो दिल की तिजारत पे हर्फ़ क्यों आए
मैं अपने ख़्वाबों का भटका हुआ मुसाफ़िर हूं
अगर मुझे न मिली मंज़िले नजात तो क्या
मैं अपनी रूह की तन्हाईयों का शोला हूं
हवाए दहर में हासिल नहीं सबात[8] तो क्या
मैं अपनी तुर्फ़गिये तब्आ[9] का तो पी लूं ज़हर
जो दस्तरस में नहीं चश्मये हयात[10] तो क्या

1. महबूब से मिलन
2. नये ज़माने
3. अन्तः ज्ञान, अनुबोध
4. शक में डालना
5. खुशी के जश्न की महफ़िल
6. मातम करने वाला
7. क़सीदा पढ़ने वाला अर्थात प्रशंसा करने वाला
8. स्थिरता
9. तबीअत का निरालापन
10. अमृत कुंड

میں اپنی ذات کی خلوت کا حیرتی ہی سہی
جو مجھ پہ کھل نہ سکا رازِ کائنات تو کیا
میں اپنے خوں کے چراغوں کو روشنی دے دوں
سحر نصیب نہ ہو پائے میری رات تو کیا
میں آپ سے نہ کہوں گا کہ ہے زیاں جاں کا
خیالِ شیشۂ دل سنگ آزما نہ کرے
میں آپ سے نہیں چاہوں گا دادِ جاں بازی
دعا ہے آپ کو غم درد آشنا نہ کرے
میں آپ سے نہیں مانگوں گا خوں بہائے وفا
کوئی تو ترکِ رہ و رسمِ عاشقانہ کرے
میں آپ کو نہ دکھاؤں گا اپنے زخمی خواب
خلل ہو آپ کے آرام میں خدا نہ کرے

مگر زمیں پرومیتھیس کو کیوں روکے
جو وہ جہاں کے خداؤں سے جنگ کرتا ہے
اُسے نہ موت کے آسیب پاس آنے دیں
جو آسمانوں سے لے کر حیات اترتا ہے
ہے ڈر پگھلنے کا، دیکھیں ادھر نہ برف کے بُت
جو کوئی شعلۂ عریاں پہ ہاتھ دھرتا ہے
عذاب اس پہ کریں کم نہ قہر کے دیوتا
جو اپنی آگ میں جل کر بھی رقص کرتا ہے
اسے نہ مانے کبھی بے حسی حیات پرست
ہر ایک سانس پہ جو زندہ ہو کے مرتا ہے

मैं अपनी ज़ात की ख़ल्वत[1] का हैरती[2] ही सही
जो मुझ पे खुल न सका राज़े काईनात[3] तो क्या
मैं अपने खूं के चिरागों को रौशनी दे दूं
सह्र नसीब न हो पाये मेरी रात तो क्या
मैं आपसे न कहूंगा कि है ज़ियां[4] जां[5] का
ख़याल शीशए दिल संगआज़मा न करे
मैं आपसे नहीं चाहूंगा दादे जांबाज़ी[6]
दुआ है आपको ग़म, दर्दआश्ना न करे
मैं आपसे नहीं मांगूगा खूं बहाए वफ़ा
कोई तो तर्क रहो-रस्मे आशिक़ाना करे
मैं आपको न दिखाऊँगा अपने ज़ख़्मी ख़्वाब
ख़लल हो आपके आराम में खुदा न करे

मगर ज़मीं परोमीथीस को क्यूं रोके
जो वो जहां के खुदाओं से जंग करता है
उसे न मौत के आसेब पास आने दें
जो आसमानों से लेकर हयात[7] उतरता है
है डर पिघलने का, देखें उधर न बर्फ़ के बुत
जो कोई शोलए उरयां पे हाथ धरता है
अज़ाब उसपे करें कम न क़हर के देवता
जो अपनी आग में जलकर भी रक़्स करता है
उसे न माने कभी बेहिसी हयात परस्त[8]
हर एक सांस पे जो ज़िंदा हो के मरता है

1. तंहाई
2. आश्चर्य, चकित
3. ब्रह्माण्ड का भेद
4. नुक़्सान
5. जान
6. जान की बाज़ी लगाने की प्रशंसा
7. ज़िंदगी
8. ज़िन्दगी की पूजा करने वाला

کریں نہ آپ مداوائے سوزِ آتشِ غم
یہ ظلم مجھ پہ تو ہر روز و شب گزرتا ہے
سلامت آپ کا ایمان، میں تو ہوں کافر
ہر ایک وضع سے اپنی حیات کرتا ہے

●

## صحرائے سکوت

خموشی اوڑھے ہوئے رات کی سیاہ رِدا
فضا میں پھونکتی پھرتی ہے سحرِ مرگ آثار
زمیں کی گود میں سوئے ہوئے مناظر کو
پلا کے زہر سلاتی ہے اور گہری نیند
وسیع کھیتیاں پھیلائے پاؤں سوتی ہیں
کھڑے ہیں سنتری بن کر ہزاروں کوہِ و جبال
اداس اداس سے بہتے ہیں ست رو دریا
کہ تیز پانی ہے آداب خامشی کے خلاف

چمکتے گونجتے شہروں کی شاہراہوں پر
ہر ایک چیز بہت دیر سے ہے پابستہ
دکانیں بند ہیں، فٹ پاتھ سرد و ویراں ہیں
خود اپنے نور کو روتے ہیں روشنی کے ستوں
وہ راستے جو مضافات تک پہنچتے ہیں
قدم قدم پہ انہیں بند گیٹ ملتے ہیں
بٹی ہوئی ہے بڑے چھوٹے خانوں میں فطرت

करें न आप मदावाए सोज़े आतिशे ग़म
यह जुल्म मुझ पे तो हर रोज़ो शब गुज़रता है
सलामत आप का ईमान, मैं तो हूं काफ़िर
हर एक वज़्अ से अपनी हयात करता है

●

## सहराए सुकूत

ख़मोशी ओढ़े हुए रात की स्याह रिदा
फ़ज़ा में फूंकती फिरती है सहरे मर्ग[1] आसार
ज़मीं की गोद में सोए हुए मनाज़िर को
पिला के ज़हर सुलाती है और गहरी नींद
वसीअ खेतियां फैलाए पांव सोती हैं
खड़े है सन्तरी बनकर हज़ारों कोहोजिबाल[2]
उदास उदास से बहते हैं सुस्तरौ[3] दरिया
कि तेज़ पानी है आदाबे ख़ामुशी के ख़िलाफ़

चमकते गूंजते शहरों की शाहराहों पर
हर एक चीज़ बहुत देर से है पाबस्ता
दुकानें बन्द हैं, फुटपाथ सर्दो वीरां हैं
खुद अपने नूर को रोते हैं रौशनी के सुतूं
वो रास्ते जो मुज़ाफ़ात तक पहुंचते हैं
क़दम क़दम पे उन्हें बन्द गेट मिलते हैं
बटी हुई है बड़े छोटे ख़ानों में फ़ित्रत
यह तीरगी[4] है जो वह्दत[5] को तोड़ देती है

1. मौत की सुबह
2. पहाड़ और पहाड़ियां
3. धीरे धीरे बहने वाला
4. अंधेरा
5. एकत्व

یہ تیرگی ہے جو وحدت کو توڑ دیتی ہے
یہ خامشی ہے جو ہر مظہرِ حقیقت کو
اکیلا جہل کی ظلمت میں چھوڑ دیتی ہے
ہر ایک چہرے کو دے کر نقاب ظلمت کی
تمام دہر کو ظلمت میں ڈھانپ لیتی ہے
کہ کوئی آنکھ کسی اور کو نہ دیکھ سکے
کہ کوئی چہرہ کسی اور کو نہ پہچانے
اٹھو جو پھینک کے چہرے کی روح پوش نقاب
اس آرزو میں کہ فطرت کی بھی نقاب اٹھے
تو ہر طرف سے جھپٹتی ہے رات تیرہ رات
خموشی حلقۂ گرداب تنگ کرتی ہے
کہ مل سکے نہ زبانوں کی نغمگی سے نجات
کہ ہونے پائے نہ صبح اور نہ آفتاب اٹھے
کوئی یہ کہتا ہے سرگوشیوں میں "چپ سو جاؤ"
زباں داں ہے کوئی اور نہ کوئی محرمِ راز
نہ کوئی آنکھ ہے بینا، نہ کوئی قلب گداز
تمہارے چاروں طرف خامشی کے پہرے ہیں"
کہو نہ کچھ کہ ہیں دروازے آنکھ کھولے ہوئے
کہو نہ کچھ کہ ہیں دیواریں گوش بر آواز
دریچے دُزدِ معانیٔ ناشنیدہ ہیں

ये ख़ामोशी है जो हर मज़हरे हक़ीक़त[1] को
अकेला जह्ल[2] की ज़ुल्मत[3] में छोड़ देती है
हर एक चेहरे को देकर नक़ाब ज़ुल्मत की
तमाम दह्र को ज़ुल्मत में ढांप लेती है
कि कोई आंख किसी और को न देख सके
कि कोई चेहरा किसी और को न पहचाने
उठो जो फेंक के चेहरे की रूहपोश नक़ाब
इस आरज़ू में कि फ़ित्रत की भी नक़ाब उठे
तो हर तरफ़ से झपटती है रात तीरा[4] रात
ख़ामोशी हल्क़ए गिर्दाब तंग करती है
कि मिल सके न ज़बानों की नग़मगी से नजात
कि होने पाये न सुब्ह और न आफ़ताब[5] उठे
कोई ये कहता है सरगोशियों[6] में "चुप सो जाओ"
"ज़बानदां[7] है कोई और न कोई मह्रमे राज़[8]
न कोई आंख है बीना[9], न कोई क़ल्ब गुदाज़[10]
तुम्हारे चारों तरफ़ ख़ामुशी के पहरे हैं"
कहो न कुछ कि हैं दरवाज़े आंख खोले हुए
कहो न कुछ कि हैं दीवारें गोशबर आवाज़[11]
दरीचे दुज़्दे मआनीए नाशुनीदा[12] हैं

1. सच्चाई को सामने लाने वाली
2. जहालत, अनपढ़ता, निरक्षता
3. अंधेरा
4. अंधेरी
5. सूरज
6. कानाफ़ूसी
7. ज़बान को जानने वाला
8. राज़ को जानने वाला
9. देखने वाली
10. पिघलने वाला दिल
11. आवाज़ पर कान लगाये हुए
12. वो खिड़कियां जो अनसुने अर्थों की चोरी करती हैं।

نظر نظر سے یہ کہتی ہے "آنکھ بند کرو"
زباں زباں سے یہ کہتی ہے "کوئی کچھ نہ کہو"
ہر ایک لفظ کی منت "ہم ان کہے اچھے"
معانی کی یہ لجاجت "ہمیں زباں نہ ملے"

سکوت پیشہ زبانوں کی گفتگو بھی سکوت
جو لوگ پہنے عبا و قبا سرِ منبر
بہت بلندی سے پیغمبرانہ بولتے ہیں
جب ان کے لفظوں کی کھولو گرہ تو خاموشی
زباں پہ ذکر ہے اقدار روح و مذہب کا
مگر جو سینوں میں جھانکو تو ہونکتے صحرا

کہیں جو دل کو ٹٹولو تو ایک زر کے سوا
کوئی ضمیر نہ ایمان، کوئی حق نہ خدا
سکوت کے ہیں پیمبر یہ غازیٔ گفتار
خیال جوڑنا چاہے صدا سے گر رشتہ
تو بات ہی نہیں کٹتی زبان کٹتی ہے
وہی خموشی جو کرتی ہے ضبط کی تلقین
ذرا سے زخم پہ مجروح ناگ کے مانند
صدا کو ڈسنے کی خاطر وہیں پلٹتی ہے
جہاں جہاں بھی جلیں لفظ کے سنہرے چراغ
اُدھر اُدھر کو وہ کف در دہاں جھپٹتی ہے
ریائی مملکتِ خامشی کا آئیں ہے
یہی زباں ہے، یہی ہے صدا، یہی دیں ہے

नज़र नज़र से यह कहती है "आंख बंद करो"
ज़बां ज़बां से ये कहती है "कोई कुछ न कहो"
हर एक लफ़्ज़ की मिन्नत[1] "हम अनकहे अच्छे"
मआनी की यह लजाजत[2] "हमें ज़बां न मिले"

सुकूत[3] पेशा ज़बानों की गुफ़्तगू भी सुकूत
जो लोग पहने अबाओ क़बा सरे मिम्बर
बहुत बुलंदी से पैग़म्बराना बोलते हैं
जब उनके लफ़्ज़ों की खोलो गिरह् तो ख़ामोशी
ज़बां पे ज़िक्र है इक़दारे रूहो मज़हब का
मगर जो सीनों में झांको तो हौंकते सहरा

कहीं जो दिल को टटोलो तो एक ज़र के सिवा
कोई ज़मीर न ईमान, कोई हक़ न ख़ुदा
सुकूत के हैं पयम्बर यह ग़ाज़िए गुफ़्तार
ख़याल जोड़ना चाहे सदा[4] से गर रिश्ता
तो बात ही नहीं कटती ज़बान कटती है
वही ख़मोशी जो करती है ज़ब्त की तल्क़ीन
ज़रा से ज़ख़्म पे मजरूह[5] नाग के मानिंद
सदा को डसने की ख़ातिर वहीं पलटती है
जहां जहां भी जलें लफ़्ज़ के सुनहरे चिराग़
उधर उधर को वो कफ़ दर दहां[6] झपटती है
रियाई मम्लकते ख़ामुशी का आईं है
यही ज़बां है, यही है सदा, यही दीं[7] है

1. विनती
2. मिन्नत और समाजत, गिड़गिड़ाना
3. ख़ामोशी
4. आवाज़
5. ज़ख़्मी
6. मुंहों में झाग भरे हुए
7. मज़हब

اسی زبان میں کرتی ہے بات خاموشی
کچھ اس طرح کہ سنائی نہ دے صدا دل کی
جہاں بھی جاؤ، وہیں خامشی کی گونج کا شور
یہ گونج ہے وہ اندھیرا ڈراونا جنگل
جہاں زبان ہے گم، لفظ گم معانی گم
دل و دماغ و نظر کی ہر اک کہانی گم

بہت زمانے سے ہم دشتِ خامشی میں گم
زبان و لفظ کے رشتوں کی جستجو میں ہیں
اندھیری راتیں چراغوں کی آرزو میں ہیں
مگر یہ کھوکھلی آوازوں کا مہیب سکوت
رِیا کا زہر پئے لفظ کا لیے تابوت
بلا رہا ہے کہ آؤ مشالعت کے لیے
یہ چاہتا ہے کہ لفظوں کو گہری قبروں میں
کچھ اس طرح سے کرے دفن، پھر وہ اُٹھ نہ سکیں
یہ چاہتا ہے کہ اس سازشِ گناہ میں ہم
جلائیں ایسی چتائیں کہ پھر وہ جی نہ سکیں
یہ چاہتا ہے کہ اس سازشِ گناہ میں ہم
شریک ہو کے گلا اپنا آپ ہی کاٹیں
بہت زمانے سے اس دشتِ خامشی میں ہم
یہ دیکھتے ہیں کہ ہر روز ایک زندہ لفظ
کسی گناہ کے تاریک قید خانے میں
سسک سسک کے خموشی کا زہر پیتا ہے
پھر اس کے بعد بہت سارے بے زباں عفریت

इसी ज़बान में करती है बात ख़ामोशी
कुछ इस तरह कि सुनाई न दे सदा दिल की
जहां भी जाओ, वहीं ख़ामुशी की गूंज का शोर
ये गूंज है वो अंधेरा डरावना जंगल
जहां ज़बान है गुम, लफ़्ज़ गुम, मआनी गुम
दिलो दिमाग़ो नज़र की हर इक कहानी गुम

बहुत ज़माने से हम दश्ते ख़ामुशी में गुम
ज़बानो लफ़्ज़ के रिश्तों की जुस्तजू[1] में हैं
अंधेरी रातें चिराग़ों की आरज़ू में हैं
मगर यह खोखली आवाज़ों का महीब[2] सुकूत
रिया का ज़हर पिये लफ़्ज़ का लिए ताबूत
बुला रहा है कि आओ मशालअत के लिए
ये चाहता है कि लफ़्ज़ों को गहरी क़बरों में
कुछ इस तरह से करे दफ़न, फिर वो उठ न सकें
ये चाहता है कि इस साज़िशे गुनाह में हम
जलायें ऐसी चिताएं कि फिर वो जी न सकें
ये चाहता है कि इस साज़िशे गुनाह में हम
शरीक हो के गला अपना आप ही काटें
बहुत ज़माने से इस दश्ते ख़ामुशी में हम
ये देखते हैं कि हर रोज़ एक ज़िंदा लफ़्ज़
किसी गुनाह के तारीक क़ैदख़ाने में
सिसक सिसक के ख़ामोशी का ज़हर पीता है
फिर, उसके बाद, बहुत सारे बेज़बां इफ़रीत[3]

1. तलाश
2. डरावना
3. भूत

قرونِ وسطیٰ کے گونگے غلاموں کے مانند
جھکائے آنکھ کفن اس کا قطع کرتے ہیں
کہ حاکموں کے گناہوں کا پردہ رہ جائے!

●

## شب و روز تماشہ

ذہن جب تک ہے
خیالات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
ہونٹ جب تک ہیں
سوالات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
بحث کرتے رہو، لکھتے رہو نظمیں، غزلیں
ذہن پر صدیوں سے طاری ہے جو مجلس کی فضا
اِس خنک آنچ سے کیا پگھلے گی
سوچ لینے ہی سے حالات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
نیند میں ڈوبی ہوئی آنکھوں سے وابستہ خواب
تیز کرنوں کی سنانوں پہ ہیں رُسوا سرِ عام
یہ شہید اپنی صلیبوں سے پلٹ آتے ہیں دل میں ہر شام
صبح ہوتی ہے مگر رات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
دن گزر جاتا ہے بے فیض کد و کاوش میں
ایک اَن دیکھے جہنم کی تب و تابش میں
جسم اور جاں کی تگ و تاز کی ہر پُرسش میں
درد و غم حسرت و محرومی کی ہر کاہش میں
طلب و ترکِ طلب سلسلۂ بے پایاں

क़रूने वुस्ता[1] के गूंगे ग़ुलामों के मानिंद
झुकाए आंख कफ़न उसका क़तअ करते हैं
कि हाकिमों के गुनाहों का पर्दा रह जाए!

●

## शबो रोज़े[2] तमाशा

ज़ेहन जब तक है
ख़यालात की ज़ंजीर कहां कटती है
होंट जब तक हैं
सवालात की ज़ंजीर कहां कटती है
बहस करते रहो, लिखते रहो नज़्में, ग़ज़लें
ज़ेहन पर सदियों से तारी है जो मजलिस की फ़ज़ा
इस खुनक[3] आंच से क्या पिघलेगी
सोच लेने ही से हालात की ज़ंजीर कहां कटती है
नींद में डूबी हुई आंखों से वाबस्ता ख़्वाब
तेज़ किरनों की सनानों पे हैं रुसवा सरे आम
ये शहीद अपनी सलीबों से पलट आते हैं दिल में हर शाम
सुब्ह होती है मगर रात की ज़ंजीर कहां कटती है
दिन गुज़र जाता है बेफ़ैज़ कदो काविश[4] में
एक अनदेखे जहन्नम की तबो ताबिश में
जिस्म और जां की तगो ताज़[5] की हर पुरसिश[6] में
दर्दो ग़म हसरतो महरूमी की हर काहिश[7] में
तलबो तर्के तलब सिलसिलए बे पायां

1. मधयकालीन
2. तमाशे के रात और दिन
3. ठंडी
4. तलाश, जुस्तजु
5. भाग दौड़
6. पूछना
7. कमी

مرگ ہی زیست کا عنوان ہے ہر خون شدہ خواہش میں
غم سے بھاگیں بھی تو فریاد و شکایات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
وقت وہ دولتِ نایاب ہے، آتا نہیں ہاتھ
ہم مشینوں کی طرح جیتے ہیں پابندیٔ اوقات کے ساتھ
وقت بے کار گزرتا ہی چلا جاتا ہے
کرسیوں میزوں سے بے معنی ملاقاتوں میں
سینکڑوں بار کی اُگلی ہوئی دہرائی ہوئی باتوں میں
زندہ رہنے کی تمنا کی مداراتوں میں
شکم و جاں کی عبادات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
صبح سے شام تلک اتنے خدا ملتے ہیں ہر کافر کو
سجدۂ شکر سے انکار کی مہلت نہیں ملنے پاتی
سینکڑوں لاکھوں خداؤں کی نظر سے چھپ کر
خود سے مل لینے کی رخصت نہیں ملنے پاتی
خود پرستوں سے بھی طاعات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
رات آتی ہے تو دل کہتا ہے ہم اپنے ہیں
خلوتِ خواب میں دنیا سے کنارا کرلیں
کل بھی دینا ہے لہو اپنا، دل و دیدہ کی جھولی بھر لیں
جسم کے شور سے اور روح کی فریاد سے دم گھٹتا ہے
دن کے بیکار خیالات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
بے نیازانہ بھی جینا ہے فقط ایک گماں
فکرِ موجود کو چھوڑیں تو غمِ ناموجود
ساتھ ہر سانس کے ہے سلسلۂ ہست و بود

मर्ग[1] ही ज़ीस्त[2] का उन्वान है हर खून शुदा ख़्वाहिश में
ग़म से भागें भी तो फ़रियादो शिकायात की ज़ंजीर कहां कटती है
वक़्त वो दौलते नायाब है, आता नहीं हाथ
हम मशीनों की तरह जीते हैं पाबन्दिए औक़ात[3] के साथ
वक़्त बेकार गुज़रता ही चला जाता है
कुर्सियों मेज़ों से बेमानी मुलाक़ातों में
सैंकड़ों बार की उगली हुई दुहराई हुई बातों में
ज़िंदा रहने की तमन्ना की मुदारातों[4] में
शिकमो जां[5] की इबादात की ज़ंजीर कहां कटती है
सुब्ह से शाम तलक इतने ख़ुदा मिलते है हर काफ़िर को
सजदए शुक्र से इन्कार की मोहलत नहीं मिलने पाती
सैंकड़ों लाखों ख़ुदाओं की नज़र से छुपकर
ख़ुद से मिल लेने की रुख़्सत नहीं मिलने पाती
ख़ुद-परस्तों से भी ताआत[6] की ज़ंजीर कहां कटती है
रात आती है तो दिल कहता है हम अपने हैं
ख़िलवते ख़्वाब में दुनिया से किनारा कर लें
कल भी देना हे लहू अपना, दिलो दीदा[7] की झोली भर लें
जिस्म के शोर से और रूह की फ़रयाद से दम घुटता है
दिन के बेकार ख़यालात की ज़ंजीर कहां कटती है
बेनियाज़ाना भी जीना है फ़क़त एक गुमां
फ़िक्रे मौजूद को छोड़ें तो ग़मे नामौजूद
साथ हर सांस के है सिलसिलए हस्तो बूद[8]

1. मौत
2. ज़िंदगी
3. वक़्तों की पाबन्दी
4. आवभगत
5. पेट और जान
6. ताअत का बहुवचन, इबादत, बंदगी
7. दिल और आंख
8. है और था

غمِ آفاق کو ٹھکرائیں، کریں ترکِ جہاں
پھر بھی یہ فکر کہ جینے کا ہو کوئی عنواں
بے نیازی سے غمِ ذات کی زنجیر کہاں کٹتی ہے
ذہن میں اندھے عقیدوں کی سیاہی بھر لو
تا کہ اس نگری میں
کبھی افکار کے شعلوں کا گزر ہو نہ سکے
جبر کا حکم سنو
ہونٹوں کو اپنے سی لو
تا کہ ان راہوں سے
کبھی لفظوں کا سفر ہو نہ سکے
ذہن و لب پھر بھی نہیں چپ ہوتے
ان کے خاموش سوالات کی
پیچ در پیچ خیالات کی
زنجیر کہاں کٹتی ہے

●

## اک اور دن گزر گیا

یہ روز بھی گزر گیا
سحر سے قبل آج اذاں کے ساتھ آنکھ کھل گئی
مہِ صیام کے نگاہ دار اہتمامِ صوم و فجر میں تھے منہمک
کیا خدا کو یاد ہم نے بھی کہ وہ عظیم و حی و قادر و قدیر ہے
سمیع ہے، بصیر ہے
مگر تمھارے ہجر سے شکستہ دل کراہتا تھا زخم زخم

ग़मे आफ़ाक़ को ठुकरायें, करें तर्के जहां
फिर भी यह फ़िक्र कि जीने का हो कोई उन्वां
बेनियाज़ी से ग़मे ज़ात की ज़ंजीर कहां कटती है
ज़ेह्न में अंधे अक़ीदों की सियाही भर लो
ताकि इस नगरी में
कभी अफ़्कार[1] के शोलों का गुज़र हो न सके
जब्र का हुक्म सुनो
होंठों को अपने सी लो
ताकि इन राहों से
कभी लफ़्ज़ों का सफ़र हो न सके
ज़ेहनो लब फिर भी नहीं चुप होते
उनके ख़ामोश सवालात की
पेच दर पेच ख़यालात की
ज़ंजीर कहां कटती है

●

## इक और दिन गुज़र गया

यह रोज़ भी गुज़र गया
सहर से क़ब्ल आज अज़ां के साथ आंख खुल गई
महेसयाम[2] के निगाह दार एहतिमामे सौमो[3] फ़जर में थे मुन्हमिक
किया ख़ुदा को याद हमने भी कि वो अज़ीमो हैयो[4] क़ादिरो क़दीर[5] है
समीअ[6] है, बसीर[7] है
मगर तुम्हारे हिज्र से शिकस्ता दिल कराहता था ज़ख़्म ज़ख़्म

1. फ़िक्र का बहुवचन
2. रोज़े का चाँद
3. रोज़ा
4. ज़िंदा रहने वाला अर्थात ख़ुदा
5. क़ुदरत वाला
6. सुनने वाला
7. देखने वाला

مژہ مژہ تھے خوابِ وصل و قربِ دوست خوں فشاں
ہزاروں میل دور تم دیارِ غیر میں دو ساعتوں کے فاصلے پہ محوِ خواب تھیں
ہر ایک روز ہفت و نیم ساعتوں کے فاصلے
پلک سے چن کے اک زباں کے لفظ، ان کو دوسری زباں میں ڈھالنے کی کوششیں
دماغ و جسم کو تھکانے والی محنتیں
پھر اس کے بعد جنگ سے تھکی ہوئی معیشت اور نفع خوریوں کے سامنے صفوں میں
گوشت، دودھ، مکھن اور پنیر کے لیے فضول نوبتوں کا انتظار
اور اس کے بعد خالی ہاتھ اور تھکن کے ساتھ گھر کو واپسی
یہ انتظار گیس کی مشین آ کے کیپسول کو بھرے
غذا کا اہتمام ہو
تمہارا روز یوں ہی آج بھی گزر کے موجِ وقت کی اندھیری تہہ میں غرق ہو گیا
یہاں دو ساعتوں کے فرق سے مرا بھی روز دفتری فضول کاغذوں میں گم ہوا
تمہاری رات حملۂ ہوا کے سائرن سے جاگتی نہ ہو کہیں
ہمارے دن ہمارے شہر بھی فسادِ مذہب و زباں کے کشت و خوں سے بے اماں نہیں
کہاں کی قربت اور کہاں کے فاصلے
یہ روز بھی گزر گیا
اور ایک بار پھر کھڑی ہے رات سر پہ دوریوں کے اسلحوں سے لیس و گرم
اور آج رات بھی ہماری نیند کل کے اور آنے والے کل کے بوجھ سے ہے مضمحل
وہ دن کب آئے گا تمہارا روز میرے رتجگوں کے ساتھ ہو گا ہم سخن
زماں کی ساعتیں، مکاں کے فاصلے ہمارے قرب میں اگر ہوں مرتکز
تو دن کو چین اور شب کو خواب لوٹ آئیں گے
میں تم کو خط میں روز و شب کی داستان کیا لکھوں
فقط یہی کہ آج ایک اور دن گزر گیا
اک اور رات آئی ہے، جو سوتے جاگتے گزر رہی جائے گی

●●●

मिज़ह-मिज़ह थे ख़्वाबे वस्लो कुर्बे दोस्त ख़ूंफ़िशां
हज़ारों मील दूर तुम दयारे ग़ैर में दो साअतों के फ़ासले पे मह्वे ख़्वाब थीं
हर एक रोज़ हफ़्तो नीम साअतों के फ़ासले
पलक से चुनके इक ज़बां के लफ़्ज़, उनको दूसरी ज़बां में ढालने की कोशिशें
दिमाग़ो जिस्म को थकाने वाली मेहनतें
फिर इसके बाद जंग से थकी हुई मईशत और नफ़ाख़ोरियों के सामने सफ़ों में
गोश्त, दूध, मक्खन और पनीर के लिए फ़ज़ूल नौबतों का इंतज़ार
और इसके बाद ख़ाली हाथ और थकन के साथ घर को वापसी
यह इंतज़ार गैस की मशीन आके कैपसूल को भरे
ग़िज़ा का ऐहतिमाम हो
तुम्हारा रोज़ यूं ही आज भी गुज़र के मौजे वक़्त की अंधेरी तह में ग़र्क़ हो गया
यहां दो साअतों के फ़र्क़ से मेरा भी रोज़ दफ़्तरी फ़ज़ूल काग़ज़ों में गुम हुआ
तुम्हारी रात हमलए हवा के साइरन से जागती न हो कहीं
हमारे दिन हमारे शहर भी फ़सादे मज़हबो ज़बां के कुश्तो ख़ूं से बे अमां नहीं
कहां की कुर्बत और कहां के फ़ासले
यह रोज़ भी गुज़र गया
और एक बार फिर खड़ी है रात सर पे दूरियों के अस्लहों से लैसो गर्म
और आज रात भी हमारी नींद कल के और आने वाले कल के बोझ से है मुज़महिल[1]
वो दिन कब आयेगा तुम्हारा रोज़ मेरे रतजगों के साथ होगा हमसुख़न[2]
ज़मां की साअतें, मकां के फ़ासले हमारे कुर्ब में अगर हों मुर्तकिज़[3]
तो दिन को चैन और शब को ख़्वाब लौट आयेंगे
मैं तुमको ख़त में रोज़ो शब की दास्तान क्या लिखूं
फ़क़त यही कि आज एक और दिन गुज़र गया
इक और रात आई है, जो सोते जागते गुज़र ही जाएगी

●●●

1. उदास
2. बात चीत करने वाला
3. केंद्रित

عادل منصوری

## حشر کی صبح درخشاں ہو مقام محمود

رات داڑھی کے اندھیرے سے تکلف برتے
عرش کے سامنے رسوائی کی گردن نہ اُٹھے
اذن سجدہ پہ کمر تختہ نہ ہو جائے کہیں
کھوکھلے لفظوں میں لوہا تو نہیں بھر سکتے
سینکڑوں سال کی تبلیغ کے چالیس ثمر
کشتی بن جائے تو تنور سے پانی اُبلے
سالہا سال سے آرام نتیجہ مطلوب
تین سو ساٹھ صنم خانۂ کعبہ سے چلے
ریگ زاروں میں غبار اور کھجوری سائے
اونٹ کی آنکھ میں تشہیر ہو اور دِ سفر
کوئی ہندہ سے کہے دانت کہاں ہیں تیرے
فتح مکہ سے مگر لوگ ہدایت پائیں
خون جم جائے جو نعلین میں چلتے چلتے
عرش کی آنکھ سے رحمت کا سمندر اُبلے
جبرئیل اپنی ہیبت میں ہیں نمائش منظر
پاؤں پاتال میں سر چرخ سے ٹکرائے کہیں
پر جو کھولے تو ہر اک سمت پہ پردے لٹکیں

# आदिल मंसूरी

## हश्र[1] की सुबहे दरख़्शां[2] हो मक़ामे महमूद[3]

रात दाढ़ी के अंधेरे से तकल्लुफ़ बरते
अर्श[4] के सामने रुसवाई की गर्दन न उठे
इज़्ने[5] सज्दा पे कमर तख़्ता न हो जाए कहीं
खोखले लफ़्ज़ों में लोहा तो नहीं भर सकते
सैंकड़ों साल की तब्लीग़[6] के चालीस समर[7]
कश्ती बन जाये तो तन्नूर[8] से पानी उबले
सालहा साल से आराम नतीजा मतलूब[9]
तीन सौ साठ सनम[10] ख़ानएकाबा से चले
रेगज़ारों[11] में गुबार और खजूरी साये
ऊंट की आंख में तशहीर[12] हुआ दर्दे सफ़र
कोई हिंदा से कहे दांत कहां हैं तेरे
फ़तह मक्का से मगर लोग हिदायत पायें
खून जम जाये जो नालैन में चलते चलते
अर्श की आंख से रहमत का समुन्दर उबले
जिब्रईल अपनी हैयत में हैं नुमाइश मंज़र
पांव पाताल में सर चर्ख़ से टकराये कहीं
पर जो खोले तो हर इक सिम्त पे पर्दे लटकें

1. महाप्रलय
2. रौशन सुब्ह
3. श्रेष्ठ स्थान
4. आकाश
5. इजाज़त, हुक्म
6. प्रचार
7. फल
8. तंदूर
9. चाहा हुआ
10. बुत
11. रेगिस्तानों
12. शोहरत देना

اور جلتا ہوا سورج ابھی کھو جائے کہیں
قافلہ آیا ہے بوبکرؓ سے منسوب مگر
مال تقسیم ہوا دامنِ حاجت منداں
نور کندھے پہ اُٹھائے شبِ ہجرت کے سفیر
غار میں ساتھ رہے پاس ہی پیوند ہوئے
مسجدِ نبوی میں انبار غنیمت روشن
لوگ روتے ہوئے نکلے ہیں پریشاں منظر
روشنی پہنچی ابو جہل کی دیواروں تک
گھر کی تاریکی میں رستہ نہ بنے بینائی
پیڑ کے سائے کی پہچان یہودی راہب
رُک گیا آبِ رواں بیوہ کے دروازے پر
دستِ زہرا میں نشانات عیاں چکی سے
علم کے باب علیؓ عمر میں سب سے چھوٹے
چاند کا نام ترے چاک گریبانوں میں
مبتدی ڈھونڈتے ہیں مسجدِ اقصیٰ میں امام
سدرۃ المنتہیٰ جبریل اجازت مانگے
کون تھا کس نے پکارا کہ چلے بھی آؤ
کون موجود تھا پہلے سے وہاں کون گیا
کون سنتا تھا وہاں کس نے پکارا کس کو
کس کی آواز کی تنویر سے عالم چمکے
سربلندی تھی مقدر میں قلم سے پہلے
بکریاں کون حلیمہ کی چرانے جائے
آمنہ بطن سے اظہار ہے آدم کا عروج
مجتمع کس نے کیا لوگوں کو پربت کے قریب
کس نے للکارا ضلالت کو مسلسل تنہا
جو کی روٹی کبھی مل جائے، کبھی فاقہ کشی

और जलता हुआ सूरज अभी खो जाये कहीं
क़ाफ़िला आया है बूबक्र से मंसूब मगर
माल तक़सीम हुआ दामने हाजत मंदां
नूर कंधे पे उठाये शबे हिजरत के सफ़ीर
ग़ार में साथ रहे पास ही पेवंद हुए
मस्जिदे नबवी में अंबारे ग़नीमत रौशन
लोग रोते हुए निकले हैं परेशां मंज़र
रौशनी पहुंची अबू जह्ल की दीवारों तक
घर की तारीकी में रस्ता न बने बीनाई
पेड़ के साये की पहचान यहूदी राहिब
रुक गया आबे रवां बेवा के दरवाज़े पर
दस्ते ज़ोहरा में निशानात अयां चक्की से
इल्म के बाब अली उम्र में सबसे छोटे
चांद का नाम तेरे चाक गिरेबानों में
मुक्तदी ढूंढते हैं मस्जिदे अक़सा में इमाम
सिदरतुल मुन्तहा जिब्रील इजाज़त मांगे
कौन था किसने पुकारा कि चले भी आओ
कौन मौजूद था पहले से वहां कौन गया
कौन सुनता था वहां किसने पुकारा किसको
किसकी आवाज़ की तनवीर से आलम चमके
सर बलंदी थी मुक़द्दर में क़लम से पहले
बकरियां कौन हलीमा की चराने जाये
आमना बत्न से इज़्हार है आदम का उरूज
मुज्तमअ् किसने किया लोगों को परबत के क़रीब
किसने ललकारा ज़लालत को मुसलसल तन्हा
जौ की रोटी कभी मिल जाये कभी फ़ाक़ाकशी

بھوک سے پیٹ پہ پتھر بھی باندھے کس نے
تین سو تیرہ کی تعداد ہے کس گنتی میں
فکر پہ دائرہ کن خندقیں کھودی جائیں
دور کی دھوپ میں ہے فیصلہ کن راہِ تبوک
حنظلہ سامنے آجائیں جو چھٹ جائے غبار

میں نے پہنچا دیا تم تک جو مجھے پہنچا تھا
میں نے پہنچا دیا تم تک جو مجھے پہنچا تھا
میں نے پہنچا دیا تم تک جو مجھے پہنچا تھا

کوئی پردیسی ہے خیمے پہ پریشاں صورت
اور فاروقؓ چلے بیوی کو ہمراہ لئے
فاصلے توڑ کر آواز کے سائے پھیلے
حاکمِ وقت کا کرتا کئی پیوند لگا
بکریاں جس سے سنبھالی نہیں جاتیں تھیں کبھی
نصف دنیا پہ خلافت کے علم لہرائے
یاد ہے صاحبو خیبر کو اکھاڑا کس نے
کس کی تلوار تھی آئینہ زمانے کے لئے
کس نے زرخیز شجاعت کے تارے بوئے
جان دی جاوداں لمحات تلاوت مشغول
خون کے دھبے ہیں قرآن پہ تابندہ نظر

کون روتا تھا مصلےٰ پہ ہماری خاطر
پیر وَرما گئے کس کے شب سجدہ و قیام
دو مہینوں میں مکانوں سے دھواں تک نہ اُٹھے
فکرِ اُمت کہ ہر اک لحہ لہو میں کروٹ
جسم روشن تھا چٹائی کے نشاں بھی روشن
گالیاں کھاتے پھریں ملّہ کے بازاروں میں
اور تمنا کبھی طائف سے نکالے جائیں

भूख से पेट पे पत्थर कभी बांधे किसने
तीन सौ तेरह की तादाद है किस गिनती में
फ़िक्र पे दायराकुन ख़ंदकें खोदी जायें
दूर की धूप में है फ़ैसलाकुन राहे तबूक
हन्ज़ला सामने आ जायें जो छट जाये गुबार
मैं ने पहुंचा दिया तुम तक जो मुझे पहुंचा था
मैं ने पहुंचा दिया तुम तक जो मुझे पहुंचा था
मैं ने पहुंचा दिया तुम तक जो मुझे पहुंचा था
कोई परदेसी है ख़ेमे पे परेशां सूरत
और फ़ारूक़ चले बीवी को हमराह लिये
फ़ासले तोड़ कर आवाज़ के साये फैले
हाकिमे वक़्त का कुर्ता कई पेवंद लगा
बकरियां जिससे संभाली नहीं जातीं थी कभी
निस्फ़ दुनिया पे ख़िलाफ़त के अलम लहराये
याद है साहिबो ख़ैबर को उखाड़ा किसने
किसकी तलवार थी आईना ज़माने के लिये
किसने ज़रख़ेज़ शुजाअत के तारे बोये
जान दी जाविदां लम्हात तिलावत मशगूल
खून के धब्बे हैं कुरआन पे ताबिंदा नज़र

कौन रोता था मुसल्ले पे हमारी ख़ातिर
पैर वरमा गये किसके शबे सज्दाओक़याम
दो महीनों में मकानों से धुंआ तक न उठे
फ़िक्रे उम्मत कि हर इक लम्हा लहू में करवट
जिस्म रौशन था चटाई के निशां भी रौशन
गालियां खाते फिरें मक्का के बाज़ारों में
और तमन्ना कभी ताइफ़ से निकाले जायें

مرحبا شکر کا ٹھہراؤ بہشتی زیور
مرحبا صبر کا عرفان کہ معراجِ حیات
نور مجسوم ہوا گنبدِ خضرا مرکوز
حشر کی صبح درخشاں ہو مقامِ محمود
ہاتھ روشن رہے کوثر سے قرابت منظر

خون اب سرد ہوا جاتا ہے شریانوں میں
اور بڑھتی ہوئی تعداد بھروسا توڑے
نفس دوڑاتا ہے پھر جانبِ شہوت گھوڑے
لذّتِ شے میں ہیں معدوم چراغوں کی لویں
روشنی اپنے پڑوسی کو بھی پہنچا نہ سکے
روح اب شعلگی مانگے ہے ہر اک ذرّے سے
کوئی الیاس کی باتوں پہ ذرا کان دھرے
کوئی یوسف سے شہادت کے معانی پوچھے
کوئی تقسیم کرے وقت کو مسجد مسجد
کوئی بیعت تو کرے دستِ زکریا حاضر
مرکزِ عشق پہ پہنچو تو ہو انعامِ نظر
ایک اک لمحہ کہ چہرے سے عیاں اذنِ سفر

گمرہی قلعوں میں محفوظ رہے گی کب تک
سر اُٹھائے گی ہوا بادباں کھل جائیں گے
بند دروازوں پہ دستک کی صدا گونجے گی
دھوپ دہلیز پہ پہنچائے گی مہمانوں کو
سائباں سر پہ ابابیل لئے ساتھ چلے
تلخ تہذیب کے صحرا میں اذاں لہرائے
گونج اُٹھے گا حرم نعرۂ لبیک — زمین
تیرے قدموں میں اُگل دے گی خزانے اپنے

मरहबा शुक्र का ठहराव बहिश्ती ज़ेवर
मरहबा सब्र का इरफ़ान कि मेराजे हयात
नूर मज्सूम हुआ गुम्बदे ख़ज़्रा मरकूज़
हश्र की सुब्हे दरख़्शां हो मक़ामे महमूद
हाथ रौशन रहे कौसर से क़राबत मंज़र

ख़ून अब सर्द हुआ जाता है शिरयानों में
और बढ़ती हुई तादाद भरोसा तोड़े
नफ़्स दौड़ाता है फिर जानिबे शह्वत घोड़े
लज़्ज़ते शय में हैं मादूम चिराग़ों की लवें
रौशनी अपने पड़ोसी को भी पहुंचा न सके
रूह अब शोलगी मांगे है हर इक ज़र्रे से
कोई इलियास की बातों पे ज़रा कान धरे
कोई यूसुफ़ से शहादत के मआनी पूछे
कोई तक़्सीम करे वक़्त को मस्जिद मस्जिद
कोई बैअत तो करे दस्ते ज़िक्रिया हाज़िर
मर्कज़े इश्क़ पे पहुंचो तो हो इनआमे नज़र
एक इक लम्हा के चेहरे से अयां इज़्ने सफ़र

गुमरही क़िलों में महफ़ूज़ रहेगी कब तक
सर उठायेगी हवा बादबां खुल जायेंगे
बंद दरवाज़ों पे दस्तक की सदा गूंजेगी
धूप दहलीज़ पे पहुंचायेगी मेहमानों को
सायबां सर पे अबाबील लिये साथ चले
तल्ख़ तहज़ीब के सहरा में अज़ां लहराये
गूंज उठेगा हरम नारए लब्बैक — ज़मीं
तेरे क़दमों में उगल देगी ख़ज़ाने अपने

تیری تقلید میں مغرب کی بقا پوشیدہ
تیری تذلیل میں جو ہاتھ اُٹھے کٹ جائے
تیری نصرت کے لیے آسماں کوشش مقصود
سلسلے تیرے بنیں زیب جہانِ فانی
نورِ مجسوم ہوا گنبدِ خضرا مرکوز
حشر کی صبح درخشاں ہو مقامِ محمود

●

## نظم

تبوک آواز دے رہا ہے
زمیں سے اب جو چپک رہے گا
منافقوں میں شمار ہوگا
لہو کے سورج کی لال آنکھیں
اُداس لمحوں کو سونگھتی ہیں
کھجور پکنے کا وقت بھی ہے
سواریاں اور سفر کا سامان ساتھ لے لو
خدا بڑا ہے
بہت بڑا ہے
خدا بڑا ہے
تمہارے اونٹوں کی گردنوں سے
تمام دنیا میں نور پھیلے
تمہارے گھوڑوں کی ہنہناہٹ
تمہاری منزل کی راہ کھولے
بلندیوں کی طرف بلاتا ہے آج کوئی
یہ دھوپ سائے کے ساتھ ہوگی

तेरी तक़्लीद में मग़रिब की बक़ा पोशीदा
तेरी तज़्लील में जो हाथ उठे कट जाये
तेरी नुसरत के लिए आसमां कोशिश मक़्सूद
सिलसिले तेरे बनें ज़ेबे जहाने फ़ानी
नूर मज्सूम हुआ गुम्बदे ख़िज़रा मरकूज़
हश्र की सुब्हे दरख़्शां हो मक़ामे महमूद

●

## नज़्म

तबूक आवाज़ दे रहा है
ज़मीं से अब जो चिपक रहेगा
मुनाफ़िक़ों में शुमार होगा
लहू के सूरज की लाल आंखें
उदास लम्हों को सूंघती हैं
खजूर पकने का वक़्त भी है
सवारियां और सफ़र का सामान साथ ले लो
ख़ुदा बड़ा है
बहुत बड़ा है
ख़ुदा बड़ा है
तुम्हारे ऊँटों की गर्दनों से
तमाम दुनिया में नूर फैले
तुम्हारे घोड़ों की हिनहिनाहट
तुम्हारी मंज़िल की राह खोले
बुलंदियां की तरफ़ बुलाता है आज कोई
यह धूप साये के साथ होगी

ہوا میں ہنستا نشان دیکھو
وہ اُڑتے پرچم کی شان دیکھو
ابھی ابھی قافلہ گیا ہے
تبوک آواز دے رہا ہے
میں اپنے گھوڑے کی باگ موڑوں
میں اپنے گھر کی طرف نہ جاؤں

●

## والد کے انتقال پر

وہ چالیس راتوں سے سویا نہ تھا
وہ خوابوں کو اونٹوں پہ لادے ہوئے
رات کے ریگ زاروں میں چلتا رہا
چاندنی کی چتاؤں میں جلتا رہا

میز پر
کانچ کے اک پیالے میں رکھے ہوئے
دانت ہنستے رہے
کالی عینک کے شیشوں کے پیچھے سے پھر
موتیے کی کلی سر اُٹھانے لگی
آنکھ میں تیرگی مسکرانے لگی

روح کا ہاتھ
چھلنی ہوا سوئی کی نوک سے

خواہشوں کے دیئے
جسم میں بجھ گئے

سبز پانی کی سیال پرچھائیاں
لمحہ لمحہ بدن میں اُترنے لگیں

हवा में हंसता निशान देखो
वह उड़ते परचम की शान देखो
अभी अभी क़ाफ़िला गया है
तबूक आवाज़ दे रहा है
मैं अपने घोड़े की बाग मोड़ूं
मैं अपने घर की तरफ़ न जाऊँ

●

## वालिद के इंतिक़ाल पर

वो चालीस रातों से सोया न था
वो ख़्वाबों को ऊंटों पे लादे हुये
रात के रेगज़ारों में चलता रहा
चांदनी की चिताओं में जलता रहा
मेज़ पर
कांच के इक प्याले में रखे हुये
दांत हंसते रहे
काली ऐनक के शीशों के पीछे से फिर
मोतिये की कली सर उठाने लगी
आंख में तीरगी मुस्कुराने लगी
रूह का हाथ
छलनी हुआ सूई की नोक से
ख़्वाहिशों के दिये
जिस्म में बुझ गये
सब्ज़ पानी की सैय्याल परछाईयां
लम्हा लम्हा बदन में उतरने लगीं

گھر کی چھت میں جڑے
دس ستاروں کے سایوں تلے
عکس دھندلا گئے
عکس مُرجھا گئے

●

## وقت کی پیٹھ پر

وقت کی پیٹھ پر
کچے لمحوں کے دھاگوں میں لپٹا ہوا
شہر کی سیڑھیوں پر سرکتا ہوا
نت نئے
خودکشی کے طریقوں کا موجد بنا
حبشی راتوں کے جنگل میں بکھری ہوئی
لمس کی ہڈیاں
چُن رہا ہوں نہ جانے میں کس کے لئے؟
جب مرے نام کے لفظ تنہا تھے لوگو
تمھیں سرخ ہونٹوں کی خیرات
کیسے ملی یہ بتاؤ؟
ریفریجریٹر میں رکھی طشتری میں
میری دونوں آنکھیں برہنہ پڑی تھیں
وہاں تک کسی خواب کے ہاتھ پہنچے نہیں
کبوتر کی آنکھوں میں
ٹوٹے ہوئے آسمانوں کا تنزل نہ دیکھو
بدن کے شکستہ کھنڈر سے نکل بھاگنے کے لئے پھر
تمہاری مدد کی ضرورت ہے مجھ کو

●●●

घर की छत में जड़े
दस सितारों के सायों तले
अक्स धुंधला गये
अक्स मुरझा गये

●

## वक़्त की पीठ पर

वक़्त की पीठ पर
कच्चे लम्हों के धागों में लिपटा हुआ
शह्‌र की सीढ़ियों पर सरकता हुआ
नित नये
ख़ुदकुशी के तरीक़ों का मूजिद बना
हब्शी रातों के जंगल में बिखरी हुई
लम्स की हड्‌डियां
चुन रहा हूं न जाने मैं किस के लिये?
जब मेरे नाम के लफ़्ज़ तंहा थे लोगो
तुम्हें सुर्ख़ होंटों की ख़ैरात
कैसे मिली ये बताओ?
रेफ़्रिजरेटर में रख्खी हुई तश्तरी में
मेरी दोनों आंखें बरहना पड़ी थीं
वहां तक किसी ख़्वाब के हाथ पहुंचे नहीं
कबूतर की आंखों में
टूटे हुये आसमानों का तनज़्ज़ुल न देखो
बदन के शिकिस्ता खंड्‌र से निकल भागने के लिये फिर
तुम्हारी मदद की ज़रूरत है मुझको

●●●

شہریار

## نیا کھیل

اے اہلِ شہر آؤ چلو اس طرف چلو
تنہائیوں کی دھند سے آگے ذرا اُدھر
وہ سامنے کھلا ہوا میدان ہے جہاں
اک ایسا کھیل پیش کیا جائے گا وہاں
جو آج تک کسی نے بھی دیکھا نہیں کبھی
یعنی، تمہاری جاگتی آنکھوں کے سامنے
آوازوں کے نجوم، صداؤں کے ماہتاب
سناٹوں کی صلیب پہ لٹکائے جائیں گے

●

## نیا امرت

دواؤں کی الماریوں سے سجی اک دکاں میں
مریضوں کے انبوہ میں مضمحل سا
اک انساں کھڑا ہے
جو اک نیلی کبڑی سی شیشی کے سینے پہ لکھے ہوئے
ایک اک حرف کو غور سے پڑھ رہا ہے
مگر اس پہ تو ''زہر'' لکھا ہوا ہے
اس انسان کو کیا مرض ہے
یہ کیسی دوا ہے؟

●

शह्रयार

## नया खेल

ए अह्ले शहर[1] आओ चलो उस तरफ़ चलो
तन्हाईयों[2] की धुंध से आगे ज़रा उधर
वो सामने खुला हुआ मैदान है जहां
इक ऐसा खेल पेश किया जायेगा वहां
जो आज तक किसी ने भी देखा नहीं कभी
यानी, तुम्हारी जागती आंखों के सामने
आवाज़ों के नुजूम[3], सदाओं के माहताब[4]
सन्नाटों की सलीब[5] पे लटकाये जायेंगे

●

## नया अमृत

दवाओं की अलमारियों से सजी इक दुकां में
मरीज़ों के अंबूह[6] में मुज़्महिल[7] सा
इक इंसां खड़ा है
जो इक नीली कुबड़ी सी शीशी के सीने पे लिख्खे हुए
एक इक हर्फ़ को ग़ौर से पढ़ रहा है
मगर उसपे तो "ज़हर" लिख्खा हुआ है
इस इंसान को क्या मरज़ है
यह कैसी दवा है?

●

1. शहर के लोगों
2. अकेलेपन
3. सितारे
4. चांद
5. सूली
6. भीड़
7. बुझा हुआ

# عہدِ حاضر کی دل ربا مخلوق

زرد بلبوں کے بازوؤں میں اسیر
سخت، بے جان، لمبی کالی سڑک
اپنی بے نور دھندلی آنکھوں سے
پڑھ رہی ہے نوشتۂ تقدیر

بند کمروں کے گھُپ اندھیروں میں
بلیاں پی رہی ہیں دودھ کے جام
ہوٹلوں سینما گھروں کے قریب
چمچماتی ہوئی نئی کاریں
اور پنواڑیوں کی دوکانیں
اور کچھ ٹولیاں فقیروں کی
'پرس' والوں کے انتظار میں ہیں

ادھ پھٹے پوسٹروں کے پیراہن
آہنی بلڈنگوں کے جسموں پر
کتنے دل کش دکھائی دیتے ہیں
بس کی بے حس نشستوں پر بیٹھی
دن کے بازار سے خریدی ہوئی
آرزو، غم، امید، محرومی
نیند کی گولیاں، گلاب کے پھول
کیلے، امرود، سنترے، چاول
پینٹ، گڑیا، شمیز، چوہے دان

# अह्दे हाज़िर[1] की दिलरुबा[2] मख़लूक़[3]

ज़र्द[4] बल्बों के बाज़ूओं में असीर[5]
सख़्त, बेजान, लम्बी काली सड़क
अपनी बेनूर[6] धुंधली आंखों से
पढ़ रही है नविश्तए तक़दीर[7]

बंद कमरों के घुप अंधेरों में
बिल्लियां पी रही हैं दूध के जाम
होटलों सिनेमाघरों के क़रीब
चमचमाती हुई नई कारें
और पनवाड़ियों की दूकानें
और कुछ टोलियां फ़क़ीरों की
'पर्स' वालों के इंतिज़ार में हैं

अध फटे पोस्टरों के पैराहन[8]
आहनी[9] बिल्डिंगों के जिस्मों पर
कितने दिलकश दिखाई देते हैं
बस की बेहिस नशिस्तों पर बैठी
दिन के बाज़ार से ख़रीदी हुई
आर्ज़ू, ग़म, उम्मीद, महरूमी
नींद की गोलियां, गुलाब के फूल
केले, अमरूद, संतरे, चावल
पैंट, गुड़िया, शमीज़, चूहेदान

1. वर्तमान युग
2. दिल को खींचने वाली
3. रची हुई चीज़ें, लोग, जनता
4. पीले
5. क़ैदी
6. बिना रौशनी
7. तक़दीर का लिखा हुआ
8. परिधान
9. लोहे की

ایک اک شے کا کر رہی ہے حساب
عہدِ حاضر کی دل رُبا مخلوق

●

## نئے عہد کا نیا سوال

یہ بات روزِ ازل سے طے ہے
زمین جسموں کا بوجھ اٹھائے گی
آسماں پر رہیں گی روحیں
مگر کوئی ہے جو یہ بتائے
ہماری پرچھائیوں کی قبریں
کہاں بنیں گی؟

●

## فرار

رات کا بیتنا، دن کا آنا
کون سی ایسی نئی بات ہے
جس پر ہم سب
اتنے افسردہ ہیں
کھڑکی کھولو
اس طرف سامنے دیکھو
وہ کھڑی ہے چھت پر

●

एक इक शय का कर रही है हिसाब
अह्दे हाज़िर की दिलरुबा मख़लूक़

●

## नये अह्द[1] का नया सवाल

ये बात रोज़े अज़ल[2] से तय है
ज़मीन जिस्मों का बोझ उठायेगी
आसमां पर रहेंगी रूहें
मगर कोई है जो यह बताये
हमारी परछाईयों की क़ब्रें
कहां बनेंगी?

●

## फ़रार

रात का बीतना, दिन का आना
कौन सी ऐसी नई बात है
जिस पर हम सब
इतने अफ़सुर्दा[3] हैं
खिड़की खोलो
उस तरफ़ सामने देखो
वो खड़ी है छत पर

●

1. नवयुग
2. अव्वल दिन से
3. उदास

## تنبیہ

وہ جو آسماں پہ ستارہ ہے
اسے اپنی آنکھوں سے دیکھ لو
اسے اپنے ہونٹوں سے چوم لو
اسے اپنے ہاتھوں سے توڑ لو
کہ اسی پہ حملہ ہے رات کا

●

## دریائے خوں

پانی کی لے پہ گاتا
اک کشتی ہوا میں
آیا تھا رات کوئی
سارے بدن پہ اس کے
لپٹے ہوئے تھے شعلے
ہونٹوں سے اوس بوندیں
پیہم گرا رہا تھا
سرگوشیوں کے بادل
چھائے ہوئے تھے ہر سو
دریائے خوں رگوں میں
بے تاب ہو رہا تھا
میں ہو رہا تھا پاگل

●●●

## तंबीह[1]

वो जो आसमां पे सितारा है
उसे अपनी आंखों से देख लो
उसे अपने होंटों से चूम लो
उसे अपने हाथों से तोड़ लो
कि उसी पे हमला है रात का

●

## दरयाये ख़ूं[2]

पानी की लय पे गाता
इक कश्तिये हवा में
आया था रात कोई
सारे बदन पे उसके
लिपटे हुए थे शोले
होंटों से ओस बूंदें
पैहम[3] गिरा रहा था
सरगोशियों[4] के बादल
छाये हुए थे हर सू[5]
दरयाये ख़ूं रगों में
बेताब हो रहा था
मैं हो रहा था पागल

●●●

1. चेतावनी
2. ख़ून का दरया
3. लगातार
4. काना-फूसियों
5. हर तरफ़

شفیق فاطمہ شعریٰ

## نواپیرائے کارگہہ شیشہ گری

طلسمِ صوت جس کا نام تھا پھر وہ گُھما آئی
تھکن کی نیند جیسی گنگناتی جھومتی
ٹھنڈی ہوا آئی
جہانِ شور وشر لیکن
کسی کو چین سے کب سونے دیتا ہے —

صدائیں کتنی اَنمِل
ایک لایعنی تسلسل میں —
ترانے، اشتہاری چُٹکلے، قوّالیاں
اقوال زرّیں، ڈائیلاگ، اشعارِ ناموزوں
پُکاریں، ماجھیوں کے گیت
پھر ''ستیم شرن، سنگھم شرن، دھمّم شرن میں
جارہا ہوں میں''
سریلے شور کا رتھ بان کہتا ہے
وہ نیرنگ مظاہر کا کھلا شوکیس
سو تارہ گیا کیسے —

تبھی بیدار سُونا منچ بے سان وگمان
اک دور کی آواز سے گونجا
کسی گوشے سے اک نو عمر خوش الحان قاری کی صدا آئی

शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरा

## नवा पैराए कारगहे शीशागरी[1]

तिलिस्मे सौत[2] जिसका नाम था फिर वो गुफा आई
थकन की नींद जैसी गुनगुनाती झूमती
ठंडी हवा आई
जहानि शोरो शर[3] लेकिन
किसी को चैन से कब सोने देता है —

सदाएं कितनी अनमिल
एक लायानी[4] तसलसुल में —
तराने, इश्तिहारी चहचहे, क़व्वालियां
अक़वाले ज़र्री, डाईलॉग, अश्आरे नामौज़ूं
पुकारें, मांझियों के गीत
फिर सत्यम शरन्, संघम शरन्, धम्मम शरन् में
जा रहा हूं मैं'
सुरीले शोर का रथबान कहता है
वो नैरंगे मज़ाहिर[5] का खुला शोकेस
सोता रह गया कैसे —

तभी बेदार सूना, मंच बेसानो गुमान
इक दूर की आवाज़ से गूंजा
किसी गोशे से इक नौ उम्र खुशइल्हान क़ारी[6] की सदा आयी

1. शीशागरी के कारख़ाने के गुणगान करने वाले
2. आवाज़ का जादू
3. शोरो गुल की दुनिया
4. बेमानी
5. प्रकट हुई चीज़ों का जादू
6. अच्छी आवाज़ में पढ़ने वाला

سنایا جارہا تھا یوسفِ صدیق کا قصہ
گدازِ جاوداں میں
ان لکھی جاتک کتھاؤں کے
وحوش وطیر
لتائیں، میگھ دوت، اشجار —

یہ انساں بھی عجب ہے
زمانوں سے اسے ہم
جانتے پہچانتے ہیں
رازِ سربستہ مگر اس کا
وہی جانے جو ہے تصویر گر اس کا —
صداقت ہی کا سارا کھیل ہے بھیا
اسی سے ایک ذرّہ رو کشِ مہر و مہ و اختر
صداقت جینے مرنے، ٹوٹنے جڑنے، الجھنے در گذرنے کی
کہاں ہے —
— ہویدا ایک لوحِ سنگ جس پر
ابھر آئے وہ ایوانِ مدائن کے کھنڈر — آئینۂ عبرت

کہاں کی خسروی آزادگی سرمستی و شوخی
وہی اندھا کنواں خناس سوتیلے رویہ کا
گذرتے قافلوں کی آہٹوں سے دور
جرس کی بانگ سے مہجور —
— نہیں یہ زیادتی ہے، ہوش میں آؤ
کوئی یوں کفر بکتا ہے؟

सुनाया जा रहा था यूसुफ़े सिद्दीक़ का क़िस्सा
गुदाज़े जाविदा[1] में
अन लिखी जातक कथाओं के
वहोशो[2] तैर
लतायें, मेघदूत, अश्जार —

ये इंसा भी अजब है
ज़मानो से उसे हम
जानते पहचानते हैं
राज़े सरबस्ता मगर इसका
वही जाने जो है तस्वीरगर इसका —
सदाक़त ही का सारा खेल है भैया
उसी से एक ज़र्रा रुकशे मिहरो महो अख़्तर
सदाक़त जीने मरने, टूटने जुड़ने, उलझने दरगुज़रने की
कहां है —
— हुवैदा[3] एक लौहे संग[4] जिस पर
उभर आये वो ऐवाने मदाइन के खंडर — आईनए इब्रत

कहां की खुस्रवी आज़ादगी सरमस्तिओ शोख़ी
वही अंधा कुवां ख़न्नास[5] सौतेले रवैये का
गुज़रते क़ाफ़िलों की आहटों से दूर
जरस[6] की बांग से महजूर[7]
—नहीं ये ज़ियादती है, होश में आओ
कोई यूं कुफ़्र बिकता है?

1. हमेशा पिघलने वाला
2. दरिंदे व परिंदे
3. ज़ाहिर होना, सामने आना
4. पत्थर की तख़्ती
5. शैतान
6. घड़ियाल, घंटा
7. छोड़ा हुआ

ادھر دیکھو
ہوا زنداں کی کیا سے کیا بنا دیتی ہے انساں کو
اگر زنداں ہو قزاقوں اُٹھائی گیروں کا مسکن
وہ زنداں اور ہے لیکن
نشیمن گیرا رباب ہمم جس میں
وہی تو خوب تر محبوب تر اس کی نگاہوں میں ہے
ایسے جشنِ دعوت خوانِ نعمت سے
جہاں اس کی طلوعِ صبح صادق سی نمود
اک عاج کا مہرہ
بساطِ بزم کی رونق
سلاخوں میں مقفل یا سلاخوں پار
کھلی دنیا میں، جو ایسا مبرّا
معاصر علتوں سے
ظاہر و باطن سلامت ہے
وہی لاریب دارائے کرامت ہے — نوا پیرا

●

## راگ ٹیگ کی نظمیں

باجا کبھی نہ تھمنے والا
شیون سوکھی پھلیوں کا
گرد آلود ہوا کے جھکّو
ہاہا کار

उधर देखो

हवा ज़िंदां की क्या से क्या बना देती है इंसां को

अगर ज़िंदां हो क़ज़्ज़ाक़ों[1], उठाईगीरों का मस्कन

वो ज़िंदां और है लेकिन

नशेमनगीर अरबाबे हमम जिसमें

वही तो ख़ूबतर महबूबतर उसकी निगाहों में है

ऐसे जश्ने दावत ख़्वाने नेमत[2] से

जहां इसकी तुलूए सुब्ह सादिक़ सी नुमूद

इक आज[3] का मोहरा

बिसाते बज़्म की रौनक़ —

सलाख़ों में मुक़फ़्फ़ल या सलाख़ों पार

खुली दुनिया में, जो ऐसा मुबर्रा[4]

मुआसिर इल्लतों[5] से

ज़ाहिरो बातिन सलामत है

वही लारैब[6] दाराए करामत[7] है — नवा पैरा

●

# राग युग की नज़्में

बाजा कभी न थमने वाला

शेवन[8] सूखी फलियों का

गर्द आलूद हवा के झक्कड़

हाहाकार

1. लुटेरों
2. नेमत की थाल
3. हाथी
4. पाक
5. समकालिक बीमारियों
6. बेशक
7. चमत्कार करने वाला
8. मातम

اتنی اُتھل پُتھل جاری
سناٹا پھر بھی سناٹا
اک کھینچی کمان
وہ کب ٹوٹا کب پھوٹا

حاشیۂ دیوار کی صورت
ڈھیر سنہرا
پیلے سوکھے پتّوں کا
چر مر کرتا ضرر سے عاری
خاک میں رلتی چر مر اس کی سنتا ہوا
کھڑکی سے چپکا تھا کھڑا وہ بے پروا
ہر آہٹ کے ہر آواز کے ڈھانچے میں
رینگ رہا بیری بھیدی
گہنا اتنا پور پور سنہرا لادے
ٹہنی ٹہنی جوگن بیراگن
چپ کی داد کمانا چاہیں
سوم لتائیں
راگنیاں سب
کیا دیپک کیا میگھ
راگ تیگ بیتا
کب بیتا راگ تیگ
ترے گاؤں کی چھاؤں
تیرا سنگھاسن اُڑن کھٹولہ
کن ٹیلوں کے تلے؟

بچے کھیل رہے ہیں اپنا

इतनी उथल पुथल जारी
सन्नाटा फिर भी सन्नाटा
इक खिंची कमान
वो कब टूटा कब फूटा

हाशियए दीवार की सूरत
ढेर सुनहरा
पीले सूखे पत्तों का
चुरमुर करता ज़रर[1] से आरी[2]
ख़ाक में रुलती चुरमुर उसकी सुनता हुआ
खिड़की से चिपका था खड़ा वह बेपरवा
हर आहट के हर आवाज़ के ढांचे में
रेंग रहा बैरी भेदी
गहना इतना पोर पोर सुनहरा लादे
टहनी टहनी जोगन बैरागन
चुप की दाद कमाना चाहें
सोम लतायें
रागनियां सब
क्या दीपक क्या मेघ
राग युग बीता
कब बीता राग युग
तेरे गांव की छांव
तेरा सिंहासन उड़न खटोला
किन टीलों के तले?

बच्चे खेल रहे हैं अपना

1. दुख, नुक़्सान

2. मजबूर, तंग, ख़ाली

شور پکار کا کھیل پرانا
راگ تیگ کہے دھوپ جہاں
پیلی ہے تو کبھی دھانی
بہتا پانی
روئیدہ الجھاؤ
خس و خاشاک دھتورا ناگ پھنی
اور وہیں چمپا کی شاخ بھی
سرتابی سے پھولے پھلے

آہن تیز کڑی دھوپوں کا
اور بھی کچھ پگھلے
تپتا خون ہے پی جائے گا
سوم امرت کا یہ گھونٹ
لو چلتی رہی
قطرہ قطرہ پسینہ کب کا سوکھ چکا
تازہ دلی کے ہلکورے آنکھوں میں مگر
اب بھی باقی
دھول بھری پگڈنڈی بل کھاتی مڑتی ہے
رقص کناں ہے بگولے میں اک برگ سرخ
کوہستانی سلوں کے بیچ چمکتا پانی
اک جھاڑی سے اُڑانیں بھرتی
بالہ بالہ پروں کی جھلمل
دوسری جھاڑی میں روپوش
اتنی سی اک بات اسی سے
سُونا سُونا دل کا اُفق

शोर पुकार का खेल पुराना
राग युग कहे धूप जहां
पीली है तो कभी धानी
बहता पानी
रूईदा उलझाव
ख़सो ख़ाशाक[1] धतूरा नागफनी
और वहीं चम्पा की शाख़ भी
सरताबी से फूले फले

आहन तेज़ कड़ी धूपों का
और भी कुछ पिघले
तपता ख़ून है पी जाएगा
सोम अमृत का यह घूंट
लू चलती रही
क़तरा क़तरा पसीना कब का सूख चुका
ताज़ा दिली के हलकोरे आंखों में मगर
अब भी बाक़ी
धूल भरी पगडंडी बल खाती मुड़ती है
रक़्स कुनां[2] है बगूले में इक बरगे सुर्ख़
कोहिस्तानी सिलों के बीच चमकता पानी
इक झाड़ी से उड़ानें भरती
बाला बाला परों की झिलमिल
दूसरी झाड़ी में रूपोश
इतनी सी इक बात उसी से
सूना सूना दिल का उफ़ुक़

1. घास फूस, कूड़ा करकट 2. नाचता हुआ

رنگ بھرا نیرنگ بھرا
جل میں ڈوبے عکس اُڑے
تتلی کے پروں سے
وہ جل تھا
نرموہی
ہلچل سے جو باز رہا
دل تو نہ تھا
کب اس کی تھاہ میں جھلکا ہوا
دکھی دکھی ہن برساتی دھند کا اک پورب
تتلی کے پروں سے اُڑ پایا

اک پکار سہانی تھی وہ
فاصلے شنوائی کے لئے جس کو درکار
تب درد کی لو جو تیز ہوئی
میری اپنی سیما تھی
میرا اپنا دوش
اس سے نکلے سب جھگڑے دکھڑے
دنیا کہتی ہے، ہم بھی
کہتے ہیں اپنی گاتھا کا اسے حرفِ آغاز
نافہ بہ نافہ خوشبو چھنتی رہی
سہج سبھاؤ میں اپنائیت کا رچاؤ رچاتی
مگر کسوٹی کے پتھر میں جب ڈھل جاتی
تب ٹکراؤ اٹل
تب سہنا گھاؤ پہ گھاؤ
مگر اُف کہنا عار مگر

रंग भरा नैरंग भरा
जल में डूबे अक्स उड़े
तितली के परों से
वो जल था
निरमोही
हलचल से जो बाज़ रहा
दिल तो न था
कब इस की थाह में झलका हुआ
दमकी दमकी हुन बरसताती धुंध का इक पूरब
तितली के पेरों से उड़ पाया

इक पुकार सुहानी थी वो
फ़ासिले शुनवाई के लिए जिसको दरकार
तब दर्द की लौ जो तेज़ हुई
मेरी अपनी सीमा थी
मेरा अपना दोष
इससे निकले सब झगड़े दुखड़े
दुनिया कहती है, हम भी
कहते हैं अपनी अपनी गाथा का इसे हर्फ़ आग़ाज़
नाफ़ा ब नाफ़ा[1] खुश्बू छनती रही
सहज स्वभाव में अपनाइयत का रचाव रचाती
मगर कसौटी के पत्थर में जब ढल जाती
तब टकराव अटल
तब सहना घाव पे घाव
मगर उफ़ कहना आर मगर

1. नाभि जिसमें कस्तूरी रहती है

اُف کہنا ہار
تب بربادی
تختِ سلیماں تھا جیسے برباد رہا
اپنی خوشی سے کوچ اس کا
اپنی مرضی سے پڑاؤ

کہرا چھاؤنی چھانے آیا دیوگری پر
آناً فاناً دیوگری
سر بہ فلک اک روئی کا ڈھیر
دھنکی بھی نداف کی پھرتیلی تھی
اور نداف بھی تیز
ایں ہم آں، ہم دیں، ہم جاں، ہم
رفت ہی رفت کی دھن پر گالے اُڑتے ہوئے
آندھی نے دیکھے آندھی کو ہانکنے کی سوجھی
لیکن چھپے مزاحم وہ پیچ وخم کڑی چٹانوں کے
کب ہانکے گئے
کتنی بار ہوا ایسا
سلسلہ مست الست یہ قائم
نیلا ہٹ کے عدم کے پس منظر سے اُبھرتا
حیراں حیراں آنکھوں کو دکھلائی دیا

گھوم رہا ہے پروانہ
چکرایا بے سدھ ہو کے گرا
پھر چاندی چاندی راکھ وہ سمٹی
بکھرے بکھرے پر وہ جڑے

उफ़ कहना हार
तब बर्बादी,
तख़्ते सुलेमां था जैसे बरबाद रहा
अपनी ख़ुशी से कूच उसका
अपनी मर्ज़ी से पड़ाव

कुहरा छावनी छाने आया देवगिरी पर
आनन फ़ानन देवगिरी
सर ब फ़लक इक रूई का ढेर
धनकी भी नद्दाफ़[1] की फ़ुर्तीली थी
और नद्दाफ़ भी तेज़
ईं हम आं हम दीं हम जां हम
रफ़्त ही रफ़्त की धुन पे गाले उड़ते हुए
आंधी ने देखे आंधी को हांके की सूझी
लेकिन छुपे मुज़ाहिम[2] वो पेचो ख़म कड़ी चट्टानों के
कब हांके गए
कितनी बार हुआ ऐसा
सिलसिला मस्त अलस्त ये क़ायम
नीलाहट के अदम[3] के पसमंज़र[4] से उभरता
हैरां हैरां आंखों को दिखलाई दिया

घूम रहा है परवाना
चकराया बेसुध होके गिरा
फिर चांदी चांदी राख वो सिमटी
बिखरे बिखरे पर वो जुड़े

1. धुनिया
2. प्रतिरोध
3. नापैद, जो नहीं है
4. पृष्ठभूमि

پھر بہکی بہکی اُڑان بھری
ٹکراتا ہے فانوس سے
شمعِ تمنا
ٹکرانے دے اسے
آخر اس کا اپنا بھی اک
فانوس حباب آسا ہے خواب آسا
وہ جتنا چکنا چور اتنا ہی
نورِ ظہور کا عالم اس سے پھٹا پڑتا
کب ہو پائی یہ شکستگی پوری
مکتی
وہ شگفتگی پوری
یوں اک پل
جھونک دیا جاتا ہے اس میں
اب جب تب سے وارستہ
من مانا بہاؤ
تب تم بن دوجا، بے ہمتا
کون اس کے جینے مرنے کا
پھر مر کر جی اُٹھنے کا جواز

کلجگ کے یا ست جگ کے کھیتوں سے پھوٹے
گیت رہٹ کا
سیرابی ہی اس کی لے
رت رت نیارے لوح و قلم تیرے
سرمد سرگم
کہاں اگم ترا کہاں اگم؟
تیرا سبو چہ گہوارہ ترا
ہر روزِ روشن

फिर बहकी बहकी उड़ान भरी
टकराता है फ़ानूस से
शमए तमन्ना
टकराने दे उसे
आख़िर उसका अपना भी इक
फ़ानूस हबाब आसा है ख़्वाब आसा
वो जितना चकनाचूर उतना ही
नूरे ज़हूर का आलम उससे फटा पड़ता
कब हो पाई ये शिकस्तगी पूरी
मुक्ति
वो शिगुफ़्तगी पूरी
यूं इक पल
झोंक दिया जाता है इसमें
अब जब तब से वारस्ता
मन माना बहाव
तब तुम बन दूजा, बेहिम्मता
कौन इसके जीने मरने का
फिर मरकर जी उठने का जवाज़

कलजुग के या सतजुग के खेतों से फूटे
गीत रहट का
सैराबी ही इसकी लै
रुत रुत नियारे लौहो क़लम तेरे
सरमद सरगर्म
कहां अगम तेरा कहां अगम?
तेरा सबूचा गहवारा तेरा
हर रोज़े रौशन

تجھ کو سا جے عالم عالم ہم آہنگی
لیکن اپنی ترنگ کے ساتھ

بن چڑیاں بے روک اڑانیں
بے بندش چہچے
سنگت میں پوربی نوا کی
ہرے بھرے زمزمے
گھلی ملی ان میں اک کوک
مسلسل سہ ضربی
دیتی ہے ان دیکھی کسی ہدہد چڑیا کا پتہ
یہ اپنی پہچان کی رت کے پکھیرو
اونچی گھاس میں چھپ کے نوا پیرا
چپ ہو جائیں
تب بھی گونج کے آنگن میں
رم جھم برسے جانا جاری
ہار سنگھار کی کلیوں کا
پنکھ ہما کے کھلتے رہے اور جڑتے رہے
افشاں کے بکھراؤ میں دھیرے دھیرے اُجاگر ہوتے ہوئے

سیمابی کرے
پنپ سکے تو پنپے انساں
نر ناری میں واماندہ وہ نشو و نما
سورج مکھی کشیدہ قامت
رعنائی در رعنائی کھلتا ہوا امکاں
جتنا پنپے اتنا اور پنپنے کا ارمان کرے
اپنی ہی بینائی کی توسیع سی
پل پل تازہ نمود فضاؤں میں

तुझ को साजे आलम, आलम हम आहंगी
लेकिन अपनी तरंग के साथ

बिन चिड़ियां बेरोक उड़ानें
बेबंदिश चहचहे
संगत में पूर्बी नवा की
हरे भरे ज़मज़मे
घुली मिली इनमें इक कूक
मुसलसल सह् ज़र्बी
देती है अनदेखी किसी हुदहुद चिड़िया का पता
यह अपनी पहचान की रुत के पखेरू
ऊंची घास में छुप के नवापैरा
चुप हो जाएं
तब भी गूंज के आंगन में
रिमझिम बरसे जाना जारी
हार सिंघार की कलियों का
पंख हुमा के खुलते रहे और जुड़ते रहे
अफ़शां के बिखराव में धीरे धीरे उजागर होते हुए

सीमाबी करे
पनप सके तो पनपे इंसां
नर नारी में दामांदा वो नशोनुमा
सूरजमुखी कशीदा क़ामत
रानाई दर रानाई खुलता हुआ इमकां
जितना पनपे उतना और पनपने का अरमान करे
अपनी ही बीनाई की तौसी सी
पल पल ताज़ा नमूद फ़ज़ाओं में

پنپے ورنہ
پھر کیا ہے نغمے کی اساس
ورنہ تنن تنن تکرار بھی
چوب بھی تار بھی
راکھ ستاروں کی
جھڑتی ہوئی پیہم سرد انفاس

●

## مسافر پرندے

افق تا افق نیلگوں آسماں
مسافر پرندوں کی منزل کہاں
بہت دور پیچھے کو اس بحر کے ماورا
اترتی رہی برف، جمتی رہی تہہ بہ تہہ آشیانوں کے پاس
تب نظارے نظر آشنا
اذنِ آوارگی زادِ افسردگی دے کے تھرائے با چشمِ تر

کہ شاید بہت دور آگے کو
اُس بحر کے ماورا
زمرد جڑے ساحلوں نے سنا ہو سلام عید کا
دھوپ کے جشن آہٹیں
نغمۂ گرم خورشید کا

اُفق تا افق نیلگوں آسماں
کوئی شاخ گل ہے نہ کوئی منڈیر
گھڑی دو گھڑی پنکھڑی جیسے پر جوڑ کر بیٹھ جائیں جہاں

पनपे वर्ना
फिर क्या है नग़मे की असास
वर्ना तुनन तुनन तकरार भी
चोब भी तार भी
राख सितारों की
झड़ती हुई पैहम सर्द अनफ़ास

●

## मुसाफ़िर परिन्दे

उफ़ुक़ ता उफ़ुक़ नीलगूं आसमां
मुसाफ़िर परिंदों की मंज़िल कहां
बहुत दूर पीछे को उस बह्र[1] के मावरा[2]
उतरती रही बर्फ़, जमती रही तह ब तह आशियानों के पास
तब नज़ारे नज़र आशना
इज़्ने आवारगी ज़ाद अफ़सुर्दगी दे के थर्राये बा चश्मतर

कि शायद बहुत दूर आगे को
उस बह्र के मावरा
ज़मुर्रद[3] जड़े साहिलों ने सुना हो सलाम ईद का
धूप के जश्न आहटें
नग़मए गर्म ख़ुर्शीद का

उफ़ुक़ ता उफ़ुक़ नीलगूं आसमां
कोई शाखे गुल है न कोई मुंडेर
घड़ी दो घड़ी पंखड़ी जैसे पर जोड़ कर बैठ जायें जहां

1. समुन्दर 2. पार
3. एक हरा जवाहर

گھڑی دو گھڑی چھپھائیں جہاں
کوئی اپنے دکھتے پروں کو سمیٹے اگر راہ میں گر گیا
ذرا بھی فضاؤں کا دامن نہ بھیگا

نہ وحشی ہواؤں کا طوفاں رُکا
ستارے بدستور نیلاہٹوں میں چمکتے رہے
مثلِ گرداب گرداں شب و روز کی چرخیاں
مسافر پرندوں کی منزل کہاں

بہت دور پیچھے کو اس بحر کے ماورا
ہر نئی دلکشا راگنی منجمد
زیرِ اہرامِ یخ محوِ خواب
ساز نہروں کے دربار فصلِ بہاراں کے
تابوت صد رنگ ٹیلوں کے پھولوں کے
تاج و گہر
منجمد زندگی کی فغاں

بہت دور آگے کو اس بحر کے ماورا
وہ اک روشنی کا جہاں
وہ اک گُل پسِ خارزار
وہ اک دانۂ زیرِ دام
اسے دیکھنا اور ٹھٹکنا بھی کیا چیز ہے
مگر آہ اس موڑ پر آج پرواز و آواز ہی
حاصلِ مشت پر
حاصلِ داستاں

●

घड़ी दो घड़ी चहचहायें जहां
कोई अपने दुखते परों को समेटे अगर राह में गिर गया
ज़रा भी फ़ज़ाओं का दामन न भीगा

न वहशी हवाओं का तूफ़ां रुका
सितारे बदस्तूर नीलाहटों में चमकते रहे
मिस्ले गर्दाब[1] गर्दां शबो रोज़ की चर्ख़ियां
मुसाफ़िर परिंदों की मंज़िल कहां

बहुत दूर पीछे को उस बह्र के मावरा
हर नई दिलकुशा रागनी मुंजमिद
ज़ेरे एहराम यख़ मह्वे ख़्वाब
साज़ नहरों के दरबार फ़सले बहारां के
ताबूत सद रंग टीलों के फूलों के
ताजो गुहर
मुन्जमिद ज़िंदगी की फ़ुग़ां

बहुत दूर आगे को उस बह्र के मावरा
वो इक रौशनी का जहां
वो इक गुल पसे ख़ारज़ार
वो इक दानए ज़ेरे दाम
उसे देखना और ठिठकना भी क्या चीज़ है
मगर आह उस मोड़ पर आज परवाज़ो आवाज़ ही
हासिले मुश्ते पर
हासिले दास्तां

●

1. बुलबुले, भँवर की तरह

# صدا بصحرا

سکھی پھر آگئی رُت جھولنے کی گنگنانے کی
سیہ آنکھوں کی تہہ میں بجلیوں کے ڈوب جانے کی
سبک ہاتھوں سے مہندی کی ہری شاخیں جھکانے کی
لگن میں رنگ آنچل میں دھنک کے مسکرانے کی
اُمنگوں کے سبو سے قطرہ قطرہ مئے ٹپکنے کی
گھنیرے گیسوؤں میں اَدھ کھلی کلیاں سجانے کی

بیاباں سبزۂ نوخیز سے آباد ہوتے ہیں
سکھی تم بھی جو دل اپنا بسا لیتیں تو کیا ہوتا
حیا ہے خوف ہے پندار ہے ضد ہے یہ کیا شے ہے
تم اس خود ساختہ زنداں کو ڈھا دیتیں تو کیا ہوتا
ہمیشہ التجائیں رائیگاں جاتی رہیں میری
کبھی میری خوشی کی بھی دعا لیتیں تو کیا ہوتا

یہ کیسی آگہی ہے جس کی مشعل ہاتھ میں لے کر
سدا تنہائیوں کے دیس میں پھرتی ہو آوارہ
یہ اک بیمِ شکستِ خواب یہ چھولوں تو کیا ہوگا
اسی سے ہوگئی ہر عشرتِ موجود صد پارہ
بجز اک روحِ نالاں چشمِ حیراں عمرِ سرگرداں
نہیں تقصیر پروازِ نظر کا کوئی کفارہ

قرارِ قلبِ زارِ ہند اور برنائیِ یوناں
تجلیِ آلِ ابراہیم پر پیہم جو اتری تھی
تڑپتا شعلہ گوں خوں جاہلیت کی نواؤں کا

# सदा ब सहरा

सखी फिर आ गई रुत झूलने की गुनगनाने की
सियह आंखों की तह में बिजलियों के डूब जाने की
सुबुक हाथों से मेहंदी की हरी शाखें झुकाने की
लगन में रंग आंचल में धनक के मुस्कराने की
उमंगों के सुबू से क़त्रा क़त्रा मय टपकने की
घनेरे गेसुओं में अधखुली कलियां सजाने की

बियाबां सब्ज़ए नौख़ेज़ से आबाद होते हैं
सखी तुम भी जो दिल अपना बसा लेतीं तो क्या होता
हया है ख़ौफ़ है पिंदार[1] है ज़िद है यह क्या शय है
तुम इस खुद साख़्ता ज़िंदां को ढा देतीं तो क्या होता
हमेशा इल्तिजायें राइगां जाती रहीं मेरी
कभी मेरी ख़ुशी की भी दुआ लेतीं तो क्या होता

ये कैसी आगही है जिसकी मश्अल हाथ में लेकर
सदा तंहाईयों के देस में फिरती हो आवारा
ये इक बीमे शिकस्ते ख़्वाब यह छू लूं तो क्या होगा
उसी से हो गई हर इश्रते मौजूद सद पारा
बजुज़ इक रूहे नालां चश्मे हैरां उम्रे सरगर्दां
नहीं तक़सीरे परवाज़े नज़र का कोई कफ़्फ़ारा[2]

क़रारे क़ल्ब ज़ारे हिंद और बरनाईए यूनां
तजल्ली आले इब्राहीम पर पैहम जो उतरी थी
तड़पता शोलागूं ख़ूं जाहिलियत की नवाओं का

1. ग़रूर 2. प्रायश्चित

چمک ریگِ رواں کی سربلندی نخلِ صحرا کی
دیارِ حافظؔ و خیامؔ کی اڑتی ہوئی خوشبو
نگاہ غالبؔ و اقبالؔ کی گیتی شکن مستی

سرورِ جستجو مغرب کی متوالی ہواؤں کا
سبھی پایا مگر درمانِ دردِ بے بسی مشکل
یہ اک آسودگی چہرے پہ، یہ ٹھہراؤ آنکھوں میں
یہ اشکوں سے بھری چھاگل، یہ بے پروا و خود سر دل
چٹاں ہو؟ دہر کی آتش کو چھوکر بھی نہیں پگھلیں
نہ جانے کون سے اجزاء ہیں اس افتاد میں شامل

یہ نرمل جل کا چشمہ یہ دلِ بے قید و بے پایاں
اسے بھی سمت ملتی اس کی بھی اک رہگذر ہوتی
شباب اپنے جلال حشر ساماں کی قسم کھاتا
شرافت بے زباں فطرت کے دکھ کی چارہ گر ہوتی
نہ ہوتی آرزو نیرنگ ہستی کی تماشائی
وہ اس بڑھتے ہمکتے کارواں کی ہم سفر ہوتی

●●●

चमक रेगं रवां की सरबलन्दी नख़्ले सहरा की
दयारे हाफ़िज़ो ख़य्याम की उड़ती हुई ख़ुशबू
निगाह ग़ालिबो इक़बाल की गेती शिकन मस्ती

सुरुरे जुस्तुजू मग़रिब की मतवाली हवाओं का
सभी पाया मगर दरमाने दर्दे बेबसी मुश्किल
ये इक आसूदगी चेहरे पे, ये ठहराव आंखों में
ये अश्कों से भरी छागल, यह बेपर्दा व ख़ुदसर दिल
चटां हो? दह्र[1] की आतिश को छूकर भी नहीं पिघलीं
न जाने कौन से अजज़ा हैं इस उफ़्ताद में शामिल

ये निर्मल जल का चश्मा ये दिल बेक़ैदो बेपायां
उसे भी सम्त मिलती उसकी भी इक रहगुज़र होती
शबाब अपने जलाले हश्र सामां की क़सम खाता
शराफ़त बेज़बां फ़ित्रत के दुख की चारागर होती
न होती आरज़ू नैरंगे हस्ती की तमाशाई
वो इस बढ़ते हुमकते कारवां की हमसफ़र होती

●●●

1. दुनिया

ندا فاضلی

## آدمی کی تلاش

ابھی مرا نہیں، زندہ ہے آدمی شاید
یہیں کہیں اُسے ڈھونڈو یہیں کہیں ہوگا
بدن کی اندھی گپھا میں چھپا ہوا ہوگا
بڑھا کے ہاتھ
ہر اک روشنی کو گل کر دو
ہوائیں تیز ہیں جھنڈے لپیٹ کر رکھ دو
جو ہو سکے تو ان آنکھوں پہ پٹیاں کس دو
نہ کوئی پاؤں کی آہٹ
نہ سانسوں کی آواز

ڈرا ہوا ہے وہ
کچھ اور بھی نہ ڈر جائے
بدن کی اندھی گپھا سے نہ کوچ کر جائے
یہیں کہیں اُسے ڈھونڈو
وہ آج صدیوں بعد
اُداس اُداس ہے
خاموش ہے
اکیلا ہے
نہ جانے کب کوئی پسلی پھڑک اُٹھے اس کی
یہیں کہیں اُسے ڈھونڈو، یہیں کہیں ہوگا
برہنہ ہو تو اُسے پھر لباس پہنا دو

**निदा फ़ाज़ली**

## आदमी की तलाश

अभी मरा नहीं, ज़िंदा है आदमी शायद
यहीं कहीं उसे ढूंढो, यहीं कहीं होगा
बदन की अंधी गुफा में छुपा हुआ होगा
बढ़ा के हाथ
हर इक रौशनी को गुल कर दो
हवाएं तेज़ हैं झंडे लपेट कर रख दो
जो हो सके तो इन आंखों पे पट्टियां कस दो
न कोई पांव की आहट
न सांसों की आवाज़
डरा हुआ है वो
कुछ और भी न डर जाए
बदन की अंधी गुफा से न कूच[1] कर जाए
यहीं कहीं उसे ढूंढो
वो आज सदियों बाद
उदास उदास है
ख़ामोश है
अकेला है
न जाने कब कोई पसली फड़क उठे उसकी
यहीं कहीं उसे ढूंढो, यहीं कहीं होगा
बरहना[2] हो तो उसे फिर लिबास पहना दो

1. चले जाना
2. नंगा

اندھیری آنکھوں میں سورج کی آگ دہکادو
بہت بڑی ہے یہ بستی کہیں بھی دفنادو
ابھی مرانہیں......
زندہ ہے آدمی شاید!!

●

## محبت

پہلے وہ رنگ تھی
پھر روپ بنی
روپ سے جسم میں تبدیل ہوئی
اور پھر جسم سے بستر بن کر
گھر کے کونے میں لگی رہتی ہے
جس کو!
کمرے میں گھٹاسناٹا
وقت بے وقت اُٹھالیتا ہے
کھول لیتا ہے، بچھالیتا ہے

●

## بے خواب نیند

نہ جانے کون وہ بہروپیا ہے
جو ہر شب
مری تھکی ہوئی پلکوں کی سبز چھاؤں میں
طرح طرح کے کرشمے دکھایا کرتا ہے
لپکتی سرخ لپٹ

अंधेरी आंखों में सूरज की आग दह्का दो
बहुत बड़ी है यह बस्ती कहीं भी दफ़ना दो
अभी मरा नहीं......
ज़िन्दा है आदमी शायद !!

●

## मुहब्बत

पहले वो रंग थी
फिर रूप बनी
रूप से जिस्म में तब्दील हुई
और फिर जिस्म से बिस्तर बनकर
घर के कोने में लगी रहती है
जिसको!
कमरे में घुटा सन्नाटा
वक़्त बे वक़्त उठा लेता है
खोल लेता है, बिछा लेता है

●

## बेख़्वाब नींद

न जाने कौन वो बहरूपिया है
जो हर शब
मेरी थकी हुई पलकों की सब्ज़ छांव में
तरह तरह के करिश्मे दिखाया करता है
लपकती सुर्ख़[1] लपट

1. लाल

جھومتی ہوئی ڈالی
چمکتے تال کے پانی میں ڈوبتا پتھر!
اُبھرتے پھیلتے گھیروں میں تیرتے خنجر!
اُچھلتی گیند ربڑ کی، سدھے ہوئے دو ہاتھ
سلگتے کھیت کی مٹی پہ ٹوٹتی برسات
عجیب خواب ہیں یہ
بنا وضو کیے سوئی نہیں کبھی میں تو
میں سوچتی ہوں
کسی روز اپنی بھابی کے
چمکتے پاؤں کی پازیب توڑ کر رکھ دوں
بڑی شریر ہے ہر وقت شور کرتی ہیں
کسی طرح سہی، بے خواب نیند تو آئے
گھڑی گھڑی کی مصیبت سے جان چھوٹ جائے

## لفظوں کا پُل

مسجد کا گنبد سونا ہے
مندر کی گھنٹی خاموش
جزدانوں میں لپٹے آدرشوں کو
دیمک کب کی چاٹ چکی ہے
رنگ!
گلابی
نیلے
پیلے

झूमती हुई डाली
चमकते ताल के पानी में डूबता पत्थर!
उभरते फैलते घेरों में तैरते ख़ंजर :
उछलती गेंद रबड़ की, सधे हुए दो हाथ
सुलगते खेत की मिट्टी पे टूटती बरसात
अजीब ख़्वाब हैं ये
बिना वुज़ू किये सोयी नहीं कभी मैं तो
मैं सोचती हूं
किसी रोज़ अपनी भाभी के
चमकते पैरों की पाज़ेब तोड़कर रख दूं
बड़ी शरीर[1] है हर वक़्त शोर करती है
किसी तरह सही, बेख़्वाब नींद तो आए
घड़ी घड़ी की मुसीबत से जान छूट जाए

●

## लफ़्ज़ों का पुल

मस्जिद का गुम्बद सूना है
मंदिर की घंटी ख़ामोश
जुज़्दानों[2] में लिपटे सारे आदर्शों को
दीमक कब की चाट चुकी है
रंग!
गुलाबी
नीले
पीले

1. चंचल

2. पवित्र ग्रंथों पर लपेटा जाने वाला पवित्र कपड़ा

کہیں نہیں ہیں
تم اُس جانب
میں اِس جانب
بیچ میں میلوں گہرا غار
لفظوں کا پُل ٹوٹ چکا ہے
تم بھی تنہا
میں بھی تنہا

●●●

कहीं नहीं हैं

तुम उस जानिब

मैं इस जानिब

बीच में मीलों गहरा ग़ार

लफ़्ज़ों का पुल टूट चुका है

तुम भी तन्हा

मैं भी तन्हा

●●●

## چندر بھان خیال

### جنگ

جنگ دھرتی پہ ستاروں کے لیے جاری ہے
حیف صد حیف کہ ہر شئے پہ جنوں طاری ہے
کیا ہمیں اپنے مکانوں میں نہ رہنے دے گی
بستیاں دور خلاؤں میں بسانے کی لگن
جنگ در جنگ سُلگتے ہیں صداؤں کے بدن
سبز راتوں کے سیہ خون سے تر ہے دامن
آسماں آگ نگلنے پہ ہے مجبور تو پھر
ہر دِشا برف کی مانند پگھل جائے گی
زندگی ہاتھ سے دنیا کے نکل جائے گی
ساری تعمیر تباہی میں بدل جائے گی
کوئی تو اپنی قباؤں کو بنا کر پرچم
نعرۂ امن ہواؤں کی جبیں پر لکھ دے

●

### گمشدہ آدمی کا انتظار

لہو نوش لمحوں کے بیدار سائے
اُسے گھیر لیں گے سنائیں اُٹھائے

चन्द्र भान ख़्याल

## जंग

जंग धरती पे सितारों के लिये जारी है
हैफ़ सद हैफ़[1] कि हर शै[2] पे जुनूं तारी है
क्या हमें अपने मकानों में न रहने देगी
बस्तियां दूर ख़लाओं[3] में बसाने की लगन

जंग दर जंग सुलगते हैं सदाओं[4] के बदन
सब्ज़[5] रातों के सियह खून से तर है दामन
आस्मां आग निगलने पे है मजबूर तो फिर
हर दिशा बर्फ़ की मानिन्द[6] पिघल जायेगी

ज़िन्दगी हाथ से दुनिया के निकल जायेगी
सारी तामीर[7] तबाही में बदल जायेगी
कोई तो अपनी क़बाओं[8] को बनाकर पर्चम[9]
नारए अम्न हवाओं की जबीं[10] पर लिख दे

●

## गुमशुदा आदमी का इंतिज़ार

लहू नोश[11] लम्हों के बेदार[12] साये
उसे घेर लेंगे सनानें[13] उठाये

1. अफ़सोस
2. वस्तु
3. अंतरिक्षों
4. आवाज़ों
5. हरी
6. तरह, भांति
7. निर्माण
8. चोग़ाओं
9. झंडा
10. माथा
11. खून पीने वालों
12. जागते
13. भाले

تمازت زدہ شب زنِ باکرہ سی
سمٹ جائے گی اور بھی اپنے تن میں

وہ سورج کا ساتھی اندھیروں کے بن میں
اثاثہ لیے فکر کا اپنے فن میں
شعاؤں کی سولی پہ زندہ ٹنگا ہے
نہ اب شہر میں کوئی اتنا حزیں ہے

غضب ناک تنہائیوں کو یقیں ہے
کہ اس کے مقدر میں وہ خود نہیں ہے
وہ اک انفرادی حقیقت کا حامی
فصیلوں پہ وہم و گماں کی کھڑا ہے

شہر زاد شبنم سے یہ پوچھتا ہے
کہ سورج کے سینے میں کیا کیا چھپا ہے
مگر شام کی سرخ آنکھوں نے اس پر
ہمیشہ سلگتی ہوئی راکھ ڈالی

تہِ آتشِ سرخ رُو وہ سوالی
کہ جس نے ہتھیلی پہ سرسوں جمالی
کسی دیوتا کی نگاہِ غضب سے
بنا اجنبی اپنے آباد گھر میں

کبھی اس نگر میں کبھی اُس نگر میں
کبھی بس گیا صرف دیوار و در میں

तमाज़त-ज़दह शब ज़ने बाकरह[1] सी
सिमट जायेगी और भी अपने तन में

वो सूरज का साथी अंधेरों के बन में
असासा[2] लिये फ़िक्र का अपने फ़न में
शुआओं[3] की सूली पे ज़िन्दा टंगा है
न अब शह्र में कोई इतना हज़ीं[4] है

ग़ज़बनाक तन्हाईयों को यक़ीं है
कि उसके मुक़द्दर में वो ख़ुद नहीं है
वो इक इनफ़िरादी[5] हक़ीक़त का हामी[6]
फ़सीलों[7] पे वह्मो गुमां की खड़ा है

शहरज़ाद शबनम से ये पूछता है
कि सूरज के सीने में क्या क्या छुपा है
मगर शाम की सुर्ख़ आंखों ने उस पर
हमेशा सुलगती हुयी राख डाली

तहे आतिशे सुर्ख़रू[8] वो सवाली
कि जिसने हथेली पे सरसों जमा ली
किसी देवता की निगाहे ग़ज़ब से
बना अजनबी अपने आबाद घर में

कभी इस नगर में कभी उस नगर में
कभी बस गया सिर्फ़ दीवार व दर में

1. कुंआरी
2. पूंजी
3. किरनों
4. दुखी
5. व्यक्तिगत
6. समर्थक
7. चारदीवारियां
8. कामयाब आग के नीचे

وہ اک شخص تھا کہ جس کا ابھی تک
سفر ہے مسلسل، نہ گھر مستقل ہے

فقط پاس میں اس کے معصوم دل ہے
مگر کس قدر مضطرب، مضمحل ہے
جو شہرِ انا میں کھڑا سوچتا ہے
کہاں رات کاٹے، کہاں دن بتائے

ہتھیلی پہ دنیا کا نقشہ بنائے
بھٹکتا ہے وہ آج بھی چوٹ کھائے
ارے گُم شدہ آدمی آ کے مل جا
ارے گُم شدہ آدمی آ کے مل جا

●●●

वो इक शख़्स तन्हा कि जिसका अभी तक
सफ़र है मुसल्सल, न घर मुस्तक़िल है

फ़क़त[1] पास में उसके मासूम दिल है
मगर किस क़दर मुज़्तरिब[2], मुज़्महिल[3] है
जो शहरे अना में खड़ा सोचता है
कहां रात काटे, कहां दिन बिताये

हथेली पे दुनिया का नक़्शा बनाये
भटकता है वो आज भी चोट खाये
अरे गुमशुदा आदमी आ के मिल जा
अरे गुमशुदा आदमी आके मिल जा

●●●

1. मात्र
2. बेचैन
3. उदास, रंजीदा

## مصحف اقبال توصیفی

### مراجعت

میں اپنے جسم کے باہر کھڑا ہوں

ان آنکھوں کے دریچے سے تو اب
بسیں، سڑکیں، ملوں کی چمنیاں
میونسپلٹی کا وہ نل، کوڑھی بھکاری
دھنی مل کا بہت اونچا مکاں
کچھ بھی نظر آتا نہیں

اب ان آنکھوں میں میری
ہزاروں انجنوں کا شور ہے
کالا دھواں ہے
مگر دل کو لبھاتا ہے ابھی تک
نیلگوں دوری کا منظر
چاند، تارے، آسماں
دیکھنے کی خواہش
جاگتی ہیں
مشینی ہاتھ مجھ کو ڈھونڈتے ہیں

میں اپنے جسم کے باہر کھڑا ہوں

●

### وقت کو کس نے روکا ہے

تجھ سے جانے کتنی باتیں کرنی تھیں
تیرے بالوں کی اک لٹ کو

# मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी

## मुराजअत[1]

मैं अपने जिस्म के बाहर खड़ा हूं

इन आंखों के दरीचे[2] से तो अब
बसें, सड़कें, मिलों की चिमनियां
म्युनिस्पलटी का वह नल, कोढ़ी, भिकारी
धनीमल का बहुत ऊँचा मकां
कुछ भी नज़र आता नहीं

अब इन आंखों में मेरी
हज़ारों इंजनों का शोर है
काला धुआं है
मगर दिल को लुभाता है अभी तक
नीलगूं[3] दूरी का मंज़र
चांद, तारे, आसमां
देखने की ख़्वाहिशें
जागती हैं
मशीनी हाथ मुझ को ढूंढते हैं

मैं अपने जिस्म के बाहर खड़ा हूं

●

## वक़्त को किसने रोका है

तुझ से जाने कितनी बातें करनी थीं
तेरे बालों की इक लट को

1. वापसी
2. खिड़की
3. नीले रंग का

تیرے ہونٹوں، پھر اپنے ہونٹوں تک لانا تھا
تیرے سرہانے، ان دیکھے خوابوں کی قطاریں
تیری آنکھوں کے ساگر میں نیندوں کی کشتی
میں تیرا مانجھی
کتنے دیپوں کا یہ سفر جو نیا، انوکھا، انجانا تھا
لیکن صبح کی کرنوں کے طوفاں کا کوئی ٹھکانہ نہ تھا
وقت کو کس نے روکا، وقت کو آخر جانا تھا!!

●

## کہانیاں تمام شب

کہانیاں تمام شب
تمام شب کہانیاں
بجھے ہوئے چراغ نے اُداس رات سے کہی
اداس رات نے لکھیں
تمام شب کہانیاں
عروج کی بساط پر زوال کی کہانیاں
کہانیاں تمام شب
وہ جسم یا عذاب ہے
وہ آنکھ یا کتاب ہے
وہ ہونٹ یا گلاب ہے
کتاب میں عذاب کی
گلاب کی کہانیاں
تمام شب کہانیاں
کہانیاں تمام شب

●●●

तेरे होंटों, फिर अपने होंटों तक लाना था
तेरे सरहाने, अनदेखे ख़्वाबों की क़तारें
तेरी आंखों के सागर में नींदों की कश्ती
मैं तेरा मांझी
कितने दीपों का यह सफ़र जो नया, अनोखा, अन्जाना था
लेकिन सुब्ह की किरनों के तूफ़ां का कोई ठिकाना न था
वक़्त को किसने रोका, वक़्त को आख़िर जाना था!!

●

## कहानियां तमाम शब[1]

कहानियां तमाम शब
तमाम शब कहानियां
बुझे हुए चिराग़ ने उदास रात से कही
उदास रात ने लिखीं
तमाम शब कहानियां
उरूज[2] की बिसात पर ज़वाल[3] की कहानियाँ
कहानियां तमाम शब
वो जिस्म या अज़ाब है
वो आंख या किताब है
वो होंठ या गुलाब है
किताब में अज़ाब की
गुलाब की कहानियां
तमाम शब कहानियां
कहानियां तमाम शब

●●●

1. रात
2. शिखर
3. पतन

## صادق

### زہرباد

اِیشور کی ہتیا کرنے کے بعد
ایک بے کوہان لنگڑے اونٹ پر
ہر اُجالا اور اندھیرا پھاندتا
سورمنڈل کے مُرستقل میں
ہراساں بھاگتا ہوں

میرے پیچھے آنے والا
چیختے، چنگھاڑتے، بپھرے گجوں کا غول
مجھ کو
زد سے باہر دیکھ
واپس جا رہا ہے
اور.........مقتول ایشور کی
آتما کی
وِش بجھی کچھ سوئیاں سی
روم چھِدروں میں مسلسل چُبھ رہی ہیں
اور سارے جسم میں
خوف گھلتا جا رہا ہے

•

### فرجام

تم مری کھوج میں
یوں ہی تاریک غاروں، مٹھوں، معبدوں، خانقاہوں میں
گھٹ گھٹ کے مر جاؤ گے
میں نہیں مل سکوں گا تمھیں اب کبھی
دَھرم میں، سنگھ میں، دھیان میں، گیان میں

सादिक़

## ज़हरबाद

ईश्वर की हत्या करने के बाद
एक बे कोहान लंगड़े ऊँट पर
हर उजाला और अंधेरा फांदता
सौर मंडल के मरुस्थल में
हरासां भागता हूं
मेरे पीछे आने वाला
चीख़ते, चिंघाड़ते, बिफरे गजों का ग़ोल
मुझको
ज़द से बाहर देख
वापस जा रहा है
और ...... मक़्तूल ईश्वर की
आत्मा की
विष बुझी कुछ सूईयां सी
रोम छिद्रों में मुसलसल चुभ रही हैं
और सारे जिस्म में
ख़ौफ़ घुलता जा रहा है

●

## फ़रजाम

तुम मरी खोज में
यूं ही तारीक ग़ारों, मठों, मअ्बदों, ख़ानक़ाहों में
घुट घुट कर मर जाओगे
मैं नहीं मिल सकूंगा तुम्हें अब कभी
धर्म में, संघ में, धयान में, ग्यान में

نیلے ساگر کی تہ میں اُتر کر
برازیل کے جنگلوں میں بھٹک کر
ہمالہ کی چوٹی پہ چڑھ کر
مجھے......تم نہ آواز دو

یاس کو تیاگ کر
آس کے بام پر
میری آمد کے لیکن رہو منتظر
میں ضرور آؤں گا
سوکھ کر وقت جس دن تڑخ جائے گا
دودھ کی طرح آکاش پھٹ جائے گا
دن کے ٹکڑے زمیں پر بکھر جائیں گے
رات کے سر کا ہر بال جھڑ جائے گا
چاند، سورج سما جائیں گے جب مرے گربھ میں
اور سارا اُجالا پگھل کر اندھیرے میں بہ جائے گا

بس اسی وقت تم، ہانپتے کانپتے
نصف لمحے کو ہاتھوں میں پکڑے ہوئے
خوف کے کواڑ سے جھانک کر......دیکھ لو گے مجھے......
......اور میں
منھ سے اک قہقہہ تھوک کر
سورمنڈل سے باہر نکل آؤں گا
اس دَھراتل کو کھا لوں گا
سارے سمندر کو پی جاؤں گا
......اور پھر، دیکھتے دیکھتے
آکسیجن میں تبدیل ہو جاؤں گا
اِن خلاؤں کے ساگر میں کھو جاؤں گا
●

नीले सागर की तह में उतर कर
ब्राज़ील के जंगलों में भटक कर
हिमाला की चोटी पे चढ़ कर
मुझे ...... तुम न आवाज़ दो

यास को त्याग कर
आस के बाम पर
मेरी आमद के लेकिन रहो मुंतज़िर
मैं ज़रूर आऊँगा
सूख कर वक़्त जिस दिन तड़ख़ जाएगा
दूध की तरह आकाश फट जाएगा
दिन के टुकड़े ज़मीं पर बिखर जाएंगे
रात के सर का हर बाल झड़ जाएगा
चाँद, सूरज समा जाएंगे जब मेरे गर्भ में
और सारा उजाला पिघल कर अंधेरे में बह जाएगा

बस उसी वक़्त तुम, हांपते कांपते
निस्फ़ लम्हे को हाथों में पकड़े हुए
ख़ौफ़ के किवाड़ से झांक कर ...... देख लोगे मुझे ......
...... और मैं
मुंह से इक क़हक़हा थूक कर
सौर मंडल से बाहर निकल आऊंगा
इस धरातल को खा लूंगा
सारे समुन्दर को पी जाऊँगा
...... और फिर, देखते देखते
आक्सीजन में तबदील हो जाऊँगा
इन ख़लाओं के सागर में खो जाऊँगा
●

## اور کچھ چارہ نہیں

مانس کی فصلیں
جواں ہوکر
پریشاں ہوگئی ہیں
ہوا کی سلطنت میں
ہلتے رہنے کے علاوہ
اور کچھ چارہ نہیں ہے

کر کے تخلیق بتادو لوگو!
مانس کے پیڑ لگا دو لوگو!

چھین لو ساری چمک ہاتھوں سے
اور پھر اُن میں عصا دو لوگو!

جب بھی طوفاں کوئی اُٹھنا چاہے
ریت میں اس کو دبا دو لوگو!

تنگ تہ خانوں سے باہر نکلو
کائناتوں کو صدا دو لوگو!

ورنہ تم کو یہ دبوچے گا ابھی
خوف کو چیخ بنا دو لوگو!

خشک پیڑوں کی کتھائیں سن لو
ان میں پھر آگ لگا دو لوگو!

●●●

## और कुछ चारा नहीं

मांस की फ़सलें
जवां हो कर
परेशां हो गई हैं
—हवा की सल्तनत में
हिलते रहने के अलावा
और कुछ चारा नहीं है

करके तख़लीक़ बता दो लोगो!
मांस के पेड़ लगा दो लोगो!

छीन लो सारी चमक हाथों-से
और फिर उन में असा दो लोगो!

जब भी तूफ़ां कोई उठना चाहे
रेत में उसको दबा दो लोगो!

तंग तहख़ानों से बाहर निकलो
काईनातों को सदा दो लोगो!

वर्ना तुमको ये दबोचेगा अभी
ख़ौफ़ को चीख़ बना दो लोगो!

खुश्क पेड़ों की कथायें सुन लो
इन में फिर आग लगा दो लोगो!

●●●

شاہد ماہلی

## عجیب لوگ

عجیب لوگ ہیں
صحرا میں، شہر میں، گھر میں
سلگتی ریت پہ ٹھٹھرے ہوئے سمندر میں
خلا میں، چاند کی بنجر زمیں کے سینے پر
جو صبح و شام کی تاریک راہ میں چپ چاپ
تعلقات کی تعمیر کرتے رہتے ہیں
ہوا کے دوش پہ
طوفان، زلزلہ، سیلاب
دیا سلائی کی تیلی پہ ٹینک، ایٹم بم
کوئی جلوس، کوئی پوسٹر، کوئی تقریر
اُڑتی بھیڑ کا ہر ووٹ کوئی بیلٹ باکس
پھسلتی کرسی کا جادو
بسوں کی لمبی قطار
کہیں پہ صحن میں گوبر، کہیں پہ گائے کا سر
ہر ایک گوشہ ہے شمشان، قبر ہے بستر
اکیلا پھرتا ہے سنسان شہر میں کرفیو
قریب گھور پہ چیتھڑوں میں جسم کے ٹکڑے
مہکتی رات سے جنمی ہوئی فسردہ صبح
بگڑتے بنتے ہوئے زاویے، کھسکتی اینٹ

**शाहिद माहुली**

## अजीब लोग

अजीब लोग हैं
सहरा[1] में शहर में, घर में
सुलगती रेत पे ठिठुरे हुए समुन्दर में
ख़ला[2] में, चांद की बंजर ज़मीं के सीने पर
जो सुब्हो शाम की तारीक रात में चुपचाप
तअल्लुक़ात की तामीर करते रहते हैं
हवा के दोश[3] पे
ूफ़ान, ज़लज़ला[4], सैलाब
दियासलाई की तीली पे टैंक, ऐटम बम
कोई जुलूस, कोई पोस्टर, कोई तक़रीर[5]
उमड़ती भीड़ का हर वोट कोई बैलट बॉक्स
फिसलती कुर्सी का जादू
बसों की लम्बी क़तार
कहीं पे सहन में गोबर, कहीं पे गाय का सर
हर एक गोशा[6] है शमशान, क़ब्र है बिस्तर
अकेला फिरता है सुनसान शहर में कर्फ़्यू
क़रीब घूर पे चिथड़ों में जिस्म के टुकड़े
महकती राह से जन्मी हुई फ़सुर्दह[7] सुब्ह
बिगड़ते बनते हुए ज़ाविये[8], खिसकती ईंट

1. जंगल, रेगिस्तान
2. अंतरिक्ष
3. व [illegible]
4. भूकम्प
5. भाप [illegible]
6. कोना
7. उदास
8. कोण

تمام سلسلے بے ربط، منقطع رشتے
مگر ـــــ!
وہ دوڑتے پیروں پہ اٹھتے بڑھتے ہاتھ
ہر ایک جبر سے بے خوف
بے نیازانہ
جو صبح و شام کی بے ربط راہ میں چپ چاپ
تعلقات کی تعمیر کرتے رہتے ہیں
عجیب لوگ ہیں۔

●

## کہیں کچھ نہیں ہوتا

کہیں کچھ نہیں ہوتا
نہ آسمان ٹوٹتا ہے
نہ زمین بکھرتی ہے
ہر چیز اپنی اپنی جگہ ٹھہر گئی ہے
ماہ و سال
شب و روز
برف کی طرح جم گئے ہیں
اب کہیں اجنبی قدموں کی چاپ سے
کوئی دروازہ نہیں کھلتا
نہ کہیں کسی جادوئی چراغ سے
کوئی پریوں کا محل تعمیر ہوتا ہے
نہ کہیں بارش ہوتی ہے
نہ شہر جلتا ہے

तमाम सिलसिले बेरब्त मुन्कता[1] रिश्ते
मगर—!
वो दौड़ते पैरो पे उठते बढ़ते हाथ
हर एक जब्र से बैख़ौफ़
बेनियाज़ाना[2]
जो सुब्हो शाम के बेरब्त राह में चुपचाप
तअल्लुक़ात की तामीर करते रहते हैं
अजीब लोग हैं।

●

## कहीं कुछ नहीं होता

कहीं कुछ नहीं होता
न आसमान टूटता है
न ज़मीन बिखरती है
हर चीज़ अपनी अपनी जगह ठहर गयी है
माहो साल[3]
शबो रोज़
बर्फ़ की तरह जम गये हैं
अब कहीं अजनबी क़दमों की चाप से
कोई दरवाज़ा नहीं खुलता
न कहीं किसी जादूई चराग़ से
कोई परियों का महल तामीर होता है
न कहीं बारिश होती है
न शह्र जलता है

1. कटे हुए
2. बेग़रज़ी के साथ, बेपरवाई के साथ
3. महीने और साल

کہیں کچھ نہیں ہوتا
اب ہمیشہ ایک ہی موسم رہتا ہے
نہ نئے پھول کھلتے ہیں
نہ کہیں پت جھڑ ہوتا ہے
کھیتوں اور کھلیانوں سے
سجے ہوئے بازاروں تک
نئے موسم کے انتظار میں
لوگ چپ چاپ کھڑے ہیں
نہ کہیں کوئی کنواری ہنستی ہے
نہ کہیں کوئی بچّہ روتا ہے
کہیں کچھ نہیں ہوتا ہے
راستوں پر اوراق بکھر گئے ہیں
اور کتابوں پہ دھول
دماغوں میں جالے ہیں
اور دلوں میں خوف
گلیوں میں دھواں ہے
اور گھروں میں بھوک
اب نہ کوئی جنگل جنگل بھٹکتا ہے
نہ کوئی پتھر کاٹ کر نہریں نکالتا ہے
کہیں کچھ نہیں ہوتا

●●●

कहीं कुछ नहीं होता
अब हमेशा एक ही मौसम रहता है
न नये फूल खिलते हैं
न कहीं पतझड़ होता है
खेतों और खलियानों से
सजे हुये बाज़ारों तक
नये मौसम के इंतिज़ार में
लोग चुपचाप खड़े हैं
न कहीं कोई कुंवारी हंसती है
न कहीं कोई बच्चा रोता है
कहीं कुछ नहीं होता है
रास्तों पर औराक़[1] बिखर गये हैं
और किताबों पे धूल
दिमाग़ों में जाले हैं
और दिलों में ख़ौफ़
गलियों में धुवां है
और घरों में भूक
अब न कोई जंगल जंगल भटकता है
न कोई पत्थर काट काट कर नहरें निकालता है
कहीं कुछ नहीं होता

●●●

1. वरक़ का बहुवचन, बहुत सारे पन्ने

عین رشید

## شہر

شہر، تو اپنے گندے پاؤں پسارے دریا کے کنارے لیٹا ہے
اور تیرے سینے پر رینگتی ہوئی چیونٹیاں سورج کو گھور رہی ہیں
جب نصف درجن غیر ملکی حکیموں نے مشترکہ طور پر اعلان کیا:
''مرض سنگین ہے اور یہ بہت جلد ہی مر جائے گا''
تو کسی چیچک زدہ بچّے کی طرح تو نے انہیں دیکھا اور خاموش ہو رہا
غلیظ! بدکار! بے رحم!

شہر! لوگ کہتے ہیں تُو بدکار ہے
اور میں نے خود دیکھا ہے
سرِ شام
تیرے رنگے چہرے والی عورتیں لڑکھڑاتے نوجوانوں کو نگل جاتی ہیں
بے رحم!
جب رات گئے تیرے دانش ور رکشہ لیے خودکشی کرنے جاتے ہیں
تو خاموش رہتا ہے!

شہر، میں تیری دیوانہ کن خواہشوں سے بیزار ہوں
شہر، تو اپنے گندے لباس کب اُتارے گا؟
شہر، لوگ کہتے ہیں مرنے کے بعد میری ہڈّی سے بٹن بنائیں گے
شہر، تیری دیواروں پر یہ کیسی تحریریں ہیں؟

## ऐन रशीद

### शहर

शहर तू अपने गंदे पांव पसारे दरिया के किनारे लेटा है
और तेरे सीने पर रेंगती हुई चियूंटियां सूरज को घूर रही हैं
जब निस्फ़[1] दर्जन ग़ैर मुल्की हकीमों ने मुश्तर्का[2] तौर पर एलान किया
''मरज़ संगीन है और यह बहुत जल्द ही मर जाएगा''
तो किसी चेचकज़दह्[3] बच्चे की तरह तूने उन्हें देखा और ख़ामोश हो रहा
ग़लीज़[4]! बदकार[5]! बेरहम!

शहर! लोग कहते हैं तू बदकार है
और मैंने खुद देखा है
सरेशाम[6]
तेरे रंगे चेहरेवाली औरतें लड़खड़ाते नौजवानों को निगल जाती हैं!
बेरहम!
जब रात गए तेरे दानिशवर रिक्शा लिए खुदकुशी करने जाते हैं
तू ख़ामोश रहता है

शहर, मैं तेरी दीवानाकुन[7] ख़्वाहिशों से बेज़ार हूं
शहर, तू अपने गन्दे लिबास कब उतारेगा?
शहर, लोग कहते हैं मरने के बाद मेरी हड्डी से बटन बनायेंगे
शहर, तेरी दीवारों पर ये कैसी तहरीरें[8] हैं?

1. आधा
2. मिल-जुलकर
3. चेचक का मारा
4. गंदा
5. बुरा करने वाला
6. शाम होते ही
7. दीवाना करने वाली
8. लिखाई

شہر، میں نے مہینوں سے اخبار نہیں پڑھا
شہر تو چائے میں شکر ڈالنا بھول گیا ہے
اور یہ تیرے آنسوؤں کی طرح لگ رہی ہے!
شہر، مجھے نیند آ رہی ہے، تھپک کر سُلا دے

●

## میرے بعد آ

بدلے گا رنگِ شامِ الم
میرے بعد آ
ہو گا ذرا سا درد بھی کم
میرے بعد آ
تنہائیاں بھی اپنی ہیں
اپنی ہیں ساعتیں
خود ساختہ ہیں سارے یہ غم
میرے بعد آ
خوابوں کے اُس منڈیر سے دیکھا کیے مجھے
یہ اور بات ہے کہ ہوئی چشم میری نم
نمناکیوں کی بات ختم
میرے بعد آ

ہریالیوں کی بھیڑ
مگر دُکھ کی کاشت ہے
بدلے گا رنگِ چرخِ کُہن
میرے بعد آ

●

शहर, मैंने महीनों से अख़बार नहीं पढ़ा

शहर, तू चाये में शकर डालना भूल गया

और ये तेरे आंसूओं की तरह लग रही है!

शहर, मुझे नींद आ रही है, थपक कर सुला दे

●

## मेरे बाद आ

बदलेगा रंगे शामे अलम[1]

मेरे बाद आ

होगा ज़रा सा दर्द भी कम

मेरे बाद आ

तन्हाईयां भी अपनी हैं

अपनी हैं साअतें[2]

खुदसाख़ता[3] हैं सारे ये ग़म

मेरे बाद आ

ख़्वाबों के उस मुंडेर से देखा किये मुझे

यह और बात है कि हुई चश्म मेरी नम

नमनाकियों की बात ख़त्म

मेरे बाद आ

हरियालियों की भीड़

मगर दुख की काश्त[4] है

बदलेगा रंगे चर्ख़े कुहन[5]

मेरे बाद आ

●

1. ग़म की शाम
2. घड़ियां, पहर
3. स्वरचित
4. खेती
5. पुराना आसमान

# نظم

نہیں! میں کسی یونانی المیے کا
مرکزی کردار نہیں!
نہ ہی میں اس لیے بنا تھا
میں تو ایک خاموش تماشائی ہوں!

ہزاروں سال پتھروں میں جکڑے
کسی مرکزی کردار کی آنکھیں
جب شاہین سے نچوائی جاتی ہے
اور جب وہ درد سے کراہ کر کہتا ہے
"میں تمام پیار کرنے والوں کے لیے ایک کربناک منظر ہوں[1]!"
یا سالہا سال سمندروں میں بھٹکنے والے سیاحوں سے
خدا جب ان کے گھر آنے کا دن چھین لیتا ہے[2]،
یا جب کوئی سرکش مرکزی یونانی کردار
اپنے آبائی خدا سے مسکرا کر کہتا ہے
"تخلیق کے بعد مجھ پر تمہارا کوئی حق نہیں رہا[3]!"
تو میں اپنے بغل والے معصوم تماشائی سے
ماچس مانگ کر اپنا سگریٹ سُلگا لیتا ہوں
"خدایا! یہ لوگ کتنے بے وقوف ہیں[4]!"

مجھے زندگی کا کوئی تجربہ نہیں
شاید اپنی غلطیوں کو ہنس کر بھولنے کے فقدان کو تجربہ کہتے ہیں
یا پھر شاید اسی اختلاجِ کمتری کو

۱۔ایس کلس ۲۔ہومر ۳۔سارتر ۴۔شیکسپیئر

## नज़्म

नहीं! मैं किसी यूनानी अलमिये[1] का
मर्कज़ी किरदार[2] नहीं!
न ही मैं इसलिए बना था
मैं तो एक ख़ामोश तमाशाई हूं!

हज़ारों साल पत्थरों में जकड़े
किसी मर्कज़ी किरदार की आंखें
जब शाहीन[3] से नुचवाई जाती हैं
और जब वह दर्द से कराह कर कहता है
''मैं तमाम प्यार करने वालों के लिए एक कर्बनाक मन्ज़र हूं!''
या सालहा साल समुन्दरों में भटकने वाले सैयाहों[4] से
ख़ुदा जब उनके घर आने का दिन छीन लेता है
या जब कोई सरकश मर्कज़ी यूनानी किरदार
अपने आबाई[5] ख़ुदा से मुस्कुराकर कहता है
''तख़लीक़ के बाद मुझ पर तुम्हारा कोई हक़ नहीं रहा!''
तो मैं अपने बग़ल वाले मासूम तमाशाई से
माचिस मांगकर अपना सिगरेट सुलगा लेता हूं
''ख़ुदाया! ये लोग कितने बेवक़ूफ़ हैं!''

मुझे ज़िन्दगी का कोई तजरिबा नहीं
शायद अपनी ग़ल्तियों को हंसकर भूलने के फ़ुक़दान[6] को तजरिबा कहते हैं,
या फिर शायद इसी इख़्तिलाजे कमतरी को

1. दुखान्त नाटक, त्रासदी
2. केन्द्रीय पात्र
3. श्येन, बाज़
4. पयर्टकों
5. बाप दादा के
6. अभाव

ذہن کے فریم میں بند رکھنے کو!
شاید مجھے معلوم نہیں!

یہ صدی دردِ زہ چگی سے کراہ رہی ہے
اور میں تواریخ کے شاطرانہ صحن میں
بیٹھا سوچ رہا ہوں[۵]،
میں نہیں، یہ دنیا ضعیف ہوگئی ہے
اور جلد ہی مر جائے گی!
مگر...... مورّخ میرے بارے میں کیا لکھیں گے؟

●●●

۵۔ انڈرا پاؤنڈ

ज़ेहन के फ़्रेम में बन्द रखने को!

शायद मुझे मालूम नहीं!

यह सदी दर्दे ज़च्चगी[1] से कराह रही है

और मैं तवारीख़[2] के शातिराना सहन में

बैठा सोच रहा हूं,

मैं नहीं, यह दुनिया ज़ईफ़[3] हो गई है

और जल्द ही मर जाएगी!

मगर — मुअर्रिख़[4] मेरे बारे में क्या लिखेंगे?

●●●

1. प्रसव पीड़ा
2. इतिहासों (तारीख़ का बहुवचन)
3. बूढ़ी
4. इतिहासकार

ش ۔ک ۔نظام

## بیاضیں کھو گئی ہیں

بیاضیں
جن میں
اَن دیکھے پرندوں کے
پتے لکھے

بیاضیں !
جن میں
ہم نے پھولوں کی
سرگوشیاں لکھیں
پہاڑوں کے رموز اور
آبشاروں کی زباں لکھی

بیاضیں !
جن کے سینے میں
سمندر اور سورج کی عداوت کے تھے افسانے
پرندے اور پیڑوں کے
رقم تھے
باہمی رشتے

ہمارے ارتقا کی الجھنیں

शीन काफ निज़ाम

## बयाज़ें खो गई हैं

बयाज़ें[1]
जिनमें
अन देखे परिंदों के
पते लिक्खे

बयाज़ें!
जिनमें
हमने फूलों की
सरगोशिया[2] लिखीं
पहाड़ों के रमूज़[3] और
आबशारों[4] की ज़बां लिक्खी

बयाज़ें!
जिनके सीने में
समुन्दर और सूरज की अदावत[5] के थे अफ़साने
परिंदे और पेड़ों के
रक़्म[6] थे
बाहमी रिश्ते

हमारे इर्तिक़ा[7] की उलझनें

1. कविता की कापियां
2. कानाफूसी
3. रम्ज़ का बहुवचन, राज़
4. झरनों
5. दुश्मनी
6. लिखे हुये
7. विकास

جن سے منور تھیں

بیاضیں کھوگئی ہیں
اب لغت ہم سے پریشاں ہے

●

## سایوں کے سائے میں

منتظر
متشوش و منتشر
کتنے مکانوں کی قطاریں
اُس
کھنڈر کی اور
جو شاید کبھی معبد کدہ تھا
ان کا
جن کے گُم ہونے سے ہیں
گُم سُم
سبھی گلیاں اور
گزرگاہوں پہ منڈلاتا ہوا
آسیبی سایہ
موڑ پر
رُکتی، سسکتی
اجنبی سایوں سے

जिनसे मुनव्वर थीं

बयाज़ें खो गई हैं
अब लुग़त[1] हम से परेशां है

●

## सायों के साये में

मुंतज़िर[2]
मुतशव्वश[3] व मुंतशिर[4]
कितने मकानों की क़तारें
उस
खंडर की ओर
जो शायद कभी माबद कदा[5] था
उनका
जिनके गुम होने से हैं
गुम सुम
सभी गलियां और
गुज़रगाहों[6] पे मंडलाता हुआ
आसेबी साया
मोड़ पर
रुकती, सिसकती
अजनबी सायों से

1. शब्दकोश
2. प्रतीक्षक
3. डरे हुये
4. बिखरे हुये
5. उपासनागृह
6. रास्तों

سہمی
کوئی پرچھائیں پلٹتی
بھاگتے قدموں کی آہٹ
ڈوب جاتی
آب جو کے
ٹھیک
بیچوں بیچ

●●●

सहमी

कोई परछाई पलटती

भागते क़दमों की आहट

डूब जाती

आबजू[2] के

ठीक

बीचों बीच

●●●

1. डरी हुई 2. नदी

## عنبر بہرائچی

### گلابی چونچ

گلابی چونچ میں کیڑے لئے اُڑتی ہے گوریا
جدھر اک آشیاں میں اس کے بچوں نے ابھی آنکھیں نہیں کھولیں
مگر ہیں بھوک سے بیکل،
مچھیرے صبح کی دھندلی رداؤں میں
پرانے چھپّروں کی کوکھ سے شانوں پہ رکھ کر جال نکلے ہیں
وہیں پر کھانستے ہیں چند محنت کش، الاؤ کے کنارے بیڑیاں پی کر
فلک پیما عمارت کے لئے مزدور پتھر توڑتے ہیں منہمک ہوکر
سحر کی سرمئی دھندلی رداؤں میں
میں گہری سوچ میں گم ہوں
صفِ دانش وراں کیا ان سے برتر ہے؟

●

### یدھشٹھر

ابھی چیڑ کے جنگلوں سے گزرنا بہت جانفزا ہے
کئی میل کے بعد برفیلے تودوں کا صحرا ملے گا
جہاں سربریدہ وائیوں کے تھپیڑے تھرکتے ملیں گے
عمودی ڈھلانوں کا اک سلسلہ بھی ملے گا اچانک

अम्बर बहराइची

## गुलाबी चोंच

गुलाबी चोंच में कीड़े लिये उड़ती है गौरैया
जिधर इक आशियां[1] में उसके बच्चों ने अभी आंखें नहीं खोलीं
मगर हैं भूक से बेकल
मछेरे सुब्ह की धुंधली रिदाओं[2] में
पुराने छप्परों की कोख से शानों[3] पे रखकर जाल निकले हैं
वहीं पर खांसते हैं चन्द मेहनतकश[4], अलाओ के किनारे बीड़ियां पीकर
फ़लक-पैमा[5] इमारत के लिए मज़दूर पत्थर तोड़ते हैं मुन्हमिक[6] होकर
सहर[7] की सुरमई धुंधली रिदाओं में
मैं गहरी सोच में गुम हूं
सफ़े दानिशवरां [8] क्या इनसे बरतर है?

●

## युधिष्ठिर

अभी चीड़ के जंगलों से गुज़रना बहुत जांफ़ज़ा[9] है
कई मील के बाद नर्फ़ीले तूदों का सह्रा[10] मिलेगा
जहां सर्द पुरवाईयों के थपेड़े थिरकते मिलेंगे
अमूदी[11] ढलानों का इक सिलसिला भी मिलेगा अचानक

1. घोंसला
2. चादरें
3. कंधों
4. मेहनत करने वाले
5. आसमान तक पहुंचने वाली
6. व्यस्त
7. सवेरे
8. बुद्धिजीवियों की क़तार
9. दिल को खुश करने वाला
10. मरुस्थल
11. लम्बी

جسے پار کرنے کی دُھن میں تمھیں اپنے سب ساتھیوں کو گلانا پڑے گا
حسیں درو پدی اور تمھارے جَری بھائیوں کی جماعت
اِنہیں برف زاروں کا حصہ بنے گی
مگر یہ بھی ہو گا یدُھشٹھر! تمہارا وفادار کُتا
تمھارے عقب میں بصد شوق ہر وقت چلتا رہے گا
مخالف فضا میں تمہاری ہی دھڑکن کا حصہ رہے گا
اُسے یخ جہنم نہیں چھو سکے گا
تمھاری جری بھائیوں کی وجاہت تمھاری حسیں درو پدی کی ملاحت
تمھارے وفادار کتے کے آگے پشیماں رہے گی

●

## سوکھی ٹہنی پر ہَرِیَل

ہم چشموں کے غول مگن ہیں شاخوں پر
خوش رفتار ہوائیں پنکھے جھلتی ہیں
گولر کے کچے پھل بھی ہر جانب ہیں
میٹھے پانی والی جھیل ہے پہلو میں
موسم کی شطرنجی چالیں عنقا ہیں
کوئی شکاری بھی اس سمت نہیں آتا
ہرے بھرے جنگل کی مشفق بانہوں میں
رات گئے جانے کیا برسا ہے دل پر
الگ تھلگ برگد کی سوکھی ٹہنی پر
ہَرِیَل پنکھ بچھائے گُم صُم بیٹھا ہے

●●●

जिसे पार करने की धुन में तुम्हें अपने सब साथियों को गलाना पड़ेगा
हसीं द्रौपदी और तुम्हारे जरी[1] भाईयों की जमाअत
इन्हीं बर्फ़ज़ारों[2] का हिस्सा बनेगी
मगर यह भी होगा युधिष्ठिर! तुम्हारा वफ़ादार कुत्ता
तुम्हारे अक़ब[3] में बसद शौक़ हर वक़्त चलता रहेगा
मुख़ालिफ़ फ़िज़ा में तुम्हारी ही धड़कन का हिस्सा रहेगा
उसे यख़[4] जहन्नम नहीं छू सकेगा
तुम्हारे जरी भाईयों की वजाहत[5] तुम्हारी हसीं द्रौपदी की मलाहत[6]
तुम्हारे वफ़ादार कुत्ते के आगे पशेमां[7] रहेगी

●

## सूखी टहनी पर हरियल

हमचश्मों[8] के गौल मगन है शाख़ों पर
ख़ुश रफ़्तार हवाएं पंखे झलती हैं
गूलर के कच्चे फल भी हर जानिब हैं
मीठे पानी वाली झील है पहलू में
मौसम की शतरंजी चालें अनक़ा[9] हैं
कोई शिकारी भी इस सम्त नहीं आता
हरे भरे जंगल की मुश्फ़िक़[10] बांहों में
रात गए जाने क्या बरसा है दिल पर
अलग थलग बरगद की सूखी टहनी पर
हरियल पंख बिछाए गुम सुम बैठा है

●●●

1. बहादुर
2. जहां बर्फ़ ही बर्फ़ हो
3. पीछे
4. बहुत ठंडा
5. ख़ूबसूरती
6. सांवलापन
7. पश्चातापी
8. एक जैसे
9. नायाब शै
10. मेहरबान

جاوید ناصر

## یہ خلف کا وعدہ ہے

اختر الزماں ناصر
وقت جیسے رویا ہو
دھوپ، نرم لہجے میں جیسے آج گویا ہو
دور کوئی مسجد میں
بیچ عصر و مغرب کے
جیسے کھویا کھویا ہو
اختر الزماں ناصر
میں تمھاری آنکھوں سے دیکھتا تھا دنیا کو
میں تمھارے ہاتھوں سے زندگی کو چھوتا تھا
میں تمھارے قدموں سے ناپتا تھا رستوں کو
میں تمھاری سانسوں سے سونگھتا تھا خوشبو کو
میں تمھارا منظر تھا
بے صدا سمندر تھا
سر پہ آسماں تم تھے
ہاں مرا بیاں تم تھے
اور میری دھرتی میں چاہتیں تمھاری تھیں
عادتیں تمھاری تھیں
دن تمھارے لہجے کی چھاؤں میں گزرتے تھے
زندگی سے لڑتے تھے، زندگی سے ڈرتے تھے
اختر الزماں ناصر

**जावेद नासिर**

# ये ख़लफ़[1] का वादा है

अख़तरूज़्ज़मां नासिर
वक़्त जैसे रोया हो
धूप, नर्म लहजे में जैसे आज गोया[2] हो
दूर कोई मस्जिद में
बीच अस्रो व मग़रिब के
जैसे खोया खोया हो
अख़तरूज़्ज़मां नासिर
मैं तुम्हारी आंखों से देखता था दुनिया को
मैं तुम्हारे हाथों से ज़िन्दगी को छूता था
मैं तुम्हारे क़दमों से नापता था रस्तों को
मैं तुम्हारी सांसों से सूंघता था ख़ुश्बू को
मैं तुम्हारा मंज़र था
बेसदा समुन्दर था
सर पे आस्मां तुम थे
हां, मेरा बयां तुम थे
और मेरी धरती में चाहतें तुम्हारी थीं
आदतें तुम्हारी थीं
दिन तुम्हारे लहजे की छांव में गुज़रते थे
ज़िन्दगी से लड़ते थे, ज़िन्दगी से डरते थे
अख़तरूज़्ज़मां नासिर

1. सपूत, वारिस    2. बोलना

جانے کیوں ہوا بدلی چرخ نے بھی رُخ بدلا
دور، مسجدِ جاں سے کیوں اذانِ دل اُبھری
سجدۂ طلب چمکا
حرفِ کنجِ لب چمکا
دن غروب ہوتے ہی ذوقِ منتخب چمکا
کاش یہ نہیں ہوتا کاش میں وہیں ہوتا
اختر الزماں ناصر

میں کسی تمدن کا آخری مسافر ہوں
میں ہزار خوابوں کی دوڑ دھوپ میں شامل
میں ہزار جذبوں کی ریل پیل کا عادی
میں ہزار ہاتھوں سے زندگی بناتا ہوں
میں ہزار قدموں سے راستوں پہ چلتا ہوں
میں ہزار شانوں پہ کروٹیں بدلتا ہوں
میں ہزار آنکھوں سے منظروں میں ڈھلتا ہوں
میں اسیر دنیا کا
میں بصیر فردا کا
میں ورق ہوں ماضی کا
وقت ہے منادی کا
ڈرتے ڈرتے کہتا ہوں میں بھی ایک شاعر ہوں
اختر الزماں ناصر

یہ سفر جو جاری ہے کون اس کا جادہ ہے
کون اس کی منزل ہے
لوٹنا بھی مشکل ہے

जाने क्यों हवा बदली, चर्ख़[1] ने भी रुख़ बदला

दूर, मस्जिदे जां से क्यों अज़ाने दिल उभरी

सजदए तलब चमका

हर्फ़े कुन्जे लब चमका

दिन गुरुब[2] होते ही ज़ौक़े मुन्तख़ब चमका

काश ये नहीं होता काश मैं वहीं होता

अख़तरुज़्ज़मां नासिर

मैं किसी तमद्दुन[3] का आख़िरी मुसाफ़िर हूं

मैं हज़ार ख़्वाबों की दौड़ धूप में शामिल

मैं हज़ार जज़्बों की रेल पेल का आदी

मैं हज़ार हाथों से ज़िन्दगी बनाता हूं

मैं हज़ार क़दमों से रास्तों पे चलता हूं

मैं हज़ार शानों पे करवटें बदलता हूं

मैं हज़ार आंखों से मंज़रों में ढ़लता हूं

मैं असीर[4] दुनिया का

मैं बसीर फ़र्दा[5] का

मैं वरक़ हूं माज़ी[6] का

वक़्त है मुनादी का

डरते डरते कहता हूं मैं भी एक शाइर हूं

अख़तरुज़्ज़मां नासिर

ये सफ़र जो जारी है कौन इसका जादा है

कौन इसकी मंज़िल है

लौटना भी मुश्किल है

1. आसमान
2. डूबना
3 संस्कृति
4. क़ैदी
5. आने वाला कल
6. अतीत

میں تو جیسے بھر پایا اور ایک در پایا
روز و شب کا حلقہ ہے
میں بھی ایک قیدی ہوں
صبح کا اندھیرا ہوں
شام کی سفیدی ہوں
اختر الزماں ناصر
نوکری ہے سرکاری
بدترین سمجھوتہ، بدترین دشواری
آج میرے ہاتھوں میں تیر ہیں، نہ پتھر ہیں
آج میری آنکھوں میں خواب ہیں، نہ منظر ہیں
میں سگِ ملامت کی سُن رہا ہوں آوازیں
روز و شب کے نرغے سے بھاگنا بھی مشکل ہے
اور ایسے عالم میں
قرض عین واجب ہے
شغلِ مے بھی جائز ہے
اختر الزماں ناصر
حکم مجھ کو از بر ہے
تین ننھی دھوپیں ہیں
وہ نفیس پیکر ہے
جن کے ساتھ جینا ہے
دھوپ ہے تو سہنی ہے
بس یہی گزارش ہے
ایک چھوٹی تبدیلی
صرف اتنی خواہش ہے

मैं तो जैसे भर पाया और एक दर पाया

रोज़ो शब का हलक़ा है

मैं भी एक क़ैदी हूं

सुब्ह का अंधेरा हूं

शाम की सफ़ेदी हूं

अख़तरुज़्ज़मां नासिर

नौकरी है सरकारी

बदतरीन समझौता, बदतरीन दुश्वारी

आज मेरे हाथों में तीर हैं, न पत्थर हैं

आज मेरी आंखों में ख़्वाब हैं, न मन्ज़र हैं

मैं सगे मलामत[1] की सुन रहा हूं आवाज़ें

रोज़ो शब के नरग़े[2] से भागना भी मुश्किल है

और ऐसे आलम में

क़र्ज़ ऐन वाजिब है

शग़ले मय[3] भी जाइज़ है

अख़तरुज़्ज़मां नासिर

हुक्म मुझको अज़बर[4] है

तीन नन्ही धूपें हैं

वो नफ़ीस पैकर हैं

जिनके साथ जीना है

धूप है तो सहनी है

बस यही गुज़ारिश है

एक छोटी तब्दीली

सिर्फ़ इतनी ख़्वाहिश है

1. तुच्छता का कुत्ता
2. घेरे
3. शराब पीने का अमल
4. ज़बानी याद होना

اختر الزماں ناصر

اعتدال لازم ہے
یہ خلف کا وعدہ ہے
دور ہے خدا لیکن
توشۂ سعادت ہے
روشنی کا جادہ ہے

●●●

अख़्तरूज़्ज़मां नासिर

एतिदाल[1] लाज़िम है
ये ख़लफ़ का वादा है
दूर है ख़ुदा लेकिन
तोशाए सआदत[2] है
रौशनी का जादा है

●●●

1. संतुलन    2. मुबारक सफ़र का सामान

## محمد صلاح الدین پرویز

# چیت

کوئل

میرے شبدوں کو تو چھاپے خانے لے جا
وہ اخبار تو پڑھتے ہوں گے
پڑھ کے خبر میرے مرنے کی
دوڑے دوڑے گھر آئیں گے

ڈاکئے

تو چٹھی کے بجائے، آم مری بگیا کے، اب کی
ان کے دفتر لے جا
سب سے چھپا کے آم وہ میرے
ہاتھوں میں بھر لیں گے
پھر کرتے کے نیچے، پیچھے، سینے کے جنگل میں ان کو ڈبکا لیں گے

سکھی ہواؤ!

اب کی جب تم ان کے سہانے گھر سے گزرو
ٹیسو کے کچھ پھول مہکتے
ان کی کھڑکی پہ رکھ آنا
رات گئے جب آنکھ میں اُن کی
میرے بدن کے پھول جلیں گے
ٹھنڈے بدن پہ آگ ملیں گے
جلدی جلدی کھڑکی تک پہنچیں گے
اُن پہ جلتے ہونٹوں کا اک چمبن!
چیت مہینے والا چمبن مہکا دیں گے!!

●

# मुहम्मद सलाहुद्दीन परवेज़

## चैत

कोयल
मेरे शब्दों को तू छापेख़ाने ले जा
वो अख़बार तो पढ़ते होंगे
पढ़ के ख़बर मेरे मरने की
दौड़े दौड़े घर आयेंगे
डाकिये
तू चिठ्ठी के बजाय 'आम मेरी बगिया के' अब की
उनके दफ़्तर ले जा
सब से छुपा के आम वो मेरे
हाथों में भर लेंगे
फिर कुर्ते के नीचे, पीछे, सीने के जंगल में उनको दुबका लेंगे
सखी हवाओ!
अब की जब तुम उनके सुहाने घर से गुज़रो
टेसू के कुछ फूल महकते
उनकी खिड़की पे रख आना
रात गए जब आँख में उनकी
मेरे बदन के फूल जलेंगे
ठंडे बदन पे आग मलेंगे
जल्दी जल्दी खिड़की तक पहुंचेंगे
उनपे जलते होंटों का इक चुम्बन!
चैत महीने वाला चुम्बन महका देंगे!!

●

## کارتک

پانی میں عکس دیکھا
جنگل میں رقص دیکھا
سورج لباس پہنے
چندا سے زیادہ ٹھنڈا
اس رات آئینے میں
اک ایسا شخص دیکھا

چاندنی کے رتھ پہ سج کے
اس شخص کی سواری
اب ہو رہی ہے دیکھو
سوئے اُفق روانہ
اب لائے گی وہاں سے
کچھ درد کا خزانہ

ان منظروں سے ہٹ کے
جھرنے کے شور و شر میں
ہم نے نہاتے دیکھی
اک حور بے حجابی
چاندنی کے بحر و بر میں
کاتک کی خوابنا کی آنکھوں کے دو جہاں تک
کاتک کی چندر مائی سپنوں کے لامکاں تک
اے لامکاں مکانی
سن کے صدا کسی کی
جوں پیچھے مُڑ کے دیکھا
واں دور کوہ دل کی نم نم سی لکڑیوں کا

# कार्तिक

पानी में अक्स देखा
जंगल में रक़्स देखा
सूरज लिबास पहने
चन्दा से ज़्यादा ठंडा
उस रात आईने में
इक ऐसा शख़्स देखा

चांदनी के रथ पे सज के
उस शख़्स की सवारी
अब हो रही है देखो
सूए उफ़क़ रवाना
अब लायेगी वहां से
कुछ दर्द का ख़ज़ाना

उन मंज़रों से हट के
झरने के शोरो शर में
हमने नहाते देखी
इक हूर बेहिजाबी
चाँदनी के बह्‌रोबर में
कातिक की ख़्वाबनाकी आंखों के दो जहां तक
कातिक की चन्द्रमाई सपनों के लामकां तक
............ऐ लामकां मकानी
सुन के सदा किसी की
जूं पीछे मुड़ के देखा
वां दूर कोहे दिल की, नम नम सी लकड़ियों का

برہن سا خوبصورت، چوٹی پہ اک مکاں تھا
لیکن وہ جل رہا تھا
کاتک کی چاندنی میں!

●

## پھاگن

آنگن میں اک شجر ہے
دالان میں ہوائیں
کمرے میں ایک لڑکی
اُجلی، اُداس لڑکی
واٹر کلر سے دل پہ پتے بنا رہی ہے
اتنے میں پیڑ آیا
کمرے میں پیڑ آیا
پتے گرا کے بولا 'باہر ہوا بہت ہے'
لڑکی تھی پہلے اُجلی، اب پیلی ہو گئی ہے
پھر چند پل بیتے، داخل ہوئی ہوائیں
پتے اُڑا کے بولیں، اندر ہوا بہت ہے
لڑکی تھی پہلے پیلی اب لال ہو گئی ہے
وہ لال لال لڑکی اب بے قرار ہو کے
واٹر کلر کا ڈبہ دل میں کہیں چھپائے
آنچل میں کچھ ہوائیں، دامن میں چند پتے
دالان سے گزر کے، آنگن کو پار کر کے
میدانِ نوحہ خواں میں آ کے ٹھٹھک گئی ہے
میدانِ نوحہ خواں میں اک کینوس رکھا ہے
اس کینوس کے دل پہ، واٹر کلر میں بھیگا
پھاگن کا ہر ہرا ہے، کب سے وہ جل رہا ہے!

●●●

बिरहन सा ख़ूबसूरत, चोटी पे इक मकां था
लेकिन वो जल रहा था
कातिक की चाँदनी में!

●

# फागुन

आंगन में इक शजर है
दालान में हवायें
कमरे में एक लड़की
उजली, उदास लड़की
वाटर कुलर से दिल पे पत्ते बना रही है
इतने में पेड़ आया
कमरे में पेड़ आया
पत्ते गिरा के बोला, 'बाहर हवा बहुत है'
लड़की थी पहले उजली, अब पीली हो गई है
फिर चन्द पल बीते, दाख़िल हुई हवायें
पत्ते उड़ा के बोलीं, 'अन्दर हवा बहुत है'
लड़की थी पहले पीली अब लाल हो गई है
वो लाल लाल लड़की अब बेक़रार हो के
वाटर कुलर का डिब्बा दिल में कहीं छुपाए
आंचल में कुछ हवायें, दामन में चन्द पत्ते
दालान से गुज़र के, आंगन को पार करके
मैदाने नौहाख़्वां में आ के ठिठक गई है
मैदाने नौहाख़्वां में इक केनवस रखा है
इस केनवस के दिल पे, वाटर कुलर में भीगा
फागुन का हर हरा है, कब से वो जल रहा है!

●●●

## جینت پرمار

### ایک ستارہ ٹوٹ گرا تھا

خوابوں کی سرحد پہ
نیلا نیلا ایک سمندر
تیری آنکھوں جیسا
لہروں کے نیزوں پہ بہتی
جگمگ جگمگ چاندی سی روشن
اپنے پیار کی کشتی —
سات سمندر سے بھی دُور
طوفانوں سے کھیلتی
جَل پریوں سے باتیں کرتی
واپس لوٹ آئی تو
ساحل کی چمکیلی ریت میں
ایک ستارہ ٹوٹ گرا تھا!

●

### قریب تر ہوتا ہے صرف اندھیرا ہی

اپنے قریب
قریب تر ہوتا ہے
صرف اندھیرا ہی
بند آنکھوں سے دیکھو تو بھی
صاف دکھائی دیتا ہے!

●

**जयंत परमार**

## एक सितारा टूट गिरा था

ख़्वाबों की सरहद पे
नीला नीला एक समुन्दर
तेरी आंखों जैसा
लहरों के नेज़ों[1] पे बहती
जगमग जगमग चांद सी रौशन
अपने प्यार की कश्ती —
सात समुन्दर से भी दूर
तूफ़ानों से खेलती
जल परियों से बातें करती
वापस लौट आयी तो
साहिल की चमकीली रेत में
एक सितारा टूट गिरा था!

●

## क़रीबतर होता है सिर्फ़ अंधेरा ही

अपने क़रीब
क़रीबतर होता है
सिर्फ़ अंधेरा ही
बंद आंखों से देखो तो भी
साफ़ दिखाई देता है!

●

1. भालों

## چاند دریا پار کر کے آ رہا ہے

آ گئی ہے رُت بہار
سبز پتّے، سبز تتلی، سبز منظر، انتظار
عطر آگیں ہیں ہوائیں
پیڑ کی گردن پہ ہنستا ہے تری یادوں کا ہار
ایک سایہ پیڑ پر چڑھتا ہوا
اِک ستارہ بادلوں کے آر پار
چاند دریا پار کر کے آ رہا ہے
تم سے ملنے بے قرار
شش جہت پر خوشبوؤں کی بھیڑ سی
بند رکھنا تم نہ اپنے گھر کے دوار

●●●

# चांद दरिया पार करके आ रहा है

आ गयी है रुत बहार
सब्ज़ पत्ते, सब्ज़ तितली, सब्ज़ मंज़र, इन्तिज़ार
इत्र आगीं[1] हैं हवायें
पेड़ की गदर्न पे हंसता है तेरी यादों का हार
एक साया पेड़ पर चढ़ता हुआ
इक सितारा बादलों के आर पार
चांद दरिया पार करके आ रहा है
तुमसे मिलने बेक़रार
शश जेहत[2] पर ख़ुश्बुओं की भीड़ सी
बंद रखना तुम न अपने घर के द्वार

●●●

1. इत्र से भरा हुआ 2. छः दिशायें

صفیہ اریب

(1)
صحرائے ہستی
میں
ایک چیز
آوارہ بھٹکتی رہی
مر گئی
پیاس سے

(2)
زرد رو
چمن میں
گردوغبار
انگڑائیاں
لے رہا ہے—:
خشک پتے
منتظر ہیں
جنبشِ یک تارنفس کے
اور
دیدہ نم—

## सफ़िया अरीब

(1)

सहराये हस्ती[1]

मैं

एक चीज़

आवारा भटकती रही

मर गयी

प्यास से

(2)

ज़र्दरू[2]

चमन में

गर्दो गुबार

अंगड़ाईयां

ले रहा है -:

खुश्क[3] पत्ते

मुंतज़िर हैं

जुंबिशे यक तारे नफ़स[4] के

और

दीदए नम[5] —

1. वजूद का मरूस्थल
2. पीले चेहरे वाला
3. सूखे
4. सांस के एक तार की जुम्बिश
5. भीगी आंखें

ٹکٹکی باندھے
راستہ
تک رہے ہیں
قاصد کا —
جانے کب
رہائی کا پروانہ
آئے گا

(3)
گھٹائیں
جھوم کے آتی ہیں
گھر کے
آنگن پر —!
نہ پوچھو
کیسے رستی ہیں
کھل بھی جاتی ہیں

گھٹائیں
کمرے سے
دور رہتی ہیں!
سبزہ
دیوار سے باہر
لہکتا ہے!
کمرے میں
صرف

टकटकी बांधे

रास्ता

तक रहे हैं

क़ासिद[1] का —

जाने कब

रिहाई का परवाना

आएगा

(3)

घटायें

झूम के आती हैं

घर के

आंगन पर -!

न पूछो

कैसे रिस्ती हैं

खुल भी जाती है

पर

घटायें

कमरे से

दूर रहती हैं-:

सब्ज़ा

दीवार से बाहर

लटकता है!

कमरे में

सिर्फ़

1. दूत

ایک لیمپ
جلتا ہے
موت اور
زندگی
کے درمیاں
فاصلہ بہت
لگتا ہے—!
میں—
موت کے ہم راہ
جی رہی ہوں—
زندگی کے ساتھ
مر رہی ہوں!

(4)

خاموشی کی
عادت ڈالو
سکون مل
جائے گا—
ہاں—
خاموشی—
بے آواز خاموشی—
ایک بار
الفاظ کو
توڑ دو—
معنوں کے
کرب سے

एक लैम्प

जलता है

मौत और

ज़िन्दगी

के दरमियां

फ़ासला बहुत

लगता है -:

मैं —

मौत के हमराह[1]

जी रही हूं —

ज़िंदगी के साथ

मर रही हूं —

(4)

ख़ामोशी की

आदत डाला

सुकून मिल

जाएगा —

हां —

ख़ामोशी —

बेआवाज़ ख़ामोशी-:

एक बार

अल्फ़ाज़ को

तोड़ दो -:

मानों के

कर्ब[2] से

1. साथ

2. टीस, हल्की बेचैनी

نجات مل جائے گی
ساری
جنگیں
آپ ہی آپ
رُک جائیں گی ——!
مری آنکھوں
سے اب
الفاظ کی
بوندیں ٹپکتی ہیں
ٹپکنے دو!

●●●

नजात मिल जायेगी

सारी

जंगें

आप ही आप

रुक जायेंगी -:

मेरी आंखों

से अब

अल्फ़ाज़ की

बूंदें टपकती हैं

टपकने दो —

●●●

## فاروق نازکی

### سنہری دروازے کے باہر

لرزتے بدن
رنگ کہرے میں لپٹے ہوئے
ادھ مری روشنی کا کفن اوڑھ کر
موت کی سرزمیں میں اُجالوں پہ قربان ہونے سے پہلے
بہت دیر تک
اپنے احساس کی آنچ سہتے رہے۔

شام
نیم تاریک راہوں پہ ماتھا رگڑتی رہی
کانپتی تھرتھراتی، شبِ غم کے سانچے میں ڈھلنے سے پہلے
بہت دیر تک
سرد فانوس کے پاس ٹھہری رہی۔

چاند
آکاش کے گہرے نیلے سمندر میں تاروں کی اندر سبھا سے
بہت دیر تک
موت کی سرزمیں پر اُجالوں کی گلپاشیاں کر رہا تھا
لحد تا لحد کوئی سایہ نہ خاکہ
قدم تا قدم، منزلوں کے نشاں گُم

फ़ारूक़ नाज़ुकी

# सुनहरी दरवाज़े के बाहर

लरज़ते बदन
रंग कुहरे में लिपटे हुए
अधमरी रौशनी का कफ़न ओढ़ कर
मौत की सरज़मीं में उजालों पे कुर्बान होने से पहले
बहुत देर तक
अपने एहसास की आंच सहते रहे।

शाम
नीम तारीक[1] राहों पे माथा रगड़ती रही
कांपती, थरथराती, शबे गम[2] के सांचे में ढलने से पहले
बहुत देर तक
सर्द फ़ानूस के पास ठहरी रही।

चाँद
आकाश के गहरे नीले समुन्दर में तारों के इन्द्र सभा से
बहुत देर तक
मौत की सरज़मीं पर उजालों की गुलपाशियां[3] कर रहा था
लहद ता लहद[4], कोई साया न ख़ाका
क़दम ता क़दम, मंज़िलों के निशां गुम

1. आधी अंधेरी या धुन्धली
2. गम की रात
3. फूल छिड़कना
4. क़ब्र से क़ब्र तक

مکینوں سے خالی مکانوں کے در
تختیاں رہنے والوں کے ناموں کی لے کر
بہت دیر تک منتظر تھے مگر
کوئی دستک نہ آہٹ۔

اِدھر
بے زباں شہر کی تیرگی میں
لرزتے بدن
کیف وکم کے بدلتے ہوئے زاویوں میں
الجھتے، چھلکتے، بکھرتے، سمٹتے رہے
اور کُہرے میں لپٹے ہوئے
شاخ در شاخ روشنی سے گذر کر
صلیبوں کے سائے میں دم لے رہے ہیں
●

## تیزاب' آکار خوشبو کا

نیبو پہاڑی کے دامن میں
ایک گاؤں ہے
'مدرابن'
جہاں میں پیدا ہوا تھا
(میرا نام محمد فاروق ہے)

मकीनों[1] से ख़ाली मकानों के दर[2]

तख़्तियां रहने वालों के नामों को लेकर

बहुत देर तक मुंतज़िर[3] थे मगर

कोई दस्तक न आहट।

इधर

बेज़बां[4] शहर की तीरगी में

लरज़ते बदन

कैफ़ो कम[5] के बदलते हुए ज़ावियों[6] में

उलझते, छलकते, बिखरते, सिमटते रहे

और

कुहरे में लिपटे हुए

शाख़[7] दर शाख़ रौशनी से गुज़र कर

सलीबों[8] के साये में दम ले रहे हैं।

●

## तेज़ाब, आकार ख़ुशबू का

नीबू पहाड़ी के दामन में

एक गांव है,

'मुद्राबन'

जहां मैं पैदा हुआ था,

(मेरा नाम मुहम्मद फ़ारूक़ है)

1. मकान में रहने वाले
2. दरवाज़ा
3. प्रतीक्षक
4. बग़ैर ज़बान के यानी गूंगे
5. कैसा, कितने
6. कोणों
7. टहनी
8. सूलियों

میری ماں سیب کی طرح سُرخ اور میٹھی تھی
گلاب کی طرح کومل اور معطر
وہ خوشبو کا آکار تھی۔
لگی لپٹی، چھل کپٹ، جھوٹ
یہ لفظ اُس نے سنے تو تھے،
آزمائے نہیں تھے،
دُہرائے نہیں تھے۔

ریڈیو سے نزار قبانی کا قصیدۂ متوحشیہ نشر ہوتا
یا کوئی مغنّی کالیداس کا ریتوسمہار سناتا
تو وہ پھوٹ پھوٹ کر روتی،
میں پوچھتا رونے کا کارن،
تو کہتی:

دیوتاؤں کی اِن زبانوں میں
جادو کا اثر ہے
ان میں ستیہ کی دِشا
اور صراط المستقیم کی نشاندہی ہے۔
میں بارہا اس کی سادگی پر رو دیتا

میرا باپ دانتوں میں ڈائنامائٹ دبائے
انگلیوں کے پوروں میں تیزاب کے بَن اُگاتا ہے
اور پیلے مردہ، مریل کاغذ کے چہرے پر
لہو کے پھول کاڑھتا ہے

خود سے الگ ہو کر، خود پر مٹ کر
اپنی جائیداد سے پیار کرنے لگتا ہے۔

मेरी मां सेब की तरह सुर्ख़ और मीठी थी
गुलाब की तरह कोमल और मुअत्तर[1]
वह खुशबू का आकार थी
लगी लिपटी, छल कपट, झूट
यह लफ़्ज़ उसने सुने तो थे,
आज़माए नहीं थे,
दुहराये नहीं थे।

रेडियो से निज़ार क़ब्बानी का क़सीदए मुतवहशिया नश्र होता
या कोई मुग़न्नी, काली दास का ऋतु संहार सुनाता
तो वह फूट फूट कर रोती,
मैं पूछता रोने का कारन[2]
तो कहती :
देवताओं की इन ज़बानों में
जादू का असर है,
इनमें सत्य की दिशा
और सिरातलमुस्तक़ीम[3] की निशानदेही है।
मैं बारहा उसकी सादगी पर रो देता

मेरा बाप दांतों में डाइनामाइट दबाये
उंगलियों के पोरों में तेज़ाब के बन उगाता है
और पीले मुर्दा, मरियल काग़ज़ के चेहरे पर
लहू के फूल काढ़ता है।

खुद से अलग होकर, खुद पर मिटकर
अपनी जायदाद से प्यार करने लगता है।

1. सुगंधित
2. कारण का उर्दूकरण
3. सीधे रास्ते

وہ آٹھ جہازوں کا مالک ہے
جو اس نے وقت کے سمندر کے پانیوں پر اُتار دیے ہیں
اور خود ایک کنٹرول رُوم میں بیٹھ کر
ان کی حرکات کا تعین کرتا ہے۔

میں بھی اس کا ایک جہاز ہوں
پتھر چبانا، پلکوں کی جھاڑیوں پر سدرہ اُگانا
صبح سویرے مسجد کے دروازے پر خدا سے
آنکھیں چُرا کر گزر جانا
اور خدا کے محبوب پر فریفتہ ہو کر
خدا سے رقابت بانٹ لینا
اس کی ادا بن گیا ہے۔
میں سرخ میٹھے سیب اور تیزاب کے اِسی
امتزاج کی پیداوار ہوں،
میں کون ہوں؟

●●●

वो आठ जहाज़ों का मालिक है
जो उसने वक़्त के समुन्दर के पानियों पर उतार दिये हैं
और ख़ुद एक कन्ट्रोल रूम में बैठकर
उनकी हरकात का तअय्युन[1] करता है

मैं भी उसका एक जहाज़ हूं
पत्थर चबाना, पलकों की झाड़ियों पर सिद्रह[2] उगाना
सुबह सवेरे मस्जिदों के दरवाज़े पर ख़ुदा से
आंखें चुराकर गुज़र जाना
और ख़ुदा के महबूब पर फ़िरेफ़्ता होकर
ख़ुदा से रक़ाबत[3] बांट लेना
उसकी अदा बन गया है।
मैं सुर्ख़ मीठे सेब और तेज़ाब के इसी
इम्तिज़ाज[4] की पैदावार हूं,
मैं कौन हूं?

●●●

1. निर्धारण
2. बैर का पेड़
3. प्रतिद्वंद
4. सामंजस्य, मिलावट

مظفر ایرج

# اثبات

وہ ایک لمحہ کہ
لم یزل نے ازل کی خوش بخت ساعتوں کا خمیر لے کر
ہمارے خوں کی رطوبتوں میں بھگو کے
اک منحنی سے پیکر میں ڈھال کر
دھیرے دھیرے
آزمائش کے مرحلوں سے گزار کر
جس کو دم کیا تھا
وہ ایک لمحہ کہ طرح جس کی
سمندروں کی روایتوں سے
ہواؤں کی سنسناہٹوں کی حکایتوں سے
خلیق مٹی کی سوندھی سوندھی امانتوں سے
جھلتے سورج کی برگزیدہ تمازتوں سے
عمل میں آئی وہ ایک لمحہ کہ
سب عوامل اسیر کر کے
زماں کی یک رنگ سرحدوں کو پھلانگ کر جب
مکاں کی پیچیدہ وسعتوں پر رقم ہوا تھا
امیں ہے سچی عبادتوں کا

## मुज़फ़्फ़र ईरज

# इस्बात[1]

वो एक लम्हा कि
लम्यज़ल[2] ने अज़ल[3] की खुशबख़्त[4] साअतों[5] का ख़मीर लेकर
हमारे ख़ूं की रतूबतों[6] में भिगोके
इक मुनहनी[7] से पैकर[8] में ढालकर
धीरे धीरे
आज़माइश के मरहलों से गुज़ार कर
जिसको दम किया था
वो एक लम्हा कि तह जिसकी
समुन्दरों की रिवायतों से
हवाओं की सनसनाहटों की हिकायतों से
ख़लीक़[9] मिट्टी की सोंधी सोंधी अमानतों से
झुलसते सूरज की बरगुज़ीदा[10] तमाज़तों[11] से
अमल में आई वो एक लम्हा कि
सब अवामिल[12] असीर[13] करके
ज़मा[14] की यक रंग सरहदों को फलांग कर जब
मकां की पेचीदा वुस्अतों पर रक़म[15] हुआ था
अमीं[16] है सच्ची इबादतों का

1. इकरार
2. अनश्वर या ईश्वर
3. अनादिकाल
4. भाग्यशाली
5. घड़ियों
6. द्रव्यों
7. कमज़ोर
8. आकृति, जिस्म
9. सुशील
10. चुनी हुई
11. गर्मियों
12. कार्य, कृत्य
13. कैदी
14. ज़माने
15. लिखित
16. रखवाला

ہمارے ماتھے پہ جو لکھے ہیں
حلیف ہے ساری عظمتوں کا صداقتوں کا
ہمارے خوں میں جو رچ گئی ہیں
حریف ہے سب کدورتوں کا، عداوتوں کا، صعوبتوں کا
ہماری بنجر زمیں کے سینے سے جو اُگی ہیں
عظیم مرکز ہے ناشنیدہ عنایتوں کا، محبتوں کا، رفاقتوں کا، مروتوں کا
ہماری روحوں میں جو بسی ہیں
ہم اپنے خالق کی کون سی نعمتوں سے انکار کر سکیں گے
کہ سجدہ گاہِ یقیں سے
پھوٹی ہوئی کرن میں اسیر ہیں ہم
بلندیوں کے سفیر ہیں ہم
گذشتہ صدیوں کے معجزوں کی نظیر ہیں ہم
عظیم دانش کو ہم نے
حرف و نوا کی رنگیں ردا عطا کی
ضرورتوں کی قبا عطا کی
وہ ایک لمحہ کہ
آرزو میں ازل سے جس کی
حقیقتوں کی
جھلتی دہلیز پہ

हमारे माथे पे जो लिखे हैं

हलीफ़[1] है सारी अज़मतों का सदाक़तों[2] का

हमारे ख़ूं में जो रच गयी हैं

हरीफ़[3] है सब कदूरतों[4] का, अदावतों का, सऊबतों का

हमारी बंजर ज़मीं के सीने से जो उगी हैं

अज़ीम मर्कज़[5] है नाशुनीदा[6] इनाअतों का, मुहब्बतों का, रिफ़ाक़तों का, मुरव्वतों का

हमारी रूहों में जो बसी हैं

हम अपने ख़ालिक़[7] की कौन सी नेमतों से इंकार कर सकेंगे

कि सजदागाहे यक़ीं[8] से

फूटी हुई किरन में असीर हैं हम

बुलन्दियों के सफ़ीर[9] हैं हम

गुज़िश्ता[10] सदियों के मोजज़ों[11] की नज़ीर[12] हैं हम

अज़ीम[13] दानिश को हमने

हर्फ़ो नवा[14] की रंगीं रिदा[15] अता[16] की

ज़रूरतों की क़बा[17] अता की

वो एक लम्हा कि

आरज़ू में अज़ल से जिसकी

हक़ीक़तों की

झुलसती देहलीज़ पे

1. दोस्त
2. सच्चाईयों
3. दुश्मन
4. बुराईयों, गदलापन
5. केन्द्र
6. न सुनी हुई
7. पैदा करने वाला
8. यक़ीन के सजदे की जगह
9. दूत
10. गुज़री हुई
11. चमत्कारों
12. उपमा
13. महान
14. लफ़्ज़ों और आवाज़ों
15. चादर
16. प्रदान
17. परिधान

ہم نے تم نے
معاشرت کے تمام آسن عی آزمائے
اگر ہمارے دلوں میں دیوارِ جاں اٹھائے
مگر یہ ممکن ہی کس طرح ہے کہ
ہم محبت کے بیج بو کر عداوتوں کے شجر اُگائیں
جو ایک لمحہ ہم
اپنے خالق کے نام منسوب کر چکے ہیں
وہ ایک لمحہ اگر نہ آئے
مگر یہ امکاں کی سرحدوں سے گریز ہو گا
گریز جو آسماں سے اُترے
کسی صحیفے کی وا جبیں پر
رقم نہیں ہے
ہم
اپنے خالق کی کون سے نعمتوں سے انکار کر سکیں گے

●●●

हमने तुमने
मुबाशिरत[1] के तमाम आसन ही आज़माये
अगर हमारे दिलों में दीवारें आं[2] उठाये
मगर ये मुमकिन ही किस तरह है कि
हम मुहब्बत के बीज बोकर अदावतों के शजर[3] उगायें
जो एक लम्हा हम
अपने ख़ालिक़[4] के नाम मन्सूब[5] कर चुके हैं
वो एक लम्हा अगर न आए
मगर यह इमका[6] की सरहदों से गुरेज़[7] होगा
गुरेज़ जो आसमां से उतरे
किसी सहीफ़े[8] की वा जबीं[9] पर
रक़्म[10] नहीं है
हम
अपने ख़ालिक़ की कौन सी नेमतों से इन्कार कर सकेंगे

●●●

1. संभोग
2. आन की दीवार
3. पेड़
4. स्रष्टा
5. सम्बद्ध
6. सम्भावना
7. भागना
8. आसमानी किताब
9. खुला हुआ माथा अर्थात पन्ना
10. लिखा हुआ

## شہناز نبی

### اگلی رُت کی نماز

میں چاہتی ہوں
کہ اگلی رُت میں ملوں جو تم سے
جنم جنم کی تھکاوٹوں کے خطوط چہرے سے مٹ چکے ہوں
'قدم قدم اک سفر' کی پچھلی علامتیں سب گذر چکی ہوں
ملالِ صحرانوردی پاؤں کے آبلوں میں سمٹ چکا ہو
مسافرت کی تمام رنجش
مرے مساموں سے دھل چکی ہو
کسی بھی پتھر کا کوئی دھبہ
کسی بھی چوکھٹ کا کوئی قرضہ
مری جبیں پر رہے نہ لرزاں
میں چاہتی ہوں کہ اگلی رُت میں ملیں جو ہم تم
دمک رہا ہو یوں میرا دامن
کہ تم جو چاہو
نماز پڑھ لو......!

●

### نئے یُگ کا خواب

بدخوابی سے بچنے کے تھے کیسے کیسے نسخے
بسم اللہ
پھر پہلا کلمہ، دوسرا کلمہ، چاروں قُل
اور داہنی کروٹ سونا

**शहनाज़ नबी**

## अगली रुत की नमाज़

मैं चाहती हूं
कि अगली रुत में मिलूं जो तुम से
जनम जनम की थकावटों के खुतूत चेहरे से मिट चुके हों
'क़दम क़दम इक सफ़र' की पिछली अलामतें सब गुज़र चुकी हों
मलाले सहरा नवर्दी पांव के आबलों में सिमट चुका हो
मुसाफ़िरत की तमाम रंजिश
मेरे मसामों से धुल चुकी हो
किसी भी पत्थर का कोई धब्बा
किसी भी चौखट का कोई क़र्ज़ा
मेरी जबीं पर रहे न लरज़ां
मैं चाहती हूं कि अगली रुत में मिलें जो हम तुम
दमक रहा हो यूं मेरा दामन
कि तुम जो चाहो
नमाज़ पढ़ लो ..... !

●

## नए युग का ख़्वाब

बदख़्वाबी से बचने के थे कैसे कैसे नुस्खे
बिस्मिल्लाह
फिर पहला कलिमा, दूसरा कलिमा, चारों कुल
और दाहिनी करवट सोना

نیند تو اب آتی ہے کم کم اور اگر آ بھی جائے تو
خواب کہاں اچھے آتے ہیں
گہرا دریا، ڈوبتی ناؤ، ٹوٹے پُل کے اکھڑے تختے
روشندان پہ کالے شیشے
سڑکوں پر گونگا سناٹا
دیواروں پر خون کے چھینٹے
آگ، دھواں، بے چین کراہیں
اک کروٹ پر سوتے سوتے
داہنا انگ بے جان ہوا ہے
اک اک کلمہ، اک اک قُل
کیا جانے کتنی بار پڑھا ہے
یہ بدخوابی کب جائے گی

●

## مینو پاز

اُبل اُبل کر
دودھ کے سارے تال تلیا
سوکھ گئے
ہمک ہمک کر
کندن سی لوری کے بول بھی روٹھ گئے
پینگیں لیتے لیتے
خالی بانہیں
تھک کر جھول گئیں
کجلوٹی میں سارا کاجل جانے کب کا پگھل گیا
کس میلے میں ڈھونڈوں اس کو
ملا نہیں اور بچھڑ گیا.....!

●●●

नींद तो अब आती है कम कम और अगर आ भी जाए तो
ख़्वाब कहां अच्छे आते हैं
गहरा दरिया, डूबती नाव, टूटे पुल के उखड़े तख़्ते
रौशनदान पे काले शीशे
सड़कों पर गूंगा सन्नाटा
दीवारों पर ख़ून के छींटे
आग, धुंआ, बेचैन कराहें
इक करवट पर सोते सोते
दाहिना अंग बेजान हुआ है
इक इक कलिमा, इक इक कुल
क्या जाने कितनी बार पढ़ा है
यह बदख़्वाबी कब जाएगी

●

## मिनोपॉज़

उबल उबल कर
दूध के सारे ताल तलैया
सूख गए
हुमक हुमक कर
कुंदन सी लोरी के बोल भी रूठ गए
पैंगें लेते लेते
ख़ाली बांहें
थक कर झूल गईं
कजलौटी में सारा काजल जाने कब का पिघल गया
किस मेले में ढूंढूं उसको
मिला नहीं और बिछड़ गया ..

●●●